# हिन्दी आंचलिक उपन्यास
# भाषा-वैज्ञानिक भूमिका

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

पी. एच. डी. उपाधि के लिए

प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

**1984**


शोधकर्त्री

**जलज माथुर** एम. फिल.


निर्देशक एवं अध्यक्ष

**डॉ. चन्द्रभान रावत**

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

हैदराबाद विश्वविद्यालय

हैदराबाद

# हिन्दी आंचलिक उपन्यास
# भाषा-वैज्ञानिक भूमिका

हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
पी. एच. डी. उपाधि के लिए
प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

**1984**

शोधकर्त्री
**जलज माथुर** एम. फिल.

निर्देशक एवं अध्यक्ष
**डॉ. चन्द्रभान रावत**
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद

# CERTIFICATE

This is to certify that the thesis titled "Hindi Anchalik Upanyas: Bhasha Vygyanik Bhumika" pre-sented by Smt. Jalaj Mathur has been written under my supervision. This is an original piece of work and it has not been submitted for any other degree elsewhere. I recommend that it may be submitted for the Ph.D. degree of the University of Hyderabad.

C.B. Rawat

(Dr. C.B. Rawat)

UNIVERSITY OF HYDERABAD.
Acc. No. 175
Date 21 JAN 85
LIBRARY

# अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

संकेत - सूची

प्रथम अध्याय : विषय - प्रवेश 1 - 45

1. अंचल 1

2. आंचलिकता और आंचलिक उपन्यास : तत्व चिंतन 6

2.1 निश्चित भूखंड 7

2.2 लोकसंस्कृति 10

2.3 व्यक्ति बनाम समूह 12

2.4 सामाजिक चेतना : यथार्थवाद : इतिहास 13

2.5 परिवर्तन : आधुनिकीकरण 16

3. आंचलिक उपन्यास : एक आन्दोलन 20

3.1 विद्रोही प्रतिक्रिया 20

3.11 मध्यवर्गीय चिंतन की ऊब के प्रति 23

3.12 व्यक्तिवादी प्रवृत्ति की एकरसता के प्रति 26

3.2 सामयिक प्रेरणा 28

3.21 गांधी जी और राष्ट्रीयता 28

3.22 प्रगतिशील प्रवृत्तियां 29

3.23 जनपदीय आन्दोलन 31

4. भाषायी भूमिका 34

4.1 आंचलिक भाषा : अनिवार्य अंग 35

4.2 आंचलिक भाषा - प्रयोग की अनिवार्यता 37

4.3 चरित्र - चित्रण और भाषा 38

4·4 संवाद और कथोपकथन 40

4·5 बोधगम्यता का प्रश्न 41

द्वितीय अध्याय : ध्वनि - स्तर 46 - 92

0 प्रास्ताविक 46

1· आगम 46

1·1 स्वरागम 46

1·11 संयुक्त व्यंजन : स्वरागम 46

1·111 आदि संयुक्त व्यंजन : स्वरागम 46

1·112 मध्य संयुक्त : स्वरागम 49

[क] एक संयुक्तव्यंजनयुक्त शब्द 50

[ख] दो संयुक्तव्यंजनयुक्त शब्द 50

[ग] तीन संयुक्तव्यंजनयुक्त शब्द 50

1·113 अन्त्य संयुक्तव्यंजन : स्वरागम 51

1·12 आदि स्वरागम 54

1·13 अकारण स्वरागम 54

1·2 व्यंजनागम 56

1·21 आदि व्यंजनागम 56

1·22 मध्य व्यंजनागम 56

1·23 अन्त्य व्यंजनागम 56

2· लोप 57

2·1 स्वरलोप 57

2·11 आदि स्वरलोप 57

2·12 मध्य स्वरलोप 57

2·13 अन्त्य स्वरलोप 57

2·2 व्यंजनलोप 57

2·21 आदि व्यंजनलोप 57

2·22 मध्य व्यंजनलोप 58

2·23 अन्त्य व्यंजनलोप 60

3· ध्वनि - परिवर्तन 60

3·1 स्वर - परिवर्तन 61

3·11 असंयुक्त स्वर 61

3·12 संयुक्त स्वर 64

3·121 संयुक्त स्वर > मूलस्वर 64

3·122 मूल स्वर > संयुक्त स्वर 65

3·13 अनुनासिकीकरण 65

3·14 ह्रस्वीकरण 66

3·15 दीर्घीकरण 67

3·2 अर्द्धस्वर का विकास 68

3·3 व्यंजन - विकास 72

3·31 समीकरण 72

3·32 विषमीकरण 72

3·33 अल्पप्राण > महाप्राण 73

3·34 महाप्राण > अल्पप्राण 74

3·35 घोषीकरण 76

3·36 अघोषीकरण 76

3·37 द्वित्वीकरण 77

3·38 विपर्यय 78

3·39 अमूर्द्धन्यीकरण 78

3·3(10) मूर्द्धन्यीकरण 81

3·3(11) ऊष्म ध्वनियों का विकास 81

3·3(12) अन्य 86

3·3(13) अन्तस्थ ध्वनियाँ 87

3·3(14) संयुक्त व्यंजन का विकास 88

## तृतीय अध्याय : शब्द - स्तर 93 - 182

0 प्रस्तावना 93

1· सार्थक शब्द : बोध के स्तर 94

1·1 बोधगम्य आंचलिक शब्दावली 95

1·2 सामान्य रूप से अबोधगम्य शब्दावली 96

1·3 अबोधगम्य शब्दावली 97

2· व्याकरणिक धाराएं 99

2·1 संज्ञा शब्द 99

2·11 मूल संज्ञा पद 100

2·12 व्युत्पन्न संज्ञा पद 100

2·121 संज्ञा > संज्ञा 100

2·122 विशेषण > संज्ञा 101

2·123 क्रिया > संज्ञा 101

2·124 क्रियाविशेषण > संज्ञा 102

2·125 संज्ञा + संज्ञा > संज्ञा 102

2·126 विशेषण + संज्ञा > संज्ञा 103

2·127 संज्ञा + क्रिया > संज्ञा 103

2·128 संज्ञा + क्रिया + प्रत्यय > संज्ञा 103

2·129 विशेषण + संज्ञा + प्रत्यय > संज्ञा 103

2·13 व्यक्तिवाचक संज्ञा 103

2·131 व्यक्तिनाम 103

2·132 गांव / शहर के नाम 106

2·133 नदी नाम 107

2·134 लोकदेवता 107

2·14 जातिवाचक संज्ञा 109

2·141 जाति सूचक शब्द 109

(क) बिहार अंचल 109

(ख) कुमाऊं अंचल 110

(ग) बस्तर अंचल 110

(घ) राजस्थान 111

2.142 व्यक्ति से संबंधित 112

(क) अंगवाची 112

(ख) सम्बन्धवाची 112

2.143 प्रकृति से संबंधित 116

(क) कालखण्ड 116

(ख) ग्रह-नक्षत्र 117

(ग) जलस्थल 117

(घ) स्थलखण्ड 118

(ङ) जीव-जन्तु 119

(क) जलीय जीव 119

(ख) स्थलीय जीव 121

(च) पशु संबंधी शब्द 122

(छ) पक्षी 123

(ज) वृक्ष नाम 124

(झ) अन्य वनस्पति 125

2.144 सांस्कृतिक शब्दावली 127

(क) भोज्य पदार्थ 127

(ख) पेय पदार्थ 129

(ग) रसोई संबंधी शब्द 130

(घ) आवास संबंधी शब्द 131

(ङ) वेशभूषा 132

(च) श्रृंगार : प्रसाधन 133

(छ) रीति-रिवाज 134

(ज) मनोरंजन के साधन 136

2.145 धर्म संबंधी शब्दावली 138

(क) लोकधर्म 138

(ख) त्योहार : अनुष्ठान 140

2.146 आर्थिक जीवन 140

(क) कृषि-संबंधी शब्दावली 141

(ख) कृषि उपकरण 141

(ग) उपज अनाज-सब्जी 142

(घ) अन्य व्यवसाय 144

2.147 फुटकर शब्दावली 146

2.148 अवर्गीकृत शब्दावली 148

2.15 भाववाचक संज्ञा 151

2.2 सर्वनाम 154

2.21 उत्तम पुरुष 154

2.22 मध्यम पुरुष 154

2.23 अन्य पुरुष 155

2.24 प्रश्नवाचक 155

2.3 विशेषण 155

2.31 बोधगम्य सार्वनिक विशेषण 155

2.32 अबोधगम्य सार्वनिक विशेषण 157

2.4 क्रिया 160

2.41 बहुसार्वनिक क्रियाएँ 160

2·42 कुछ सांयोगिक क्रियाएँ 162

2·421 ध्वन्यात्मक धातुएँ 162

2·422 अन्य धातुएँ 164

2·5 क्रिया-विशेषण और अव्यय 166

2·6 आगत शब्दावली 167

2·61 उर्दू शब्द 167

2·611 पहला स्तर 168

2·612 द्वितीय स्तर 171

2·613 तृतीय स्तर 171

2·62 अंग्रेजी शब्द 172

2·621 अंग्रेजी शब्दावली : मध्यवर्ग 172

2·622 अंग्रेजी शब्दावली : अशिक्षितजन 175

(क) अत्यंत सामान्य शब्द 176

(ख) अपेक्षाकृत क्लिष्ट शब्दावली 178

(ग) शासन व्यवस्था से संबंधित शब्दावली 180

चतुर्थ अध्याय : रूप-रचना : 183-214

1· संज्ञा की रूप-रचना 183

1·1 विस्तारक प्रत्यय 183

1·2 अर्थवर्धक प्रत्यय 184

1·3 वचन प्रत्यय - बहुवचन 185

1·4 लिंग प्रत्यय - स्त्रीलिंग 185

1·5 स्थान वाचक रचना 186
1·6 समूहवाचक या परिमाणसूचक प्रत्यय 187
1·7 संज्ञा > संज्ञा (सामान्य) 187
1·8 भाववाचक संज्ञा 188
1·81 संज्ञा > भाववाचक संज्ञा 188
1·9 व्युत्पन्न संज्ञा 190
1·91 विशेषण > भाववाचक संज्ञा 190
1·92 क्रिया > भाववाचक संज्ञा 191
1·(10) क्रिया > कर्तृत्ववाचक 193
2· विशेषण की रूप-रचना 194
2·1 विस्तारक प्रत्यय 194
2·2 व्युत्पन्न विशेषण 194
2·21 विशेषण > विशेषण 195
2·22 संज्ञा > विशेषण 197
2·23 भाववाचक संज्ञा > विशेषण 201
2·24 क्रिया > विशेषण 201
2·25 क्रिया विशेषण > विशेषण 203
2·26 अन्य 204
3· कारक-रचना 205
4· सोपसर्ग रचना 206
5· क्रिया की रूप-रचना 208
5·1 नाम-धातु 208
5·2 वाच्यवाचक 209

5.3 वर्तमानकालिक कृदन्त 210

5.4 भूतकालिक रचना 211

6. शब्द-युग्म 211

6.1 समानार्थक शब्द-युग्म 211

6.2 पुनरावृत्ति 213

7. सामासिक रचना 213

पंचम अध्याय : वाक्य-स्तर : 215-254

0. प्रास्ताविक 215

1. संज्ञा-रचना 216

2. कारकीय रचना 217

3. सार्वनामिक रचना 223

4. विशेषण रचना 225

5. क्रिया रचना - सानुनासिकता 226

6. क्रिया-विशेषण : अव्यय 235

7. लिंग-वचन अन्वय 235

8. क्रम-विपर्यय 239

9. मिश्र वाक्य 242

10. संयुक्त वाक्य 245

11. अंचल में अंचलेतर तत्त्व 246

षष्ठ अध्याय : लोकोक्तियाँ, कहावतें और लोकगीत : 255-298

1. लोकोक्ति और कहावतें 257

1·1 ठेठ आंचलिक लोकोक्तियाँ 261

1·2 अन्तर्क्षेत्रीय कहावतें 264

1·3 भाषा से अंचल की ओर 267

1·4 साहित्य से आगत 268

2· लोकगीत 270

2·1 लोकगीतों की भाषायी भूमिका 271

2·2 ठेठ आंचलिक भाषा गीत 272

2·21 जादू-टोना से संबंधित 273

2·22 ऋतुत्सव : पर्व गीत 276

2·23 संस्कार गीत 279

2·24 श्रम गीत 282

2·25 भावगीत 288

2·3 वृहद्तर भाषा गीत 293

उपसंहार : ... ... 299-304

परिशिष्ट ... 305-319

## : प्राक्कथन :

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों पर हुए शोधकार्य की अग्रगामी कड़ी के रूप में है । अब तक हिंदी के आंचलिक उपन्यासों पर जो काम हुआ है उसमें आंचलिकता का सन्दर्भ[1], आंचलिक कथा-तत्व[2], विकास-क्रम[3], सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष[4] तथा यथार्थ दर्शन[5] का परिप्रेक्ष्य ग्रहण किया गया है । आंचलिक उपन्यासों की भाषा पर भी एक शोध प्रबन्ध स्वीकृत हुआ है "हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की भाषा : एक अध्ययन" (विद्याधर द्विवेदी) । इस विवरण से यह स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक कार्य आंचलिक उपन्यासों के सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष पर हुआ है और सबसे कम इनके भाषा पक्ष पर । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध आंचलिक उपन्यासों की भाषा वैज्ञानिक भूमिका को उजागर करता है ।

---

1. नगीना जैन, "आंचलिकता और हिंदी उपन्यास", गिरिजाशंकर शर्मा "हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में आंचलिक तत्व"
2. रामनारायण सिंह - " हिंदी उपन्यास साहित्य में आंचलिक कथा-तत्व का विकास"
3. मुरलीधर झा - "हिंदी के आंचलिक उपन्यास, उद्भव और विकास"
4. विमलशंकर नागर- "हिंदी के आंचलिक उपन्यास साहित्य का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन" शशिकलासिंह - हिंदी के आंचलिक उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन, आदर्श सक्सेना - हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की सामाजिक पृष्ठभूमि, बैजनाथ प्रसाद गुप्त - "हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में लोकतत्व", शिवा दुबे, हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में लोक संस्कृति का स्वरूप ।
5. कमला गौतम : हिंदी में आंचलिक उपन्यासों में यथार्थवादी प्रवृत्तियों का विकास, देवदत्त शर्मा हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में व्यक्ति और प्रगति चेतना ।

आंचलिक उपन्यासों की आंचलिकता जहाँ सामाजिक और सांस्कृतिक स्तरों पर सिद्ध होती है वहाँ भाषा के स्तर पर भी उसको लक्षित किया जा सकता है । जो शोध-प्रबन्ध इस शोध-क्षेत्र में प्रस्तुत हुआ है वह आंचलिक उपन्यासों की भाषा का विवेचन प्रस्तुत करता है किन्तु आंचलिक उपन्यासों के अंचल भिन्न-भिन्न हो सकते हैं । सामान्य रूप से भाषा वैज्ञानिक भूमिका आंचलिकता के बोध और पहचान में कितना योगदान देती है, इस पक्ष को स्पष्ट करने की आवश्यकता है । प्रस्तुत प्रयास इसी दिशा में एक कदम है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध की योजना इस प्रकार बनाई गई है कि सभी अंचलों के उपन्यासों के आधार पर एक सामान्य भाषा-दृष्टि को विकसित किया जा सके । अलग-अलग अंचलों की विशिष्ट भाषा-स्थितियों से कुछ सामान्य प्रवृत्तियाँ सामने आती हैं जिनके आधार पर उनकी सामान्य भूमिका का प्रकाशन संभव हो सकता है । संक्षेप में नीचे प्रस्तुत प्रबन्ध की अध्याय योजना दी जा रही है ।

पहला अध्याय है, विषय-प्रवेश । इसमें आंचलिकता और आंचलिक उपन्यासों की अवधारणा और अर्थ को स्पष्ट किया गया है । आंचलिक उपन्यासों की विभिन्न परिभाषाओं के तुलनात्मक अनुशीलन के आधार पर एक सामान्य प्रत्यय खोजने की कोशिश की गई है । यद्यपि इन परिभाषाओं में भाषा-तत्त्व का संकेत मिलता है किन्तु प्राप्त परिभाषाओं में इसका बहुत अधिक महत्वपूर्ण स्थान नहीं है । उपन्यासों की वस्तु को लेकर ही प्रत्यय को स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है । इन सबके विवेचन के पश्चात् आंचलिकता की व्यापक संधारणा को ग्रहण किया गया है। प्रस्तुत प्रबंध की आधारभूत सामग्री यह है --

| लेखक | उपन्यास | अंचल |
| --- | --- | --- |
| नागार्जुन | "रतिनाथ की चाची" (1948) | मिथिला (बिहार) |
| | "बलचनमा" (1952) | |
| | "नई पौध" (1953) | |

नागार्जुन "बाबा बटेसरनाथ" (1954)
"दुखमोचन" (1957)
"वरुण के बेटे" (1957)

फणीश्वरनाथ रेणु "मैला आँचल" (1954) बिहार
"जुलूस" (1965)

उदयशंकर भट्ट "सागर, लहर और मनुष्य" (1955) बरसोवा (बंबई)

भैरवप्रसाद गुप्त "सती मैया का चौरा" (1959) आजमगढ़ (उ0प्र0)

राजेन्द्र अवस्थी "जंगल के फूल" (1960) बस्तर (म0प्र0)

शैलेश मटियानी "होलदार" (1960) कुमाऊँ

रांगेय राघव "कब तक पुकारूँ" (1975) राजस्थान

इसके पश्चात् दूसरे अध्याय में भाषा की आधारभूत इकाई ध्वनि को लिया गया है। यद्यपि हिन्दी के अंचलों की भाषा ध्वनियाँ प्रायः समान हैं तथापि उनके व्यावहारिक रूप और विकास-क्रम में आंचलिक वैशिष्ट्य परिलक्षित होता है। उदाहरण के लिए यह विकसित रूप लिए जा सकते हैं, न > ण, श > स, य > ज, व > ब आदि। इसी प्रकार अन्य कुछ ध्वनियों के विकसित रूप भी आंचलिक वैशिष्ट्य को प्रमाणित करते हैं। जब एक अंचल के व्यक्ति दूसरे अंचल के व्यक्तियों की बोली को सुनते हैं तो उनको इन ध्वन्यात्मक विशेषताओं का बोध हो जाता है। आंचलिक उपन्यासों की भाषा वैज्ञानिक भूमिका में ध्वनि-प्रकरण का महत्वपूर्ण स्थान है, इसी का विवेचन प्रस्तुत अध्याय का अभिप्रेत है।

आंचलिक वैशिष्ट्य शब्द-स्तर पर और भी मुखर हो जाता है। शब्दावली में इस दृष्टि से संज्ञा शब्दों का प्रमुख स्थान है। संज्ञाएँ, व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक आदि सभी स्तरों पर आंचलिक वैशिष्ट्य लिए हुए हैं। व्यक्तिवाचक नाम भी आंचलिकता के साक्ष्य बन जाते हैं। इसी प्रकार विशेषण, क्रिया आदि शब्दों का भी इस दृष्टि से महत्व

हो जाता है । तीसरे अध्याय में आंचलिक उपन्यासों की शब्दार्थमय भूमिका को स्पष्ट किया गया है । शब्द के स्तर पर व्यापक बोधगम्यता काफी सीमित हो जाती है । ध्वनि के स्तर पर यह बाधा इतनी अधिक उपस्थित नहीं होती ।

चतुर्थ अध्याय में पद की रूप रचना का विश्लेषण किया गया है । यद्यपि हिन्दी-क्षेत्र में भाषा की सामान्य संरचना समान ही है तथापि प्रत्यय और उपसर्ग की प्रकृति और उनके प्रयोग में कुछ आंचलिक वैशिष्ट्य आ जाता है । साथ ही लिंगगत नियम भी कभी-कभी बदले हुए से मिलते हैं । पदगत आंचलिक वैशिष्ट्य का अध्ययन अपने आप में अत्यन्त रोचक और सार्थक हुआ है । इन सारी प्रवृत्तियों को प्रस्तुत अध्याय में रखा गया है ।

वाक्य-रचना अपने आप में एक बहुत बड़ा विषय है और इस विषय पर अलग से शोध-प्रबंध भी प्रस्तुत किया जा सकता है । प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की सीमाओं में जितना कुछ विषय आ पाया है उसको समेटने की चेष्टा पाँचवे अध्याय में की गई है । विशेष रूप से उन्हीं रूपों का विश्लेषण अभीष्ट है जो रूप परिनिष्ठित हिन्दी से आंचलिक धरातल पर अलग है । वाक्यों में सामान्य, मिश्रित और संयुक्त सभी प्रकार के वाक्य आ गए हैं । फिर भी आंचलिक उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्ति यह दिखाई पड़ती है कि सामान्य वाक्य-रचना का ही प्रयोग किया गया है । कुछ अन्तर यह प्रतीत होता है कि वाक्य में पदक्रम प्रायः बदल जाता है । इन प्रवृत्तियों को सोदाहरण स्पष्ट करने की चेष्टा इस अध्याय में की गई है ।

छठा अध्याय लोकोक्तियों तथा मुहावरों से सम्बद्ध है । साथ ही जहाँ-जहाँ आंचलिक लोक गीतों की कुछ पंक्तियाँ भी उपन्यासों में आई हैं । उनको भी इसी अध्याय में समाविष्ट किया गया है । लोकोक्तियों और मुहावरों का जहाँ तक प्रश्न है उनमें से कुछ तो परिनिष्ठित

हिन्दी के समान शब्दावली ही है, किन्तु वाक्य रचना भिन्न है । कुछ में वाक्य रचना भी थोड़े-बहुत अन्तर के साथ समान ही मिलती है । लोकोक्तियों की पर्याप्त संख्या आंचलिक उपन्यासों में प्रयुक्त हुई है । अतः यह कहना चाहिए कि हिन्दी आंचलिक उपन्यासों के चरित्र को प्रकट करनेवाले प्रमुख उपकरण लोकोक्तियों और मुहावरों से ही सर्वाधिक है ।

अन्त में प्रस्तुत प्रबन्ध के निष्कर्ष उपसंहार के रूप में दिए गए हैं । इनमें प्रमुख रूप से दो निष्कर्षों पर बल दिया गया है । एक तो यह कि कुछ उपन्यासों में आंचलिक भाषा-रूपों के अधिक प्रयोग के कारण सामान्य बोधगम्यता बाधित और सीमित हुई दूसरा यह कि आंचलिक यथार्थ आंचलिक भाषा का प्रश्रय पाकर अधिक मुखर और प्रभावशाली बना है । फिर भी समग्र उपन्यास में आंचलिक भाषा का अनुपात तीस प्रतिशत से अधिक नहीं है, इसलिए बोधगम्यता बनी रहती है । इसके आधार पर सौन्दर्यबोध कुछ अधिक स्वाभाविक होता है ।

परम सौभाग्य से इस शोध-प्रबन्ध के निर्देशक श्रद्धेय गुरुवर डा० चन्द्रभान रावत, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, रहे हैं जिनसे मुझे निरन्तर अध्ययन एवं शोध की प्रेरणा मिलती रही है । शोध-विषयक उनके बहुमूल्य निर्देशन के कारण ही यह प्रबन्ध परिष्कृत और परिमार्जित हो सका है । धन्यवाद देकर मैं उनसे उऋण नहीं हो सकूँगी ।

मैं उन सभी गुरुजनों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनसे समय-समय पर मुझे सहायता मिलती रही। जिन सभी विद्वानों के समीक्षा-ग्रन्थों से मैं लाभान्वित हुई हूँ उनके प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

-- अनुज माथुर

हिन्दी विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद

## : संकेत - सूची :

| सांकेतिक शब्द | | मूल शब्द |
|---|---|---|
| उ0 पु0 | .. | उत्तम पुरुष |
| उ0 प्र0 | .. | उत्तर प्रदेश |
| ए0 व0 | .. | एकवचन |
| क्रि0 | .. | क्रिया |
| क्रि· विशे0 | .. | क्रिया -विशेषण |
| कब तक पु· | .. | "कब तक पुकारूँ" |
| जं· के फूल | .. | "जंगल के फूल" |
| जुलू0 | .. | "जुलूस" |
| दुख0 | .. | "दुखमोचन" |
| नई पौ0 | .. | "नई पौध" |
| पु0 | .. | "पुल्लिंग" |
| पृ0 | .. | पृष्ठ |
| प्र0 पु0 | .. | प्रथम पुरुष |
| बल· | .. | "बलचनमा" |
| बाबा बटे0 | .. | "बाबा बटेसरनाथ" |
| ब0व0 | .. | बहुवचन |
| म0प्र0 | .. | मध्य प्रदेश |

| | | |
|---|---|---|
| म० पु० | .. | मध्यम पुरुष |
| मै० आं० | .. | "मैला आंचल" |
| रति० की चाची | .. | "रतिनाथ की चाची" |
| व० के बेटे | .. | "वरुण के बेटे" |
| विशे० | .. | विशेषण |
| स्त्री० | .. | स्त्रीलिंग |
| सर्व० | .. | सर्वनाम |
| सं० | .. | संज्ञा |
| सती मै० | .. | "सती मैया का चौरा" |
| सा०ल०म० | .. | "सागर, लहरें और मनुष्य" |
| हो० | .. | "होलदार" |

| अध्याय | पृष्ठ |
| --- | --- |
| | |

विषय - प्रवेश

## 1. अंचल

यह कहना तो कठिन प्रतीत होता है कि "अंचल" शब्द अंग्रेज़ी के "रीजन" के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुआ अथवा इस शब्द ने स्वतंत्र रूप से पारिभाषिकता ग्रहण की, किन्तु इतना निश्चित है कि "अंचल" शब्द के अर्थ-संस्कार अथवा अर्थ-विकास की प्रक्रिया रीजन, रीजनल या रीजनल नॉवल के सन्दर्भों से प्रभावित हुई। यह भी उल्लेख्य है कि "अंचल" शब्द का व्युत्पत्त्यर्थ[1] "रीजन" के अर्थ की अपेक्षा भिन्न है। मूल अर्थ वस्त्र के छोर का वाचक था।[2] वस्त्र या साड़ी का अर्थ इसमें मुख्य नहीं है। मुख्य है -- किनारा, किनारे का भाग या छोर। इसलिए अर्थ-विपर्यय (ट्रान्सफर ऑफ मीनिंग) के सिद्धान्त के अनुसार इसका आलंकारिक अर्थ सीमावर्ती या किनारे का भू-भाग होने लगा। कोशकारों ने भी इस विकासगामी अर्थ-बोध को सम्मिलित किया : "अंचल - संज्ञा, पुंलिंग (संस्कृत) आंचल, पल्ला, साड़ी का छोर, देश का वह भाग या प्रान्त जो सीमा के पास हो, नदी के किनारे की भूमि, तट या किनारा, क्षेत्र[3] तथा "साड़ी का छोर जो सामने रहता है, पल्ला, आंचर या अंचरा, किनारा एवं सीमा का समीपवर्ती भाग[4] अन्त में मूल अर्थ अपना

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

1. √अञ्च + अलच् प्रत्यय = अंचल
2. "अञ्चल" : पु० (अञ्चति प्रति भागं गच्छति। अञ्च + अलच् वस्त्र प्रांत भाग:) (कल्पद्रु कोश) और भी द्रष्टव्य है - "द प्रैक्टिकल संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी"
3. द्रष्टव्य राष्ट्रभाषा कोश
4. द्रष्टव्य भार्गव शब्दकोश

अर्थसंकोचमूलक विकास करके मुख्य हो गया या साड़ी के छोर के रूप में प्रचलित रहा । उपन्यासों, भाषा, जीवन आदि के संदर्भ में यह शब्द क्षेत्रवाची भी हो गया । यह भी हुआ कि तटवर्ती या सीमावर्ती भू-भाग को उद्दिष्ट न रखकर एक निश्चित भूखण्ड को इसके द्वारा घोषित होने लगा । इसको एक भौगोलिक इकाई माना जा सकता है ।

"अंचल" शब्द का अर्थ-विकास केवल भौगोलिक इकाई से जुड़कर भी नहीं रहा । इसके अन्तर्गत एक निश्चित भू-खण्ड के निवासी, उनका जीवन-क्रम, उनकी संस्कृति, उनकी भाषा, उनकी परम्पराएँ, नई परिस्थितियों में उनकी प्रगति की प्रक्रिया आदि भी समाविष्ट होने लगी । डॉ० शिवप्रसाद सिंह के शब्दों में "क्षेत्र या अंचल उस भौगोलिक खण्ड को कहते हैं जो सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सुगठित और विशिष्ट एक ऐसी इकाई हो, जिसके निवासियों के रहन-सहन, प्रथाएँ- उत्सवादि, आदर्श और आस्थाएँ, मौखिक मान्यताएँ तथा मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ परस्पर समान और दूसरे क्षेत्र के निवासियों से इतनी भिन्न हो कि इनके आधार पर वह क्षेत्र या अंचल-विशेष अन्य प्रकार के दूसरे क्षेत्रों से एकदम अलग प्रतीत हो ।[5] इस प्रकार प्रस्तुत संदर्भ में अंचल मात्र भौगोलिक इकाई न होकर एक सांस्कृतिक और सामाजिक इकाई बन जाता है । साथ ही वह अपना वैशिष्ट्य भी प्रमाणित रखता है । इस वैशिष्ट्य के कारण ही वह अन्य भू-भागों से अलग हो जाता है । डॉ० महेन्द्र चतुर्वेदी ने इसकी ओर संकेत किया है : "अंचल शब्द भूखण्ड विशेष का वाचक है, जो सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक दृष्टिकोण से अपने आप में एक इकाई हो,

---

5. "साहित्यकार और आधुनिक परिप्रेक्ष्य" लेख कल्पना 161, मार्च, 1965 पृ० 29

जिसके जीवन की कुछ अपनी विशेषताएँ हों ।"[6]

वैशिष्ट्य के तत्व को डॉ० चन्द्रेश्वर कर्ण ने भी रेखांकित किया है -- "वह भू-भाग जो अपने सांस्कृतिक वैशिष्ट्य के कारण अन्य हिस्सों से अलग होता है ।"[7] डॉ० कर्ण ने केवल सांस्कृतिक वैशिष्ट्य की ही चर्चा की है । किन्तु वैशिष्ट्य एक व्यापक तत्व है । इसकी ओर डॉ० राजनाथ पांडेय ने इस प्रकार संकेत किया है : "प्रत्येक भूखण्ड की मिट्टी की भी एक खास महक होती है और उसी मिट्टी में पनपी हुई वनस्पतियों के पत्ते-पत्ते और फूल-फूल से एक विशेष गन्ध होती है । उसी के अनुरूप वहाँ के समस्त जीवधारियों, मानव-प्राणियों में भी अपनी एक अलग मन:स्थिति या गन्ध होती है जो किसी अन्य भू-भाग में उगे हुए फूल-पत्तों और प्राणियों की गंध से भिन्न होने के कारण अपनी एक विशिष्टता रखती है ।"[8]

वैशिष्ट्य की ध्वनि "अंचल" शब्द के मूल अर्थ में भी अन्त:स्यूत है, "अञ्च" धातु का अर्थ है निर्दिष्ट सीमा तक जाना । निर्दिष्ट सीमा वैशिष्ट्य को व्यंजित करती है । यह शब्द साहित्यकारों के लिए भी सार्थक है । साहित्य किसी जाति या सामान्य के विषय में नहीं रचा जाता, उसका संबंध "विशिष्ट" से ही होता है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी इसकी स्थापना की है ।[9] साहित्य में रचनान्तरित विशिष्ट असीम, व्यापक अथवा एक जाति का भी प्रतिनिधित्व कर सकता है । इसी दृष्टि से आंचलिक वैशिष्ट्य को उपन्यासकारों ने रचनान्तरित किया है ।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

6. नरेन्द्र चतुर्वेदी : हिंदी उपन्यास - एक सर्वेक्षण पृ० 189
7. आंचलिक हिंदी कहानी पृ० 12
8. राजनाथ पांडेय : पूर्णिमा अप्रैल 1960, पृ० 190
9. "चिन्तामणि" ( पहला भाग ) "साधारणीकरण तथा व्यक्ति-वैचित्र्यवाद" नामक निबन्ध पृ० 163-164

एक मत यह भी रहा कि अंचल एक ग्रामीण क्षेत्र ही रहता है। डॉ० आदर्श सक्सेना ने ग्राम को अंचल के अर्थ में केन्द्रीय स्थान दिया है. "किसी पर्वत, कुहसार के सहारे बसे, किसी नदी के किनारे स्थित, किसी सागर तट पर फैले ग्रामों को, जिनकी बोली, उत्सव, त्योहार, रहन-सहन, संस्कार, भोजभूषा, लोकगीत आदि एक से होते हैं, एक-सी जीवन व्यवस्था से बँधे होते हैं, अंचल की संज्ञा से अभिहित किए जा सकते हैं।"[10] श्री नन्ददुलारे वाजपेयी की दृष्टि से नगर, नागरिकता या सभ्यता के प्रभाव-स्पर्शों से दूर आदिम मानस की क्रीड़ा-भूमि ग्रामांचल ही होते हैं "............ नगर से संबंधित उपन्यासों को आंचलिक नहीं कहा जा सकता। वह वैचित्र्य, वह स्वच्छन्द व्यवहार, सभ्यता के दोषों से रहित, वह आदिम मानव-प्रकृति, जो आंचलिक उपन्यासों की केन्द्रीय वस्तु है, नागरिक चित्रण में नहीं आ सकती।"[11] डॉ० शिवप्रसाद सिंह भी अंचल को ग्राम-जीवन तक सीमित रखने के पक्ष में हैं।[12] श्री प्रभाकर माचवे[13], डॉ० ज्ञानचन्द गुप्त[14] तथा डॉ० आदर्श सक्सेना[15] आदि भी अंचल के केन्द्र में ग्राम को ही रखते हैं। डॉ० रामदरश मिश्र[16] का झुकाव भी इसी ओर दिखाई पड़ता है। इसी सूची में महेन्द्र चतुर्वेदी को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

---

10. हिंदी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि पृ० 21
11. आलोचना 1957
12. "आंचलिकता और आधुनिक परिवेश" कल्पना 161 मार्च, 1965 पृ० 29
13. हिंदी उपन्यासों में नए प्रयोग, आलोचना, जनवरी 1956
14. आंचलिक उपन्यास : सिद्धान्त और शिल्प पृ० 13
15. हिंदी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि, पृ० 27-28
16. हिंदी उपन्यास, एक अन्तर्यात्रा, पृ० 188
17. हिंदी उपन्यास : एक सर्वेक्षण, पृ० 214

उपर्युक्त विवाद के उत्तर पक्ष में वे विद्वान आते हैं जो अंचल को ग्राम-केन्द्रित मानने के पक्ष में नहीं है । अंचल नगरों में पुरातन अवशिष्ट रूप में भी रह सकता है । यह अवशिष्ट रूप शिक्षा और नागरिक व्यवहार के अनुशासनों के थपेड़े खाकर भी सुरक्षित रहता है । नगरों में पिछड़े हुए लोगों की बस्तियाँ भी होती है और नगर के उपकंठों में आदिम या पिछड़ी हुई जातियाँ भी रह सकती हैं । इसलिए, चन्द्रकान्त पाण्डेय[18] प्रकाश वाजपेयी[19], शिवनारायण श्रीवास्तव[20], राजेन्द्र अवस्थी,[21] सुरेश सिन्हा,[22] कान्तिवर्मा[23] आदि विद्वानों ने अंचल का विस्तार और उसकी स्थिति नगरों तक भी मानी है । डॉ० चन्द्रेश्वर कर्ण ने प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यासकार नागार्जुन का मन्तव्य इन शब्दों में व्यक्त किया है[24] "अब अपने विकास क्रम के सिलसिले के कारण यह अंचल महानगरों के अन्दर सिमट हो रहा है । अपनी रूढ़ियों, मान्यताओं, कुनबापरस्तियों, सामूहिक और वैयक्तिक मजबूरियों, तल्खियों, खुशियों, उमंगों, उदासों के साथ । उन्होंने नए बन रहे अंचलों पर भी विचार करते हुए कहा है कि पिछले बीस वर्षों के अन्दर छोटी-बड़ी हजारों औद्योगिक कालोनियाँ खड़ी हो गयी है । सैकड़ों ग्रामांचल अपनी रातों में इन कालोनियों की मेहरबानी से जगमगाते रहते

---

18. रीजनलिज़्म इन हिन्दी नॉवल्स
19. हिंदी के आंचलिक उपन्यास
20. हिंदी उपन्यास
21. श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ पृ. 3
22. हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास
23. स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी उपन्यास पृ. 184
24. आंचलिक हिंदी कहानी पृ. 13

हैं । इसका कॉलोनियों के इर्द-गिर्द बिखरे हुए ग्राम-जीवन पर जादुई प्रभाव पड़ रहा है । हड़ताल, छँटनी, ले-आफ, आटोमेशन आदि नए और तकनीकी शब्द पुरानी डिक्शनरियों को चिढ़ा रहे हैं । शहर का काम करनेवाली आदिवासी लड़की नयन-बाण का शिकार होकर बाबू वर्ग के किसी छैले से किस कदर धोखा खाती है, यह सब ग्राम-कथा में उतर रहा है । तात्पर्य यह है कि अंचल भौगोलिक रूप से ग्राम या नगर तक सीमित नहीं हो सकता । वास्तव में विकास की कुछ प्रारम्भिक स्थितियाँ, मानस की कुछ आदिम प्रवृत्तियाँ, जीवन की कुछ पिछड़ी हुई पद्धतियाँ, विचारों की परम्परामुक्त एवं अन्ध-धारणाएँ तथा लोक-संस्कृति और लोक साहित्य के टटके संस्पर्श को लेकर ही अंचल का वातावरण गठित होता है । इसकी स्थिति कहीं भी हो सकती है, जिस प्रकार एक सभ्य और सुशिक्षित व्यक्ति के जीवन में भी कुछ विशिष्ट अवसरों पर आदिम विचार तैर आते हैं जिनको तर्क की चोट निरस्त नहीं कर पाती, उसी प्रकार नगर-परिवेश में भी आँचलिकता के टुकड़े बिखरे हुए मिल सकते हैं । इन पर भी आँचलिक उपन्यास लिखे जा सकते हैं और लिखे गए हैं ।[25]

## 2. आँचलिकता और आँचलिक उपन्यास : तत्त्व चिन्तन :

आँचलिक उपन्यास की सार्थकता उन तत्त्वों पर निर्भर रहती है, जो आँचलिकता के घटक तत्त्व कहे जा सकते हैं । इन तत्त्वों में

---

25. बूँद और समुद्र, को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है ।

## 2·2 लोकसंस्कृति :

जिस भू-भाग को लेकर आंचलिक उपन्यास चलता है उसकी अपनी एक संस्कृति होती है — लोक संस्कृति या जनसंस्कृति । इसके अन्तर्गत जादू-टोना, धर्म, अन्धविश्वास, पूजा-अनुष्ठान, रहन-सहन, खान-पान ------ सभी आ जाते हैं । कुछ आंचलिक उपन्यासों के नामकरण में भी इस लोकसंस्कृति की छाप मिलती है जैसे "सती मैया का चौरा" "बाबा बटेसरनाथ", अंचल का अधिकांश जीवन लोक परम्पराओं से परिचालित रहता है इनके आधार पर भी एक अंचल को दूसरे अंचल से अलगाया जा सकता है । इन लोक परम्पराओं के साथ आंचलिक जन का संबंध बहुत घनिष्ट होता है । यहाँ तक कि प्रगति की प्रेरणाओं की उपेक्षा करके भी वह लोक संस्कृति और लोक जीवन के मूल्यों को मजबूती से पकड़े रहना चाहता है । आंचलिक उपन्यासों में इस लोक-संस्कृति के चित्रण से कथ्य को प्रामाणिकता मिलती है और शिल्प को भी विरूप मिलता है । "बूँद और समुद्र" में ताई का चरित्र लोक तत्वों का संवाहक है । इसीलिए उसका चरित्र वैचित्र्यपूर्ण होकर आकर्षण-केन्द्र बन जाता है ।

लोक संस्कृति का एक भाग लोक साहित्य और लोकोक्तियाँ भी हैं । आंचलिक मानस लोक साहित्य में हँसता-खेलता है, रोता-सिसकता है । लोकगीतों की पंक्तियाँ आंचलिक उपन्यासों में प्रयुक्त होती हुई दिखाई पड़ती है और इनके द्वारा गाँव और अंचल का रागात्मक जीवन अभिव्यक्त होता है । इन्हें अपनाने लोकसाहित्य और लोक विश्वासों में आंचलिक जीवन की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक,

धार्मिक और नैतिक समस्याओं का उद्घाटन भी हो जाता है । इस प्रकार से आंचलिक उपन्यास आंचलिक संस्कृति के बीच उगते-बढ़ते जनजीवन का प्रामाणिक दस्तावेज बन जाता है । इस प्रकार लोकसंस्कृति को भी आंचलिकता का एक प्रमुख तत्व माना जाना चाहिए ।

लोकतत्व और लोकजीवन मानव-शास्त्र के भी विषय हैं । मानव-शास्त्र मानवीय संस्कार का क्रम-बद्ध इतिहास प्रस्तुत करता है । यद्यपि इस विज्ञान का प्रयोग जान-बूझकर उपन्यासकार नहीं करता तथापि इसकी कुछ सामग्री लोकजीवन के चित्रण में आ जाती है । लोकजीवन की सिद्ध और सबल झाँकी करने के लिए उपन्यासकार को लोकजीवन में घुल जाना पड़ता है ।[32]

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने एक रूपक की सहायता से जन-संस्कृति के महत्व को अंकित किया है -- "भूमि राष्ट्र का शरीर है जन उसका प्राण है और जनकी संस्कृति उसका मन है । शरीर, प्राण और मन, इन तीनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र की आत्मा का निर्माण होता है ।"[33] इस आत्मा का उद्घाटन आंचलिक तादात्म्य से होता है ।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

32. विस्तार के लिए द्रष्टव्य --
हिंदी उपन्यास सिद्धान्त और विवेचन : सम्पा० महेन्द्र और मक्खनलाल शर्मा तथा
हिंदी उपन्यास : सिद्धान्त और समीक्षा - मक्खनलाल शर्मा

33. पृथिवी पुत्र : पृ० 27

## 2·3 व्यक्ति बनाम समूह :

आंचलिक जीवन-क्रम एक सामूहिक प्रकृति का होता है। अन्य जगह में जिस प्रकार समूह व्यक्तियों में बिखरता जाता है और व्यक्ति अपनी सत्ता बनाए रखने के व्यामोह और प्रयत्न में लीन हो जाता है वह स्थिति अंचल में नहीं होती। अंचल में समूह प्रधान होता है। अंचल के जन का सामूहिक चरित्र-चित्रण लेखक का ध्येय बन जाता है इसीलिए यह कहा जाता है कि आंचलिक उपन्यास में समग्र अंचल ही नायक बन जाता है। अंचल का अपना एक स्वतन्त्र स्वभाव, व्यक्तित्व और चरित्र होता है। कुछ पात्र व्यक्तिगत रूप से उभरते भी हैं तो लगता है कि सारा समूह ही उनके साथ उठ रहा है। यह प्रवृत्ति सभी उपन्यासों में तो नहीं मिलती किन्तु अधिकांश में मिलती है। सामूहिकता उस समय और भी अधिक सघन हो जाती है जब जन-जातियों या आदिवासियों का जीवन उपन्यासगत होता है। उदाहरण के लिए राजेन्द्र अवस्थी के "जंगल के फूल" का अंचल लिया जा सकता है। इसमें सामूहिक जीवन का सशक्त चित्रण मिलता है। रांगेय राघव का "कब तक पुकारूँ" उपन्यास भी एक जातीय उपन्यास है जिसमें समूह ही उपन्यास का प्राण-संस्थान बना है। किन्तु जहाँ जन-जातियों का वर्णन नहीं भी हुआ है वहाँ भी पिछड़ी हुई जातियों का जीवन सामूहिक प्रकृति का ही चित्रित किया गया है। "बलचनमा", "कुम्भीपाक", "केरांचल" में पिछड़ी हुई जातियाँ सामूहिक जीवन जीती हुई मिलती है।

अंचल के नायकत्व को स्पष्ट करते हुए जैनेन्द्र जी ने लिखा है -- "आंचलिकप्रवृत्ति वह दृष्टि है जिसके केन्द्र में अमुक पात्र या चरित्र

उतार नहीं, जितना वह स्वयं भू-भाग अंचल है। पात्र स्वयं में कुछ नहीं, मानो अमुक समष्टि के जीवन की यथार्थता को उभार देने में ही उनकी चरितार्थता है।"[34] तात्पर्य यह है कि "समष्टि जीवन का यथार्थ दर्शन एवं पात्र के रूप में सम्पूर्ण भू-भाग का चारित्रिक चित्रण आंचलिकता मानी गई है।"[35] डॉ० रामदरश मिश्र ने अंचल के नायकत्व के संबंध में अपना अभिमत इस प्रकार दिया है : --
"आंचलिक उपन्यासों में अंचल अपनी सम्पूर्ण विशिष्टता और समग्रता के साथ नायक होता है।"[36] डॉ० नगीना जैन ने इस विचार को कुछ और विस्तार से इस प्रकार कहा है कि "मेरे विचार से अंचल एक जीवन्त व्यक्तित्व है, नायक है। जैसे एक व्यक्तित्व की कुछ निजी विशेषताएं होती हैं, उसकी प्रकृति होती है, जो उसे अन्य अनेकानेक व्यक्तित्वों की सामान्य गति-स्थिति से पृथक करती है, ठीक वैसे ही अंचल अपनी सम्पूर्ण विशिष्टता एवं समग्रता के साथ एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व होता है, जीवन्त और अटल।[37]

## 2·4 सामाजिक चेतना : यथार्थवाद : इतिहास :

आंचलिक उपन्यास के आन्दोलन का संबंध यथार्थवादी सामाजिक चेतना या समाजशास्त्रीय सूक्ष्म-दृष्टि से जोड़ा जाता है।

---

34· सम्पा· महेन्द्र भटनागर शर्मा : हिंदी उपन्यास : स्थिति और विश्लेषण – पृ· 177 पर उद्धृत

35· श·क·अडवे : हिंदी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति : पृ· 23

36· हिंदी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा पृ· 186

37· आंचलिकता और हिंदी उपन्यास : पृ· 1

किन्तु आंचलिक उपन्यास में जो यथार्थ प्रकट होता है वह समाजवादी यथार्थ दृष्टि से कुछ भिन्न है । समाजवादी दृष्टि से यथार्थ का उदय वर्ग-संघर्ष से होता है किन्तु आंचलिक उपन्यासों में जो यथार्थ प्रकट होता है वह केवल वर्गीय द्वन्द्व से नहीं, समग्र वातावरण से फूटता है । आंचलिक उपन्यास इस रूढ़ यथार्थवाद से हटकर अंचल को एक सांस्कृतिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है । इस पृष्ठभूमि में समग्र जीवन का यथार्थ विस्तार-प्रसार है । एक प्रकार से यह वैज्ञानिक दृष्टि है जो समग्रता में विश्वास करती है, रूढ़ यथार्थवाद आर्थिक गतिविधि और व्यवस्था पर केन्द्रित हो जाता है । इसके विपरीत आंचलिक उपन्यास भौगोलिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक बिन्दुओं पर भी यथार्थ को उभरते हुए देखता है । रूढ़ यथार्थवाद व्यक्ति को केन्द्र न मानकर समाज को केन्द्र मानता है । आंचलिक उपन्यासकार जिस व्यक्ति को उकेरता है वह अपने आप में अनूठा है ।

आंचलिक उपन्यास में एक ऐसी व्यापक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि सामने आती है जो मध्यवर्गीय यथार्थवादी दृष्टि से और उसके प्रतिमानों से अलग होती है । तात्पर्य यह है कि आंचलिक उपन्यास यथार्थवाद को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखता और प्रस्तुत करता है ।

आंचलिक उपन्यास को प्रगतिशील लेखन और प्रगतिवादी आन्दोलन से जोड़कर भी देखा जाता है । डा० चन्द्रभूषण पाण्डेय ने प्रगतिशील लेखक संघ के उदय के साथ आंचलिक उपन्यास के आन्दोलन को रखकर उसको यथार्थवाद से जोड़कर देखा है : हिंदी क्षेत्र में आंचलिकता "राष्ट्रीय आन्दोलन और समाजवादी विचारधारा के प्रभाव के अन्तर्गत विकसित यथार्थवादी प्रवृत्ति के फलस्वरूप उत्पन्न हुई है ।[38] यहाँ भी

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

38. हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में जीवन-सत्य पृ० 2

यह बात कही जा सकती है कि जो प्रगति चेतना आंचलिक उपन्यासों में दिखाई पड़ती है वह किसी सैद्धान्तिक अध्यारोपण का प्रभाव नहीं है। अंचल के अपेक्षाकृत ठहरे हुए, यथास्थिति में ग्रस्त, पिछड़े हुए और जड़ जीवन को परिवर्तन की प्रक्रिया में लानेवाली और गतिशीलता देने वाली शक्तियाँ धीरे-धीरे पैदा होती है इसीलिए आंचलिक उपन्यासों की वस्तु ठहराव से क्रमशः और धीरे-धीरे गति की ओर चलने का लेखा प्रस्तुत करती है। नए जमाने की प्रेरणाएं जिस प्रकार आंचलिक ठहराव में प्रवेश करके परिवर्तन के सत्य को धीरे-धीरे उजागर करती है वह आंचलिक उपन्यासकार देखता और दिखाता है। इसीलिए आंचलिक उपन्यास संस्कृति से सामाजिक चेतना की ओर अग्रसर होते हैं। निम्नलिखित तालिका सूची से यह बात स्पष्ट हो जाती है --

| | | |
|---|---|---|
| नागार्जुन | 1. "नई पौध, "बलचनमा" | ग्रामीण सामाजिक |
| | 2. "वरुण के बेटे" | सामाजिक राजनीतिक |
| | 3. "कुम्भीपाक" | सामाजिक समस्याप्रधान |
| रांगेय राघव | "कब तक पुकारूं" | सांस्कृतिक सामाजिक |
| फणीश्वरनाथ रेणु | 1. "परती परिकथा" "मैला आंचल" | ग्रामीण, सामाजिक, राजनीतिक |
| | 2. "जुलूस" | ग्रामीण, सामाजिक, भावात्मक |
| उदयशंकर भट्ट | "सागर, लहरें और मनुष्य" | सामाजिक |

इन सूत्रों से यह प्रवृत्ति स्पष्ट हो जाती है कि वैयक्तिक, सांस्कृतिक, लोकतात्त्विक और रागात्मक पृष्ठभूमि पर अपने-अपने उपन्यासकार सामाजिक चेतना से आन्दोलित होने लगा है किन्तु यह सामाजिक चेतना स्वतः विकसित होती है। अपने विकास के लिए इस चेतना को विस्तार, द्वन्द्व और संघर्ष सहना पड़ता है, यह भी वैयक्तिक उपन्यास के कथ्य का प्रमुख भाग बनता है।

## 2·5 परिवर्तन : आधुनिकीकरण :

अंचल शब्द के आते ही यह अनुमान किया जाता है कि यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ आधुनिकीकरण की प्रक्रिया या तो आरंभ ही नहीं हुई और यदि आरम्भ हुई भी है तो उसकी गति अत्यन्त मन्द होगी। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कई स्तर हो सकते हैं। किन्तु आधुनिक या आधुनिकीकरण शब्द आते ही तकनीकी और आर्थिक दृष्टि प्रमुख हो जाती है। व्यापार और वाणिज्य का विस्तार, उत्पादन तत्व का विकास, नई तकनीकों की खोज, नगरीकरण और उद्योगीकरण जैसे सूत्र आधुनिकता के साथ अभिन्न रूप से जुड़े हुए मान लिए जाते हैं।[39] किन्तु इन सूत्रों के आधार पर आधुनिकता का पूर्ण रूप खड़ा नहीं होता। आर्थिक पक्ष के अतिरिक्त इसके संवेदनात्मक और व्यक्तित्वपरक पक्ष भी

---

39. "It (Modernisation) has sometime been used almost interchangeably with urbanization, industrialisation and Westernisation"
Shalini Bhushan : Modernisation and social change : A case study of the Gaddi Tribe of Himachal Pradesh (India) Philosophy and social Action Vol VI (No.I) Jan-March 1980 Page 33.

है । व्यक्तित्वका सम्बन्ध व्यक्ति से है और संरचना का समाज से । इन स्तरों पर भी आधुनिकता को जानना-पहचानना चाहिए ।[40] इन दोनों पक्षों के लिए अलग-अलग नाम भी सुझाए गए हैं -- उद्योगीकरण तथा आधुनिकीकरण । यह कोई आवश्यक नहीं है कि देश और काल के आयामों में इन दोनों की स्थिति साथ-साथ ही हो ।[41] यह भी आवश्यक नहीं है कि इन दोनों की प्रगति सभी देशों में समान हो और यह भी कि एक ही देश के विभिन्न भू-भागों में भी इनकी प्रक्रिया असमान भी हो सकती है । उदाहरण के लिए अमेरिका में रहनेवाले रेड इंडियन और हब्शियों के क्षेत्रों में आधुनिकीकरण की गति अत्यन्त मन्द है । इसी प्रकार भारत में अशिक्षित किसानों, हरिजनों और आदिवासियों में आधुनिकीकरण की गति बहुत धीमी है । इस दृष्टि से केवल यह क्षेत्र है जो आधुनिकीकरण की दौड़ में बहुत पिछड़ा हुआ है । यह पिछड़ापन ऐतिहासिक उपचारों के मध्य में अनेक प्रकार से जारी है । किन्तु वस्तु-स्थिति कुछ इस प्रकार की है कि जब राष्ट्र के विकसित तबकों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पुष्ट हो जाती है तो अन्य पिछड़े हुए वर्ग भी इस प्रक्रिया से निरन्तर अछूते नहीं रह सकते । जो वर्ग कृषिकार्य में लगे हुए हैं उनको ट्रैक्टर की आवाज सुनाई पड़ने लगती है । गांव में जो जमीन खाली पड़ी हुई है वह उद्योगपतियों को आकर्षित

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

40. Smith, David and Alex Inkles 1966, The OM scale : A Comparative socio-Psychological measure of individual modernity, Sociometry 29, 353-77.

41. Horowitz Irving L. 1972 "Qualitative and quantitative research problems in comparative international development" in Social Development. Edited by M.Stanley, P.P.6-36, New York : Basic Books, Inc.

करती है । इसके साथ ही रूढ़ियों और अन्धविश्वासों पर भी इस प्रक्रिया का प्रभाव पड़ता है । मनोरंजन के रूप बदलते हैं । किन्तु दूसरी ओर रूढ़ियों और परम्पराओं की वे शक्तियाँ भी सक्रिय रहती हैं जो आधुनिकता और आधुनिकीकरण को सन्देह की दृष्टि से देखती है । यह द्वन्द्व भी आंचलिक उपन्यासों में अभिव्यक्त हुआ है । नागार्जुन और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में ऐसी परिस्थितियाँ और चरित्र उभारे गए हैं जिनमें आधुनिकता का प्रवेश होता है और धीरे-धीरे अंचल आधुनिकता की दृष्टि से उठता चला जाता है । डॉ० रमेशकुंतल मेघ ने "बलचनमा" के संबंध में अपना अभिमत इस प्रकार स्पष्ट किया है --

"इस लघु उपन्यास की घटनाएं साधारण है, पात्र सामान्य है । हरेक घटना से बलचनमा जुड़ता है क्योंकि रचना-कर्म आत्मकथात्मक है । घटनाओं के अन्तराल से बलचनमा की सामूहिक ( वर्गीय ) तथा नई ( क्रान्तिकारी ) चेतना का शनैः शनैः अभ्युत्थान होता है । साधारण किसान मजूरों के अति साधारण परिवेश के अन्तराल से ही विशिष्ट अनुभवों और समस्याओं का जो सामान्यीकरण ( जनरलाइजेशन ) होता है वह कदम-कदम पर बलचनमा को आत्मोत्तीर्ण ( ट्रेण्ड ) करता है तथा उसकी निजी चेतना को सामाजिक चेतना के ऊँचे स्तर पर ले जाता है । यह सब कुछ पूर्व के देहाती जीवन की अतिसाधारण, अतिसरल घटनाओं के जरिए होता है । इसलिए देहाती बलचनमा का यह रूपान्तरण ही भारत के साधारण जनजीवन का "आधुनिकीकरण" है । इस तरह नई तथा "सामूहिक लोक चेतना" का स्वरूप संक्रान्ति अभ्युदय ही भारतीय लोक के वैज्ञानिक आधुनिकताबोध का महाप्रश्न है जो सन् सैंतीस के बाद आजकल सन् पचहत्तर में तो बहुत ज्यादा सच है । इसप्रकार बलचनमा में आंचलिकता और आधुनिकता के बीच आपसी

संबंधों के सामाजिक, राजनीतिक और मानवीय सन्दर्भों की प्रामाणिक तलाश हुई है । आधुनिकता और वैचारिकता से संवलित अर्थात् "आधुनिक वैचारिकता" और "वैचारिक आधुनिकता" के दोनों अंतर्द्वन्द्व बाबा बटेसरनाथ में तो सर्वाधिक खुले हैं। "सफेद मेमने" (मणि मधुकर), धरती धन न अपना (जगदीश चन्द्र) इसी क्रम के विस्तार हैं ।"[42]

आधुनिकता की दौड़ में विकृतियाँ भी उत्पन्न होती है । विज्ञान ने मानव-मूल्यों और नैतिक मान्यताओं में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है । नैतिक मूल्य गिरे हैं और विश्वास के स्थान पर तर्क की स्थापना हुई है । यह आधुनिक युग में मूल्यों का अवमूल्यन ही कहा जायगा । पूँजीवाद और औद्योगीकरण के कारण भी मानव-मूल्य गिरे हैं । सारे जीवन-मूल्यों को हानि-लाभ के आधार पर तौला जाने लगा है । अनियन्त्रित अनास्था और भीड़ के दबाव का अनुभव भी मानव-मूल्य करने लगे हैं । विघटन, पलायन, अलगाव, भटकाव, तनाव जैसी मानसिक विकृतियाँ भी आधुनिकता के साथ लगी हुई है । सीधा-सादा वैचारिक मानव भी इन विकृतियों का शिकार हो रहा है । वैचारिक उपन्यासों में यथार्थ की यह कटुता भी किसी न किसी रूप में आई है । इन सबके आधार पर ही आधुनिकता और आधुनिकीकरण की वैचारिक प्रामाणिकता को देखा और समझा जाता है ।

---

42. आम आदमी के हक की लड़ाई के लिए प्रतिबद्ध "[illegible]" "क्योंकि समय एक शब्द है" - पृ० 287-88

## 3. आंचलिक उपन्यास : एक आन्दोलन :

### 3.1 पिछली प्रतिक्रिया :

कई देशी-विदेशी विद्वानों ने आंचलिक उपन्यासों के प्रणयन, प्रसार और लोकप्रियता को एक आन्दोलन के रूप में देखा है। वास्तव में समाज या साहित्य क्षेत्र के आन्दोलनों की पृष्ठभूमि में प्रायः समान तत्त्व विद्यमान रहते हैं। इनमें से एक तत्त्व है ठहराव, यथास्थिति, ऊब अथवा एकरसता के प्रति विद्रोह की भावना। आधुनिक युग में विज्ञान, तकनीक और यांत्रिकी जैसे तत्त्वों ने, विशेष रूप से पाश्चात्य जीवन को सामान्यीकृत, सपाट और एकरस बना दिया था इस जीवन का चित्रण उबानेवाला हो गया क्योंकि वैशिष्ट्य और वैचित्र्य के नुकीले आधार समाप्त हो गए। फलतः नए कथ्य, नए शिल्प और अभिव्यंजना की नई भंगिमाओं की तलाश में वहाँ का उपन्यासकार अंचलों की ओर लौटा। इस प्रवृत्ति के परिचायक आरम्भिक उपन्यासकार ये कहे जा सकते हैं : मेरिया एजवर्थ (1767 - 1849) सर वाल्टर स्कॉट (1771 - 1832) तथा टॉमस हार्डी (1840 - 1928) आदि। ये सभी ऊब और एकरसता की पीड़ा से व्यस्त उपन्यासकार थे। प्रसिद्ध समाजशास्त्री बीवर्थ ने अपनी पुस्तक "राष्ट्र आंचलिकविकेशन" में लिखा कि आंचलिकता का आन्दोलन उस एकरसता का विरोधी था जो हमारे राष्ट्रीय जीवन, संस्कृति और कल्पना में निरन्तर ह्रास करती जा रही थी। इटली में "मेतिमो बोतेम्पेली" ने आंचलिकता को बढ़ावा दिया और इसे नवयूरोपीयतावाद के विरोध में उत्पन्न स्वाभाविक प्रक्रिया कहा। अमेरिका में हेनरी

डेविडसन, एलेनटेट और जान क्रो रैन्सम आदि इस आन्दोलन के नेता थे। इस आन्दोलन को "नव क्षितिज आन्दोलन" (न्यू फ्रन्टियर्स मूवमेंट) भी कहते हैं। इस आन्दोलन के लेखकों का कथन है कि अमरीकी राष्ट्रीयता और सार्वभौम संस्कृति के निर्माण के लिए क्षेत्रीय जीवन की सारी विशेषताओं को उभारकर सामने रखना आवश्यक है। इन लोगों ने नगर-अधिपत्य, औद्योगीकरण से उत्पन्न एकरूपता तथा सत्ता के केन्द्रीकरण के विरोध में इस आन्दोलन के औचित्य पर बल दिया। उनके विचार से फ्रांस से आई आधुनिकता उनकी संस्कृति को नष्ट कर रही थी।[43] डेनियल जी हॉफमैन आंचलिकता को स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन की एक अभिव्यक्ति मानते हैं जो उन सभी राष्ट्रों के साहित्य में वर्तमान है जो इससे प्रभावित है।[44]

जिस ऊब और एकरसता की परिस्थितियों का उल्लेख ऊपर किया गया है उसी प्रकार की ऊब और एकरसता हिन्दी तथा सामान्य रूप से अन्य भारत-भाषी क्षेत्रों के लेखकों ने अनुभव की। एकरसता के कारण भिन्न हो सकते हैं। डा० इन्दुप्रकाश पाण्डेय ने इस भिन्नता की ओर संकेत किया है। उनका कथन है कि हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों को अंग्रेजी के "रीजनल नावल" की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में रखकर देखना गलत है क्योंकि भारत के हिंदी क्षेत्र में बीसवीं शती के पाँचवे दशक में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियाँ

---

43. यह परिचय प्राय: डा० शिवप्रसाद सिंह के लेख -- "आंचलिकता और आधुनिक परिवेश" कल्पना मई 1965 पृ० 30 पर आधारित है।

44. द्रष्टव्य - ए० के० कडवे : हिंदी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति - पृ० 33

उन्नीसवीं शती के इंग्लैंड से बिल्कुल भिन्न थी और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों और परम्पराओं में गहरा अन्तर था ।[45] डा० शिवकुमार सिंह जी का मत भी कुछ इसी प्रकार का है । उनके अनुसार हमारी स्थिति अमेरिका से नितान्त भिन्न है । नागरिक सभ्यता एवं औद्योगीकरण से उत्पन्न एकाकीपन का रूप भारतीय समाज में अभी इतना प्रस्फुटित नहीं हुआ कि उसे एक समस्या का रूप दिया जाय ।[46]

दूसरी ओर आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी हैं जो परिस्थितियों की भिन्नता का समर्थन नहीं करते उनकी दृष्टि से जो प्रेरक शक्तियां तथा ऐतिहासिक भूमिका पश्चिम में लिखे उपन्यासों की हैं प्रायः वे ही हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की भी है अतः हिंदी के आंचलिक कृतियों के स्वरूप और निर्माण की मूलवर्ती प्रेरणाओं को जानने के लिए पश्चिमी उपन्यासों का अध्ययन आवश्यक है ।[47]

इस विवाद को अधिक न बढ़ाते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आंचलिक आन्दोलन की मूलभूमि ( देश ) भारत और पाश्चात्य जगत् में एक ही है एकाकीपन, ऊब और सामान्यीकरण । इस मूलभूमि पर बाहरी संरचना ( ऊपरी ढांचा ) भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न हो सकती है । अमेरिका और यूरोप में ये रूप विज्ञानवाद और बढ़ती हुई नागरिक सभ्यता के कारण उत्पन्न

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

45. हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में जीवन-सत्य पृ० 2
46. "आंचलिकता और आधुनिक परिवेश" "कल्पना" मई, 1965 पृ०31
47. प्रकाशवाजपेयी की पुस्तक"हिंदी के आंचलिक उपन्यास" की भूमिका में प्रकट मत ।

हुए हैं और भारत में राष्ट्रीयता और प्रगति के वातावरण ने इनको जन्म दिया । इस अन्तर के होते हुए भी मूल सिद्धान्त में कोई अन्तर नहीं पड़ता ।

### 3·11 मध्यवर्गीय चित्रण की रुचि के प्रति :

उन्नीसवीं शताब्दी में जिस पूँजीवाद या पूँजीवादी व्यवस्था का उदय हुआ उस ने मध्यवर्ग को भी उत्पन्न किया यह मध्य वर्ग ऐसा नवोदित वर्ग था जिसके साथ साहित्य और विशेष रूप से उपन्यास जुड़ता गया । उपन्यास- साहित्य के लेखन में भी इसका हाथ रहा और सारा चित्रण भी इसी वर्ग का हुआ । इसी वर्ग की मानसिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का निरूपण हुआ और इसी वर्ग की भाषा शैली उपन्यासों में प्रयुक्त हुई । भारत में भी यह वर्ग विभिन्न रूपों में फैल गया । वकील, साहित्यकार, पत्रकार, सौदागर सरकारी और गैर सरकारी कर्मचारी, शिक्षक, पटवारी, मुनीम ----- न जाने कितने रूपों में मध्यवर्ग की स्थिति अस्तित्व में आई । मध्यवर्गीय उपन्यास लेखक इन सभी को उपन्यास में उभारने लगा । ऐतिहासिक कार्यक्रम में भी इस वर्ग का हाथ रहा । सांस्कृतिक दृष्टि से यह वर्ग संकुल और गतिशील रहा । सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और साहित्यिक नेतृत्व भी इसके हाथ में आया। पूर्व और पश्चिम के समन्वय की संभावना को भी इस वर्ग ने बल दिया तथाकथित आधुनिकतावाद का संवहन भी इसी वर्ग ने किया । यहाँ तक कि भारतीय राष्ट्रीय चेतना और भारतीय आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में भी इसका वर्चस्व प्रकट हुआ । तात्पर्य यह है कि देश की सामाजिक

गतिविधि पर मध्यवर्ग छा गया और साहित्य भी प्रायः इसी वर्ग पर केन्द्रित हुआ । एक ओर भारतीय पुनरुत्थान में इसका सक्रिय सहयोग रहा तो दूसरी ओर "इस मध्यवर्ग ने यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की थी और वह बौद्धिक जिज्ञासा और प्रगति की आकांक्षा से ओत-प्रोत था और उसी पर समाज के निर्माण का उत्तरदायित्व था, क्योंकि उच्चवर्ग स्वार्थलिप्त, आर्थिक विषमताओं से पीड़ित और नवीन प्रभावों से दूर था और बहुसंख्यक निम्न वर्ग अशिक्षित तथा अंधकार में लिप्त, फलतः कुछ कर सकने में असमर्थ था"[48] नवोत्थान, नवजागरण और नवनिर्माण के कार्य में मध्यवर्गीय उपन्यासकार ने भी अपना योगदान दिया । इसका महत्व यह रहा कि इसने साहित्य का गठबन्धन समाज के साथ किया ।

मध्यवर्गीय जीवन का सम्बन्ध विशेष रूप से नगर के साथ था । इसलिए उपन्यासों में नागरिक सभ्यता, नागरिक जीवन की जटिलता, आधुनिकता, प्रतियोगिता आदि मुद्दों को उभारकर रखा गया, जैसे जीवन का सारा यथार्थ आधुनिक संस्कृति और उसकी विकृतियाँ नगरों में ही मिलती हों । तात्पर्य यह कि उपन्यासकारों के लिए नगर ही मुख्य कथा-स्थल हो गए । प्रारम्भिक उपन्यास मध्यवर्गीय लेखकों के द्वारा प्रस्तुत नगर-जीवन का दस्तावेज ही है।[49] एक प्रकार से साहित्य का नगरीकरण ही हुआ ।

उपन्यास-साहित्य मध्यवर्गीय व्यवसाय का आधार भी हो गया । इसके लिए एक व्यापक बाजार मिला । व्यापक रूप से इस

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

48. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय : "हिंदी उपन्यास : उपलब्धियाँ", पृ. 10

49. डॉ० बदरीदास : "हिंदी उपन्यास, पृष्ठभूमि और परम्परा" पृ. 105

साहित्य को लोकप्रियता मिली और उपन्यास का व्यवसाय बढ़ने लगा । इसका परिणाम यह हुआ कि ओछे-बुरे फिल्मी रूढ़ियों से भरे हुए जासूसी और ऐय्यारी तत्वों से युक्त तथा लिजलिजी भावुकता से सराबोर उपन्यास बाजार में आए ।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है । औपन्यासिक विधा पर मध्यवर्गीय मानस और जीवन छाया रहा । साहित्यिक और सामाजिक आन्दोलन भी इसी धुरी के इर्द-गिर्द फले-पनपे । नगरीय परिवेश को व्यापक अभिव्यक्ति मिली । नगरों के यांत्रिक जीवन की ऊब उपन्यासों में बढ़ती गई । नगरीय जीवन की औपचारिकता से जीवन की स्वाभाविकता लुप्त हो गई । मानवीय मूल्यों का विघटन और नैतिक मूल्यों के अधःपतन की स्थितियों का चित्रण पुराना होने लगा इसी परिस्थिति में आंचलिक उपन्यासों के आन्दोलन ने जन्म लिया, यद्यपि इन उपन्यासों के लेखक भी प्रायः मध्यवर्गीय रहे हैं, तथापि कथ्य नगर से अंचलों में वापस आ गया । यहाँ का जीवन पुराना होते हुए भी नया लगने लगा और आंचलिक सामग्री की शिल्पगत संभावनाएं जगमगाने लगीं । परिवर्तन की इस गति को आंका पं० नन्ददुलारे वाजपेयी ने इस प्रकार कहा है "इधर उपन्यास की विषय-वस्तु और लेखन-प्रक्रिया में इस प्रकार की स्थिरता अथवा गतिहीनता की स्थिति को देखकर कुछ लेखकों ने अपने लेखन की पुरानी परिपाटी बदली और नागरिक जीवन की भूमिका को छोड़कर दूरवर्ती और विलक्षण रीति-नीति वाली जातियों और स्थितियों के चित्रण को अपनाया । उनके लिए यह नवतम प्रयोग था ।"[50]

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

50. आलोचना - 1957 [सम्पादकीय]

यह कार्य भी महत्वपूर्ण उपन्यासकारों ने ही किया । यह नई पश्चिमी विचारधारा और साहित्य के सम्पर्क में भी आया । वह इस तथ्य से भी अवगत हुआ कि सारे संसार में उपन्यासकार नगरीय जीवन को छोड़कर ग्रामांचल में अपनी समस्त रचनात्मकता के साथ प्रविष्ट हो रहे थे । इनको विदेशी लेखकों से प्रेरणा भी मिली और दिशा भी । फलतः भारतीय अंचल भी उपन्यासों में चित्रित होने लगे ।

### 3.12 व्यक्तिवादी प्रवृत्ति की एकरसता के प्रति :

व्यक्तिवाद और समाजवाद आधुनिक जीवन-चिन्तन के दो ध्रुवान्त हैं । पहले चिन्तन का केन्द्र-बिन्दु व्यक्ति होता है । व्यक्ति की अस्मिता की सुरक्षा व्यक्तिवादी दर्शन में निहित होती है । व्यक्ति और समाज के द्वन्द्व में व्यक्ति के अस्तित्व और उसकी स्वतन्त्रता का पक्ष लिया जाता है । व्यक्ति के बाहरी सामाजिक परिवेश की अपेक्षा व्यक्ति के अन्तःप्रदेश को विश्लेषित करनेवाले दर्शन भी व्यक्तिवादी प्रवृत्ति के होते हैं । मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण, जैसे अनुशासन व्यक्ति के विश्लेषण को एक वैज्ञानिक और दार्शनिक भूमिका प्रदान करते हैं अति-यथार्थवाद व्यक्ति मन की अन्तर्गुहाओं के तथ्यों और सत्यों को लेकर चलता है । प्रकृतिवाद और अस्तित्ववाद जैसे दर्शन भी व्यक्ति के लिए समर्पित हो जाते हैं ।

व्यक्ति की जिस स्थिति का आकलन किया गया है उसका संसार भर के साहित्य पर प्रभाव पड़ा है । विशेष रूप से साहित्य की

उपन्यास विधा इन विचारधाराओं से प्रभावित हुई है । इस वस्तुस्थिति की प्रतिक्रिया में समाजवादी चिन्तन और दर्शन जन्म लेता है । इसकी दृष्टि में सामाजिक इकाई ही सर्वोपरि है । सारे समाजवादी दर्शन, जिनमें मार्क्सवाद का प्रमुख स्थान है, समाज की सत्ता को स्वीकार करके चलते हैं । इस के चरित्र उतार-चढ़ाव में व्यक्ति गौण हो जाता है । समाजवादी विचारधारा से भी संसार का साहित्य प्रभावित हुआ है । इस प्रकार से राजनीतिक क्षेत्र की भाँति साहित्य भी दो खेमों में बंट गया है — व्यक्तिवादी साहित्य और समाजवादी साहित्य ।

यद्यपि आंचलिक उपन्यासों की विधा पूँजीवादी देशों में भी उगी और पनपी, तथापि इस विधा को समाजवादी और यथार्थवादी दृष्टि ने सुदृढ़ भूमिका प्रदान की । कई विद्वानों ने आंचलिक साहित्य को व्यक्तिवादी साहित्य की प्रतिक्रिया के रूप में देखा है । कृष्ण वाजपेयी के अनुसार आंचलिक उपन्यासों की धारा व्यक्तिवादी साहित्य के विद्रोह में ही प्रवाहित हुई ।[51] राजेन्द्र अवस्थी ने भी लगभग इसी प्रकार की बात कही" ...... आज के व्यक्तिवादी विचारक साहित्य के विरुद्ध और प्रेमचन्द युग की जर्जर और टूटती हुई परम्पराओं का मोह छोड़कर नए युग के नए मानवों को अपनी समर्थ लेखनी से सामने उभारकर लाने का काम इस तीसरी धारा ने किया है जिसे "आंचलिक साहित्य कह सकते हैं" ।[52]

---

51. हिंदी आंचलिक उपन्यास पृ. 4

52. सारिका, अक्टूबर 1960

डा० ज्ञान अस्थाना ने अपना अभिमत इस प्रकार दिया है — "इस व्यक्तिवाद के विरोध में और विद्रोहस्वरूप ही हिंदी उपन्यास में एक ऐसी चेतना लहर उठी थी जो जीवन की स्वाभाविक दुर्बलता एवं सबलता के साथ देश के नवोन्मेष के स्वागतार्थ उत्सुक थी । नवीनता के इस आग्रह ने ही लेखकों का ध्यान नागरिक जीवन से हटाकर दूरवर्ती विलक्षण समाज की ओर आकर्षित किया । इन्हीं उपन्यासों ने आगे चलकर आंचलिक उपन्यासों की संज्ञा ग्रहण की ।[53]

तात्पर्य यह है कि आंचलिक साहित्य व्यक्ति से समूह और समाज की ओर चलने की टेक को लेकर चला है । एक भूखण्ड के व्याज से समग्र समाज और उसके यथार्थ को उजागर करना ही इसका लक्ष्य है ।

3·2 <u>सामयिक प्रेरणा :</u>

3·21 <u>गांधी जी और राष्ट्रीयता :</u>

सामयिक प्रेरणा के रूप में दो बातें विशेष रूप से कही जा सकती हैं : गांधी जी की ग्राम-दृष्टि और प्रगतिशील लेखकों का उदय । भारतीय स्वतन्त्रता से पहले और पीछे भी गांधी जी देश के नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को गांवों की ओर जाने की प्रेरणा देते रहे क्योंकि भारत का निवास गांवों में है । इस प्रकार भारतीय

---

53· सरस्वती, जनवरी 1967

प्रमुख राष्ट्रीय विकास और संगठन की दृष्टि से आकर्षक बने । सन् 1935 में इन्दौर साहित्य के सभापति पद से महात्मा गांधी ने साहित्यकारों को भारतीय गांवोंका स्मरण कराया था । इसके फलस्वरूप हिंदी के कथा-लेखक तथा कवि भी गांवों की ओर मुड़े तथा ग्रामीण जीवन के चित्र और ग्राम-समस्याओं को उजागर करने की प्रतिबद्धता को उन्होंने अनुभव किया ।[54] डॉ० चन्द्रप्रकाश पांडेय के अनुसार भी, आंचलिकता "राष्ट्रीय आन्दोलन और समाजवादी विचारधारा के प्रभाव के अन्तर्गत विकसित यथार्थवादी प्रवृत्ति के फलस्वरूप उत्पन्न हुई है ।"[55] आजादी के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था के वातावरण में भी आंचलिक उपन्यासों की स्थिति देखी जा सकती है । डॉ० कदम ने स्पष्ट लिखा है : "स्वातन्त्र्य प्राप्ति के बाद देश में लोकतन्त्र की भावना बद्धमूल होने लगी । अंचल-अंचल के लोगों में एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं आत्मीयता का भाव-निर्माण होना आवश्यक था । राष्ट्रीय तादात्म्य एवं भावनात्मक एकता की दृष्टि से भारत जैसे खण्ड : प्राय विशाल देश के लोगों में इस प्रकार के परस्पर प्रेम एवं सदभाव की भावना की बहुत आवश्यकता थी दूसरे शब्दों में आंचलिक उपन्यासों की निर्मिति वर्तमान युग की मांग थी ।"[56]

## 3.22 प्रगतिशील प्रवृत्तियां :

रूसी क्रान्ति के फलस्वरूपसंसार भर के साहित्यिकों का

---

54. डॉ० ज्ञान अस्थाना ने "हिंदी उपन्यासों में ग्राम-समस्या" नामक शोधप्रबन्ध में इस तथ्य को विशेष उभारा है ।
55. हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में जीवन-सत्य पृ० 2
56. "हिंदी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति" पृ० 69

ध्यान सामान्य जन या आम आदमी या सर्वहारा की ओर गया । यह सामान्य जन पिछड़े हुए भूखण्डों में रहता है, कारखानों में यह श्रमजीवी है, खेतों में यह पसीना बहाता हुआ किसान है, वन्य-जीवन बितानेवाला वनवासी है । साहित्य में उच्चवर्ग और मध्यवर्ग का जो आधिपत्य था वह जनवादी क्रान्ति के थपेड़ों से हिल उठा । संसार भर में प्रगतिशील साहित्य के केन्द्र और संस्थान बने जिनमें सामान्य जन के प्रति प्रतिबद्धता की घोषणा की गई । भारत में भी आजादी से पहले प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई और प्रेमचंद जैसे आंचलिक लेखक से युक्त लेखक इस आन्दोलन से जुड़े. पूर्णिय के अनुसार "आंचलिकता का आन्दोलन प्रगतिवादी आन्दोलन का अंग था, जिसका उद्देश्य जनजीवन और जनपदीय भावनाओं को महत्व प्रदान करना था ।"[57] इस युग का प्रतिफलन हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में भी हुआ । नागार्जुन जैसे सृष्टा प्रगतिवादी लेखक भी अपने आंचलिक उपन्यासों में स्थापित करने लगे । डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय ने एक स्थान पर रूस के आंचलिक उपन्यासों के प्रभाव की बात कही है : "रूस में अनेक शुद्ध और सुन्दर आंचलिक उपन्यास हैं जिन्हें पढ़कर हमारे लेखकों का ध्यान पिछड़े जन-जीवन के चित्रण की ओर गया ।"[58] इसमें सन्देह नहीं कि रूस के जनवादी साहित्य में आंचलिक उपन्यासों के लेखकों और उनकी कृतियों का महत्वपूर्ण स्थान है । उदाहरण के लिए तुर्गनेव के दो उपन्यास लिए जा सकते हैं, "फादर एण्ड सन्स" (1862) तथा "वर्जिन सोयल" (1876) जिनमें किसानों की दयनीय स्थिति का आंचलिक शैली में चित्रण किया

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

57. रेणु का आंचलिक कथा-साहित्य - पृ. 9

58. साहित्य सन्देश : प्रगति विशेषांक, जनवरी-फरवरी 1958

गया है । फियोडोर दस्तोयवस्की भी लोकजीवन से संबंधित उपन्यासकार था । उनका "पुअर पीपल" (1846) एक प्रकार से प्रगतिवादी प्रेरणाओं को आंचलिक उपन्यास में परिणत करने का प्रयास है । उनकी एक और रचना "पोजेस्ट" (1867) है जिसमें जन-जीवन को समस्त लोक संस्कृति के साथ चित्रित किया गया है । दॉस्टवस्की ने "द पोसेस्ड" में जनजीवन और लोकसंस्कृति की मिली-जुली शिल्पविधि का प्रयोग किया है । इसमें सन्देह नहीं कि हिंदी के आंचलिक उपन्यासकारों की दृष्टि में यदि टॉमस हार्डी के उपन्यास है तो रूसी उपन्यास भी अवश्य रहे हैं । इस प्रकार तत्कालीन जनवादी आन्दोलन हिन्दी के आंचलिक उपन्यास के तात्त्विक प्रेरणा-स्रोतों में प्रमुख है । वास्तव में मार्क्सवादी विचारधारा का सर्वात्मक स्वरूप गांधीवादी विचारधारा के साथ मिलकर चल रहा था । "आंचलिक" उपन्यास में मार्क्सवादी विचारधारा ने महाजनी सभ्यता के विरुद्ध श्रमिक संघर्ष और गांधीवादी विचार-धारा ने ग्रामोद्धार और समाजोद्धार की भावना से प्रेरित संस्थाओं और आन्दोलनों का चित्रण किया गया है ........ बलचनमा का किसान आन्दोलन और परती परिकथा का जनवादी आन्दोलन इसके सबूत है ।"[59]

3.23 जनपदीय आन्दोलन :

देशी और विदेशी विद्वानों के द्वारा सन् 1940 में एक जनपदीय आन्दोलन की शुरुआत हुई । पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

59. डॉ० नगीना जैन : "आंचलिकता और हिंदी उपन्यास" पृ० 33

"मधुकर" के माध्यम से जनपद विकेन्द्रीकरण की आवाज उठाई । डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक ज्ञान के आधार पर जनपदीय आन्दोलन का समर्थन किया । श्री देवेन्द्र सत्यार्थी, शिवपूजन सहाय, कृष्णानंद गुप्त, डॉ० सत्येन्द्र, राहुल सांकृत्यायन के नाम इस आन्दोलन के साथ जुड़े गए । इस आन्दोलन की प्रकृति का स्पष्टीकरण डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने अनेक प्रकार से किया । साहित्य में इस आन्दोलन की प्रतिकृति वृन्दावनलाल वर्मा और शिवपूजन सहाय के उपन्यासों में देखी जा सकती है । डॉ० अग्रवाल ने एक स्थान पर लिखा है "जन की सत्ता और मौलिकता एवं जनजीवन की स्वाभाविक सरल निश्छलता जनपदों में सुरक्षित, और नागरी अंकुशों से जीवन की प्राणदायिनी शक्ति, जिस पर कम प्रहार हुआ है, जनपदीय जीवन-स्थिति, शान्ति और अवनी की मातृभूमि की अविचल टेक ढूंढती है ।"[60] डॉ० अग्रवाल ने जनपदीय संस्कृति की परख पर भी बल दिया । उन्होंने लिखा "जनपदीय दृष्टिकोण का पर्यवसान यहाँ है जहाँ पृथ्वी की कोख से जन्म लेने वाली भौतिक सामग्री पृथ्वी पर बसनेवाले और उस जन की संस्कृति का नया ज्ञान और नया उदय हो । जन-भूमि संस्कृति के इस त्रिकोण में जीवन का सारा रस समाया हुआ है ।"[61] इस प्रकार अग्रवाल जी ने जन-संस्कृति के प्राण-केन्द्रों, रस-स्रोतों और उसके नए उदय की चर्चा की । आंचलिक उपन्यासों के सन्दर्भ में लिखते हुए डॉ० मक्खनलाल शर्मा ने लिखा है, "आंचलिक उपन्यासों का सबसे बड़ा उद्देश्य हमारे देश

---

60. पृथ्वी पुत्र - पृ० 40
61. "पृथ्वी पुत्र" की भूमिका पृ० 12

की विभिन्न अंचलों की विशृंखल होती हुई सांस्कृतिक चेतना की सुरक्षा है ।"[62] सारे आंचलिक उपन्यासों का प्रमुख उद्देश्य लोक-संस्कृति की सुरक्षा न हो किन्तु इतना अवश्य है कि इस सांस्कृतिक परम्परा की सामग्री का उपयोग आंचलिक उपन्यासों में अवश्य किया जाता है । यही उस सामग्री का मनोरंजन है यही उसका कलात्मक संस्कार है, यही उसकी सौन्दर्य-तात्त्विक परिणति है । प्रत्येक आंचलिक उपन्यासकार इस संस्कृति के सूक्ष्म से सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करके उसकी रचनात्मक सुरक्षा में लीन रहता है । "मैला आंचल" में "सुराजी कीर्तन", "जाट-जटिन का खेल" सुरंगा सदावृज की कथा, संथालनृत्य, भूत-प्रेत का वर्णन, होली का उत्सव आदि के चित्रण द्वारा मेरीगंज की संस्कृति का उद्घाटन किया गया है । साथ ही यहाँ के जन के रहन-सहन, आचार-विचार, सामाजिक-राजनैतिक गतिविधि आदि के प्रश्न भी अनुस्यूत किए गए हैं । जनपदीय आन्दोलन इस प्रकार की सामग्री के चयन, अध्ययन और विवेचन पर बल देता है । इसलिए तात्कालिक प्रेरणा-स्रोतों में इस आन्दोलन का भी स्मरण कर लेना उचित है । इस प्रकार के सांस्कृतिक आन्दोलन राष्ट्र के वृहत्तर जागरण और स्वत्व-बोध के ही भाग कहे जा सकते हैं ।

संसार में जितने आन्दोलन हुए हैं वे प्रायः व्यक्ति के स्थान पर समाज और उच्च वर्ग के स्थान पर सामान्य जन की प्रतिष्ठा करने के लिए हुए हैं । आंचलिक उपन्यासों का आन्दोलन भी इसका अपवाद नहीं है । एक ओर यह अंचल और समूह से जुड़ा हुआ समाज में पर्यवसित होता है तो दूसरी ओर कुलीन वर्ग के स्थान पर आंचलिक जन

62. "हिन्दी उपन्यास : सिद्धान्त और समीक्षा" पृ० 219

की प्रतिष्ठा करता है । आंचलिक यथार्थ भी आंचलिकजन की रूढ़िग्रस्तता, अतीत के व्यामोह, पिछड़ेपन की पीड़ा और शोषण की स्थितियों से ही सम्बन्धित होता है । इस यथार्थ की प्रामाणिकता में लोक जीवन के तत्व सार्थक बनते हैं । यह आन्दोलन किसी, राजनीतिक वाद से प्रायः नहीं जुड़ता, अपनी निजी जमीन पर खड़े होकर यह जीवन को देखने का एक दृष्टिकोण बनाता है । इस आन्दोलन से जुड़कर ही आंचलिक उपन्यास गौरव प्राप्त करता है ।

## 4. भाषायी भूमिका :

आंचलिक उपन्यासों के सम्बन्ध में भाषा का प्रश्न भी महत्वपूर्ण रहा है । ऐसे उपन्यास तो प्रायः नहीं हैं जिनमें पूर्णतः आंचलिक भाषा का प्रयोग हुआ हो किन्तु ऐसा भी कोई आंचलिक उपन्यास नहीं है जिसमें न्यूनाधिक रूप से आंचलिक भाषा या बोली न आई हो । इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि आंचलिक बोलियों प्रयोग आंचलिक उपन्यासों की एक पारिभाषिक विशेषता है । यह भाषा-प्रयोग अनेक प्रकार से आंचलिक उपन्यासों के प्रभाव का उपकरण बनता है । इसके द्वारा वातावरण की निर्मिति सुविधाजनक होती है । इसी के द्वारा आंचलिक यथार्थ प्रामाणिकता ग्रहण करता है । कथोपकथन और संवाद इसी भाषा प्रयोग के माध्यम से स्वाभाविक बनते हैं । भाषा शैली के वैविध्य की सृष्टि भी इसके द्वारा होती है । भाषा के प्रयोग से जुड़कर अंचल अपना वैशिष्ट्य को देता है । आंचलिक उपन्यास के समग्र सौंदर्यबोध को आंचलिक बोली का प्रयोग प्रभावशाली बनाता है । तात्पर्य यह है

जा सकता है । इन चरित्रों में जो आंचलिक विशेषताएं आवश्यक होती हैं उनमें भाषा भी एक है । यदि इसकी उपेक्षा कर दी जाएगी तो अंचल का समग्र मानवीकरण बाधित होगा क्योंकि पात्र अंचल में ही पैदा होता है, उसी में जीता है, उसी को समर्पित होता है और उसी के लिए मरता है । यह अवश्य है कि पात्र या चरित्र एक ही सामाजिक स्तर के नहीं होते । सामाजिक स्तर के अनुसार लेखक को पात्र का भाषायी चरित्र भी बनाना होता है । अभिजात वर्ग के पात्रों का भाषायी व्यक्तित्व ऐसा ही होना चाहिए कि उसकी वर्गीय स्थिति स्पष्ट हो सके । कुछ पात्र अंचल से बाहर जाकर अन्य भाषा-संस्कारों को भी ग्रहण करके लौटते हैं । इन भाषा-संस्कारों से प्रभावित आंचलिक भाषा की रचना उपन्यासकार को करनी होती है । पंडित और पुजारियों की भाषा दूसरे स्तर की आवश्यक है । इस प्रकार आंचलिक उपन्यास में पात्रों की विविधता रहती है । इस विविधता के साथ भाषा के विविध रूप भी आते हैं । ये विविध भाषा-रूप भी अंचल में ही पैदा हुए हैं और वहीं की सम्पत्ति है । सफल उपन्यासकार स्वीकृत आंचलिक भाषा के रूपों का नियोजन चरित्र चित्रण में करता है । डा० वंशीधर ने इस संबंध में लिखा है, "इनकी (पात्रों की) वेशभूषा, उठना-बैठना, चलना-फिरना और उनकी बातचीत का लहजा भी इतना यथार्थ और सहज होता है कि जिसके कारण अंचल का समूचा यथार्थ रूप उभरकर पाठक को अपनी आँखों के सामने साकार सा प्रतीत होता है ।"[71]

---

71. वही हिंदी के आंचलिक उपन्यास : सिद्धांत और समीक्षा
पृ० 73

### 4·4 संवाद और कथोपकथन :

"संवाद के नए प्रयोग में तो आंचलिक उपन्यासकार को इतनी सफलता मिली कि केवल संवाद और भाषा-प्रयोग के बल पर कई उपन्यास आंचलिक समझे जाने लगे।[72] डा० नगीना जैन ने यह बात कहकर संवादों की भाषिक स्थिति को स्पष्ट किया है और उसकी शक्ति की ओर भी संकेत किया है। डा० सत्यपाल चुघ ने लिखा है "आंचलिक उपन्यासों में संवादों में जनपदीय भाषा या बोलियों का बाहुल्य भी स्थानीय यथार्थ को गाढ़ा करने तथा पात्रों के शिक्षा-संस्कार के स्तर को व्यंजित करने के लिए है। अपनी बोली में ये पात्र भिन्न या विशिष्ट स्थानीय होने का प्रतिभास सहज ही दे सकते हैं। .....उनके लोकोच्चारण, उनके शिक्षा-स्तर की अभिव्यंजना से सरस हास्य की सामग्री भी जुटा सकते हैं।"[73] जब बात सामूहिक संवादों की आती है तब आंचलिक भाषा प्रयोग और भी सहज स्वाभाविक हो जाता है।

कथोपकथन में चरित्र और परिस्थिति के अनुसार विविधता आती है। आवश्यकता इस बात की होती है कि कथोपकथन की भाषा विविध होने के साथ-साथ स्वाभाविक, सहज, सरल भी है। कथोपकथन में प्रयुक्त भाषा से कथ्य "सशक्त बनता है। वैसे सफल आंचलिक उपन्यासकार अंचल की बोली को स्थानीय प्रभावों के साथ प्रयोग करता है। यदि पात्र अशिक्षित है तो उसके वाक्य टूटे-फूटे तथा शब्द अनगढ़ होंगे। पात्र अपने संवादों में केवल शब्दों को ही

---

72. "आंचलिकता और हिंदी उपन्यास" पृ. 32
73. "प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि" पृ. 92

अपने ढंग से तोड़ते मरोड़ते नहीं है, अपने कथन में लोकोक्ति और मुहावरों का भी प्रयोग करते चलते हैं ।

### 4·5 बोधगम्यता का प्रश्न :

यह तो सर्वमान्य है कि आंचलिक उपन्यास में भाषा का तत्व प्रमुख होता है किन्तु यह भी देखना चाहिए कि आंचलिक बोली का प्रयोग कितना और किस स्तर पर किया जाए । इस भाषा-प्रयोग के कई उद्देश्य हो सकते हैं -- वर्णन को विश्वसनीय बनाना, प्रचलन के रूप में प्रयोग करना, आंचलिक चित्रण की अनिवार्यता के रूप में अथवा पाठक को चमत्कृत करने के लिए । यदि वर्णन की विश्वसनीयता अकेले भाषा पर निर्भर न हो, फिर भी उसका यह विशेष आधार र है स्थानीयता रंगत कुछ वैशिष्ट्य उपस्थित करती है किन्तु केवल इसके लिए स्थानीय शब्दों का प्रयोग सीमित रूप में ही होना चाहिए । केवल चमत्कार के लिए स्थानीय भाषा का प्रयोग निरर्थक ही होगा, उसे अनावश्यक रूप से बोधगम्यता बाधित होगी । वैसे टॉमस हार्डी ने स्थानीय रंग के लिए आंचलिक भाषा का प्रयोग किया है ।

सामान्य रूप से सभी समीक्षकों ने बोधगम्यता और रसात्मकता की दृष्टि से आंचलिक भाषा के अनुपातित और सीमित पक्ष को लिया है । सन्तुलन के अभाव में रसानुभूति बाधित हो जाती है[74] आंचलिक कहानी के सम्बन्ध में डा० शिवप्रसाद सिंह ने अपना अभिमत इस प्रकार प्रकट किया है -- "मैं गाँव के कहानीकारों

---

74· इन्द्रपाल सिंह : अध्ययन और विचार पृ० 185

द्वारा ठूँस-ठूँसकर अनावश्यक ढंग से प्रयुक्त होते आते अनेक शब्दों को पसन्द नहीं कर सकता। जहाँ परिनिष्ठित हिंदी के शब्द प्राप्य नहीं, वहाँ तो देशी, अन-प्रचलित शब्द आवश्यक हैं और वे एक नई शक्ति भी पैदा करते हैं। पर सिर्फ यह दिखाने के लिए कि कहानी गाँव की है, देशी शब्दों का भराव कहानी को बेडौल बनाता है।"[75] इस कथन में तथ्य तो है किन्तु बोली-प्रयोग के सौंदर्य तात्विक महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता"...... इससे वातावरण, परिवेश तथा पात्र की विश्वसनीयता ही नहीं बढ़ती, कहानी यथार्थ के अधिक निकट भी आ जाती है।[76] और इस बात से इन्कार भी नहीं किया जा सकता कि बोधगम्यता के सीमित होने से रसानुभूति बाधित होती है। मैला आँचल जैसे प्रतिनिधि उपन्यास के अनेक प्रबुद्ध पाठकों की यह शिकायत है कि उसकी अतिशय स्थानीय बोली उनकी रसानुभूति के मार्ग में दीवार बन गई है।[77] स्थानीय बोली के अति प्रयोग से पात्र अपनी अपरिचितता तथा वैचित्र्य के कारण हमें आकृष्ट भले ही करे, उसमें सार्वभौमिकता का, मानवीय तत्वों का अभाव-सा हो जाता है।[78]

वास्तव में आंचलिक उपन्यासकार के सामने भाषा और उसकी प्रेषणीयता का सवाल एक समस्या के रूप में उठता रहता है।

---

75. डॉ० चन्द्रशेखर वर्मा की पुस्तक "आंचलिक हिंदी कहानी" के पृ० 86 पर उद्धृत
76. – वही – पृ० 89
77. [illegible] जैन : आंचलिकता और हिंदी उपन्यास : पृ० 48
78. महेन्द्र चतुर्वेदी : हिंदी उपन्यास : एक सर्वेक्षण : पृ० 196

उसे स्थानीयता की सुरक्षा भी करनी है और प्रेषणीयता की सीमा को भी संकुचित नहीं होने देना है । इसके लिए डा० नेमिचन्द जैन ने एक मार्ग सुझाया है — "सीमित मात्रा में शब्दों के वे स्थानीय रूप तो स्वीकृत हो सकते हैं जो उनके शुद्ध रूप के अपेक्षाकृत इतने समीप हैं कि शुद्ध रूप पाठकों को तुरन्त सूझ जाए, जैसे गन्ही महात्मा, जमाहिरलाल, डागडर इत्यादि । किन्तु जो रूप इतने स्थानीय हों कि उनको समझने के लिए पीछे दी हुई तालिका देखने की आवश्यकता पड़े, उनका प्रयोग यदि न हो तो अधिक उपयोगी होगा ।"[79] यह मार्ग वास्तव में व्यावहारिक है इसका अनुसरण इसलिए संभव है कि हिन्दी क्षेत्र के सभी अंचलों की बोलियाँ काफी कुछ समान तत्ववाली भी हैं । इस समान भूमि को पहचानकर लेखक अपने दायित्व को पूर्ण कर सकता है । इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आंचलिक कृतियों में आंचलिक भाषा का प्रयोग सर्जन की एक अनिवार्य शर्त होती है । लेखक को सहज वातावरण भी प्रस्तुत करना होता है और अंचल के जीवन को पूर्ण सच्चाई और संवेदना के साथ चित्रित करना पड़ता है । यदि सर्जन की इस आवश्यक शर्त को भुला दिया जाएगा तो अंचल की अवधारणा ही खंडित हो जाएगी ।

आंचलिक भाषा अपने आप में एक बड़ी शक्ति है । लेखक को यदि आंचलिक भाषा का सीधा साक्षात्कार आवश्यक होता है तो इस कोण से भी उसका सीधा परिचय बहुत आवश्यक है ।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

79. "अधूरे साक्षात्कार : कवितात्मक और संगीतात्मक : "मैला आँचल" पृ० 41

आंचलिक बोली के प्रयोग के संबंध में अनुशासन और सन्तुलन की जो चर्चा की जाती है उसका केवल इतना ही अर्थ है कि "सर्जन की अनिवार्य मांग की पूर्ति तक ही आंचलिक भाषा का प्रयोग काम्य है, न तो अधिक न कम, न प्रदर्शन, न चमत्कार, न विज्ञापनीय रंगत के लिए और न यथार्थ को छदम करने के लिए।"[80]

बोधगम्यता की बाधा को दूर करने के लिए कुछ उपन्यासकारों ने कोष्ठक में या पाद टिप्पणियों में कुछ शब्दों के अर्थ भी दे दिए हैं पर यह सतर्कता भी एक सीमा तक ही संभव है। पूरे स्थानीय शब्दों का अर्थ देना असंभव है और सौन्दर्यबोध की दृष्टि से भी यह उचित नहीं। इस स्थिति में आंचलिक उपन्यासों को पढ़ना एक बौद्धिक व्यायाम हो जाता है। फिर भी यह कहना पड़ेगा कि "यह तो आंचलिक उपन्यासकार की समर्थता एवं प्रतिभा पर निर्भर है कि वह अपनी रचना को कहाँ तक भावात्मक, रसात्मक एवं परिणामपरक बनाता है। ..... सामान्यतः उपन्यासकार कुछ विशिष्ट स्थानीय शब्दों, मुहावरों, कहावतों, एवं लोकोक्तियों का भावार्थ देकर एवं लोक गीतों और लोकगाथाओं का सार में मर्म समझाकर पाठकों की सहायता कर सकता है और आंचलिक उपन्यासों की दुर्बोधता दूर कर सकता है।"[81]

इस प्रकार की प्रयत्न उपन्यासकार प्रायः करते भी हैं। सत्य यह भी है कि स्थानीय बोली की दुर्बोधता के कारण सहानुभूति बहुत सीमित मात्रा में ही अर्जित होती है। इस विवाद को जितना बढ़ाया गया है उतना आवश्यक नहीं है।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

80. ज्ञानचन्द जैन : "आंचलिकता और हिंदी उपन्यास" पृ. 50

81. डॉ० क० कडवे : हिंदी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति पृ. 297

कुछ विद्वानों का यह मत है कि आंचलिक उपन्यास से प्राप्त होनेवाला रसानुभव सार्वजनीन नहीं हो सकता । इसीलिए आंचलिक उपन्यास केवल कलाकृति तो हो सकता है किन्तु महान् कृति नहीं हो सकता । यह आक्षेप निराधार प्रतीत होता है । बहुत सी आंचलिक कृतियां महान बन चुकी हैं और बन सकती हैं । भाषा-तत्व के सम्बन्ध में लेखक को थोड़ी सावधानी अवश्य बरतनी चाहिए ।

प्रस्तुत प्रबन्ध में आंचलिक उपन्यासों में प्रयुक्त आंचलिक भाषा के सभी स्तरों का विश्लेषण किया गया है । भाषा-प्रयोग के संदर्भ में सौन्दर्य-तात्त्विक निष्कर्ष निकालने की भी दृष्टि रही है और भाषा की व्याकरणिक संरचना को भी स्पष्ट किया है । साथ ही कुशलता का सूत्र भी किसी न किसी प्रकार खोजा गया है । आंचलिक उपन्यासों की भाषिक भूमिका अपने आप में महत्वपूर्ण होती है यह ऊपर के विवेचन से स्पष्ट हो जाता है ।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि आंचलिक उपन्यास से प्राप्त होनेवाला रसास्वाद सार्वजनीन नहीं हो सकता। इसीलिए आंचलिक उपन्यास केवल सत्कृति तो हो सकता है किन्तु महान् कृति नहीं हो सकता। यह आक्षेप निराधार प्रतीत होता है। बहुत सी आंचलिक कृतियाँ महान बनी हैं और बन सकती हैं। भाषा-तत्व के सम्बन्ध में लेखक को थोड़ी सावधानी अवश्य बरतनी चाहिए।

प्रस्तुत प्रबन्ध में आंचलिक उपन्यासों में प्रयुक्त आंचलिक भाषा के सभी स्तरों का विश्लेषण किया गया है। भाषा-प्रयोग के संदर्भ में सौन्दर्य-तात्त्विक निष्कर्ष निकालने की भी दृष्टि रही है और भाषा की व्याकरणिक संरचना को भी स्पष्ट किया है। साथ ही कुशलता का कुछ भी किसी न किसी प्रकार खोजा गया है। आंचलिक उपन्यासों की भाषिक भूमिका अपने आप में महत्वपूर्ण होती है यह ऊपर के विवेचन से स्पष्ट हो जाता है।

..

অধ্যায় | দ্বিতীয়

## চরিত্র — বিচার

## 0· प्रास्ताविक

किसी भी भाषा या बोली की महत्त्वपूर्ण उपव्यवस्था ध्वनि होती है । यद्यपि यह उपव्यवस्था एक निश्चित भाषा-भाषी समूह में सामान्य रूप से मिलती है, फिर भी ध्वनि की उच्चारण-विधि और प्रयोग - विधि वैयक्तिक वैशिष्ट्य को प्रकट करती है । इस वैयक्तिक वैशिष्ट्य की कोटि में ही ध्वनि - सम्बन्धी आंचलिक वैशिष्ट्य आ जाता है । कुछ ऐसी विशेषताएं भी हो सकती हैं जिनकी स्थिति अन्त: आंचलिक हो और कुछ विशेषताएं अंचल - विशेष तक भी सीमित हो सकती हैं । प्रस्तुत अध्याय में आलोच्य उपन्यासों के आधार पर ध्वनि सम्बन्धी आंचलिक वैशिष्ट्य को ही स्थापित किया गया है ।

1· आगम

1·1 स्वरागम

1·11 संयुक्त व्यंजन : स्वरागम

1·111 आदि संयुक्त व्यंजन : स्वरागम

(क) व्यंजन + / र / > व्यंजन + स्वर + / र /

प्रबन्ध > परबन्ध [1], प्रणाम > परनाम [2], प्रायश्चित > पराश्चित [3], भ्रष्ट > भरस्ट [4], ब्रह्म > बरहम [5], क्रोध > किरोध [6], श्रीनारायण > सिरीनरायन [7], ब्रह्माण्ड > बरमांड [8], श्राद्ध > शराद [9], त्राण > तराण [10], द्रोपदी > दुरोपदी [11], व्रत > बरत [12] ।

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि इस स्थिति में / अ /, / इ / तथा / उ / का आगम हो सकता है ।

(च) <u>व्यंजन + / ऋ / > व्यंजन + / इर /</u>

तृप्त > तिरपित [13], गृहस्थी > गिरिस्ती [14], बृहस्पति > बिरहस्पत [15], कृपण > किरपिन [16], कृपा > किरिपा [17], कृपालसिंह > किरपालसिंह [18], सृष्टि > सिरिष्टि [19], पृथ्वी > पिरथिवी [20], दृष्टि > दिरिष्टि [21],

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि इस परिस्थिति में / ऋ / का विकास / र / में होता है तथा इस प्रकार से निष्पन्न संयुक्त व्यंजन / व्यंजन + र / को असंयुक्त करने के लिए / इ / स्वर का आगम हो जाता है ।

आगत स्वर, संयुक्त व्यंजन के बाद में आने वाला स्वर भी हो सकता है, अर्थात् यह स्वर अपना स्थान छोड़कर संयुक्त

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

1• कब तक पृ• 183, 2• रति• की चाची 146, 3• बाबा बटे• 63, 4• दुख • 97, 5• वही 75, 6• बल• 113, 7• सती मै• 304, 8• हो• 339 9• वही 263, 10• वही 2, 11• वही 84, 12• कुलू• 68, 13• कब तक पृ• 42, 14• बाबा बटे• 43, 15• बल• 161, 16• वही 45, 17• सती मै• 238 18• हो• 96, 19• वही 74, 20• वही 291, 21• वही 73,

व्यंजनों के बीच में स्थित हो जाता है ।

(ग) व्यंजन + / ल / > व्यंजन + स्वर + / ल/

क्लेश > कलेश [22], स्लेट > सिलेट [23], श्लोक > शिलोक [24], क्लास > किलास [25], क्लाउज़ > किलोज़ [26] ।

उपर्युक्त उदाहरणों में / अ / तथा / इ / स्वरों का आगम हुआ है ।

(घ) / स् / + व्यंजन > / स / + स्वर + व्यंजन

स्लेट > सिलेट [27], स्नेह > सिनेह [28], स्कूल > सकूल [29],

जब संयुक्त व्यंजन के साथ अग्र स्वर / ए / संलग्न होता है, तो आगत स्वर / इ / होता है । सामान्य रूप से / अ / का ही आगम होता है ।

(च) व्यंजन + अर्द्धस्वर

अर्द्धस्वरों में / य / तथा / व / आते हैं । इनका विकास इस प्रकार होता है -----

(अ) व्यंजन + / य / > व्यंजन + / इ ~ ए / + / य /

प्याज़ > पियाज़ [30], क्या > किया [31], व्याकुल > बियाकुल [32], प्यार > पियार [33], ज़्यादा > जियादा [34], ब्याह > बियाह [35],

---

22. अब तक पृ. 408, 23. बल. 51, 24. वही 83, 25. सती मै. 222, 26. मै.बॉ. 198, 27. बल. 51, 28. वही 18, 29. जं.के.फूल 150, 30. बल. 103, 31. जं.के.फूल 20, 32. सती मै. 407, 33. वही 407 34. वही 406, 35. वही 209,

प्यास > पियास [36], न्याय > नियाय [37], ब्याहने > बियाहै [38], त्याग > तेवाग [39],

अन्तिम उदाहरण में / य / का लोप भी हो गया है । वास्तव में / य / की सुरक्षा भाषा - वैज्ञानिक रूप से नहीं होती । उच्चरित रूप / - इ अ - / ही होता है ।

(ख) <u>व्यंजन + / व / > व्यंजन + / उ / + व्यंजन</u>

स्वराजी > सुराजी [40], स्वर्गवास > सुरगवास [41], स्वदेशी > सुदेशी [42], ध्वजा > धुजा [43],

सामान्य नियम तो / व > उ / का ही है परन्तु किसी अंचल में / व > अ / की प्रवृत्ति भी मिलती है जैसे - स्वर्गवास सरगवास [44],

1·112 मध्य संयुक्त व्यंजन : स्वरागम

(क) <u>व्यंजन + / र / > व्यंजन + स्वर + / र /</u>

आश्रम > आसरम [45], चन्द्रमा > चनरमा [46], शास्त्रार्थ > सासतरार्थ [47], क्षत्रिय > छतरी [48], विक्रमादित्य > विकरमादित्त [49], कुरुक्षेत्र > कुरुछेत्तर [50], बद्रीनाथ > बदरिकानाथ [51], जलप्रवाह > जलपरवाह [52], विद्यार्थी > विदियारथी [53], जयप्रकाश > जयपरगास [54],

इन उदाहरणों में / अ / का आगम हुआ

---

36· मै·आँ· 198, 37· वही 102, 38· वही 151, 39· नई पौ· 100,
40· मै·आँ· 10,41· बल· 78, 42· मै·आँ· 117, 43· बल· 20,
44· मै·आँ· 33, 45· वही 28 तथा बाबा बटे· 63, 46· बल· 128
47· वही 141, 48· सती मै· 307, 49· हो· 26, 50· वही 86,
51· मै·आँ· 262, 52· वही 258, 53· वही 243, 54· वही 202,

है । जब ध्वन्यात्मक वातावरण में /ओ / हो, तो / उ / का आगम होता है जैसे - देशद्रोही > देशदुरोहित[55].

§ख§ / र / + व्यंजन > / र / + स्वर + व्यंजन

§अ§ एक संयुक्त व्यंजनयुक्त शब्द

निर्वाह > निरवाह[56], दर्शन > दरसन[57], निर्दयी > निरदयी[58], आशीर्वाद > आसीरबाद[59], दुर्गति > दुरगत[60], मर्यादा > मरियादा[61], पूर्णिमा > पुरनिमा[62], निर्मल > निरमल[63], सर्वसंगठन > सरबसंगठन[64], कर्कश > करकस[65].

§ब§ दो संयुक्तव्यंजनयुक्त शब्द

स्वर्गवास > सरगवास[66], शर्मिन्दा > सरमिन्दा[67], पुनर्जन्म > पुनरजनम[68], धर्मात्मा > धरमतमा[69], सर्वस्व > सरबस[70], विद्यार्थी > बिदियारथी[71].

§स§ तीन संयुक्तव्यंजनयुक्त शब्द

अन्तर्ध्यान > अन्तरधियान[72]

§ग§ /न/ + व्यंजन > /न/ + स्वर + व्यंजन

पुनर्जन्म > पुनरजनम[73], पैन्सिल > पिनसिल[74], पेन्शन > पिनशन[75].

§घ§ /स/ + व्यंजन > /स/ + स्वर + व्यंजन

---

55. मै.आँ. 55, 56. कल. 51, 57. वही 153, 58. जं.के फूल 142,
59. वही 88, 60. हो. 132, 61. वही 338, 62. नई पौ. 76,
63. मै.आँ. 44, 64. वही 25, 65. वही 128, 66. मै.आँ. 33,
67. सती मै. 206, 68. हो. 134, 69. नई पौ. 77, 70. दुख. 148
71. मै.आँ. 243, 72. वही 23, 73. हो. 134, 74. कल. 51,
75. हो. 62,

अस्पताल > असपताल[76], संस्कार > संसकार[77].

(घ) अन्य उदाहरण

/फ्/ + /त/ > /फ/ + स्वर + /त/=रफ़्तार > रफ़ुतार[78]

/त्/ + /म/ > /त/ + स्वर + /म/=इत्मिनान > इतमिनान[79]

/ल्/ + /प/ > /ल/ + स्वर + /प/=शिल्पकार > शिलपकार[80]

/ब्/ + /द/ > /ब/ + स्वर + /द/=शब्द > शबद[81]

/म्/ + /प/ > /म/ + स्वर + /प/=सम्पन्न > समपन[82]

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि ऐसी स्थिति में /अ/ स्वर का आगम हो सकता है ।

(छ) व्यंजन + /ऋ/ > व्यंजन + /इ र/

अमृत > अमिरित[83], संस्कृत > संसकिरत[84], वचनामृत > वचनामिरित[85],

1.113 अन्त्य संयुक्तव्यंजन : स्वरागम

(क) /र/ + व्यंजन > /र/ + स्वर + व्यंजन

शर्त > सरत[86], मर्द > मरद[87], कुकर्म > कुकरम[88], पर्व > परब[89], समर्थ > समरथ[90], गर्व > गरब[91], शर्म > सरम[92], क़र्ज़ > करजा[93], फ़र्क > फरक[94], सम्पूर्ण > सम्पूरण[95], बेशर्म > बिशरम[96], सुमार्ग > सुमारग[97], अर्थ > अरथ[98], गन्धर्व > गन्धरब[99], वर्षा > बरसा[100], स्वार्थ > सोआरथ[101], परमार्थ > परमारथ[102], बैनर्जी > बनरजी[103],

---

76. कल. 135, 77. मै.आँ. 43, 78. हो. 39, 79. सती मै. 375
80. हो. 296, 81. जुलू .18, 82. नई पौ. 139, 83. हो. 105
84. मै.आँ. 30, 85. वही 103, 86. कब तक पु. 106, 87. वही 78,
88. कल. 105, 89. वही 36, जं.के फूल 51, 90. कल. 72, 91. जं.के फूल 51, 92. वही 129 तथा सती मै. 52, 93. सती मै. 209,
94. वही 561, 95. हो. 47, 96. वही 136, 97. मै.आँ. 29,
98. वही 29, 99. वही 279, 100. वही 163, 101. वही 27,
102. वही 27, 103. वही 11.

वर्ण > बरन[104], कार्य > कारज[105].

उपर्युक्त उदाहरणों में / अ / स्वर का आगम हुआ है । एक उदाहरण / इ / स्वर के आगम का भी मिलता है जैसे - आर्य > अरिया [106].

(ख) व्यंजन + / र / > व्यंजन + स्वर + / र /

नवराष्ट्र > नवरास्टर[107], वक्र > वकुर[108], उम्र > उमिर[109], मन्त्र > मन्तर[110], शुक्र > शुकर[111], वज्र > बजर[112], शास्त्रों > शास्तरो[113], नम्र > नमुर[114], स्त्री > इस्तिरी[115], यन्त्र > जन्तर[116].

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि इस स्थिति में / अ /, / इ / तथा / उ / स्वरों का आगम हो सकता है ।

(ग) व्यंजन + / र / > व्यंजन + व्यंजन + / अ / + / र /

चरित्र > चरित्तर[117], क्षेत्र > क्षेत्तर[118], वज्र > बज्जर[119], चित्र > चित्तर[120], अपवित्र > अपवित्तर[121], वराहक्षेत्र > वराहछत्तर[122], दानपत्र > दानपत्तर[123].

(घ) / न् / + व्यंजन > / न् / + स्वर + व्यंजन

मुन्शी > मुनशी[124], कन्या > कनिया[125], अन्य > आन[126], धन्य > धन[127], डान्स > डानस[128].

---

104. मै॰आँ॰ 14, 105. जुलू॰ 14, 106. रति॰की घा॰ 29, 107. बल॰ 38
108. सती मै॰ 207, 109. वही 590 तथा नई पौ॰ 26, 110. हो॰ 348
111. वही 300, 112. वही 270, 113. वही 3, 114. मै॰आँ॰ 162,
115. वही 32, 116. वही 33, 117. कब तक पु॰ 77, 118. बल॰ 107,
119. वही 91, 120. जं॰ के फूल 96, 121. मै॰आँ॰ 120, 122. वही 43,
123. वही 15, 124. बल॰ 95, 125. वही 131, 126. जं॰ के फूल 41,
127. वही 23, 128. जुलू॰ 49.

इन उदाहरणों में आगत स्वर / अ / तथा / इ / हैं ।

[च] <u>/ स् / + व्यंजन > / स / + स्वर + व्यंजन</u>

दुरुस्त > दुरुसत[129], किस्म > किसिम[130], जिस्म > जिसिम[131],

उपर्युक्त उदाहरणों में / अ / तथा / इ / स्वर का आगम हुआ है ।

[छ] <u>/ क् / + व्यंजन > / क / + स्वर + व्यंजन</u>

अक्ल > अकिल[132], शक्ल > शकल[133], वक्त > बखत[134],
शाक्त > साकट[135], नक्शा > नकसा[136] ।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि इस स्थिति में / अ / तथा / इ / स्वरों का आगम हो सकता है ।

[ज] <u>/ ब् / + व्यंजन > / ब / + स्वर + व्यंजन</u>

शब्द > सबद[137], सब्जपरी > सबुजपरी[138]

इन उदाहरणों में आगत स्वर / अ / तथा / उ / हैं ।

[झ] <u>अन्य उदाहरण</u>

/ त् / + / म / > / त / + स्वर + / म / = महात्मा > महतमा[139],
खत्म > खतम[140], आत्मा > आतमा[141],
/ ख् / + / श / > / ख / + स्वर + / श / = बख्शी > बखशी[142],
/ ल् / + / म / > / ल / + स्वर + / म / = जुल्म > जुलुम[143],

---

129. रति॰की घा॰ 70, 130. बल॰ 71 तथा दुख॰ 105, 131. हो॰ 72, 132. बल॰ 37 तथा मै॰ आँ॰ 236, 133. बल॰ 115, 134. सती मै॰ 160, 135. मै॰आँ॰ 248, 136. वही 220, 137. बल॰ 126, 138. मै॰आँ॰226, 139. बल॰ 140, 140. मै॰आँ॰ 155, 141. वही 120, 142. सती मै॰ 213, 143. मै॰आँ॰ 154,

/ प् / + / त / > / प् / + स्वर + / त / = गुप्त > गुपुत[144],

समाप्त > समापतन[145],

/ ग् / + / न / > / ग् / + स्वर + / न / = नग्न > नगन[146],

/ घ् / + / न / > / घ् / + स्वर + / न / = विघ्न > विघिन[147],

/ म् / + / ब / > / म् / + स्वर + / ब / = कदम्ब > कदम[148],

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि इस स्थिति में / अ /, / इ / तथा / उ / स्वरों का आगम हो सकता है ।

1.12 आदि स्वरागम

स्कूल > इस्कूल[149], स्टेट > इस्टेट[150], श्लोक > इस्लोक[151], स्थान > अस्थान[152],

इन उदाहरणों में / इ / स्वर का आगम है तथा अन्तिम उदाहरण में / अ / स्वर का आगम हुआ है ।

1.13 अकारण स्वरागम

रूपया > रूपइया[153], सीने > सिउने[154],

इनमें आगत स्वर / इ / तथा / उ / हैं ।

सामान्य रूप से आंचलिक जनमानस संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण में कठिनाई का अनुभव करता है । व्यंजन - संयोग को एकाधिक प्रविधियों से वह विच्छिन्न भी करता है किन्तु एक बात द्रष्टव्य है कि संयुक्त व्यंजन की स्थिति के अनुसार आंचलिक जनमानस प्रतिक्रिया करता है जैसे -

---

144. मै.आँ. 144, 145. वही 248, 146. वही 77, 147. वही 277, 148. वही 63, 149. दुख. 108, जं.के फूल 157, सती मै. 293, मै.आँ. 35, 150. बल. 107, 151. सती मै. 24, 152. बल. 164, 153. वही 20, 154. सा.ल.म.

1• आरम्भिक स्थिति के संयुक्त व्यंजन की अपेक्षा मध्यस्थ संयुक्त व्यंजन सरलतर माना गया । इसलिए आदि स्वरागम के द्वारा उसकी आदि स्थिति को मध्य स्थिति में बदल दिया गया ।
जैसे – स्कूल > इस्कूल[155], स्थान > अस्थान[156]

2• व्यंजन + / र / की अपेक्षा / र / + व्यंजन आंचलिक जनमानस को सरलतर प्रतीत होता है । इसलिए स्वरागम की प्रक्रिया में उसने इस संयुक्त व्यंजन का निर्माण किया । जैसे – प्रसाद > परसाद[157], प्रथा > परथा[158], प्रपन्ची > परपन्ची[159], प्रताप > परताप[160], श्रद्धा > सरधा[161],

3• कभी – कभी संयुक्त व्यंजन की कठिनाई का अनुभव एक निश्चित स्वर के साथ होने पर होता है । संयुक्त व्यंजन के साथ वाले स्वर का परिवर्तन करके संयुक्त व्यंजन को हम सुरक्षित भी पाते हैं ।
जैसे – प्रश्न > प्रिशन[162],

4• किसी शब्द में एक से अधिक संयुक्त व्यंजन रहने पर आंचलिक मानस कभी उन सभी को स्वरागम द्वारा विच्छिन्न कर देता है ।
जैसे – पुनर्जन्म > पुनरजनम[163], धर्मात्मा > धरमतमा[164], या कभी उनमें से कुछ को, जैसे – ब्रह्मास्त्र > बरमास्त्र[165], प्रार्थना > परार्थना[166], शास्त्रार्थ > सासतरार्थ[167], आर्यक्षेत्र > आरजाक्षेत्र[168],

5• एक से अधिक स्वरागम आदि में स्वरागम करके जहाँ कुछ उदाहरणों में संयुक्त व्यंजन को सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति मिलती है वहाँ संयुक्त व्यंजनों को दूसरे स्वरागम द्वारा विच्छिन्न करने की प्रवृत्ति भी मिलती है । जैसे – स्टेशन > इसटीशन[169], स्कूल > इसकूल[170],

6• संयुक्त व्यंजन की अपेक्षा द्वित्त्व व्यंजन या दीर्घ व्यंजन आंचलिक

---

155• दुख• 108 तथा ज•के पूल 157, 156• बल• 164, 157• बल• 162, 158• वही 151, 159• वही 150, 160• नई पौ• 134, 161• वही 4, 162• ज•के पूल 174, 163• हो• 134, 164• नई पौ• 77, 165• हो• 7, 166• सती मै• 24, 167• बल• 141, 168• मै•आ• 108, 169• बल• 12 तथा नई पौ• 14, 170• बल• 37,

जन जनमानस को सरलतर प्रतीत होता है जैसे --

त्य > त = विक्रमादित्य > विकरमादित्त[171]

त्र > त्तर = कुरुक्षेत्र > कुरुक्षेत्तर[172]

## 1·2 व्यंजनागम

### 1·21 आदि व्यंजनागम

आफ्त > हाफ्त[173], रोज़ > बरोज़[174], अफ़सर > हफ़सर[175], आराम > हाराम[176].

इन उदाहरणों में / ह / तथा / ब / व्यंजनों का आगम हुआ है ।

### 1·22 मध्य व्यंजनागम

सूअर > सूहर[177], जेल > जेहल[178], सीमेंट > सिलमिंट[179], कुरुक्षेत्र > कुरुक्षेत्र[180], बद्रीनाथ > बदरिकानाथ[181], बद्रीनाथ > बदरनीनाथ[182], वन्देमातरम > बन्देमहातरम्[183].

### 1·23 अन्त्य व्यंजनागम

कहना > कहनाम[184], पिय > पियाव[185], पर्ब > पबनी[186], गेहूँ > गहुम[187], डॉक्टर > डक्टरवा[188], देशद्रोही > देशदुरोहित[189], समाप्त > समापतन[190], पत्तला > पतलाय[191], चुका > चुकाय[192], पढ़ा - लिखा > पढ़ेला - लिखेला[193], चाय > चाह[194], नित्य > नित्तह[195].

---

171· हो· 26, 172· वही 86, 173· अब तक पृ· 99 174· सती मै· 725, 175· हो· 2, 176· मै·आँ· 151, 177· अब तक पृ· 94, 178· रति·की चा· 22, व· के·बेटे 108, ज·के पुल 117, 179· बल· 104, 180· हो· 86, 181· मै·आँ· 262, 182· वही 264, 183· वही 118, 184· नई पौ· 131, 185· व·के बेटे 79 तथा बल· 61, 186· बल· 93, 187· वही 163, 188· मै·आँ· 164, 189· वही 55, 190· वही 198, 191· वही 20, 192· जुलू· 29, 193· सा·ल·म· 215, 194· नई पौ· 120, 195· वही 88,

## 2· लोप

### 2·1 स्वरलोप

#### 2·11 आदि स्वरलोप

अनाज > नाज[196], इन्साफ़ > निसाफ[197], अहंकार > हँकार[198].

एक उदाहरण इन्साफ़ > निसाफ़ का है इसमें आदि स्वर / इ / मध्य में स्थानांतरित हुआ है ।

#### 2·12 मध्य स्वरलोप

जवान > ज्वान[199], खिमियाता > खिम्याता[200], इमरती > इमर्ती[201], सरदार > सर्दार[202], सनीचर > शँचर[203], दरअसल > दरसल[204], तिवारी > त्याड़ी[205], आसमान > आस्मान[206].

उपर्युक्त उदाहरणों में /–अ–/ , तथा / इ ~ ई / स्वरों का लोप हुआ है ।

#### 2·13 अन्त्य स्वरलोप

धातु > धात[207], दुर्गति > दुरगत[208], प्रतीति > परतीत[209].

प्राय: अन्त्य / अ / भी या तो लुप्त हो जाता है अथवा यह अघोष { अ़ } में परिवर्तित होता है । यही स्थिति अन्त्य { इ } तथा { उ } की है ।

### 2·2 व्यंजनलोप

#### 2·21 आदि व्यंजनलोप

---

196· कब तक पृ· 40, 197· हो· 110 तथा मै·आँ· 211, 198· कब तक पृ· 109, 199· कब तक पृ· 176, 200· वही 540, 201· व·के बेटे 15, 202· बल· 164, 203· हो· 266, 204· वही 86, 205· वही 38, 206· मै·आँ· 72, 207· व·के बेटे 91, 208· हे· ●●● 132;

स्टेशन > टीसन[210], स्कूल > कूल[211], हम > अम[212], श्मशान > मसाण[213], वो > ओ[214], ही > इ[215], होता > ओता[216], सलोनी > लोनी[217],

2·22 <u>मध्य व्यंजनलोप</u>

तहखाने > तैखाने[218], प्रायश्चित > प्रासचित्त[219], हिरण्याकश्यप > हिरनाकुस[220], निर्दयी > निर्दई[221], नहीं > नईं[222], उल्का > उक[223], ज़िन्दगी > जिनगी[224], अम्बार > अमार[225], सम्बन्ध > समध[226], मुवक्किल > मोकिल[227], त्याग > तैआग[228], ज्योतिषी > जोतखी[229], सम्पन्न > समपन[230], पोस्टकार्ड > पोस्टकाट[231], गृहस्थी > गिरिस्ती[232], भूमिहार > भुंइहार[233], गृहस्थ > गिरहथ[234], ईश्वर > ईसर[235], परमेश्वर > परमेसर[236], स्वर्गवास > सुरगवास[237], ब्रह्मवध > बरमवध[238], तम्बाकू > तमाकू[239], स्वराज > सुराज[240], न्योता > नोता[241], विलायत > विलैत[242], अन्नपूर्णा > अनपूर्ना - 243, ईर्ष्या > इरखा[244], पर्व > पबनी[245], त्योहार > तिहार[246], कड़वा > कुरुआ[247], ब्राह्मण > बामन[248], कन्या > कनिआ[249], चन्द्रमा > चनरमा[250], व्यवहार > बिवहार[251], तहसीलदार > तैसीदार[252], दसहरा > दसेरा[253], कहो > कओ[254], बहुत > बोत[255], व्यथा > बिथा[256], पत्थर > पाथर[257],

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

210· बाबा बटे· 142, बल· 36, सती मै· 418 तथा मै·आ· 9,
211· बल· 148, 212· जं·के पूल 21 तथा सा·ल·म· 63, 213· हो· 248,
214· सा·ल·म· 50, 215· वही , 216· वही 63, 217· अब तक पृ· 187,
218· वही 103, 219· वही 282 तथा रति· की चाची 47, 220· अब तक पृ· 75, 221· वही 212, 222 वही 298, 223· रति·की चाची 171,
224· नई पौ· 26 तथा ब·के बेटे 31, बल· 30, 225· वही 26, 226· वही 80, 227· वही 97, 228· वही 100, 229· वही 51, 230· वही 139,
231· वही 136, 232· बाबा बटे· 43, 233· वही 56, 234· बल· 5,
235· वही 21, 236· वही 21, 237· वही 78, 238· बल· 21,
239· वही 62, 240· वही 53, 241· वही 79, 242· वही 91,
243· वही 21, 244· वही 32, 245· वही 93, 246· वही 93,
247· वही 98, 248· वही 45, 249· वही 131, 250· वही 128
251· जं·के पूल 85, 252· वही 100, 253· वही 101, 254· वही 20,

अन्य > बान[258], सन्देशा > समेसा[259], पुण > पन[260], सत्यनारायण > सतनरायन[261], ब्रह्माण्ड > बरमांड[262], ब्रह्मचारिणी > बर्मचारिणी[263], प्रायश्चित > पराचित[264], विक्रमादित्य > विकरमादित्त[265], पन्द्रह > पनर[266], ठहर > ठैर[267], सोहबत > सोबत[268], सिरहाने > सिराने[269], रारोलनम्बर > रोलम्बर[270], अवतरण > अतरने[271], दस्तखत > दसखत[272], देहलीज > देली[273], ख्वामख्वाह > खामुखा[274], ब्राह्मण > बमण[275], ज्वरो > जरो[276], साहब > सेप[277], व्याख्यान > बिख्यान[278], ब्याह > बिहा[279], ज्योतिषी > जोतेषी[280], बन्दगी > बनगी[281], नित्यनारायण > नितनरेन[282], बेवकूफ > बेवूफ[283], विश्वनाथ > बिसनाथ[284], कृष्णकान्त > किसनकान्त[285], प्रायश्चित > प्राच्छित[286], उम्मीद > उमेद[287], मखीचूस > मखीचूस[288], तुरन्त > तुरत[289], कार्यकर्त्ता > काजकर्त्ता[290], कायस्थ > केथ[291], होम्योपैथी > हेमापोथी[292], ज्यादा > जादे[293], ट्रेन > टेन[294], सिगनल > सिंगल[295], ज्योतिष > जोतिस[296], पार्टी > पाटी[297], चन्दनपट्टी > चन्नपटी[298], ट्रैक्टर > टक्टर[299], सोशलिस्ट > सुसलिट[300], हरिद्वार > हरदुवार[301], कम्युनिस्ट > कोमनिस्ट[302], दृष्टान्त > दिष्टान्त[303], ड्राइवर > डरेवर[304], मल्हार > मलार[305], कर्मचारी >

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

258· जे· के पूल 41 तथा सती मै· 639, 259· सती मै· 572, 260· वही 655,
261· वही 270, 262 हो· 339, 263· वही 82, 264· वही 111,
265· वही 26, 266· वही 259, 267· वही 266, 268· वही 319,
269· वही 108, 270· वही 198, 271· वही 87, 272· वही 31,
273· वही 53, 274· हो· 274, 275· वही 239, 276· वही 246,
277· वही 3, 278· मै·औ· 94, 279· वही 77, 280· वही 17,
281· वही 25, 282· वही 198, 283· वही 71, 284· वही 154,
285· वही 210, 286· वही 24, 287· वही 147, 288· वही 133,
289· वही 161, 290· वही 155, 291· वही 15, 292· वही 36,
293· वही 228, 294· वही 243, 295· वही 243, 296· वही 221,
297· वही 260, 298· वही 28, 299· वही 269, 300· वही 104,
301· जुलू· 36, 302· वही 79, 303· वही 76, 304· वही 136,
305· वही 132,

कम्मोचारी[306], अमन्य > अमन्वो[307], स्वाद > शाद[308], धोया > धोवा[309], मशहूर > मशूर[310], बाहर > बार[311], तुम्हारा > तुमारा[312], उम्मीदवार > उमेदवार[313], धपरों > धपड़ों[314].

## 2·23 अन्त्य व्यंजनलोप

आमदनी > आमद[315], हिरण्याकश्यप > हिरनाकुस[316], सर्वस्व > सरबस[317], अर्घ्य > अरघ[318], अप्रिय > अकरी[319], कड़वी > कड़[320], बारह > बारा[321], अन्य > आन[322], क्षत्रिय > छतरी[323], ब्रह्माण्ड > बरमान[324], पन्द्रह > पनर[325], तेरह > तेर[326], ब्याह > ब्या[327], देहलीज > देली[328], ख्वामख्वाह > खामुखा[329], पंचगव्य > पंचगव[330], न्याय > न्यो[331], उपद्रवी > उपद्दरी[332], घाव > घा[333], सत्य > सत्त[334], धन्य > धन[335], प्रान्तीय > परान्ती[336], कदम्ब > कदम[337], गुलबन्द > गुलबन[338], वैश्य > बैस[339], बर्दाश्त > बर्दास[340], चाँद > चान[341], गिरफ्तार > गिरफ्फ[342], रहस्य > रहस343, जमानत > जामिन[344], कच्छप > काछु[345], उपाय > उपा[346], मगर > मग[347].

## 3· ध्वनि - परिवर्तन

---

306· जुलू· 8, 307· वही 18, 308· वही 2, 309· सा·ल·म· 53, 310· वही 91, 311· वही 94, 312· वही 156, 313· नई पौ· 19, 314· दुख· 131, तथा व·के बेटे 26, 315· बाबा बटे· 93, 316· जब तक पृ· 75, 317· दुख· 148, 318· वही 151, 319· कल· 87, 320· जं·के पुल 24, 321· वही 48, 322· वही 41 तथा सती मै· 639, 323· सती मै· 307, 324· हो· 108, 325· वही 259, 326· वही 75, 327· वही 115, 328· वही 53, 329· वही 274, 330· वही 230, 331· वही 110, 332· वही 291, 333· वही 11, 334· मै·आँ· 42, 335· वही 23, 336· वही 260, 337· वही 63, 338· वही 226, 339· वही 88, 340· वही 151, 341· वही 265, 342· वही 9, 343· वही 260, 344· जुलू· 58, 345· वही 14, 346· सा·ल·म· 190, 347· वही 57,

## 3·1 स्वर - परिवर्तन

### 3·11 असंयुक्त स्वर

**(क) अ ∽ आ > इ ई ∽ उ ∽ ए ऐ ∽ ओ औ**

जाड़ा > जुड़ी[348], वकील > बोकील[349], लालसा > लिलसा[350], वज़न > बोजन[351], विलायत > विलैत[352], सरकार > सिरकार[353], प्रश्न > प्रिशन[354], कब्र > कबुर[355], उम्र > उमिर[356], ज़मींदार > जिमिदार[357], व्यापारी > ब्योपारी[358], शुक्र > शुकर[359], अस्पताल > असपिताल[360], वीणा > बिने[361], अलक्षण > अलिछन[362], जापान > जपैन[363], मुरली > मुरूली[364], शिव > शिबो[365], लालनायक > लैलनैक[366], लालटेन > लैल्टेन[367], न्याय > न्यो[368], साहब > सैप[369], अस्पताल > इसपिताल[370], मशीन > मिसीन[371], सफ़ेद > सुफ़ेद[372], इन्तज़ार > इन्तिज़ार[373], मलेरिया मैलेरिया[374], नमक > नीमक[375], हज़ार > हजोर[376], कायस्थ > कैथ[377], परवाह > परिवाह[378], डग-डग > डेग-डेग[379], सलवार > सिलवार[380], जवाहरलाल > जमाहिरलाल[381], इन्तज़ाम > इन्तिज़ाम[382], यादव > जादोब[383], गारण्टी > गौरंटी[384], कर्मचारी > कम्मोचारी[385], बड़ीजी > बिड़ीजी[386], नहीं > नेई[387], जमानत > जामिन[388], बराबर >

---

348· कब तक पृ· 109, 349· मै·आँ· 60, 350· नई पौ· 83, 351· बाबा बटे· 141, 352· बल· 91, 353· जं·के फूल 18, 354· वही 174, 355· सती मै· 207, 356· वही 599, 357· वही 54, 358· वही 270, 359· हो·300 360· वही 4, 361· वही 305, 362· वही 110, 363· हो· 3, 364· वही 175, 365· वही 160, 366· वही 228, 367· वही 108, 368· वही 110, 369· वही 3, 370· मै·आँ· 16, 371· वही 188, 372· वही 143, 373· वही 118, 374· वही 10, 375· वही 35, 376· वही 209, 377· वही 15, 378· वही 28, 379· वही 23, 380· वही 200, 381· वही 18, 382· वही 273, 383· जुलु· 33, 384· वही 136, 385· वही 8, 386· वही 8, 387· वही 10, 388· वही 58,

बरोब्बर[389], बगैर > बिगैर[390], घर > घेर[391], गया > गिया[392], फ़िक्र > फ़िकिर[393], रहना > रहेना[394], बिस्तर > बस्तुर[395], जयराम > जोयराम[396], निश्चय > निश्चोय[397], करतब > करतोब[398], जंगली > जोंगली[399], समस्त > सोमोस्त[400].

(ख) इ ~ ई > अ ~ उ ऊ ~ ए ऐ ~ ओ

धीमते > धैवते[401], उम्मीदवार > उमेदवार[402], चिन्ह > चेन्ह[403], दीवाल > देवल[404], मिज़ाज > मेज़ाज[405], बविन्दर > मबेन्दर[406], नींबू > नेबू[407], तिवारी > तैवारी[408], मिठल > मेठल[409], तिरंगा > तेरंगा[410], इतना > एतना[411], सीधे > सूधे[412], मिनिस्टर > मेनिस्टर[413], रिवाज़ > रेवाज़[414], थोड़ी > थोड़ो[415], बीमारी > बेमारी[416], सिनेमा > सनिमा[417], सिफ़ारिश > सुफारिस[418], इमरती > अमिरती[419], रोहिणी > रोहनी[420].

(ग) उ~ऊ > अ ~ ए ऐ ~ ओ औ

तुमे > तैमे[421], लुहारों > लौहेरो[422], मुवक्किल > मोकिल[423], जुगाड़ > जोगार[424], नुक़सान > नोकसान[425], मुहूर्त > मुहेरत[426], चुरुट > चरट[427], बहुत > बोत[428], पुरुषोत्तम > परषोत्तम[429], त्रुटि > तरोटी[430], नुक्स >

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

389. सा.ल.म. 59, 390. वही 80, 391. वही 249, 392. वही 297, 393. वही 131, 394. वही 167, 395. हो. 311, 396. जुलू. 98, 397. वही 125, 398. वही 126, 399. वही 18, 400. वही 21, 401. कब तक पु. 344, 402. कल. 84 तथा मै.आँ. 147, 403. नई पौ. 96 404. वही 121 तथा कल. 95, 405. सती मै. 227, 406. हो. 235, 407. मै.आँ. 269, 408. वही 32, 409. वही 205, 410. वही 203, 411. वही 54, 412. वही 44, 413. वही 28, 414. वही 153, 415. जुलू 44, 416. मै.आँ. 38, 417. वही 139, 418. कल. 45, 419. वही 110, 420. वही 23, 421. कब तक पु. 48, 422, वही 48, 423. नई पौ. 97, 424. कल. 101, 425. वही 134, 426. वही 97; 427. ज.के पूल 102, 428. वही 18, 429. हो. 338, 430. मै.आँ. 82,

नोकस[431], बुखार > बोखार[432], गुस्सा > गोस्सा[433], नाखून > नाखन[434], खुराक > खोराक[435], बहुत > भौबोध[436], खूबसूरत > खपसूरत[437], मूंछ > मोंच[438], कम्यूनिस्ट > कोमनिस्ट[439], तूफ़ान > तोफ़ान[440], पुलिस > पोलिस[441], मुकदमा > मोकदमा[442], मुसलमान > मोछलमान[443].

(छ) ए ∽ ऐ > इ इा ∽ इ ई ∽ ओ

बेहाल > बिहाल[444], मेहनत > मिहनत[445], स्टेशन > इसटीशन[446], बैरिस्टर > बालिस्टर[447], पेंसिल > पिनसिल[448], सीमेंट > सीमिंट[449], बेगार > बिगार[450], मेहमान > मिहमान[451], बेशर्म > बिशरम[452], पेन्शन > पिनशन[453], प्रेमी > पिरमी[454], मेहरबानी > मिहरबानी[455], बेतली > बितली[456], बेनर्जी > बनरजी[457], राजेन्द्र > रजीन्नर[458], शेखचिल्ली > सिकचिल्ली[459], परेशान > परीशान[460], सफ़ेद > सुफ़ेद[461], होम्योपैथी > हेमापोथी[462], एस• पी• > इस• पी[463], मेम्बर > मिम्बर[464], मलेरिया लैटर > मलरिया लपटर[465], सिनेमा > सनीमा[466], सिनेमा > सलिमा[467], तैयार > तयार[468], गेहूं > गहूम[469], सीमेंट > सिलमिंट[470].

(ज) ओ ∽ औ > इ ∽ उ ऊ

त्योहार > तिहार[471], ख़ामोश > खामूश[472], द्रोणाचार्य > दुरनाचारज[473],

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

431• मै•आँ•184, 432• वही 16, 433• वही 221, 434• वही 28, 435• वही 50, 436• वही 200, 437• वही 205 तथा जुलू• 35, 438• मै• आँ• 20, 439• जुलू• 79, 440• सा•ल•म• 86, 441• वही 229, 442• मै• आँ• 184, 443• जुलू• 3, 444• कब तक पु• 367, 445• रति•की चाची 15[illegible] तथा मै•आँ• 73, 446• मै•आँ• 9, नई पौ• 14, बाबा बटे• 142, ज•के•फूल 418, 447• बाबा बटे• 139, मै•आँ. 66, 448• बल• 51 449• वही 88, 450• ज•के फू• 156, 451• वही 20, 452• है. 136, 453• वही 62, 454• वही 213, 455• वही 72, मै•आँ• 251, 456• हो• 175, 457• वही 11, 458• मै•आँ• 28,459• मै•आँ• 248, 460• वही 150 तथा जुलू• 78, 461• मै•आँ• 34, 462• वही 36, 463• वही 28, 464 वही 106, जुलू• 8[illegible] 465• मै•आँ• 105, 466• जुलू• 50, 467• वही 139, 468• सा•ल•म• 138, 469•जुलू•167 470•वही 104 471•वही 93 472•हो•254 473•मै•आँ•197

मोहल्लत > मुहल्लत[474], गोदामघर > गुदामघर[475], सोशलिस्ट > सुशलिट[476], दो > दू[477].

### 3·12 संयुक्त स्वर

### 3·121 संयुक्त स्वर > मूल स्वर

#### (क) आइ > ए

आइने > ऐने[478], गुंजाइश > गुंजिश[479], लाइन > लैन[480], हवाईजहाज़ों > हवैजहाज़ों[481], टाइम > टैम[482], साइकिल > सैकिल[483], राइफल > रैफल[484], लाइट > लैट[485], टाइप > टैप[486].

#### (ख) आय + य (< य) > ऐ

लायक > लैक[487], उदयराम > उदेराम[488], कायल > कैल[489], शिकायत > शिकैत[490], बेलायकी > बेलैकी[491], शायद > शैद[492], नौसनायक > नैसनैक[493], पंचायत > पंचैत[494], विलायत > विलैत[495], जयकिशन > जैकिशुन[496], नित्यनारायण > नितलरैन[497], सत्यनारायण > सतलरैना[498], रामायण > रमैन[499], कायदा > कैदा[500], विनय > विनै[501], घायल > घैल[502], प्रलय > प्रलै[503], कायम > कैम[504].

---

474· मै·आँ· 123, 475· वही 214, 476· वही 104, 477· जुलू· 8, 478· अब तक पृ· 255, हो· 199, 479· हो· 82, 480· वही 118, मै·आँ· 53, 481· हो· 29, 482· वही 4, मै·आँ· 200, 483· मै·आँ· 142, 484· वही 207, 485· वही 61, 486· वही 29, 487· हो· 115, 488· वही 88, 489· वही 167, 490· हो· 279, 491· वही 167, 492· वही 214, 493· वही 228, 494· वही 26, 495· वही 2, मै·आँ· 17, 496· बाबा बटे· 20, 497· मै·आँ· 198, 498· वही 131, 499· वही 11, जुलू· 81, 500· मै·आँ· 243, 501· वही 27, 502· वही 204, 503· जुलू· 131, 504· नई पौ· 116,

(ग) इ + अ (< य) = ए

नियम > नेम[505], तबियत > तब्येत[506].

3·122 मूल स्वर > संयुक्त स्वर

(क) ऐ > अइ

ऐनी > अइनी[507], पैसा > पइसा[508], नैहर > नइहर[509], बैठे > बइठे[510], ऐसे > अइसे[511].

(ख) औ > अउ

चौरा > चउरा[512], मनौती > मनउती[513], चौथी > चउथी[514], चौधरी > चउधरी[515], और > अउर[516], कौन>कउन[517], चौतरे > चउतरे[518].

3·13 अनुनासिकीकरण

सामान्य स्वरों के नासिकीकरण के उदाहरण भी मिलते हैं। इसकी दो स्थितियाँ हैं, अकारण नासिकीकरण और सकारण नासिकीकरण। अकारण नासिकीकरण वहाँ होता है जहाँ शब्द में कोई नासिक्य व्यंजन नहीं होता फिर भी कोई स्वर नासिक्य हो जाता है, जैसे – आफ़त > आँफत[519], शौक > सौंक[520], विलायत > विलैंत[521], शिकायत > शिकैंत[522], ~~[illegible]~~, बिगड़ेगा > बिगड़ैंगा[524], चावल > चाँवल[525], आएगा > आयेंगा[526], समझेगा > समझेंगा[527].

---

505· अब तक पृ· 123, 506· सा·ल·म· 89, 507· व·दे बेटे 96, 508· कल· 20, सा·ल·म· 50, 509· कल· 130, 510· सती मै· 657, सा·ल·म· 65, 511· सा·ल·म· 51, 512· रति·की धाची 170, 513· नई पौ· 92, 514· व·दे बेटे 55, 515· कल· 124, 516· वही 138, सा·ल·म· 65, 517· वही 518· अब तक पृ· 62, 519· अब तक पृ· 99, 520· वही 52, 521· कल· 91, हो· 2, 522· हो· 279, ~~523· [illegible]~~, 524· सा·ल·म· 50, 525· वही 65, 526· वही 50, 527· वही 80,

सकारण नासिकीकरण वहाँ घटित होता है जहाँ शब्द में पहले से ही कोई नासिक्य ध्वनि होती है.
जैसे - ब्राह्मण > बाँमन[528], बनिया > बनियाँ[529], पूर्णिमा > पूरनिमाँ[530], सिगनल > सिगंल[531].

## 3·14 ह्रस्वीकरण

### (क) आ > अ

रास्ते > रस्ते[532], हमारी > हमरी[533], एकान्त > एकन्त[534], यात्रा > जतरा[535], आशीर्वाद > असिरबाद[536], शाबाश > साबस[537], फाटक > फट्टक[538], नाराज़ी > नराज़ी[539], दातुन > दतुवन[540], रामायण > रमाएन[541], साधारण > सधारन[542], आकाश > अकास[543], महात्मा > महतमा[544], श्रीनारायण > सिरीनरायन[545], ग्रामेश > ग्रमेश[546], आधार > अधार[547], नामांकन > नामकन[548], डाक्टर > डक्टरवा[549], हमारे > हमरे[550], ज़िन्दाबाद > ज़िन्दबाध[551], रामखेलावन > रमखेलोना[552], महाराणा > महराना[553], गाँधी > गन्धी[554], राजपूत > रजपूत[555], आन्दोलन > अन्दोलन[556], हमारा > हमार[557], ब्राह्मण > बम्मन[558]; कांग्रेस > कांरेस[559], बाज़ार > बजार[560].

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

528· बल· 45, 529· मै·आं· 88, 530· वही 163, 531· वही 243,
532· मै·आं· 105, कब तक पु· 111, जं·के फूल 161, हो· 216,
533· वही 97, 534· वही 389, 535· नई पौ· 107, 536· वही 132, बल· 115, 537· नई पौ· 116, 538· ध·के बेटे 11, 539· बल· 93,
540· वही 101, 541· वही 84, 542· वही 118, सती मै· 58,
543· वही 128, 544· वही 140, सती मै· 19, 545· सती मै· 304,
546· वही 489, 547· हो· 114, 548· वही 30, 549· मै·आं· 164,
550· वही 74, 551· वही 34, 552· वही 164, 553· वही 60,
554· वही 27, 555· वही 260, 556· वही 19, 557· वही 107,
558· जुलू· 36, 559· वही 15, 560· सा·न·म· 135,

(ख) ई > इ

शीतलपाटी > सितलपाटी[561], पंजीकार > पंजियाड़[562], आशीर्वाद > आसिरबाद[563], सीमेंट > सिलमिंट[564], ईर्ष्या > इरखा[565], बेईमानी > बईमानी[566], बीरबल > बिरबल[567], ईश्वर > इसवर[568], यज्ञोपवीत > जग्योपवित[569], तीव्र > तिब्र[570], दूरबीन > दुरबिन[571], मशीन > मिशिन[572].

(ग) ऊ > उ

पूर्णिमा > पुरन्मिा[573], भूमिहार > भुइहार[574], अन्नपूर्णा > अनपुर्ना[575], भूलनी > भुलनी[576], पूर्णिमा > पुरैन्मा[577], मूली > मुल्ली[578], दूरबीन > दुरबिन[579], ऊपर > उप्पर[580].

3.15 दीर्घीकरण

(क) अ > आ

शुक > सुका[581], पक्ष > पाख[582], समर्थ > सामरथ[583], बारह > बारा[584], पत्थर > पाथर[585], अन्य > आन[586], नृसिंह > नारसिंग[587], अंग > आंग[588], बहन > बहान[589], जयहिन्द > जायहिन्द[590], अक्षर > आखर[591], अपना > आपना[592], अकल > आकल[593], आजकल > आजकाल[594].

---

561. रति-की थाथी 145, 562. नई पौ. 133, 563. वही 132, बल. 115, 564. बल. 104, 565. वही 32, 566. वही 152, 567. हो. 35, 568. मै. आं.256, 569. वही 34, 570. वही 103, 571. जुलु. 85, 572. वही 136, 573. नई पौ. 76, 574. बाबा बटे. 56, 575. बल. 21, 576. हो. 83, 577. मै.आं. 163, 578. वही 222, 579. जुलु. 85, 580. सा.ल.म. 237, 581. कब तक पु. 60, 582. बाबा बटे. 33, 583. वही 20, 584. जं.के फूल 48, 585. वही 23, 586. वही 41, सती मै. 639, 587. हो. 51, 588. वही 329, 589. मै.आं. 83, 590. वही 10, 591. वही 43, 592. जुलु. 1, 593. वही 4, 594. सा.ल.म. 135,

§ख§ इ > ई

बित्ता > बीत[595], भतृहरि > भरथरी[596], शान्ति > साती[597], कलावति > कलावती[598], मन्दिरों > मन्दीरों[599], क्रान्ति > किरान्ती[600], त्रुटि > तरोटी[601], वृष्टि > बिरटी[602],

§ग§ उ > ऊ

गुड़ > गूड़[603], शुक > सूका[604], बहुत>बहूत[605], दुख > दूख[606],

§घ§ ए > ऐ

तेरी > तैरी[607], रेलवे > रैलवे[608], फेल > फैल[609],

§च§ ओ > औ

तो > तौ[610], त्योहार > त्यौहार[611], सोमवार > सौंबार[612],

3·2 अर्द्धस्वर का विकास

अर्द्धस्वर मुख्यतः दो हैं §य§ और §व§

§क§ य > इ

यहाँ > इहाँ[613], सायत §मुहूर्त्त§ > साइत §मुहूर्त्त§[614], ये > इ[615], गाय > गाई[616],

§ख§ य > व

इसका एक ही उदाहरण देखने को मिलता है,

---

595· रति·की चाची 159, 596·बल· 117, 597· वही 144, 598· हो· 269, 599· वही 274, 600· मै·आँ· 78, 601· वही 82, 602· जुलू· 131, 603· हो· 103, 604· कब तक पु· 60, 605· सा·ल·म· 264, 606· वही 297, 607· मै·आँ· 82, 608· वही 52, 609· वही 20, 610· कब तक पु· 215, 611· बल· 36, 612· हो· 182, 613· जं·के फूल 24, 614· बल· 97, 615· हो· 150, 616· हो· 89,

जैसे - घायल > घवेल[617],

(ग) य > ज

मर्यादि > मरजाद[618], यज्ञ > जग[619], यात्रा > जतरा[620], असहाय > असहाज[621], युधिष्ठर > जुधिस्ठिल[622], ग्राह्य > गरहाज[623], यश > जस[624], युद्ध > जुद्ध[625], कार्य > काज[626], यौवनदार > जोबनदार[627], बायफ्रिंत > बारजाफ्रंत[628], यन्त्र > जन्तर[629], द्रोणाचार्य > दुरनाचारज[630], यमदूत > जमदूत[631], अष्टयाम > अष्टजाम[632], संयोजक > संजोगक[633], वियोग > बिजोग[634], यज्ञोपवीत > जग्योपवित[635], दुर्योधन > दुर्जोधन[636], यादव > जादोब[637], संयुक्त > संजुक्त[638],

कभी - कभी यह भी देखा जाता है कि / ज / का विकास / य / में हुआ है जैसे - गुंजाइश > गुंजायश[639], फ़रमाइश > फ़ुर्मायश[640], भलाई > भलाय[641], इत्तला > यतलाय[642], हाईस्कूल > हायस्कूल[643], भाई > भाय[644],

(घ) व > उ ∽ ऊ

वर्दी > उर्दी[645], उज्वल > उउजल[646], चावल > चाउर[647], स्वाद > सुआद[648], हवा > हुआ[649], स्वभाव > सुभाव[650], स्वार्थ > सुआरथ[651], स्वर्गवास > सुरगवास[652], हरिद्वार > हरदुआर[653],

कभी - कभी / उ / का विकास / व /

617. मै.आं. 204, 618. अब तक पृ. 123, 619. नई पौ. 3, दुख. 148, हो. 25, 620. नई पौ. 107, 621. बल. 115, 622. वही 164, 623. वही 142, 624. सती मै. 251, मै.आं. 189, 625. हो. 3, 626. वही 254, जुलू. 14, 627. हो. 65, 628. मै.आं. 108, 629. वही 33, 630. वही 197, 631. वही 123, 632. वही 201, 633. वही 59, 634. वही 60, 635. वही 34, 636. वही 69, 637. जुलू. 33, 638. वही 61, 639. अब तक पृ. 240, 640. ब.के बेटे 55, 641. मै.आं. 11, 642. वही 23, 643. वही 30, 644. सत.स.म. 229, 645. मै.आं. 113, 646. बल. 150, 647. वही 99, 648. मै.आं. 143, 649. वही 234, 650. वही 21, 651. जुलू. 90, 652. बल. 78, 653. जुलू. 36,

में हुआ है, जैसे – दातुन > दतवन[654],

(च) व > बो ∽ बौ

यादव > यादौ[655], दण्डवत > डंडौत[656], व्यवहार > ब्योहार[657], अवतार > औतार[658], दानव > दानौ[659], अवगुण > औगुन[660], धवल > धौली[661], कव्वाली > कौवाली[662], भावद् > भौत[663], जसवन्तसिंह > जसौंतसिंह[664], अवसर > औसर[665], उपद्रव > उपद्रौ[666], स्वराज्यी > सौराजी[667], वामनदास > बौनदास[668], गाव > गौ[669], सावन > सौंठा[670], वज़न > औज़न औजन[671], वकालत > वोकालत[672] वकील > वोकील[673], स्वार्थ > सोआरथ[674], सरस्वती > सरोसती[675], मुवक्किल > मोक्किल[676],

(छ) व > य

तिवारी > त्याड़ी[677], नेवले > न्यौले[678],

(ज) व > प

इसका केवल एक ही उदाहरण मिलता है, जैसे – देपताथान < देवतास्थान[679],

(झ) व > ब

व्यवहार > ब्योहार[680], वक्त > बखत[681], वास > बास[682], आशीर्वाद > असिरबाद[683], परिवार > पलिवाड़[684], सर्वस्व > सरबस[685], वैद्य >

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

654· कल· 101, 655· कब तक पु· 213, 656· वही 398, 657· वही 91, 658· वही 75, जं·के फूल 137, मै·आं· 72, वर्ष659· नई पौ· 126, 660· दुख· 110, 661· ब·के बेटे 47, 662· सती मै· 412, मै·आं·110, 663· हो· 84, 664· वही 15, 665· मै·आं· 43, 666· वही 34, 667· कल· 89, 668· मै·आं· 108, 669· हो· 110, 670· वही 69, 671· बाबा बटे· 141, 672· कल· 44, 673· वही 154, 674· मै·आं· 27, 675· वही 70, 676· नई पौ· 97, 677· हो· 38, 678· बाबा बटे· 86, 679· हो· 101, 680· कब तक पु· 91, 681· वही 94, 682· रति·की चाची 127, 683· नई पौ· 132, कल· 115, 684· नई पौ· 106, 685· दुख· 148,

बैद[686], वर्षा > बरखा[687], विकराल > बिकराल[688], वज्र > बज्जर[689], पर्व > परब[690], महाराष्ट्र > महारास्टर[691], निर्वाह > निरबाह[692], विलाप > बिलाप[693], गर्व > गरब[694], परवशता > परबसता[695], विश्वास > बिसास[696], व्यथा > बिथा[697], विषभोर > बिसभोर[698], व्याकुल > बियाकुल[699], विक्रमादित्य > बिकरमादित्त[700], पृथ्वी > पिरथिवी[701], वीणा > बीन[702], कलावति > कलाबती[703], वधा > बधा[704], पंचकाव्य > पंचकाब[705], वैतरणी > बैतरनी[706], विलायत > बिलैत[707], श्रवण > सरबन[708], प्रस्ताव > परसताब[709], व्याख्यान > बिख्यान[710], गन्धर्व > गन्धरब[711], विवाह > बिबाह[712], सर्व > सरब[713], वर्ण > बरन[714], वृक्ष > बिरिछ[715], वैश्य > बैस[716], विश्वनाथ > बिसनाथ[717], वैष्णव > बैस्नव[718], वध > बध[719], वियोग > बियोग[720], विनय > बिनै[721], दिव्य > दिब्ब[722], तीव्र > तिब्र[723], व्रत > बरत[724], यादव > जादोब[725].

(ट) <u>व ∽ वँ > म</u>

भगवान > भगमान[726], जवाहरलाल > जमाहिरलाल[727], नौजवान > नौजमान[728], पावन > पामन[729], पाँचवीं > पाँचमीं[730], गाँव > गाम[731], गँवार > गमार[732], साँवरिया > सामरिया[733], भँवरा >

---

686. दुख. 148, 687. कल. 23, 688. वही 26, 689. वही 91, 690. वही 36, 691. वही 38, 692. वही 51, 693. वही 117, 694. जं. के फूल 102, 695. वही 157, 696. वही 48, 697. वही 74, 698. सती मै. 402, 699. वही 407, 700. हो. 26, 701. वही 291, 702. वही 305, 703. वही 269, 704. वही 204, 705. वही 230, 706. वही 31, 707. वही 2, 708. मै. आँ. 187, 709. वही 143, 710. वही 94, 711. वही 277, 712. वही 277, 713. वही 25, 714. वही 14, 715. वही 63, 716. वही 88, 717. वही 154, 718. वही 248, 719. वही 196, 720. वही 60, 721. वही 27, 722. वही 22, 723. वही 103, 724. जुलू. 68, 725. वही 33, 726. अब तक पृ. 96, 727. मै. आँ. 18, 728. वही 20, 729. वही 256, 730. जं. के फूल 159, 731. अब तक पृ. 48, 732. वही 148, 733. वही 135.

भोंमरा[734], कुंअर > कुमर[735],

3·3 व्यंजन - विकास

3·31 समीकरण

कितनी > कित्ती[736], जितना > जित्ता[737], इतना > इत्ता[738], मारडाला > माड्डाला[739], वस्तु > बत्तु[740], दबोच > दोच[741], जायदाद > जैजात[742], पुण्यात्मा > पुन्नात्मा[743], गोश्त > गोत्त[744], इन्द्र > इन्नर[745], मतिशून्य > मतसुन्न[746], बदतर > बत्तर[747], विश्वास > बिसास[748], अन्नदाता > नन्ददाता[749], जुल्म > जुम्म[750], राजेन्द्र > रजीन्नर[751], पण्डित > पन्नित[752], सुन्दर > सुन्नर[753], नम्बर > नम्मर[754], जयहिन्द > जैहिन्न[755], बन्दूक > बन्नूक[756], अभिमन्यु > अभिमन्नू[757], सरस्वती > सरसती[758], विद्यमान > विज्जेमान[759], दिव्य > दिब्ब[760], दुर्योधन > जुर्जोधन[761], चन्दा > चन्ना[762], लन्दन > नन्दन[763], गणना > गनना[764],

3·32 विषमीकरण

अफ़सोस > अपसोच[765], न्याय > न्याव[766], शीशम > सीशम[767], जनाना > जलाना[768], टिकट > टिकस[769], जगन्नाथ > जगरनाथ[770], मदद > मदत[771], धिक्कार > धिरकार[772],

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

734· मै.आं· 86, 735· वही 52, 736· सा·ल·म·58, 737· कब तक पु· 323, 738· वही 99, बाबा बटे· 87, ज·के फूल 74, 739· कब तक पु· 284, 740· वही 148, 741· वही 49, 742· वही 218, बल· 35, हो· 158, 743· कब तक पु· 284, 744· वही 149, 745· नई पौ· 42, 746· वही 54, 747· बल· 153, 748· ज·के फूल 48, 749· सती मै· 25, 750· मै·आं· 154, 751· वही 28, 752· वही 71, 753· वही 72, 754· वही 133, 755· वही 10, 756· वही 207, 757· वही 196, 758· वही 128, 759· वही 52, 760· वही 22, 761· वही 69, 762· वही· 106, 763· ब जुलु· 37, 764· वही 103, 765· नई पौ· 80, बल· 114, 766· कब तक पु· 121, सती मै· 625, 767· बल· 170, 768·मै·आं·206, 769·वही53, 770·वही262, जुलु·138, 771·मै·आं·105, 772· जुलु· 144,

3·33 अल्पप्राण > महाप्राण

(क) क > ख

उक्डू > उखड़ू[773], वक्त > वख़्त[774], शौक > सौख[775], कोपलहित > खोपलहित[776], किस्सा > खिस्सा[777], काटकर > खटकर[778], पाकिस्तान > पाखिस्तान[779], पताका > पतखा[780].

(ख) ख > घ

खिसको > घसको[781].

(ग) ग > घ

गुस्सा > घुस्सा[782], सर्वसंगठन > सरबसंघटन[783], दरगाह > दरघा[784].

(घ) ज > झ

ज़हर > झेर[785].

(ङ) त > थ

भर्तृहरि > भरथरी[786], हिन्दुस्तान > हिन्दुस्थान[787], पाकिस्तान > पाखिस्थान[788], भारतमाता > भारथमाता[789]

(छ) द > ध

ज़िन्दाबाद > जिन्दबाध[790].

(ज) द-ढ > ध

---

773· कब तक पृ· 440, 774· बल· 50, सती मै· 160, 775· बल· 156, मै·आ· 63, 776· मै·आ· 162, 777· वही 277, 778· वही 10, 779· वही 195, 780· वही 35, 781· जुलू· 21, 782· हो· 258, 783· मै·आ· 25, 784· वही 228, 785· सा·ल·म· 50, 786· बल· 117, 787· मै·आ· 161, 788· वही 195, जुल· 14, 789· मै·आ· 33, 790· वही 34,

श्रद्धा > सर्धा[791], शुद्ध > सुध[792], छप्पर > छप्पड़[793],

(ख) <u>प > फ ∽ भ</u>

पहाड़ > फाड़[794], भाप > भाफ[795], दोपहरी > दोफरी[796], पहलू > फैलू[797],

(ट) <u>व ∽ ब > भ</u>

बहन > भैन[798], वेष > भेख[799], वोट > भोट[800], बविन्दर > भवेन्दर[801], वहम > भैम[802], बहुत > भोओथ[803], बाटा > भाटा[804], खाना > रभाना[805], वालण्टियरी > भोलटियरी[806], वी·पी·पी· > भीपी[807], बहुत > भोत[808],

3·34 <u>महाप्राण > अल्पप्राण</u>

(क) <u>ख > क</u>

बख्शीश > बकीस[809], शेखचिल्ली > सिकचिल्ली[810], खराब > कराब[811], भूखा > भूका[812], सीख > सीक[813],

(ख) <u>घ > ग</u>

करघा > करगह[814],

(ग) <u>छ > च</u>

मूँछ > मोच[815], कुछ > कुच[816], पूछता > पूचता[817], छोकरी > चोकरी[818],

---

791· मै·आँ· 128, नई पौ· 4, 792· मै·आँ· 214, 793· वही 10, 794· कब तक पु· 99, 795· व·के बेटे 8, 796· हो· 118, 797· जुलू· 37, 798· कब तक पु· 177, 799· दुख· 49, बल· 43, 800· बाबा बटे· 122, कल· 160, 801· हो· 235, 802· वही 98, 803· मै·आँ· 200, 804· वही 209, 805· वही 260, 806· वही 18, 807· जुलू· 72, 808· सा·ल·म· 50, 809· मै·आँ· 73, जुलू· 98, 810· मै·आँ· 248, 811· सा·ल·म· 60, 812· वही 65, 813· वही 225, 814· सती मै· 481, 815· मै·आँ· 20, 816· सा·ल·म· 51, 817· वही 51, 818· वही 64,

UNIVERSITY OF HYDERABAD
Acc. No. 175
Date 27 JAN 86
LIBRARY

मच्छी > मच्ची[819],

(घ) झ > ज

तुझ > तुज[820], मुझ > मुज[821], समझेगा > समजेगा[822],

(च) ठ > ट

सर्वसंगठन > सरवसंघटन[823], ठीक > टीक[824], झूठ > झूट[825],

(छ) थ > त

गृहस्थी > गिरस्ती[826], कायस्थ > कायस्त[827], था > ता[828],
हाथ > हात[829],

(ज) ध > द

दूध > दूद[830], किधर > किदर[831], धन्धा > धन्दा[832],

(झ) फ > प

अफ़सोस > अपसोच[833], खुराफ़ात > खुरपात[834], फाँसी > पाँसी[835],
फ़ीस > पीस[836], साफ़ > साप[837],

(ट) भ > ब

जीभ > जीब[838], अलभ्य > अलब्बो[839], सभी > सबी[840], तभी > तबी[841],
भरेगा > बरेगा[842], भात > बात[843], भूखा > बुका[844], अभी > अब्बी[845],

---

819· सा·ल·म· 65, 820· कब तक पु· 437, 821· सा·ल·म· 52, 822· वही 80, 823· मै·आँ· 25, 824· सा·ल·म· 52, 825· वही 217, 826· नई पौ· 67, बाबा बटे· 43, दुख· 56, व·के बेटे 78, कल· 91, सती मै· 329, हो· 15, 827· मै·आँ· 23, 828· सा·ल·म· 63, 829· वही 81, 830· हो· 111, 831· सा·ल·म· 53, 832· वही 74, 833· नई पौ·80, सा·ल·म· 244, कल· 114, 834· नई पौ· 82, कल· 65, 835· हो·270, 836· साल·म· 242, 837· वही 265, 838 कब तक पु· 168, 839· जुलू· 18, 840· सा·ल·म· 50, 841· वही 50, 842· वही 64, 843· वही65, 844· वही 65, 845· वही 58,

(ग) <u>द > त</u>

शायद > सायत,[865] अंदाज > अंताज़,[866] मकसद > मकसत[867]

(घ) <u>ड > ट</u>

पोस्टकार्ड > पोस्कार्ट,[868] लीडरी > लीटरी,[869]

परेड > परेट[870]

3·37 <u>द्वित्वीकरण</u>

चित्र > चित्तर,[871] तैयार > टैय्यार,[872]

दरवाजे > दरवज्जे,[873] मुसलमानों > मुसल्लों,[874]

विक्रमादित्य > विकरमादित्त,[875] कट > कट्ट[876]

अलग > अल्लग,[877] बेटा > बेट्टा,[878] अलख > अल्लख[879]

उपद्रवी > उपद्दरी,[880] अपवित्र > अपवित्तर,[881]

बराछत्र > बराछत्तर,[882] दानपत्र > दानपत्तर[883]

गिरफ्तार > गिरफ्फ,[884] रासलीला > रसलील्ला,[885]

सूली > सुल्ली,[886] जब्त > जप्पत,[887] पताका > पत्ताखा,[888]

कर्मचारी > कम्मोचारी,[889] असभ्य > असब्भो,[890]

बराबर > बरोब्बर,[891] तलाक > तल्लाक,[892]

वक्त > वक्कत,[893] ऊपर > उप्पर,[894] अभी > अब्भी,[895]

कल >, कल्ल[896] फाटक > फट्टक,[897] वज्र > वज्जर[898]

---

865· सती मे· 374 866· हो· 110, 867· हो· 84,
868· नई पो· 136, खल· 116, जुल-37, 869· मे· आ· 133
870· जुलु· 15, 871· जं· के फूल 96, 872· जं· के फूल, 24
873· सती मै· 169, 874· सती मैं· 170, 875· हो· 26,
876· हो· 336, 877· हो· 272, 878· वही, 302,
879· वही, 156 880· वही 291, 881· मै· आ· 120,
882· वही 43, 883· वही 42, 884· वही 9, 885· वही, 54
886· वही 222 887· वही 52, 888· वही 35, 889· जुल 8
890· वही 18, 891· सा·त·म·59, 892· वही 95,893·वही264
894· वही 237, 895· वही 58, 896· कब तक पु· 247
897· व·के बेटे 11 898· बल,91

3·35 घोषीकरण

(क) क > ग

प्रकट > परगट[846], भुलक्का > भुलावा[847], डाक्टर > डागधर[848], काजल > गाजल[849], संक्रान्त > संगरात[850], क्लास > गिलास[851], जयप्रकाश > जयपरगास[852], रक्त > रगत[853], नौटंकी > नौटंगी[854],

(ख) त > द

गिरफ्तार > गिलफदार[855],

(ग) ट > ड

डाक्टरी > डागडरी[856],

कहीं कहीं / ट / का परिवर्तन / ध / और / द / में भी हो गया है। जैसे - डाक्टर > डागधर[857], डाक्टर > डागदर[858],

3·36 अघोषीकरण

(क) ग > क

रेज़गारी > रेज़कारी[859], दिमाग़ > डिमैक[860], लोग > लोक[861],

(ख) ब > प

खूबसूरत > खपसूरत[862], साहब > सेप[863], ज़ब्त > जप्त[864],

---

846· बाबा बटे· 64, कल· 37, 847· व·के बेटे 65, 848· जं·के फूल 28, 849· हो· 239, 850· वही 69, 851· मै·आं· 20, 852· वही 202, 853· वही 82, 854· वही 198, 855· बाबा बटे· 142, 856· जुलु 37, 857· जं·के फूल 28, 858· सती मै· 148, 859· व·के बेटे 15, 860· हो· 106, 861· सा·ल·म· 59, 862, कल· 20, मै·आं· 205, जुलु· 35, 863· हो· 3, 864· मै·आं· 52,

3·38 विपर्यय

जानवर > जिनावर,[899] अहंकार > हैकार,[900]
पिशाच > पिचास,[901] सांझ > संझा,[902] अठारह > अठराह,[903]
तहसीलदार > तैसीलदार,[904] विवाह > बिहाव,[905]
ब्रह्मा > बरम्हा,[906] असलियत > असीलत,[907] जमींदार > जिमदार,[908]
लखनऊ > नखलौ,[909] कपड़ा > कापड़[910]

3·39 अमूर्द्धन्यीकरण

(क) ण > न

श्रवण > सरवन,[911] पुण्यात्मा > पुन्नात्मा,[912]
हिरण्याकश्यप > हिरनाकुस,[913] प्रणाम > परनाम,[914]
पूर्णिमा > पूरनिमा,[915] अवगुण > औगुन,[916] कृष्ण > कृस्न,[917]
दक्षिण > दच्छिन,[918] कृपण > किरपिन,[919] रामायण > रमायन,[920]
अन्नपूर्णा > अनपूर्ना,[921] क्षण > छन,[922] विभीषण > बिभीसन,[923]
शरण > सरन,[924] प्रण > पन,[925] श्रीनारायण > सिरीनरायन,[926]
प्राणी > परानी,[927] ब्राह्मण > ब्राह्मन,[928] ब्रह्माण्ड > बरनाम,[929]
अलक्षण > अलिच्छन,[930] कारण > कारन,[931] धारण > धारन,[932]
गुण > गुन[933]

---

899· कब तक पृ· 115, 900· वही 109, 901· नई पौ·88
902· वही 68, 903· कल· 165, 904· जं·के फूल 104,
905· वही 21 906·सती मै·211 907·हो·74 908· वही 52
909·वही 208, 910·वही 44 911·कुल 55, 912· वही 126
913· सा·ल·म·70 914·रति की धाखी 146,मै·आ·178,कुल 16
945· मै·आ·163 916· दुख·110,917· कल·17,918·वही 29
919·वही 45 920·वही 84 921·वही 21 922·वही 25,923·जंफिपल 251
924·वही 138 925·वही198 926·सती मै 304 927·वही 452
928· वही 307,कुल 36 929·हो·108,930·वही 110,931·मै·आ·24
932· वही 259 933·सा·ल·म·61

(ख) ड़ > र

उकड़ > उखरू,[934] जुगाड़ > जोगार,[935] कड़वा > कुरवा,[936] खड़की > खरकी,[937] नगाड़ों > नगारो,[938] पड़ता > परता,[939] बड़ा > बरा,[940] घोड़ा > घोरा[941]

(ग) ढ > र

डेढ > डेर[942], ढाढस > ढारस[943]

(घ) ढ > ड

चढ़ा > चड़ा[944]

(ङ) ड > द

डगर > दगरा[945], डाक्टर > दाग्दर[946]

(च) ट > द

डाक्टर > दाग्दर[947]

(ज) ष > ख ∽ स

मूर्धन्य / ष / विकास की दो दिशाएँ मिलती हैं, (ष > ख) तथा (ष > स) इन दोनों के उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

(क) ष > ख

आशीष > आशीख,[948] भारतवर्ष > भारतवर्ख,[949]

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

934. अब तक पृ. 440. 935. बल.101, 936. वही 98
937. नती मे.454, 938. दो.87. 939.सा.ल.म. 52
940. वही 84, 941. वही 264, 942. वही 267
943. व.के.बेटे 45, 944. सा.ल.म.70, 945. अब तक पृ.36
946. मे.आ.50, 947. वही 50, 948. धुन 40, मे.आ.221
949. धुन 61

भाषा > भाखा,[950] ज्योतिषी > जोतखी,[951]
धनुषधारी > धनुखधारी,[952] संघर्ष > संघर्ख,[953] पुरुष > पुरुख,[954]
सन्तोष > सन्तोख,[955] वेष > भेख,[956] भाषण > भाखन,[957]
दोषी > दोखी,[958] विषधर > बिखधर,[959] वर्षा > बर्खा,[960]
ईर्ष्या > ईरखा,[961] परितोष > परितोख[962]

(ब) ष > स

दोष > दोस,[963] भेष > भेस,[964] भ्रष्ट > भरस्ट,[965]
कृष्ण > कृस्न,[966] महाराष्ट्र > महारास्टर,[967] युधिष्ठिर > जुधिस्ठिल,[968]
विभीषण > बिभीसन,[969] विषमोर > बिसमोर,[970] अष्टम > अस्टम,[971]
वर्षा > बरसा,[972] धनुष > धनुस,[973] मानुष > मानुस,[974]
कृष्णकान्त > किसनकान्त,[975] वैष्णव > बैस्नव,[976] ज्योतिष > जोतिस[977]

वास्तव में / ष / का उच्चारण अपने मूल रूप में हिंदी क्षेत्रीय बोलियों में नहीं होता । शिक्षित लोग भी इसका उच्चरण / श / के रूप में करते हैं । एक स्थान पर / ष / के स्थान पर / श / का प्रयोग भी देखने को मिलता है जैसे :- वृष्टि > बिश्टी[978]

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

950· जुलू,88, व·के बेटे 14, 951· मै·आ·17, नई पौ· 51
952· मै·आ·61 953·वही 143 954· वही 39, 955· वही61,बल,144
सती मै 306, 956· मै·आ·22, बल 43,दुख 49 957· मै·आ·26
958·वही 27,नई पौ·72,जुल16 959·बल 167,960·बल·23,961·वही32
962·नई पौ 85,963·सा·न·न·190,अब तक पृ·540,ज·के·फूल157,
सती मै·178 964· नई पौ·131,965·दुख 97,मै·आ·218,966·बल 17
967·वही 38 968·वही 164 969·ज·के·फूल 251 970·सती मै·402
971·हौ·295,972·मै·आ·163 973·वही 85,974·वही27,975·वही 210
976·वही 248, 977·वही 221,जुल·52, 978· जुल·131

3·3 (10) मूर्धन्यीकरण

(क) त > ट

बहुत > बहोट,[979] तैयार > टैयार,[980] शाक्त > साक्ट,[981]

(ख) द > ड

दण्डवत > डंडोत,[982] दाजुल > डाजुल,[983] दिल्ली > डिल्ली[984] मंदिर > मंडिर,[985] आदमी > आडमी,[986] दिमाग > डिमैक,[987] आन्दोलन > अन्डोलन[988]

(ग) र > ड़

छप्पर > छपड़ो,[989] छोकरे > छोकड़े,[990] खपरैल > खपड़ैल,[991] तिवारी > त्याड़ी,[992] रामप्यारी > रूमपियाड़ी,[993] खद्दर > खध्धड़,[994] मच्छर > मच्छड़,[995] पंजीकार > पंजियाड़[996]

(घ) न > ण

अनाजदाना > अनदाणा,[997] बहना > बेणा,[998] प्राश्नी > पाश्णी[999]

3·3 (11) ऊष्म ध्वनियों का विकास

ऊष्म ध्वनियों का विकास एक प्रमुख आंचलिक प्रवृत्ति है।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

979· ज· के फूल 245 980· वही 24 981·मै·आं·248
982· कब तक पु·398 983·रति की चाची 22 984·नई पौ·127, मै·आ·200,जुलू 43 985· बल·123 986· ज·के फूल 25 987·हो·106
988· मै·आ·19 989· व·के बेटे 26,990·बल·14 991·वही 168
992· हो·38 993·मै·आं· 213 994·वही 10 995·वही 16
996· नई पौ·133 997· कब तक पु·193 998·हो·111 999·वही 211

प्राय: सभी अंचलों में तालव्य / श / का विकास दन्त्य / स / में होता दिखाई पड़ता है। पश्चिम से लेकर बिहार तक के अंचल इस प्रवृत्ति के अनुसार / श / का उच्चारण / स / के रूप में करते हैं। केवल बंगाल में / स / का / श / बोला जाता है। प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यासों से निम्नलिखित उदाहरण संग्रहीत हैं :-

(क) श > स

शरमाती > सरमाती,[1000] शर्त > सरत,[1001] मुश्किल > मुस्किल,[1002] शहर > सहर,[1003] बेशक > बेसक,[1004] क्लेश > कलेस,[1005] इशारे > इसारे,[1006] हिरण्यकश्यप > हिरनाकुस,[1007] शीतलपाटी > सितलपाटी,[1008] प्रायश्चित > प्रासचित,[1009] शुरू > सुरू,[1010] शुभ > सुभ,[1011] आशीर्वाद > असिरवाद,[1012] स्टेशन > टीसन,[1013] जयकिशन > जयकिसुन,[1014] शीशम > सीसम,[1015] चाशनी > चासनी,[1016] गोश्त > गोस्त,[1017] बालूशाही > बालूसाही,[1018] ईश्वर > ईसर,[1019] फरमाइश > फरमाइस,[1020] परेशान > परेसान,[1021] ताश > तास,[1022] प्रशंसा > परसंसा,[1023] शैतानी > सैतानी,[1024] मालिश > मालिस,[1025] मुन्शी > मुनसी,[1026] कुश्ती > कुस्ती,[1027] रिश्ता > रिस्ता,[1028] शुक्र > सुकुर,[1029] शतरंज > सतरंज,[1030] सिफारिश > सुफारिस[1031] होश > होस[1032] शाम > साम,[1033] शक्ल > सकल,[1034] आकाश > अकास,[1035] बर्दाश्त > बरदास्त,[1036] सोशलिस्ट > सोसलिस्ट,[1037] लाश > लास,[1038] दर्शन > दरसन,[1039]

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

1000. कब तक पृ. 537, 1001. वही 106, जं. के फूल 208, 1002. कब तक पृ. 106
1003. कब तक पृ. 339, 1004. वही 177, 1005. वही 408, 1006. वही 157,
1007. वही 75, 1008. रति. की चाची 145, 1009. वही 47, बाबा बटे. 63. 1010. नई पौ. 40, 1011. वही 42, 1012. वही 132, 1013. बाबा बटे. 142, बल. 36
1014. बाबा बटे. 20, 1015. दुख. 150 1016. व. के बेटे 70, 1017. वही 42
1018. वही 15, 1019. बल. 21 1020. वही 101 1021. वही 101, सती मै. 406
1022. बल. 104 1023. वही 113, 1024. वही 65, सती मै. 578, 1025. बल. 62
1026. वही 95, 1027. वही 68 1028. वही 63 1029. वही 48 1030. वही 90
1031. वही 45 1032. वही 151 1033. वही 167, सती मै. 374, 1034. बल. 115
1035. वही 128, 1036 वही 133 1037. वही 137 1038. वही 152, सती मै. 410
1039. बल. 153.

मशीन > मसीन,[1040] शौक > सौक,[1041] निशानी > निसानी,[1042]
विश्वास > बिसास,[1043] शास्त्रार्थ > सास्तरार्थ,[1044]
शांति > सांती,[1045] शब्द > सब्द,[1046] फैशन > फैसन,[1047]
शरण > सरन,[1048] शाबाश > साबास,[1049] परवशता > परबसता,[1050]
आशाओं > आसाओं,[1051] निराश > निरास,[1052] प्रवेश > प्रवेस,[1053]
देश > देस,[1054] बदमाश > बदमास,[1055] खुशी > खुसी,[1056]
अवधेश > अवधेस,[1057] सन्देशा > सनेसा[1058] शराफत > सराफत,[1059]
कोशिश > कोसिस,[1060] शर्म > सरम,[1061] तमाशा > तमासा,[1062]
श्लोक > इस्लोक,[1063] यश > जस,[1064] नशा > नसा,[1065]
शोर > सोर,[1066] शायद > सायद,[1067] दिशा > दिसा,[1068]
हमेशा > हमेसा,[1069] शरीफ > सरीफ,[1070] शादी > सादी,[1071]
होशियार > होसियार,[1072] शर्मिन्दा > सरमिन्दा,[1073]
खामोश > खामोस,[1074] शिवचरण > सिवचरणा,[1075] शर्मियाने > सर्मियाने![1076]

---

1040· बल 155 1041· वही 156 1042· वही 157

जं· के फूल 163, सती मै· 307 1043· बल· 139 1044· वही 141
1045· वही 144 1046· वही 126 1047· जं· के फूल 104
1048· वही 128 1049· वही 160 1050· वही 157
1051· वही 167 1052· वही 220 1053· सती मै·222 1054·वही 373
1055· वही 319 1056·वही 577 1057· वही 636 1058·वही 572
1059· सती मै·158 1060· वही 83 1061·वही 52 1062· वही 52 1063·वही 24
1064· वही 251 1065· वही 421 1066· वही 410 1067· वही 153
1068· वही 153 1069· वही 158 1070· वही 159 1071·वही 161
1072· वही 170 1073· वही 206 1074· वही 207 1075·वही 212
1076· वही 221·

दुश्मन > दुसमन,[1077] गुंजाइश > गुंजिस,[1078] बालिश्त > बालिस्त,[1079] श्मशान > मसान,[1080] कर्कश > करकस,[1081] शरीर > सरीर,[1082] शर्मा > सरमा,[1083] जयप्रकाश > जयपरगास,[1084] प्रशान्त > परसन्तो[1085] नक्शा > नकसा,[1086] शहरवाली > सहरवाली,[1087] लघुशंका > लघुसंका,[1088] वैश्य > वैस,[1089] रेशमलाल > रेसमलाल,[1090] शक्की > सक्की,[1091] नाश > नास,[1092] शुरू > सुरू,[1093] विश्वनाथ > बिसनाथ,[1094] शोकसभा > सोकसभा,[1095] खरगोश > खरगोस,[1096] चश्मा > चसमा,[1097] काशी > कासी,[1098] शेखचिल्ली > सिकचिल्ली,[1099] शाकट > साकट,[1100] किशमिश > किसमिस,[1101] शुद्ध > सुध,[1102] बन्दिश > बन्दिस,[1103] शान > सान,[1104] जोश > जोस,[1105] अनशन > अनसन,[1106] मशहूर > मसहूर,[1107] करिश्मा > करसमा,[1108] शूल > सूल,[1109] दशम > दसम,[1110] सुशील > सुसील,[1111] शिवनाथ > सिवनाथ,[1112] कुश्ती > कुस्ती,[1113] शपथ > सपथ,[1114] सर्वनाश > सर्वनास,[1115] नटरगश्ती > नटरगस्ती[1116]

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

1077. वही 663 1078. पो.82 1079. वही 64 1080. वही 248
1081. मै.आ.128 1082. वही 43 1083. वही 236
1084. वही 202 1085. वही 164 1086. वही 220 1087. वही 80
1088. वही 270 1089. वही 88 1090. वही 129 1091. वही 133
1092. वही 156 1093. वही 184. 1094. वही 154
1095. वही 181 1096. वही 171. 1097. वही 190 1098. वही 33
1099. वही 248 1100. वही 248 1101. वही 215 1102. वही 215
1103. वही 212 1104. वही 211 1105. वही 20 1106. वही 20
1107. वही 226 1108. वही 221 1109. वही 178 1110. वही 61
1111. वही 195 1112. वही 208 1113. वही 233 1114. वही 230
1115. सा.बा.म. 65. 1116. वही 70

(ख) ब > स

इसका एक ही उदाहरण मिलता है --
इन्कलाब > इन्किलास,[1117]

(ग) श > ष ~ छ

शाबाश > षाबष,[1118] शनीचर > छनीचर,[1119]
प्रायश्चित > प्राछित[1120]

(घ) स > श

यह प्रवृत्ति अत्यन्त विरल है। किन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों या मनःस्थितियों में यह प्रवृत्ति उभर आती है। पूर्वी अंचलों में यह बंगाली का प्रभाव कहा जा सकता है। पश्चिमी अंचलों में कुछ बनकर बोलने की प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप भी यह विकसित होता है। वैसे यह प्रवृत्ति थोड़ी बहुत सभी अंचलों में मिल जाती है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :-
सताईं > शताईं,[1121] मुसीबत > मशीबत,[1122] दस > दश,[1123]
नुकसान > नुकशान,[1124] लावारिसो > लावारिशो,[1125]
रसीद > रशीद,[1126] खुशनसीबी > खुशनशीबी,[1127]
नसीब > नशीब,[1128] शख्स > शख्श,[1129] गैसबत्ती > गैशबत्ती,[1130]
इसका > इशका,[1131] स्वाद > शाद,[1132] साला > शाला,[1133]
सबेरे > शबेरे[1134]

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -
1117. मै.आं. 34 1118. नई पौ. 116 1119. हो. 266
1120. मै.आं.24 1121. व.के बेटे 12 1122. जं. के फूल 105
1123. हो. 259 1124. वही 79 1125. वही 166 1126. वही 328
1127. वही 72 1128. वही 179. 1129. वही 262
1130. मै.आं.72 1131. वही 94 1132. जुलू 2 1133. सा.ल.म.129
1134. वही 148

(घ) स > छ

साहब > छाहेब,[1135] प्रसाद > परछाद,[1136]
मुसलमान > मोछलमान,[1137] महामहोत्सव > महामहोच्छव[1138]

3·3 (12) अन्य

(क) न > ल

नम्बर > लंबर,[1139] नित्यनारायण > नितलरैन[1140]
नारा > लारा,[1141] नाजुक > लाजुक,[1142] नीला > लीला,[1143]
नोट > लोट,[1144] नोजवान > लोजवान,[1145] नीलामी > लीलामी,[1146]
हनुमान > हलुमान,[1147] सिनेमा > सलिमा,[1148]
नरसिंहदास > लरसिंघदास[1149]

(ख) ध > ह

गाँधी > गान्ही[1150]

(ग) व्यंजन > स्वर

इसके उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। केवल / ब /, / व / /ए/ तथा अर्धस्वर / य / के कुछ उदाहरण मिलते हैं जैसे :-

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

1135· मै· आ· 131 1136· फुल I 1137· वही 3
1138· बल· 18 1139· वही 125 1140· मै· आ· 198
1141· मै· आ· 80 1142· वही 165 1143· वही 200
1144· वही 226 1145· वही 20 1146· वही 70
1147· वही 108 1148· फुल 139 1150· वही 19

{ज} ह > व

बहुत > भौवोह[1151]

{ब} ह > ड

पहले > पड़ले,[1152] पहचान > पड़चान[1153]

{म} ह > ए ∽ ऐ

तहखाने > तेखाने,[1154] ठहर > ठेर,[1155] गलतफहमी > गलतफेमी[1156], बहना > बेणा[1157], रहता > रेता[1158], बहन > बेन[1159], बहता > बेता[1160], ठहर > ठेर[1161]

वास्तव में / ह / का उच्चारण / ए / जैसा होता है इसमें से / ह / का लोप हो जाता है और स्वर शेष रह जाता है ।

कभी कभी / ह > य / के नियमानुसार / ह / का परिवर्तन / य / में भी दिखलाई पड़ता है जैसे :-

चाहता > चायता[1162] इम्तहान > इम्तियान[1163]

3·3{13} अन्तस्थ ध्वनियाँ :

{क} र > ल

दीवार > देवाल[1164], मंदिर > मंडिल[1165], युधिष्ठर > युधिस्ठल[1166], बैरिस्टर > बलिस्टर[1167], गुरुचरण > गुलचरन[1168], पत्थर > पत्थल[1169]

{ख} फलों > फरो[1170], कलेजा > करेज[1171], हल > हर[1172],
(ल > र)

---

1151· मै·डॉ·200 1152·सा·ल·म·53 1153·वही 215 1154·कब तक पृ·103
1155· हो·266 1156·वही 81 1157·वही 111 1158·सा·ल·म·52
1159·वही 53 1160·वही 53 1161·वही 65 1162·सा·ल·म·79
1163·कब तक पृ·94 1164·कल·95 1165·वही 123 1166· वही 164
1167· वही 91 1168· मै·डॉ·148 1169· वही 171 1170·ब·के बेटे46
1171· कल·123 1172·वही 139, जुग 41

चावल > चाउर,[1173] थाली > थरिया,[1174] शैली > सोरी [1175]

3·3 (14) <u>संयुक्त व्यंजन का विकास</u>

(क) <u>क्ष > च्छ</u>

साक्षी > साच्छी,[1176] अक्षय > अच्छय,[1177]
रक्षा > रच्छा[1178] राक्षस > राच्छस,[1179] अक्षर > अच्छर[1180]
दक्षिण > दच्छिन,[1181] पक्ष > पच्छ,[1182] परीक्षा > परीच्छा,[1183]

(ख) <u>क्ष > छ, क्छ</u>

क्षेत्र > छेत्तर,[1184] नक्षत्र > नछत्तर,[1185]
लक्ष्मी > लछमी,[1186] क्षत्रिय > छतरी,[1187] क्षण > छन,[1188]
क्षमा > छिमा,[1189] वाराहक्षेत्र > बाराहछत्तर,[1190]
नक्षत्र > नक्छत्तर,[1191] कुरुक्षेत्र > कुरुक्छेत्तर,[1192]

(ग) <u>क्ष > ख, क्ख</u>

पक्ष > पाख,[1193] अक्षर > आखर,[1194] परीक्षा > परीक्खा[1195]

---

1173· बल 99 1174· मै· आ· 152 1175· वही 65
1176· कब तक पु· 154 1177· नई पौ·86, हो· 110
1178· कब तक पु·357, जं·के पूत 49,18, रती मै·714
1179· दुख·100, ध·के बेटे 74, बल·67, मै·आ·221
1180· बल·113, कुल8, मै·आ·20 1181·बल·29 1182·वही46, दुख106
1183· जं·के·पूत 166, मै·आ·207 1184·नई पौ·95· 1185·बल 23
1186· वही 21 1187· रती मै·307 1188· वही 25
1189· मै·आ·57 1190·वही 43 1191· मै·आ·189· 1192·हो·86
1193· बाबा बटे·33 1194· मै·आ·43 1195· कुल 98

(घ) त्स > च्छ

महामहोत्सव > महामहोच्छव[1196]

(ङ) ज्ञ > ग, ~ ग्य

यज्ञ > जग[1197], ज्ञान > ग्यान[1198]

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि आंचलिक वातावरण के निर्माण में ध्वनि-विधान का बहुत हाथ रहता है। ध्वनि और उनके उच्चारणों के आधार पर आंचलिक वैशिष्ट्य को निरूपित किया जा सकता है। किन्तु एक ऐसा ध्वनि-स्तर भी है जिस पर समस्त आलोच्य आंचलिक क्षेत्र समान हैं। जहाँ तक स्वर-परिवर्तन या स्वर की आंचलिक विकृतियों का प्रश्न है वे बहुत कुछ समान प्रतीत होते हैं। व्यंजनों की अपेक्षा यह समानता स्वर-विकृतियों में अधिक है। स्वरागम, स्वर का ह्रस्वीकरण, दीर्घीकरण, विपर्यय आदि की प्रवृत्तियाँ आंचलिक एकता को सिद्ध करती हैं। इन विकृतियों की व्यावहारिक प्रकृति कुछ अलग हो सकती है।

जहाँ तक व्यंजनों की विकृतियों का प्रश्न है व्यंजनागम, व्यंजनलोप, द्वित्वीकरण, समीकरण आदि की प्रवृत्तियाँ बहुत कुछ समान रूप से मिलती हैं। विशेष रूप से व्यंजन परिवर्तन के ये रूप समान हैं, श > स, ष > स ~ श ~ ख, ण > न, व > ओ ~ औ।

---

1196. कल॰ 18     1197. नई पौ॰ 3
1198. सती मै॰ 25, मै॰ आ॰ 16

ध्वनि-विकास की समानता जितनी महत्त्वपूर्ण है उतनी ही विषमता भी महत्त्वपूर्ण है। विषमता के आधार पर ही आंचलिक वैशिष्ट्य की स्थापना हो सकती है। विषमता दो प्रकार की है। पहले वे वैशिष्ट्य आकर्षित करते हैं जो केवल एक अंचल में मिलते हैं। उदाहरण के लिए केवल बिहार अंचल में मिलनेवाले ध्वनि-परिवर्तन ये हैं -- / व > उ /, / य > व /, / उ > व /, / ष > श /, / स > छ /, / ध > द /, / न > ल /, / ब > स /, / ल > र /, / र > ल /, / क्ष > छ ∽ + क्ख / केवल कुमाऊँ अंचल में यह परिवर्तन मिलता है -- / व > प / और केवल बरसोवा अंचल में मिलनेवाला ध्वनि-परिवर्तन / ड > ड़ / है।

दूसरे वे अन्तर हैं जो एक-दो अंचलों में तो मिलते हैं किन्तु सभी अंचलों में नहीं मिलते। नीचे की तालिका से यह बात स्पष्ट हो जाती है :-

| ध्वनि परिवर्तन | राजस्थान | अजयगढ़ (उ.प्र.) | मिथिला (बिहार) | कुमाऊँ (उ.प्र.) | बरसोवा (बम्बई) | बस्तर (म.प्र.) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| न > ण | ✓ | | | ✓ | | |
| ड > र | | | ✓ | | ✓ | |
| श > स ∽ छ | | | ✓ | ✓ | | |
| ल > ग | | ✓ | ✓ | | | |
| ष > ख | | | ✓ | ✓ | | |
| य > ज | | | ✓ | ✓ | | ✓ |

कुछ अंतर ऐसे हैं जो एक-दो अंचलों में नहीं मिलते, शेष अंचलों में समान हैं। इनको इस तालिका से समझा जा सकता है :-

| ध्वनि-परिवर्तन | राजस्थान | आजमगढ़ (उ.प्र.) | मिथिला (बिहार) | कुमाऊँ (उ.प्र.) | बरसोवा (बंबई) | बस्तर (म.प्र.) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| स्वरलोप | | × | | | × | × |
| संयुक्तस्वर > मूल स्वर | | × | | | | × |
| मूल स्वर > सं. स्वर | | | | × | | × |
| अनुनासिकीकरण | | × | | | | × |
| व > ब | | | | | × | |
| व > वँ ∽ म | | × | | × | × | |
| य > ज | | | | | × | × |
| निरूष्मीकरण | | | | × | × | × |
| अल्पप्राण > महाप्राण | | | | | | × |

| ध्वनि परिवर्तन | राजस्थान | ब्रजमण्डल (उ.प्र.) | मिथिला (बिहार) | कुमाऊँ (उ.प्र.) | बरसोवा (बम्बई) | बस्तर (म.प्र.) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| महाप्राण > अल्पप्राण | | | | | | × |
| घोषीकरण | × | | | | × | |
| अघोषीकरण | × | | | | | × |
| मूर्धन्यीकरण | | × | | | × | |
| स > श | × | × | | | | |
| ढा > ळ | | | | | × | |
| व्यंजन > स्वर | | × | | | | × |

उपर्युक्त ध्वनि-परिवर्तनों की भूमिका आंचलिक उपन्यासों को आंचलिकता प्रदान करती है। अधिकांश परिवर्तन आंचलिकता को प्रकट करते हुए भी परिनिष्ठित हिन्दी के रूपों से इतने दूर नहीं है कि भाषा अबोधगम्य हो जाए। मूल शब्द पाठक की स्मृति में इन ध्वनियों के रूप से प्रायः संकेत हो जाता है और आंचलिकता की छवि अक्षुण्ण भी रहती है।

अध्याय | तृतीय

## शब्द - स्तर

## 0· प्रास्ताविक

अंचल का वैशिष्ट्य भाषा के प्रत्येक स्तर पर परिलक्षित किया जा सकता है । ध्वनि और उच्चारण के स्तर पर जो आंचलिक वैशिष्ट्य आलोच्य उपन्यासों के आधार पर सिद्ध होता है उसका विश्लेषण इससे पूर्व के अध्याय में किया जा चुका है । यद्यपि शब्द और पद का गठन ध्वनि के आधार पर ही होता है और शब्दों के आधार पर भी ध्वन्यात्मक वैशिष्ट्य देखा जा सकता है फिर भी शब्दगत वैशिष्ट्य अपना अलग अस्तित्व रखता है । हिंदी क्षेत्र के सभी अंचलों के ऊपर एक परिनिष्ठित शब्दावली अध्यारोपित मिलती है । समाज का शिक्षित मध्यवर्ग और उच्चवर्ग इस शब्दावली का प्रयोग करता है । आंचलिक उपन्यासों में इस प्रकार की परिनिष्ठित शब्दावली का प्रयोग लेखक के अपने वक्तव्यों में

या उपर्युक्त वर्गों के पात्रों द्वारा किया जाता है। दूसरा स्तर पिछड़े हुए और अशिक्षित वर्गों की शब्दावली का है जिनमें उस अंचल की प्राण-सत्ता निवासित होती है। आंचलिक उपन्यासों की भाषा-वैज्ञानिक पृष्ठभूमि में इन शब्दों का विशेष योगदान रहता है। जहाँ आंचलिक वातावरण को अभिव्यक्त करने के लिए उपन्यासकार कुछ विवरण देता है, वहाँ आंचलिक शब्दों के प्रयोग से भी वातावरण प्रभावित और अनुप्राणित होता है। आलोच्य उपन्यासों की इसी शब्दावली का अध्ययन प्रस्तुत अध्याय का अभिप्रेत है।

1. आंचलिक शब्द : बोधक के स्तर :

बोध की दृष्टि से आंचलिक शब्दों के तीन स्तर हो सकते हैं। पहला स्तर ऐसे शब्दों का है जिनमें विकास की दृष्टि से ऐसी विकृतियाँ आ गई हैं जो परिनिष्ठित शब्दावली से उनको अलग करती हैं। फिर भी परिनिष्ठित शब्दावली का प्रयोग करनेवाले वर्ग चाहे वो हिन्दी क्षेत्र के किसी भाग के हों, समझ लेते हैं। दूसरे वर्ग में वे शब्द आते हैं जो सामान्य रूप से हिन्दी के अन्य भागों के शिक्षित वर्गों के लिए बोधगम्य नहीं होते किन्तु कोष आदि की सहायता से जिनका अर्थ समझा जा सकता है। अन्तिम वर्ग ऐसे शब्दों का है जो कि अन्य क्षेत्रों के लोगों के लिए किसी भी प्रकार से बोधगम्य ही नहीं होते। इनको हम ठेठ आंचलिक शब्द कह सकते हैं।

1·1 बोधगम्य आँचलिक शब्दावली :

इस वर्ग में आनेवाले शब्द शब्द-विकास की दो स्थितियों को सूचित करते हैं। एक स्थिति वह है जो परिनिष्ठित भाषा के शब्द-प्रयोग में द्रष्टव्य होती है। दूसरी विकास स्थिति आँचलिक स्थिति है। नीचे की तुलनात्मक तालिका से इस विकास वैविध्य को समझा जा सकता है।

| आँचलिक विकास स्थिति | | परिनिष्ठित स्थिति |
|---|---|---|
| भरस्ट | § मै॰ आँ॰ 215 § | "भ्रष्ट" |
| दिरिष्टि | § हो॰ 73 § | "दृष्टि" |
| रच्छा | § सती मै॰ 714 § | "रक्षा" |
| आसरम | § बाबा बटे॰ 63 § | "आश्रम" |
| परत्यच्छ | § जं॰ के फूल 157 § | "परत्यक्षता" |
| सर्धा | § नई पौ॰ 4 § | "श्रद्धा" |
| परास्चित | § बाबा बटे॰ 63 § | "प्रायश्चित" |
| बर्मचर्य | § हो॰ 255 § | "ब्रह्मचर्य" |
| तरोटी | § मै॰ आँ॰ 82 § | "त्रुटि" |
| गिरहथ | § कल॰ 5 § | "गृहस्थ" |
| सरवन | § कब तक पु॰ 151 § | "श्रवण" |
| मसाुम्न | § नई पौ॰ 54 § | "मस्तिष्क" |
| अगनई | § बाबा बटे॰ 28 § | "अग्नि" |
| भगमान | § कब तक पु॰ 96 § | "भगवान" |
| हमरी | § कब तक पु॰ 97 § | "हमारी" |
| तमाकू | § कल॰ 62 § | "तम्बाकू" |
| हत्ती | § दुख॰ 126 § | "हस्ती" |
| हमेसा | § सती मै॰ 158 § | "हमेशा" |

## 1·2 सामान्य रूप से अबोधगम्य शब्द :

इस वर्ग की शब्दावली अनायास बोधगम्य तो नहीं होती किन्तु कोष आदि की सहायता से उनका अर्थ बोधगम्य हो जाता है । उस स्थिति में यह मन:स्थिति भी होती है कि जो किसी अनजान या खोई हुई वस्तु की प्राप्ति पर होती है अर्थात् इस शब्दावली का अर्थ-बोध होने पर स्वयं ऐसा अनुभव होता है कि इसको वैसे ही समझा जा सकता था । इस प्रकार की शब्दावली परिनिष्ठित शब्दों और ठेठ आंचलिक शब्दों के बीच की है । जहाँ पहले वर्ग की शब्दावली प्रेषण को सीमित नहीं करती वहाँ इस वर्ग की शब्दावली के द्वारा उपन्यास का प्रेषण-तन्त्र सीमित हो जाता है । इस शब्दावली को निम्नलिखित तालिका से समझा जा सकता है ।

| शब्द | प्राप्त अर्थ |
|---|---|
| अलट-पिलट (नई पौ· 31) | "उलट-पलट, हेर-फेर" |
| उशिर (सा· ल· स· 67) | "देर", "विलम्ब" |
| कथरी (सा· ल· स· 1) | "फटे कपड़ों की बनी गद्दी" |
| कल्वर (बल· 45) | "भिखारी", "याचक" |
| कुंजड़ा (बल· 20) | "स्त्रियों का दलाल"<br>"सब्जी बेचनेवाला" |
| गोर (मै· आँ· 48) | "ऊँट की छाती",<br>"समाधि स्थल" |
| घौद (बाबा बटे· 99) | "गुच्छा", "केले की घौद" |

| | | |
|---|---|---|
| घास | § मै· आं· 108 § | "जोत", "बाढ़" |
| चैली | § बल· 36 § | "लकड़ी या ऐसे ही किसी वस्तु का टुकड़ा" |
| चोटी | § मा· ल· भ· 7 § | "चुटिया", "वेणी" |
| टंटनट | § बल· 21 § | "बेकार" |
| ढेंकी | § बाबा बटे· 20 § | "धान कूटने का उपकरण" |
| बथान | § मै· आं· 27 § | "वह स्थान, जहाँ दूध काढ़ा अथवा बेचा जाता है" |
| हुलकाना | § मै· आं· 108 § | "हमला करना" |
| भभुआ | § कब तक पु· 483 § | "सफेद" |
| भालर | § मै· आं· 237 § | "केले का पत्ता" |
| भिंडा | § बाबा बटे· 129 § | "दीवार", "किनारा" |
| दूसों | § बाबा बटे· 24 § | "कोंपल" |

1·3 अबोधगम्य शब्दावली :

इस वर्ग में वह शब्दावली आती है जिसका अर्थ या तो उस अंचल के प्रयोक्ताओं से सम्पर्क स्थापित करने से पता चलता है अथवा जिनका अर्थ उपन्यासकार स्वयं दे देता है ।

| अंचल | शब्द |
|---|---|
| अवध § उत्तर प्रदेश § | छोड़ये[1], फुलुंगी[2], गोहिए[3], ठोपारी[4], कौदे[5], लोरकियां[6], भाटे[7], चौमे[8], खम्हे[9], नुत्ती[10], |

1· सती मै· 474 2· वही 25 3· वही 41 4· वही 260
5· वही 250 6· वही 401 7· वही 403 8· वही 173
9· वही 42 10· वही 54

| अंचल | शब्द |
|---|---|
| | तरफुल[11], तरी[12], नारी[13], धरेज[14], झिझिली[15], टाम[16], भडर[17], मीज[18]. |
| राजस्थान | ढाटे[19], तुरा[20], ढोके[21], जरख[22], मढ़ी[23], जरतारी[24], नजात[25], बिन्जी[26], बासिब[27], छौंकर[28], दुबाई[29], |
| बस्तर | मडुई[30], छितना[31], लपर[32], धीलर[33], भरके[34], मड़िया[35], टिनपे[36], परछी[37], कोरी[38], करईमुण्डा[39], सार[40], मलगो[41], जोरया[42], पुर्तारया[43], पेरा[44], यारले[45], |
| कुमाऊँ | धुमी[46], भेल[47], चौसिया[48] |
| वरसोवा (बंबई) | पिर्चे[49], पढीवांग[50], पाडी[51], घोरी[52], |
| बिहार | खटमखनी[53], टोक[54], नारया[55], ब.वा[56], धरने[57], मानिक[58], मरेले[59], |

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

11. सती मे. 307 12. वही 306 13. वही 23
14. वही 504 15. वही 25 16. वही 304 17. वही 579
18. वही 725 19. क. तक पू. 77 20. वही 79
21. वही 323 22. वही 93 23. वही 93 24. वही 97
25. वही 160 26. वही 416 27. वही 114 28. वही 226
29. वही 101 30. जं. के पुल 31. वही 156 32. वही 165
33. वही 167 34. वही 139. 35. वही 234 36. वही 118
37. वही 19 38. वही 18 39. वही 14 40. वही 194 41. वही 97
42. वही 218 43. वही 34 44. वही 83 45. वही 56 46. हो. 275
47. वही 128 48. वही 47 49. सा. ल. म. 94 50. वही 22 51. वही 102
52. वही 7 53. दुख 110 54. वही 156 55. वही 160 56. वही 160
57. वही 130 58. वही 130 59. वही 88

[illegible], [illegible], [illegible], [illegible],
बमीन[64], उलंग[65], करीन[66], पाठ[67], जाखी[68],
कुटिया[69], ओप[70], जिन्सी[71], घर[72], बीटे[73],
रसनचोक[74], कादो[75], अनदारम[76], ठोरी[77],
गाछी[78], गोफन[79], छड़ी[80], कोठिला[81],
ढेकवा[82], पोढ़े[83], तिफडर[84], छदुका[85],
पैला[86], पाजर[87], किलहोर[88], कोरहला[89],
महन[90], खस्सी[91], मुरती[92], तलबाना[93],
कबरोटी[94], टिकोलो[95], नाबधोबी[96],
रन्थी[97], बमरभुत्ता[98], ऊपरी[99], लालटेस[100],
गोर[101], छैला[102], भाथी[103], पद्दा[104],
छोक[105], पसराज[106].

## 2. व्याकरणिक धाराएं :

### 2.1 संज्ञा-शब्द :

आंचलिक मानस के द्वारा ग्राह्य और प्रयुक्त पदावली प्रत्येक व्याकरणिक धारा के साथ मिलती है। संरचना की दृष्टि से आंचलिक

---

60. दुख 154 61. वही 75 63. वही 55 64. वही 150
65. वही 144 66. वही 29 67. वही 63 68. वही 156
69. बल 103 70. वही 118 71. वही 144 72. वही 119
73. वही 161 74. वही 141 75. वही 28 76. नई पौ. 98
77. वही 81 78. वही 63 79. बाबा बटे. 14 80. वही 75
81. वही 67 82. वही 22 83. वही 40 84. वही 140
85. रति. की. चा. 96 86. वही 35 87. वही 56 88. वही 138
89. व. के बेटे 44 90. मे. आं. 12 91. वही 9 92. वही 82 93. वही 122
94. वही 111 95. वही 257. 96. वही 270 97. वही 258 98. वही 229
99. वही 209 100. वही 37 101. वही 41 102. वही 25 103. वही 201
104. जुलू 2 105. वही 126 106. वही 32

संज्ञाओं को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है । मूल संज्ञा पद और व्युत्पन्न संज्ञा पद ।

## 2·11 मूल संज्ञा शब्द :

मूल संज्ञा-पद वे हैं जो भाषा की वर्तमान स्थिति में भी संज्ञावत् प्रयुक्त हैं और पूर्व स्थितियों में भी। तात्पर्य यह है कि मूल संज्ञाओं की व्युत्पत्ति किसी अन्य प्रकार से नहीं की गई । इन संज्ञाओं को विषय के अनुसार या प्रयोग के क्षेत्र के अनुसार विभाजित किया जा सकता है ।

## 2·12 व्युत्पन्न संज्ञाएं :

व्युत्पन्न संज्ञाएं संज्ञा, विशेषण, क्रिया के रूप में प्रयुक्त पदों से एक विशेष प्रक्रिया के द्वारा प्राप्त की जाती है । यह व्युत्पादन क्रम परिनिष्ठित भाषा के व्युत्पादन क्रम से विशिष्ट होता है ।

### 2·12 1 संज्ञा > संज्ञाएं :

इस क्रम में मुख्यत: भाववाचक संज्ञाओं की व्युत्पत्ति होती है । जैसे – कुटुम्ब > कुटुमैती (नई पौ· 91), मित्र > मिताई (व· के बेटे, 75) रात > रतौन्धी ("रतौंधी, रात में न दीखने वाली बीमारी, नई पौ· 31) भार > भरिया ("भार ढोनेवाला", बल· 10) मुट्ठी > मुठिया (मै· आं· 119, "करक रूप में या भेंट के रूप में") गात > गाती[107] ("साधुओं द्वारा शरीर में लपेटे जाने वाला वस्त्र" बल· 76) व्योली < वधू (हो· 136)

---

107· इसके लिए "बरहगाती" शब्द का प्रयोग किया गया है ।

### 2·12·2 विशेषण > संज्ञा :

परिनिष्ठित भाषा में भी विशेषण से व्युत्पन्न संज्ञा-शब्दों का प्रयोग होता है। इन व्युत्पन्न संज्ञा शब्दों का आंचलिक रूप तब घटित होता है जब व्युत्पादन की प्रक्रिया परिनिष्ठित भाषा की प्रक्रिया से भिन्न हो जाती है। नीचे की तालिका से यह प्रक्रिया-भेद स्पष्ट हो जाता है :-

| विशेषण | आंचलिक रूप से व्युत्पन्न संज्ञा-शब्द | परिनिष्ठित हिंदी में व्युत्पन्न संज्ञा-शब्द |
|---|---|---|
| बूढ़ा | बुढ़ौती[108]<br>बुढ़भस[109] | "बुढ़ापा" |
| पीला | पिरौंस[110] | "पीलाभ" |

### 2·123 क्रिया > संज्ञा :

संज्ञा की व्युत्पत्ति क्रिया धातु से भी सम्भव है। इस व्युत्पत्ति के भी परिनिष्ठित और आंचलिक स्तर हो सकते हैं : -

| क्रिया धातु | आंचलिक स्तर की व्युत्पत्ति | परिनिष्ठित स्तर की व्युत्पत्ति |
|---|---|---|
| √पिट् - | पिटौनी[111] | "पिटाई" |

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

108· बल· 123  109· दुख 149  110· बाबा बटे· 127
111· बल· 111

## 2·124 क्रि॰ वि॰ > संज्ञा :

यह व्युत्पादित प्रक्रिया अपेक्षाकृत कम मिलती है । फिर भी कुछ उदाहरण मिल जाते हैं । जैसे :--

| क्रि॰ वि॰ | संज्ञा | परिनिष्ठित |
|---|---|---|
| बीच | बिचवई[112] | "बिचौलिया" (मध्यस्थ) बीच-बचाव । |

## 2·125 संज्ञा + संज्ञा > संज्ञा :

इस शीर्षक के अन्तर्गत वे आँचलिक शब्द आते हैं जो दो या अधिक संज्ञाओं के मेल से बने होते हैं और संयुक्त रूप सामासिक रूप से एक शब्द जैसा ही प्रतीत होता है । उदाहरण के लिए कुछ शब्द लिए जा सकते हैं :– / जड़काला[113]/ (= जाड़ा + काल) "शीतकाल" / सरबेटा /[114] (= साला + बेटा) "साले का बेटा" / सतमाय /[115] (= सौत + माँ) "सौतेली माँ"
/ बरम्हगाती /[116] (= ब्रह्म + गाती) "साधुओं का वस्त्र"
/ गड़ोखर /[117] (= गड्ढ + पोखर) "गड्ढे और पोखरे"
/ बहिनौत /[118] (= बहन + पूत) "बहन का पूत"
/ बाजुरढोल /[119] (= बाजुर + ढोल) "किसी की मृत्यु हो जाने पर बजाया जानेवाला ढोल, ताकि सब लोग जमा हो जाएँ"

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

112· कल॰ 1126 113· कल॰ 140 114· नई पौ॰ 11
115· नई पौ॰ 81 116· कल॰ 76 117· कल॰
118· ब॰ के बेटे 85 119· अं॰ के पूत 135

2·126 विशेषण + संज्ञा > संज्ञा :

इसके उदाहरण यह हैं : / सितलपाटी[120] / ( = शीतल + पट्टी ) "चटाई" / छुटे मनिख [121] / ( छुद्र+अधिकारी ) ( = "छुद्र" + / पनरहिया[122] / ( = पन्द्रह + दिन )

2·127 संज्ञा + क्रिया > संज्ञा :

/ मसाकूद /[123]

2·128 संज्ञा + क्रिया+प्रत्यय > संज्ञा :

/ पनिपिआई /[124] "नाश्ता"

2·129 विशेषण + संज्ञा + प्रत्यय > संज्ञा :

/ दोपनिवत्ती /[125] "द्विविधा"

2·13 व्यक्तिवाचक संज्ञा :

2·131 व्यक्ति का नाम :

व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में आंचलिक धरती की महक तेज़ होती है। इसके द्वारा आंचलिक वातावरण अधिक सजीव होता है। सामान्य रूप से

---

120· बल· 73 121· जुलू 2 122· मती मैं· 57
123· कब तक पृ· 55 124· बल· 23 125· हो· 81
###·

पौराणिक, प्राकृतिक, जातिवाचक, आकारवाचक, स्वभाववाचक नाम सभी अंचलों में मिल जाते हैं किन्तु कुछ विशिष्ट अंचलों में इन नामों की रचना भी विशिष्ट होती है। उदाहरण के लिए "होलदार" उपन्यास में "कुमाऊँ" के वातावरण को इन व्यक्तिवाचक नामों के द्वारा रूप प्रदान किया गया है -- / जितुवा / ( पृ० 76 ) / स्वार / ( पृ० 76 ) / रमोती / ( पृ० 17 ) / कुन्चनिया / ( पृ० 1 ) / भागुली / ( पृ० 76 ) / धिमुली / ( पृ० 1 ) / भिमुली / ( पृ० 1 ) / उर्बादित्त / ( पृ० 72 ) / बज्योली / ( पृ० 82 )

इन नामों में कुछ की व्युत्पत्ति कुछ प्रकट होने लगती है जैसे / भागुली / का सम्बन्ध भाग्य से है। "भाग्यवती", "भाग्यवान" जैसे नाम अन्यत्र भी मिलते हैं। / बज्योली / शब्द का स्रोत तन्त्र में दिखलाई पड़ता है -- वज्रोली > बज्योली। किन्तु सभी शब्दों के मूल का अन्वेषण कठिन है।

"धरती के बेटे" उपन्यास में भी कुछ व्यक्तियों के नाम अंचल के अनुरूप हैं। जैसे - / धुन्धवा / (पृ० 25) / कुरकुन / ( पृ० 30 ) / धिमुनी / ( 30 ) / छीतन / ( 30 ) / बीसी / ( 30 ) / नबति / ( 30 ) / कल्लर / (30) / धोकर / ( 30 ) / नथुनी / ( 30 ) / नकछेदी / ( 30 ) / बीलट / ( 30 ) / दुम्मी / ( 30 ) / जनधर / ( 30 ) / नंदि / ( 30 )

इन नामों में से कुछ नामों के मूल की ओर संकेत किया जा सकता है । कुछ नाम लोकवार्ता के विश्वासों को लेकर बने हैं । जैसे - / छीतन / जिस किसी स्त्री के बच्चे गुजरते रहते हैं उसके बच्चे को सुरक्षित रखने के लिए एक टूटी डलिया = (छीतरी) में रखकर घसीटा जाता है । इसी क्रिया से सम्बन्धित नाम छीतन है । इसी प्रकार बच्चे की सुरक्षा के लिए पैदा होते ही उसकी नाक को छेद दिया जाता है और कभी-कभी नथनी भी पहनाई जाती है । / नथनी / और / नकछेदी / नाम इसी लोकवार्ता से प्रभावित है । बच्चे की सुरक्षा के लिए कुछ विचित्र या निम्नस्तरीय नाम भी बच्चों को दे दिए जाते हैं । जैसे / कल्लर / (दरिद्र) तथा / ल्वार / "ल्वार" नामों को लिया जा सकता है ।

"जंगल के फूल" उपन्यास में भी हमें ऐसे नाम मिलते हैं जिनमें उस अंचल की गन्ध है जैसे - हेलमा (75) पचलू (38) हब्बका (75) मन्नू (38) हिरमे (38) झिरिया (21) सालहो (21) पंका (21) फगारू (15) सुलक्षाए (15) महुआ (15) पियोसा (31) करतनी (86) जोसन (107) सिलोका (31) मालको (31) केलोसा (31) मुंदरी (38)

इसी प्रकार बिहार अंचल को सजीव बनाने में कुछ उल्लेखनीय नाम ये हैं -- दम्मो (रति० की चाची 67) मनियार (बल० 137) कंपिसेलर साहब (बल० 137) तीरी (बल० 137) बल्ली (बल० 137) सुगनी (बल० 134) रेवनी (बल० 132) पेथरू (मै० आँ० 9) घुसुरू (मै० आँ० 19) इत्यादि ।

"जुलूस" उपन्यास में वर्णित ये नाम आंचलिक वातावरण को और भी पुष्ट करते हैं जो कि बंगाल से शरणार्थी के रूप में बिहार में आ गए हैं उदाहरण के लिए नोगेन बागची (126), गोपेश पाठक (125) मुना मासी (107) किरटो मोडल (105) हरलाल साहा (2) इत्यादि नाम लिए जा सकते हैं।

2.132 गाँव या शहर के नाम :

पुरुषों और स्त्रियों के नामों से प्रायः एक सामान्य आंचलिकता व्यंजित होती है। यदि इस सूची को सामान्य रूप से देखा जाए तो किसी विशिष्ट अंचल की सूचना मिलना कठिन है। किन्तु अंचल विशेष के गाँवों के नाम शुद्ध आंचलिक होते हैं। इन व्यक्तिवाचक नामों के सहारे अंचल को सुनिश्चित किया जाता है। उदाहरणके लिए कुमाऊँ अंचल के गाँवों के ये नाम लिए जा सकते हैं - ( / पल्यूं / (हो. 52) / पत्थरखानी / (हो. 52) / धौलछीना / (हो. 141) / अवेड़ामी / (हो. 141) / मैनवलोम / (हो. 52) / सिमाड़ी / (हो. 141) / सोमेश्वर / (हो. 141)

इसी प्रकार बिहार के अंचलों के गाँवों के ये नाम नागार्जुन के उपन्यासों में मिलते हैं - / सुपौल / (बाबा बटे. 77) / मधेपुरा / (बाबा बटे. 77) / बनुडिहा / (व. के बेटे 15) / रक्सौल / (बाबा बटे. 93) / नरकटियागंज / (बाबा बटे. 93) / बढ़ापी / (दरभंगा जिलाम का देहाती नाम" नई पौ. 75) / लोहट / (बाबा बटे. 93) / रीगा / (बाबा बटे. 93) मध्य प्रदेश के जगदलपुर के लिए / कलीगोंडा / (ज. के फूल 198) नाम भी आंचलिक ही कहा जाएगा।

## 2·133 नदियों के नाम :

गाँवों के नामों के समान ही नदियों के नाम भी आंचलिकता को भौगोलिक तथ्यों से पुष्ट करते हैं। कुमाऊँ की इन नदियों का नामोल्लेख किया गया है --- / सुयाल / (हो· 2) / तलिगाड़ / (हो· 53) / सुयाल / (हो· 53)

इसी प्रकार बिहार के अंचलों में ये नदियाँ प्रवाहित हैं : / जीवछ / (दुख· 29) करेह (बाबा बटे· 77) बलान (बाबा बटे· 77) / तिलयुगा / (बाबा बटे· 77) / डेमुहा / (बाबा बटे· 77) / बीबी दीघी / (कुमु· 55)

## 2·134 लोकदेवता :

अंचल के धार्मिक वातावरण को प्रतीकायित करनेवाले लोक-देवता हैं। ये देवता प्रायः स्थानीय होते हैं साथ ही इनमें से अधिकांश का सम्बन्ध जादू-टोने से होता है। इन देवताओं के व्यक्तिवाचक नामों का प्रयोग आंचलिक उपन्यासों में मिलता है। इनसे एक सामान्य आंचलिक वातावरण तो बनता ही है, अंचल विशेष का परिचय भी मिलता है। अंचल के अनुसार कुछ देवता इस प्रकार है :-

| अंचल | देवता | उपन्यास तथा पृ· संख्या |
|---|---|---|
| बिहार | "सल्हेस" | (रति की चाची - पृ· 24) |

| अंचल | देवता | उपन्यास तथा पृ. संख्या |
|---|---|---|
| मध्य प्रदेश (बस्तर) | "भीमुलपेन" | (जं. के फूल पृ. 95) |
| | "खरियापेन" | (जं. के फूल पृ. 21) |
| | "इन्दपेन" | (जं. के फूल पृ. 203) |
| | "माऊल" (देवी) | (जं. के फूल पृ. 121) |
| | (सिरमाई" (देवी) | (जं. के फूल पृ. 146) |
| | "लिंगो" | (जं. के फूल पृ. 154) |
| | "पोगुल" | (जं. के फूल पृ. 194) |
| | "करदेवल" | (जं. के फूल पृ. 121) |
| कुमाऊं | "मोरूल देवता" | (हो. 8) |
| | "सैम" | (हो. 51) |

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि व्यक्तिवाचक नाम भी आंचलिक भाषा की विकास सम्बन्धी प्रवृत्तियों को लिए हुए हैं । आंचलिक मानस मूल नामों को कभी भाव से और कभी परम्परा से प्रेरित होकर पुरुष और स्त्रियों के सूचक नामों को विकृत कर देता है । नाम-रचना में आंचलिक लोकवार्ता प्रविष्ट होकर भी एक विशिष्ट संज्ञा-पद को जन्म देती है । यदि इन शब्दों को छोड़ दिया जाए तो उपन्यास का आंचलिक परिवेश उतना प्रकृत और सजीव नहीं रह पाएगा ।

## 2·14 जातिवाचक संज्ञा :

जातिवाचक संज्ञाओं के स्तर पर भी अनेक शब्द ऐसे मिलते हैं जो अंचल की निजी अस्मिता को प्रामाणित करते हैं । अंचल की भाषा का निजी रूप इन्हीं शब्दों में निवास करता है । इन शब्दों के आधार पर ही अंचल की भाषिक भूमिका तैयार होती है । अन्य क्षेत्रों के तद्भव शब्दों की अपेक्षा एक विशिष्ट अंचल के शब्दों की विकास विधि भिन्न होती है । कुछ उदाहरणों से इस तथ्य को स्पष्ट किया जा सकता है ।

### 2·141 जाति-सूचक शब्द :

#### §क§ बिहार अंचल की जातियाँ :

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की आधारभूत सामग्री में नागार्जुन और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास प्रमुख हैं । इन दोनों की आंचलिक रचनाओं में ही क्षेत्रीय जातियों के नाम आए हैं । कुछ जातियों के नाम इस प्रकार हैं :- पोलिया § मै· आँ· 111 § पासवान § मै· आँ· 111 § कुर्मी § मै· आँ· 111 § क्यौट § मै· आँ·111§ कुंजड़ा[126] § बल· 18 § तथा मै· आँ· 68 § मुसहर ~ मुसहड़ § रति· की चा· §168§ गोढ़ी[127], § जुल· 11 § सतगोप § जुल· 53 § कांदू § जुल· 53 § कैवर्त § जुल· 53 § कोयरी §मै· आ· 111 § गुआर[128], § मै· आँ· 111 § सतमा

1· 126· सब्जी बेचने का काम करनेवाली जाति
127· मछली पकड़ने वाली जाति
128· संभवत: इसकी उत्पत्ति "ग्वाल" से हुई है ।

(मै० आ० 111) मोटिया मेबार (कल० 40) कलार[129], (कल० 40) तमोली[130] (कल० 44) पंवरिया[131] (कल० 153) छत्तो (कल० 46) चमार (रति की चाची 169) धानुक (रति० की चाची 169) खटिक[132] (रति० की चाची 21) धड़िया (रति० की चाची 31) गहलोत (मै० आ० 25) मोमिनो (बाबा बटे० 18) गोपाल (बाबा बटे० 95) दिकू[133] (मै० आ० 171)

(ख) कुमाऊँ अंचल की जातियाँ :

कुमाऊँ अंचल का भाषिक-स्पन्दन 'होलदार' में सुनाई पड़ता है। इस क्षेत्र की भी कुछ जातियों का नामोल्लेख ने दिया है जैसे -- बैरिया[134] (हो० 14) औलियो[135] (हो० 172) स्थे[136] (हो० 242) जोश्याणी (हो० 147) घोड़िये[137] (हो. 13) बिस्टयाणी[138] (हो० 307)

(ग) बस्तर अंचल की जातियाँ :

राजेन्द्र अवस्थी के उपन्यास 'जंगल के फूल' में "बस्तर" अंचल का भाषागत वैशिष्ट्य दिखाई पड़ता है। इस अंचल की कुछ जातियाँ उदाहरण के लिए इस प्रकार है -- हनगुण्डा[139] (पृ० 43) घोटिया[140] (पृ० 30) सिरहा[141] (15)

---

129. याचक, 130. पान बेचनेवाले 131. पंवार गाने वाले
132. ढोलक आदि मढ़ने का काम करनेवाले
133. संथाल लोग गैर संथाल को "दिकू" कहते हैं।
134. लोक गायक 135. मजदूर 136. दाई 137. घोड़े हाँकनेवाले
138. राजपूतों को विष्ट जी भी कहते हैं।
139. मृतक कर्म कराने वाला
140. घोटुल का अफसर जिसके जिम्मे घोटुल की सफाई का काम रहता है।
141. जड़ाई-फुंकाई का काम करनेवाला प्रमुख व्यक्ति।

## (घ) राजस्थान अंचल की जातियाँ

राजस्थानी अंचल पर मुख्य रूप से रांगेय राघव का "कब तक पुकारूँ" उल्लेखनीय है । यह उपन्यास राजस्थान की एक घुमन्तू जाति करनट या नट अंचल के जीवन को चित्रित करता है । नट जाति वस्तुतः राजस्थान से संलग्न उत्तर-प्रदेश के अंचलों में भी घूमती रहती है । इस उपन्यास में "बेड़-बेड़नी" जाति का उल्लेख है । यह जाति नाचने गाने वाली है और इसकी स्त्रियाँ वेश्या-वृत्ति भी करती हैं । इस रूप में यह सामन्तों के साथ संलग्न रहती हैं ।

### अन्य संज्ञाएं :

व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की अपेक्षा जातिवाचक संज्ञा व्यापक परिवेश को प्रस्तुत करती है । आंचलिक जीवन के विविध पक्षों का वैशिष्ट्य जाति वाचक संज्ञाओं के द्वारा स्थापित होता है । आंचलिक शिल्प और शैली में भी आंचलिक संज्ञाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है । व्यक्तिवाचक संज्ञाएं एक सीमा तक ही शैली और बोध को प्रभावित कर पाती है । इसके विपरीत जातिवाचक संज्ञाओं के कारण शैली-बोध कहीं अधिक प्रभावित होता है । साथ ही अंचल का विशिष्ट वातावरण भी इस शब्दावली के द्वारा अधिक सजीव बनता है ।

आलोच्य आंचलिक उपन्यासों में जो जातिवाचक संज्ञा-पद प्राप्त होते हैं उनको मोटे रूप से इन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है -- व्यक्ति से सम्बन्धित, प्रकृति से संबंधित, संस्कृतिपरक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य संज्ञा शब्द ।

2·142 व्यक्ति से संबंधित :

इस वर्ग में आने वाली जातिवाचक संज्ञाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है --

व्यक्ति के अंग-प्रत्यंग तथा व्यक्ति-संबंध सूचक शब्दावली ।

(क) अंग-प्रत्यंगों के नाम :

अंग-प्रत्यंगों के नाम भी आंचलिक प्रकृति के हो सकते हैं । उदाहरण के लिए -- / चानी /[142] "सिर की चांद", / सिम्बी /[143] "होंठ", / ज्योटी /[144] "नाभि", / कानुजी /[145] "कानों के आसपास का हिस्सा", / व्यूम /[146] "ठोडी", / सींथ /[147] "मांग", / ठोर /[148] "होंठ", / तरहथी /[149] "हथेली"

इन शब्दावली को देखने से यह प्रतीत होता है कि आंचलिक भूमिका अत्यन्त सक्षम हो गई है । एक अंचल की शब्दावली दूसरे अंचल के लिए अबोधगम्य भी रहती है । साथ ही उपन्यास की प्रेषणीयता भी इससे बहुत अधिक प्रभावित होती है । इसलिए लेखक को इनके अर्थ यथास्थान द देने पड़े हैं ।

(ख) सम्बन्ध वाचक शब्द :

पारिवारिक सम्बन्धों के सूचक शब्द चार स्तरों के हैं । पहला स्तर ऐसे शब्दों का है जिनकी स्थिति अन्तरआंचलिक हो सकती है । जैसे -- / छौने /[150] "बच्चे या लड़के", / बीर /[151] "भाई"

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

142· हे॰ 291 143· जं॰ के फूल 47 144· हो॰ 16
145· हो॰ 306 146· हो॰ 105 147· नई पौ॰ 7
148· मै॰आँ॰ 202 149· व॰ के बेटे 8 150· अब तक पृ॰ 191
151· जं॰ के फूल 39

दूसरे स्तर पर ऐसी सम्बन्धवाचक शब्दावली आती है जो अन्तरआंचलिक होते हुए भी कुछ विशिष्ट ध्वनिविकास के कारण आंचलिक वैशिष्ट्य को ज्ञापित करती है जैसे ल > न पर आधारित शब्द - नौंड़ी[152] < "नौंडी", न > ण पर आधारित शब्द -- भाविणी[153] < भामणी । इसी स्तर पर कुछ स्वर-भेद वाली शब्दावली भी आ जाती है --

/ ज्याठ /[154] < जेठ < ज्येष्ठ

/ बोराणि /[155] < बहुरानी

/ बौज्यू /[156] < बाउजी < बाबूजी ( बाबू ज्यू )

/ बजिया /[157] < बाजी / का /[158] < काका

तीसरे स्तर पर वह शब्दावली आती है जिनका आंचलिक दृष्टि से अर्थ-परिवर्तन हुआ है । जैसे / नाती /[159] "बेटा" ( अन्य स्थानों पर इसका अर्थ है पोता ) / चेले /[160] "बेटा" ( अन्य स्थानों पर इसका अर्थ शिष्य होता है )

चौथे स्तर पर वह शब्दावली आती है जो ठेठ अंचल तक सीमित है ।

| अंचल | शब्द | अर्थ |
| --- | --- | --- |
| राजस्थान | / गवनर /[161] | "पिता" |
| बिहार | / टहलुआ /[162] | "सेवक", "नौकर" |
| बिहार | / मड़र /[163] | "मालिक" |

---

152· बल· 108 153· हो· 345 154· हो· 90 155· हो·53
156· हो· 53 157· बल· 114 158· हो· 54
159· हो· 73 160· हो· 166 161· कब तक पृ· 470
162· नई पौ·51 163· मै· आं· 163

| अंचल | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|
| बिहार | / वहिकिरनी /[164] | "गृहदासी" |
| बिहार | / पालवेत /[165] | "मित्र" |
| बिहार | / सुकुनमी /[166] | "चिटिया" |
| बिहार | / बुढी /[167] | "दादी" |
| बिहार | / मोक /[168] | "पति" |
| बिहार | / पीसी /[169] | "फुआ" |
| बस्तर | / तम्मुड /[170] | "छोटा भाई" |
| बस्तर | / पोयार /[171] | "~~छोटा भाई~~" "सास" |
| बस्तर | / पेकना /[172] | "लड़का" |
| बस्तर | / आवा /[173] | "माँ" |
| बस्तर | / तालपना /[174] | "भगिनी" |
| बस्तर | / हेलाड /[175] | "बहन" |
| बस्तर | / आर /[176] | "औरत" |
| बस्तर | / जीवाल /[177] | "प्रेमी" |
| बस्तर | / तोरे /[178] | "भौजाई" |
| बस्तर | / पेकीमन /[179] | "लड़की" |
| बस्तर | / मोटियारी /[180] | "प्रेमिका" |
| बस्तर | / मोयदो /[181] | "दुल्हा" "पति" |

---

164. नई पो. 106 165. कुलू. 20 166. कुलू. 57 167. कुलू. 57
168. कुलू. 63 169. कल. 34 170. जं. पे फल 171 171. वही 188
172. वही 30 173. वही 43 174. वही 170 175. वही 170
176. वही 53 177. वही 23 178. वही 159
179. वही 148 180. वही 31 181. वही 54

| अंचल | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|
| कुमाऊं | / कैंजा /[182] | "सौतेली मां" |
| " | / टेकुवा /[183] | "पति की अनुपस्थिति में जिससे शारीरिक संबंध बना रहता है" |
| " | / ब्वारियो /[184] | "बहुओ" |
| " | / वर्धलियो /[185] | "प्रेयसियो" |
| " | / ठुलदा /[186] | "बड़े भैया" |
| " | / बुबू /[187] | "दादा" |
| " | / भुली /[188] | "भाई" |
| " | / मचेड़ी /[189] | "मां" |
| " | / पोथिला /[190] | "बच्चा" |
| " | / इजा /[191] | "मां" |
| बिहार | / टूगर /[192] | "अनाथ" |
| " | / बुतरू /[193] | "बच्चा" |

बस्तर के अंचल में छोटे भाई के लिए / तमुड / शब्द प्रचलित है । तेलगु में छोटे भाई के लिए "तम्मुडु" शब्द प्रचलित है । कहा जाता है कि बस्तर अंचल की अनेक भाषा-रूप तेलगु भाषा से साम्य रखते हैं । यह आंचलिक आदान-प्रदान का ही उदाहरण है ।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

182· छो· 91 183· छो· 6 184· छो· 245 185· छो·17
186· छो· 127 187· छो· 73 188· छो· 201
189· छो· 127 190· छो· 347 191· वही 22
192· दुख· 37 193· मै· बॉ· 79

2·143 प्रकृति से सम्बन्धित :

(क) कालखण्ड :

जन अपने व्यवहार में कुछ कालखण्डों में जीता है । उन कालखण्डों के अनुसार ही उसका दैनिक कार्यक्रम चलता है । मुख्यतः चार कालखण्ड प्रचलित हैं -- प्रातःकाल, दोपहर, सन्ध्या और रात । अंचल या जनपद इन कालखण्डों के सूचक विभिन्न शब्दों का प्रयोग करता है । इन शब्दों के द्वारा कालायाम आंचलिक संस्पर्श प्राप्त करता है । नीचे आंचलिक उपन्यासों के आधार पर इन नामों की सूची दी जा रही है :-

| अंचल | कालखण्ड | शब्द |
| --- | --- | --- |
| बस्तर | सुबह | भुनसारा[194] |
| बस्तर | सुबह | अलवेत[195] |
| राजस्थान | सुबह | उगाली[196] |
| बस्तर | सुबह | नरकीपहर[197] |
| बस्तर | सुबह | नरकोम[198] |
| बस्तर | सुबह | तिरतिरबेरा[199] |
| बस्तर | दोपहर | पयाल[200] |
| बस्तर | शाम | मुन्धे[201] |
| बस्तर | रात | नरका[202] |
| बस्तर | आधी रात | नडुमनरकी[203] |

194· जं·के फूल 132 195·वही पृ·34 196·धब उक पृ·46
197· जं·के फूल 22 198·वही 82 199· वही 81 200· वही 130
201· वही 100 202· वही 104 203· वही 23

(ख) ग्रह, नक्षत्र :

आंचलिक जीवन बहुधा प्रकृति से सम्पृक्त रहता है । प्रकाश-अन्धकार, धूप-छाया आदि से उसके जीवन का घनिष्ट सम्बन्ध है । इनके लिए प्रयुक्त आंचलिक शब्द आंचलिक जीवन का एक बिम्ब भी प्रस्तुत करते हैं । यदि बिहार के अंचल में सूरज को / गोसैंया /[204] कहा जाता है तो बस्तर के अंचल में उसके लिए / पोरद ~ पोद्द /[205] शब्द प्रयुक्त है । बिहार के अंचल का शब्द सूरज के प्रति देवत्व की भावना को प्रकट करनेवाला है । बस्तर क्षेत्र का शब्द संभवत: आर्य भाषा का शब्द नहीं है । इसी प्रकार बस्तर अंचल की गोंड जाति में चन्द्रमा के लिए / नैंज /[206] शब्द मिलता है जो आर्य परिवार का प्रतीत नहीं होता । धूप के लिए गोंड जाति वाला बस्तर अंचल / बरीं /[207] शब्द का प्रयोग करता है । इन शब्दों के द्वारा गहन आंचलिकता सिद्ध होती है ।

कुछ नक्षत्र-विशेष के लिए भी आंचलिक शब्दों का प्रयोग नागार्जुन और फणीश्वरनाथ रेणु ने किया है । जैसे / हथिया /[208] "नक्षत्र-विशेष" तथा / भुरुकवा /[209] "भोर का तारा" इनमें से दूसरा शब्द भोर, "प्रात:काल" से व्युत्पन्न है ।

(ग) जल-स्थल :

आंचलिक गांव के वातावरण में जल स्थलों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है । ये जल-स्थल या तो छोटे गड्ढों के रूप में हो

---

204. बल. 83 205. जं. के फूल 30 206. वही 204
207. वही 101 208. बाबा बटे. 21 209. मै. आं. 76

सकते हैं या किसी नदी के रूप में । उदाहरण के रूप में कुछ शब्द लिए जा सकते हैं :-

| अंचल | स्थल | शब्द |
|---|---|---|
| बिहार | कुंआ या तालाब | / चमन्चा /210 |
| बिहार | बरसाती झील | / घर /211 |
| बस्तर | नदी | / कुंवेर /212 |
| बिहार | छोटा पोखर | / छारा /213 |
| " | झील की एक फांडी | / फांडी /214 |
| " | पोखर का मुंह अथवा किनारा | / मोहार /215 |
| " | पतली धार अथवा प्रवाह | / टधार /216 |
| कुमाऊं | नाला | / नौले /217 |

(घ) स्थलखण्ड :

वातावरण के अन्य विभागों की भांति स्थलीय शब्दावली भी आंचलिक शब्दावली में उभरी है । फिर भी अन्य विभागों की अपेक्षा स्थलीय शब्दावली कम ही प्रयुक्त हुई है । नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत है :-

---

210. बल. 40 211. नई पौ. 218 212. जं. के.फूल 65
213. व. के बेटे 73 214. वही 24 215. वही 58
216. नई पौ. 69 217. हो. 64

| अंचल | स्थलखण्ड | शब्द |
|---|---|---|
| बिहार | कगीचा | / गाछ्दी /218 |
| कुमाऊँ | ऊँची चट्टान का गहरी ढलानवाला हिस्सा | / भीत /219 |
| कुमाऊँ | खोह | / उडियार /220 |
| बस्तर | जंगल | / मेटा /221 |
| बस्तर | जंगल | / डोंगुर /222 |

(घ) <u>जीव-जन्तु</u> :

(क) <u>जल के जीव</u> :

<u>मछली</u> -- जल के जीवों में मछलीवाची शब्दों का प्रमुख स्थान है। वैसे तो मछलीवाची शब्द कुछ आंचलिक उपन्यासों में भी आए हैं जैसे -- / हलिच / (जुल० 2), / सुगठी / "सूखी मछली" (जुल० 27), / फोकचा मछली / "बालपिता" (जुल० 15) / भिरका / (जुल० 129) / रेबा / (जुल० 129) / कवई / (नई पी० 128) / पोठी / (बल० 29) / जलमीन / (बल० 99), / सिंगी / (बल० 30) / गडेरा / (हो० 2), / पपकुआ / (हो० 2), / क्वारी / (रति० की चाची 31) / भाकुर /

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

218. नई पी० 63 219. हो० 261 220. वही 225
221. जं० के फूल 71 222. वही 59

§ रति की चाची 31 § / गैंची / § मै॰ आं॰ 17 § / किलों / "मछली के छोटे-छोटे बच्चों" § हो॰ 159 § / रोहू / § रति॰ की चाची 31 §

किन्तु औपन्यासिक कथ्य के अनुसार इन शब्दों का परिमाण विशेष रूप से बढ़ा है। "वरुण के बेटे" का कथानक दरभंगा § बिहार § के मछुओं के जीवन से सम्बन्धित है। इसलिए उसमें मछलियों की अधिक जातियों के अनेक आंचलिक शब्द प्रयुक्त हुए हैं, जैसे :-

/ सुहा / § 72 §, / मोदनी / § 13 § / इन्चा / § 17 § / मारा / § 17 § / कतरा / § 17 § / टेंगरा / § 17 § / गरई / § 17 § / गरधुन्नी / § 17 § / मंगुरी / § 17 § / बम्हई / § 17 § / भुन्ना / § 65 §

जल के अन्य जीव :
------------------

जल के अन्य जीवों से सम्बन्धित आंचलिक शब्दावली अपेक्षाकृत कम है। बिहार के अंचलों के ये शब्द मिलते हैं -- / बैंग /223, "मेंढक", / भुनभुट्टी /224, "पानी का एक जीव" / डोका /225 / मछलोकनी /226 "जल पक्षी"

बस्तर अंचल के शब्द इस प्रकार है जैसे -- / पेटा /227 "केकड़ा", / पन्ने /228 "मेंढक"।

उत्तर प्रदेश के अवध अंचल में / बेंगुचिया /229 शब्द प्रचलित है तथा कुमाऊँ में घोंघे के लिए / गनेल /230 शब्द का प्रयोग हुआ है।

---

223॰ मै॰ आं॰ 16 224॰ बल॰30 225॰ बाबा बटे॰ 68
226॰ जुलू । 227॰ जं॰ के फूल 146 228॰ वही 146
229॰ सती मै॰ 173 230॰ हो॰ 309

(ख) स्थानीय जन्तु :

स्थानीय जन्तु भी आंचलिक वातावरण में प्रविष्ट हुए हैं किन्तु इनकी संख्या बहुत कम है । आलोच्य आंचलिक उपन्यासों में मुख्य रूप से ये नाम मिले हैं :-

| अंचल | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|
| बिहार | / पिल्लू /231 | एक कीड़ा |
| " | / कुरमाछी /232 | " |
| " | / बरगोधा /233 | " |
| " | / अठोंड़ी /234 | एक कीड़ा, जो भैंस को लग जाता है । |
| " | / किलनी /235 | [illegible] चींटी " " " |
| बस्तर | / चपूड़े /236 | लाल चींटी |
| कुमाऊँ | / किरमल /237 | चींटियां |

इनके अतिरिक्त कुछ उड़नेवाले जीव भी आंचलिक उपन्यासों को एक स्थानीय वैशिष्ट्य प्रदान करते हैं । जैसे --

| अंचल | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|
| कुमाऊँ | / झिमौडों /238 | बर्र |
| बस्तर | / कनोली /239 | शहद की मक्खी |
| बिहार | / डाँस /240 | मच्छर |

231. बल० 11 232. वही 11, 233. बल० 105 234. वही 11
235. वही 11 236. जं० के फूल 168 237. हो० 126
238. हो० 319 239. जं० के फूल 156 240. दुख 47

## (छ) पशु सम्बन्धी शब्दावली :

बस्तर अंचल के "जंगल के फूल" नामक उपन्यास में कुछ पशुओं के नाम आए हैं जैसे -- / अचलि /[241], "रीछ", / अकडाल /[242] "जंगली सुअर", / लहकोरी /[243] "सियार", / ठडुआ /[244], "काले मुँह का बन्दर अथवा लंगूर", / सुकडाल /[245] "सुअर", / बोदाल /[246] "भैंस", / सिट्टी /[247] "कुत्ता", / उदा /[248], "एक पशु", / सोरी /[249] "बाघ या शेर", / वर्कार /[250], "जंगली बिल्ली", / अरखा /[251] "उल्लू"

"होलदार" में कुमाऊँ अंचल के पशुओं के नाम मिलते हैं / नादिया /[252] "सांड", / कटा /[253] "भैंस का बच्चा", / ढडुआ /[254] "वन-बिलाव", / बछोड़ /[255] "बछड़ा", / बोकिया /[256], "बकरा" / स्याल /[257] "गीदड़", / जतिप /[258] "भैंसा", / बल्द /[259] "बैल", / थोरी /[260] "भैंस की बच्ची", / सोलो /[261] "स्याही जानवर"

बिहार अंचल के उपन्यासों में पाए जानेवाले पशुओं के आँचलिक नाम इस प्रकार हैं -- / छेर्कासियारी /[262] "लोमड़ी",

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

241. जं० के फूल 124 242. वही 76 243. वही 128
244. वही 60 245. वही 18 246. वही 144
247. वही 155 248. वही 175 249. वही 59
250. वही 125 251. वही 23 252. हो० 197
253. वही 236 254. वही 255 255. वही 144
256. वही 15 257. वही 104 258. वही 76
259. वही 146 260. वही 236 261. वही 255
262. मै० आँ० 32

/ छागर /[263] "बकरा", / खिखिर /[264] "लोमड़ी", / मरेला /[265] "तेज दौड़ने वाले घोड़े की जाति", / खसी /[266] "बकरा", / पाठा /[267] "बकरा" / दुम्बा /[268] "बकरा", पंजाब सरहद और काश्मीर में मोटा तगड़ा बकरा "दुम्बा" कहलाता है / नाकर /[269] "भेड़िया"

राजस्थान अंचल के उपन्यास "कब तक पुकारूं" में गीदड़ के लिए / गेदुआ /[270] तथा बैलों की जोड़ी के लिए / जुआरा /[271] शब्द का प्रयोग मिलता है।

"सती मैया का चौरा" उपन्यास में उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ अंचल के एक जानवर के लिए / घोड़पड़ार /[272] नामक आंचलिक शब्द आया है।

होलदार उपन्यास में कुमाऊं अंचल में भेड़-बकरी बांधने के स्थान को / गोठ /[273] कहा गया है।

(ज) <u>पक्षी</u> :

बिहार अंचल में पाए जानेवाले पक्षियों के आंचलिक नाम इस प्रकार है -- / दहियल /[274] "एक पक्षी", / पनकौआ /[275] "एक पक्षी", तथा / टीया /[276] "तोता"

---

263· नई पौ·92, बल·116, जुलू· 41 264· मै· आं· 142
265· वही 142 266· बाबा बटे· 26 267· मै· आं· 55
268· रति· की चाची 74 269· जुलू· 43 270· कब तक पु·115
271· वही 14 272· सती मै· 320 273· हो· 53
274· मै· आं· 126 275· जुलू· 26 276· वही 55

कुमाऊँ अंचल के उपन्यास "होलदार" में पक्षियों के ये नाम मिलते हैं -- / घिनौड़ी /[277] "गौरैया", / सिटौल /[278] "एक पक्षी"

"कब तक पुकारूँ" उपन्यास जो राजस्थान के करनटों के जीवन से सम्बन्धित है, उसमें चमगादड़ के लिए / पटादीवलियों /[279] नामक आँचलिक शब्द का प्रयोग हुआ है इसी प्रकार बस्तर अंचल में बड़े तीतर के लिए / करांज /[280] नाम मिलता है।

§ख§ वृक्षों के नाम :

नागार्जुन तथा रेणु के उपन्यासों में बिहार अंचल के वृक्षों के आँचलिक नाम मिलते हैं। इन नामों से अधिकतर आम की विभिन्न जातियाँ ही सूचित हैं जैसे -- केरवी[281], घिवही[282], रोहिणिया[283], बेलहा[284], सुधापाणिभोग[285], रतुठिया[286], कठमिया[287], तिनरंगा[288], सिनुरिया[289], पहुनपदौना[290], अमतहा[291], सनहा[292], तम्हूा[293], चपैलवा[294], बड़ालेट[295], शरही[296], § बीजू आम का दूसरा नाम § मालदह[297], कृष्णाभोग[298], बंबईया[299], शाहपसन्द[300], राढ़ी[301], भदई[302], दुर्गालाल का बैशा[303], बथुआ सुकुल,[304] सिपिया जर्दा[305]। आम के पेड़ों के अतिरिक्त कुछ अन्य पेड़ों के नाम भी मिलते हैं जैसे -- साहढ़[306],

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

277. हो. 213 278. वही 44 279. कब तक पु.116
280. जं. के फूल 125 281. बल. 15 282. रति. की चाची 153
283. वही 153 284. वही 153 285. वही 153 286. वही 153
287. वही 153 288. वही 153 289. वही 153 290. वही 153
291. वही 153 292. वही 153 293. वही 153 294. वही 153
295. वही 153 296. वही 152 297. वही 21 298. वही 21
299. वही 21 300. वही 21 301. वही 21 302. वही 21
303. वही 21 304. वही 21 305. वही 21 306. वही 14

साखू[307], लताम[308], ‌§ अमरूद §, बड़हल[309], खैर[310], जीमड़[311], पितौंजिया[312], भोंस[313], §केले की जाति § बाड़नर[314], § केले की एक जाति §

कुमाऊँ अंचल के "होलदार" नामक उपन्यास में वृक्षों के आंचलिक नाम ये हैं -- बांज[315], फल्याट[316], सल्ल[317], मेहल[318], धुसम्यारू[319],

"जंगल के फूल" में बस्तार अंचल के आंचलिक वृक्षों की शब्दावली इस प्रकार है -- गोटमरे[320], कोहा[321], कोदा[322], तेंदू[323], महर्रा[324], बर्रा[325] § धवा का वृक्ष §

रांगेय राघव के उपन्यास "कब तक पुकारूँ" में राजस्थान अंचल में पाए जानेवाले वृक्षों आंचलिक नाम हैं -- धौ[326], तथा धामड़[327] ।

§८§ अन्य वनस्पति :

किसी भी अंचल में पनपने वाली वनस्पतियों में उस अंचल की गन्ध विशेष रूप से तीव्र होती है । ये वनस्पतियाँ अंचल को विशिष्टता प्रदान करती है तथा इनके आंचलिक नाम अंचल के प्राकृतिक वातावरण को और भी अधिक गहराते हैं ।

---

307. बाबा बटे. 60 308. बल. 13 309. ब. के बेटे 29
310. नई पौ. 32 311. नई पौ.32, बल.7 312. वही 32
313. नई पौ. 49 314. वही 49 315. हो.82
316. वही वही 82 317. वही 82 318. वही 312
319. वही 48 320. जं.के फूल 176 321. वही 13 322. वही 71
323. वही 25 324. वही 13 325. वही 13
326. कब तक पु. 100 327. वही 67

बिहार के अंचलों में उपजनेवाली वनस्पतियों के कुछ आंचलिक नाम इस प्रकार हैं --- चकोंद[328], पोरो[329], बरकोठ[330], तेकुना[331], गैनधारी[332], घेरा[333], ठरिया[334], खम्हाउर[335], कर्दामा[336], केया[337], ( केवड़ा ), साबे[338], ( घास की एक किस्म ), गोंढ-लत्ती[339], ( बेल की एक किस्म ) तग्गर[340], ( एक झाड़ ), तालमखाना - कुई - कड़वड़, केसौर - सारूख[341], ( पानी में पैदा होनेवाले झाड़ ), नकिस[342], तारा[343], मधुरी[344], करैल[345], मेनुआ[346], ( एक बेल ), खमरआलू[347], ( जंगली फल ), कोहड़ा[348], चन्द्रकमल - करबीर - कनैल[349], दनूफ 350, ( दनूफ का फल ) खड़[351], ( घास-पात ) आलर[352] ( पत्ता )

"जंगल के फूल" नामक उपन्यास में बस्तर अंचल की कुछ वनस्पतियों के आंचलिक नाम ये मिलते हैं --

अढ़ाझारे[353], ( एक झाड़ ) ईतुमरा[354], जुनरी[355], छिनका[356], उरई[357], ( एक घास ) पुंगार[358], ( जंगली फल ) चार[359], ( एक जंगली फल ) चिटी[360] ।

कुमाऊं अंचल की वनस्पतियों की आंचलिक शब्दावली ये हैं लगिल[361], ( लता ), गद्दोल[362], बनधुस्यणी[363] ( जंगली मिर्च ) कापल[364], तिमिल[365], जम्बु[366] ( तिब्बती घास )

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

328· कल· 156 329· वही 99 330· वही 99 331· वही 99
332· वही 99 333· वही 99 334· वही 99 335· वही 99
336· वही 99 337· जुलू 51 338· दुख 71 339· व.के बेटे 40
340· वही 30 341· व· के बेटे 18 342· नई पौ·84 343· वही 84
344· वही 84 345· कल· 99 346· कल·44 347· मै· आं· 17
348· रति·की चाची 7 349· रति· की चाची 31 350· कल· 6
351· मै· आं· 11 352· मै·आं·200 353· जं· के फूल 24 354·वही 60
355· वही 209 356· वही 38,39 357· वही 144 358·वही 34,
359· वही 164 360· वही 139 361· हो·129 362·वही 115
363·वही 56 364· वही 45 365· वही 208 366· वही 185

राजस्थान अंचल के कब तक पुकारूँ नामक उपन्यास में आंचलिक नाम खड़ी[367] मिलता है जो एक जंगली जड़ी-बूटी के लिए प्रयोग हुआ है ।

2·144 सांस्कृतिक शब्दावली :

(क) खाद्य पदार्थ :

आदमी की मूल आवश्यकताएं "भोजन" और "छाजन" की हैं । इन आवश्यकताओं से सम्बन्धित शब्दावली में भी आंचलिक वैशिष्ट्य मिलता है । चाहे भोजनीय सामग्री समान हो फिर भी उस सामग्री के नामों में अन्तर मिल जाता है । भोजनीय पदार्थों में यत्किंचित अन्तर मिल सकता है। नीचे जो वर्गीकृत शब्दावली दी गई है उससे यह बात प्रमाणित हो जाती है ।

बिहार के अंचलों में यह नाम मिलते हैं -- / भुआ /[368] "बुंदवा, एक मिठाई" / खिल्ली /[369], "एक खाद्य पदार्थ" / कचरी /[370] "एक खाद्य पदार्थ", / भुआ-फरही /[371] "एक खाद्य पदार्थ" / आमिल /[372] "एक खाद्य पदार्थ", / कुल्था /[373] "एक खाद्य पदार्थ" / अरकोंछ /[374] / चोखा /[375] "बैंगन का चोखा" / सनेसा /[376] / भुजिया चावल /[377], / कसौंधी /[378] / छोवा गुड़ /[379] / मण्डा /[380], / माजून /[381] / सन्तोला /[382]

---

367· कब तक पु· 9 368· रति· की चाची 93 369·व·के बेटे 53
370· वही 53 371· वही 53 372· रति·की चाची 160
373· वही 160 374· दुख 42 375· रति· की चाची 8
376· बल·104 377. व· के बेटे 12 378·रति·की चाची 75
379· मै·आं·94 380· वही 238 381· वही 238
382· रति की चाची 131

/ खिचदाना /[383] / घुघनी /[384] / खीसा /[385]
/ पपरी /[386] "पपरी के लड्डू" / ठोरहा /[387] "ठोरा"
/ मूढ़ी /[388]. / कनक जीर /[389] / घुजिया /[390]
/ तस्मै /[391] "खीर". / गोपी /[392] "जेठ के आरम्भ में रोहिणी नक्षत्र का जब प्रवेश होता है तो आम पकने लग जाते हैं। वहाँ इक्के-दुक्के पक जानेवाले आमों को 'गोपी' कहा जाता है।
/ टिकोरा /[393] "आम का कच्चा छोटा फल" / लेंवु /[394]
/ खुद्दी /[395] "चावल दाल आदि के बहुत छोटे टुकड़े"
/ अमावट /[396] "आम-पापड़". / अंगरी /[397]
/ कुसियार /[398]. / तीमन /[399]

कुमाऊँ अंचल के उपन्यास "होलदार" में खाद्य पदार्थों के ये आंचलिक नाम मिलते हैं --- / छ्यू /[400] घी. / निमुवे का चूक /[401] "नींबू का आचार". / भुटेन /[402] "भुना हुआ खोया" / जौल /[403] "पतली खिचड़ी" / बाल के लड्डू /[404] / भुटीकंद /[405] "भुना हुआ खोया". / मौ /[406] "मधु" / कोण /[407]. "धान के कूटे हुए छिलकों का बारीक चूरा" / कुमन्यारू /[408]

उत्तर प्रदेश के अवधपद अंचल में यह नाम मिलते हैं --- / लकठा /[409] / ठोंसिया /[410] / बैंगनी /[411] / दत्ता सेव /[412]

---

383. मै.आँ. 141 384. वही 143 385. अल. 13 386. वही 94
387. वही 100 388. वही 12 389. वही 16 390. जुग 129
391. नई पौ.45 392. रति.की चाची 51 393. व. के बेटे 45
394. अल.148 395. वही 62 396. अल.132 397. अल. 100
398. वही 13 399. व.के बेटे 20 400. हो.130 401. वही 133
402. वही 126 403. वही 275 404. वही 67 405. वही 67
406. वही216 407. वही323 408. वही323 409. सती मै.33
410. वही 33 411. वही 33 412. वही 33

बस्तर अंचल के नाम उदाहरण के लिए ये हैं --
/ मुरगुल /413 "सवेरे का नाश्ता" / माटर /414 "लाल चींटी का अचार", / छित्ती /415 इमली

राजस्थान अंचल के "कब तक पुकारूँ" उपन्यास में
/ नुक्ती /416 नाम मिलता है ।

(ख) पेय पदार्थ :

भोजनीय "पदार्थों" के साथ-साथ कुछ पेय पदार्थों से संबंधित शब्दावली भी आंचलिक वैशिष्ट्य लिए हुए है किन्तु ये शब्दावली खाद्य पदार्थ सम्बन्धी शब्दावली की अपेक्षा सीमित है ।

बस्तर अंचल में शराब के लिए यह नाम मिलते हैं --
/ सोदा /417, / पेज /418, तथा / जावा /419 पानी के लिए / नियार /420 शब्द मिलता है ।

बिहार अंचल में शराब के लिए यह आंचलिक शब्द मिले हैं --
/ पचाय /421 "भात की शराब" / बसन्ती /422, / शकर-चिनिया /423 / बेर-चिनिया /424 इसके अतिरिक्त / वारुणी /425 नामक शब्द भी मिलता है ।

कुमाऊँ अंचल में मिलने वाले नाम इस प्रकार है --/ मर्चाणी /426 "काली मिर्च की चाय" / स्टोन /427 "चाय का एक प्रकार"

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

413. जं. के फूल 169 414. वही 194 415. वही 13
416. कब तक पु. 112 417. जं.के फूल 15 418. वही 138
419. वही 170 420. वही 71 421. जुलू 127 422. मै.आँ. 143
423. वही 143 424. वही 143 425. वही 141 426. हो. 76
427. वही 175

## (ग) रसोई-सम्बन्धी शब्दावली :

बिहार के अंचलों में यह नाम मिलते हैं -- / अपखोरा /428 "कांसे की पुराने किस्म की गिलास, गोड़ीवाला", / टाड़ा /429 "तेल रखने का मिट्टी का बर्तन", / छिपिया /430 "छोटी थाली", / चुक्कड़ /431 "मिट्टी के चुक्कड़" / छिपली /432 "एक पात्र" / चंगेरी /433 "एक बर्तन", / कलगइया /434 "कलगइया लोटा", / सिलोट /435 "सिल बट्टा" / उखरेकी /436 "ओखली", / गोइठा /437 "उपला" / गोरहा /438, "बड़े आकार का उपला" / बोरसी /439 "अंगीठी", / रसोई /440 "रसोईघर" / सिगड़िया /441 / फुच्ची /442 "मिट्टी की लुटिया, मापक यन्त्र"

कुमाऊं अंचल में यह नाम मिले हैं -- / फौल /443 "गगरी", / हेली /444 "मथानी" / डाड़ /445 "गहरा चम्मच", / गुपटोला /446 "गोबर का उपला" / धनण /447 "ईंधन"।

उत्तर प्रदेश के अजयगढ़ अंचल में / कहतरी /448 शब्द मिलता है।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

428. नई पौ. 131 429. वही 31 430. वही 82
431. मै. आ. 144 432. रति. की चाची 57
433. व. के बेटे 12 434. कल. 77 435. वही 97 436. वही 100
437. वही 13 438. वही 13 439. मै.आ 31 440. नई पौ. 140
441. व.के बेटे 82 442. कल 119 443. हो. 127 444. वही 138
445. वही 186 446. वही 77 447. वही 109 448. सती मै. 447

(घ) आवास सम्बन्धी शब्दावली :

किसी अंचल की आधारभूत शब्दावली में आवास सम्बन्धी शब्दावली का भी प्रमुख स्थान रहता है । इस शब्दावली से अन्य स्रोतों से आगत शब्दावली बहुत कम प्रभावित करती है । प्राय: सभी आलोच्य आंचलिक उपन्यासों में इस प्रकार की शब्दावली मिल जाती है ।

बिहार अंचल के उपन्यासों में यह शब्दावली इस प्रकार है — / ओलती /[449] "छप्पर का सिरा अथवा किनारा", / रावटी /[450] "बारहदरी अथवा छोलदारी", / चौर /[451] "चबूतरा" / ठाठ /[452] "ठट्टर, छप्पर का ढांचा" / सफरे /[453] "बिछावन", / जाजिम /[454] "बिछावन", / कड़ेरी /[455] "मुंडेर"

कुमाऊं में यह नाम मिलते हैं — / बाखली /[456], "पंक्तिबद्ध घरों का एक समूह" / सौरास /[457] "ससुराल" / मैत /[458] "मायका" / चाख /[459] "बैठक का लम्बा कमरा" / डूमौड़ /[460] "अछूतों की बस्ती"

बस्तर अंचल में यह नाम मिलते हैं — / कट्टल /[461] "खाट" / टपोरयो /[462] "छप्पर या झोपडे" / लोन /[463] "घर" / फरके /[464] "द्वार" ।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

449. बल. 16 450. व. के बेटे 97 451. जुलू. 59 452. नई पौ. 82
453. मै. आं. 160 454. नई पौ. 40 455. बल. 80 456. हो. 51
457. वही 135 458. वही 135 459. वही 71 460. वही 52
461. जं. के फूल 25, 462. वही 19 463. वही 23
464. वही 62

राजस्थान अंचल के उपन्यास "कब तक पुकारूँ" में दासा /465 "दालान" शब्द मिलता है ।

(च) वस्त्र - वेशभूषा सम्बन्धी शब्दावली :

जहाँ अंचल की मूल वेशभूषा अपना वैशिष्ट्य रखती है और जिसको अंचल के निरूपण में प्रमुखता प्राप्त होती है उसी प्रकार तत्सम्बन्धी शब्दावली का वैशिष्ट्य भी परिलक्षित किया जा सकता है इस शब्दावली के प्रयोग से भी आंचलिक उपन्यासों के वातावरण में विशिष्टता और सजीवता आती है ।

बिहार के अंचलों में ये नाम मिले हैं -- / फाँफड़ /466 "मर्दाना धोती का आँचल" / पनही /467 "जूती", / बंडी /468 "रेशमी कपड़ा", / फेंटा /469 "धोती का कमर पर लपेटा गया भाग", / पैताबा /470 "जुता", / ओहार /471 "परदा", / लोई /472 "ऊनी कम्बल" / नर्मगिलाट /473 "लांगक्लाथ" / उबेंच /474 "बिछाने का चादर" / चमरौधा जूता /475 "जूता विशेष" / सलूका /476 "पूरी आस्तीन का कमर तक का पहनावा, शलूका"

राजस्थान अंचल के "कब तक पुकारूँ" उपन्यास में यह नाम मिलते है -- / फेंटा /477 "मुँह पर बाँधने का कपड़ा" / पिछौरी /478 "एक ड्रेस", / फरिया /479 "दुपट्टा अथवा ओढ़ना" / ढाटा /480 "साफ़ा" ।

---

465. कब तक पु. 116 466. नई पौ. 129 467. बाबा बटे. 62
468. बल. 103 469. वही 73 470. रति. की चाची 122
471. वही 16 472. बल. 103 473. रति. की चाची 76
474. वही 112 475. बाबा बटे. 43 476. व.के बेटे. 87
477. कब तक पु. 340 478. वही 472 479. वही 12 480. वही 409

बस्तर अंचल के उपन्यास "जंगल के फूल" में वेशभूषा सम्बन्धी में आंचलिक नाम मिलते हैं -- / कटवक /481 "लकड़ी के जूते" / आंकुल /482 "मोटी साड़ी" / हरपुंज /483 सांभर के चमड़े से बनी हाथ में पहनने की एक वस्तु (दस्ताने)

कुमाऊं अंचल के ये आंचलिक नाम शैलेश मटियानी के "हौलदार" उपन्यास में मिलते है -- / दोकलिया टोपी /484 "बिना लौटाए किनारो की गोल टोपी" / झगुली /485 "फ्राकनुमा वस्त्र" / थाल /486 "कपड़ा" / फचीने /487 "आंचल"

"सती मैया का चौरा" में अवधगढ़ अंचल का यह आंचलिक शब्द मिलता है -- / फुमुली /488 "एक वस्त्र विशेष"

(ख) शृंगार प्रसाधन :

शृंगार और प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली मुख्य रूप से अंचल विशेष की नारी से सम्बन्धित है । इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग तो कम हुआ है किन्तु यह शब्दावली आंचलिक जीवन की भाषिक गहराई का स्पर्श करती है । इसके द्वारा जन-जीवन मुखरित और प्रामाणित होता है । आगे इस प्रकार की शब्दावली को संग्रहीत किया गया है ।

रेणु तथा नागार्जुन के उपन्यासों में बिहार के अंचलों के यह शृंगार-प्रसाधन सम्बन्धी आंचलिक शब्द मिलते हैं -- / पचिकी /489 "कंघी" / छक /490 "कील, नाक में पहनने का आभूषण",

---

481. जं. के फूल 70
482. जं. के फूल 15 483. वही 70 484. हौ. 254
485. वही 146 486. वही 96 487. हौ. 131
488. सती मै. 53 489. रति. की चाची 53 490. बल. 17

/ चाम्पा का लेबा /491 "चन्दन का लेप" / हैकल /492 "गले का आभूषण" / चकतिया /493 "एक आभूषण", / बुलाकी /494 "नाक में पहनने का आभूषण" / मीठी छुनकी /495 " एक आभूषण ", / धुर /496 "एक आभूषण" / अनन्त /497 " एक आभूषण ", / कंठसर /498 "कंठसर, एक गहना", / लच्छी /499 "कलाइयों में पहनने का आभूषण", / बीक /500 "एक आभूषण"

बस्तर अंचल के उपन्यास "जंगल के फूल" में यह आंचलिक शब्द मिलते हैं -- / पढ़िया /501 "लकड़ी की कंघी" / कारपोल /502 "मर्दों के पहनने की गले की माला", / पथरी /503 "पायजेब" / गुरियो /504 "गुरियो की माला"

"होलदार" उपन्यास में कुमाऊं अंचल का एक यह नाम मिलता है -- / कनगडु /505 "यह एक गुच्छा जैसा होता है और इसमें सामयिक उपयोग के लिए कांटा निकालने की सुई, कान का मैल निकालने की एक तीली और छोटी सी चिमटी रहती है । बहुत-सी औरतें इसमें छोटी सी वीणा (दन्त-वीणा) भी लगाके रखती है जिसे अवकाश के समय बजाती है ।"

(ज) रीति-रिवाज :

रीति रिवाज आंचलिक लोकवार्ता की प्रमुख धरोहर हैं । इनसे लोक व्यवहार का अधिकांश नियन्त्रित रहता है । हिंदी के

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

491. य. के बेटे 45, 492. फूल. 85 493. नई पौ. 36
494. मै. आं 55 495. वही 225 496. वही 206 497. वही 206
498. वही 212 499. कब. 177 500. मै.आं. 206
501. जं. के फूल 30 502. वही 31 503. वही 50 504. वही 30
505. हो. 139

आंचलिक उपन्यासों में वातावरण की रचना इनके द्वारा भी की गई है। यह रीति-रिवाज आंचलिक मानस में परम्परा की व्यापकता/रिता को सिद्ध करती है। परम्परा और प्रगति के द्वन्द्व का वातावरण भी बहुत कुछ इनके द्वारा बनता है। नीचे इसी सामग्री का पर्यालोचन प्रस्तुत है।

बस्तर अंचल में यह नाम मिलते हैं -- / परगोनी /506 "गोंडों के विवाह की एक रसम" / थोंडी /507 "बांस की सुराही" जिसमें शराब लेकर किसी लड़की के दरवाजे पर जाने का अर्थ उससे प्रेम जताना है" / छिन्दा /508 "गोंड की एक प्रेमकथा" / लमसेना /509 "लमसेना रखना भी एक प्रथा है। सम्पन्न लड़की का पिता किसी लड़के को अपने घर लाकर रख लेता है और जब उसकी सेवा से प्रसन्न हो जाता है तो उसके साथ अपनी लड़की का ब्याहकर देता है। जब तक ब्याह नहीं होता तब तक वह लड़का "लमसेना" कहलाता है।" / दोरीलो /510 "यह एक सजा है, जिसमें पैरों में डंडा फंसा दिया जाता है और जब तक जमीन पर झुके रहना पड़ता है जब तक दो गीत न हो जाए।

बिहार अंचल के ये नाम मिले हैं -- / परछन /511 "एक वैवाहिक लोकाचार" / पुरहड़ /512 "पुरोघट अथवा मंगलकलश / हाथ-पातिल /523 "शादी के वक्त मिट्टी का पक्का हाथी सामने रखा रहता है। पातिल वह हँड़िया है जिसके अन्दर दिया जलाकर ऊपर ढक्कन से आधा ढका रहता है" / घूनस /524 "घुंघटदार लिदश" / महफा /515 "डोली" / बिदागरी /516

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

506. ज. के फूल 49 507. वही 169 508. वही 48 509. वही 87
510. वही 108 511. बल. 127 512. नई पौ. 37 513. नई पौ. 37
514. वही 5 515. ब. मैले 42 516. वही 52

"मुकलावा" / सभागाछी /517 "विवाहार्थी मैथिलों का मेला" / घुमौना /518 "सगाई" ।

कुमाऊं अंचल में / अंगाल /519 "आलिंगन" शब्द मिलता है ।

§ब§ मनोरंजन के साधन :

आंचलिक जन अपने अवकाश के क्षणों को कला या क्रीड़ा के द्वारा सजीव और रचनात्मक बनाता है । आंचलिक मानस का प्रमुख मनोरंजन संगीत है । लोकगीत उसके श्रम और अवकाश दोनों के ही साथी हैं । वाद्य, नृत्य और लोकगीत की वर्षा के नाद-सौंदर्य में लोकमानस डूब जाता है । इस कलात्मक और रचनात्मक प्रक्रिया के लिए प्रत्येक अंचल की कुछ विशिष्ट शब्दावली भी प्रयुक्त होती है । खेल और क्रीड़ा की शब्दावली उसके साथ जुड़कर, मनोरंजन की पूरी इकाई को स्पष्ट कर देती है ।

§1§ गीत व नृत्य संबंधी शब्दावली :

बस्तर अंचल में यह शब्दावली इस प्रकार है -- / रीलो /520 "एक गीत", / पन्दाना /521 "नाच" / मुंदीमांगा /522 "बाजार या यात्रा को जाते समय गाए जानेवाले गीत" / हुलकी /523 "एक नाच", / पाटा /524 "गीत" ।

---

517· मै· बी· 37 518· वही 53 519· छो· 147
520· ज· के फूल 49 521· वही 50 522· वही 226
523· वही 169 524· वही 72

बिहार अंचल में ये शब्द मिलते हैं / खेमटा /525 "एक प्रकार का गीत" / भऊोवा /526 "एक गान विशेष" / बलवाही /527 "बाउल सुर में गीत गाकर नाचनेवाला दल" / भास /528 "लय"

§2§ विभिन्न वाद्यों के नाम :

बस्तार अंचल के उपन्यास " जंगल के फूल " में विभिन्न वाद्यों के लिए प्रयुक्त शब्दावली इस प्रकार है -- / टेंडुर /529 / टिमकी /530. / निसान /531. / बेला /532. / मांदर /533. / फिरकी /534. / पुंगाब /535 / कार्वाकी /536. / सींग /537. / धुसीर /538. / हकुमराई /539. / केकरेंग /540. / चिटकुल /541. / किकिर /542 ।

रेणु के मैला आंचल में बिहार अंचल के वाद्यों के आंचलिक नाम इस प्रकार हैं -- / डिग्गा /543. / टाक /544. / चानधोल /545. / करनाल /546. / मानर /547

शैलेश मटियानी के उपन्यास "होलदार" में कुमाऊँ अंचल के एक वाद्य का आंचलिक नाम / हुड़के /548 मिलता है ।

---

525. मै. आं. 110 526. वही 114 527. वही 110
528. जुलू. 20 529. जं. के फूल 25 530. वही 13
531. वही 25 532. वही 167 533. वही 110 534. वही 180
535. वही 167. 536. वही 167 537. वही 167.
538. वही 167 539. वही 110 540. वही 110 541. वही 110
542. वही 16 543. मै. आं. 91 544. वही 114
545. वही 201 546. वही 200 547. वही 91 548. हो. 89

(3) खेल व क्रीडा सम्बन्धी शब्दावली :

बिहार के अंचलों में यह शब्दावली इस प्रकार है --
[मलथरा][549], [कोयाछुटी][550], [भाव][551]
[पचीसी][552] [मोगलो पैठान][553], [बाघगोटी][554]
[मचकी][555] "झूला" ।

कुमाऊं अंचल में यह शब्दावली मिलती है --
[गिडुवा][556] "गेंद", [कौतिक][557] "मेले" ।

2.145 धर्म व पूजा सम्बन्धी शब्दावली :

रीति-रिवाजों की भांति धार्मिक अनुशासन भी आंचलिक जीवन का प्रमुख भाग है । लोकधर्म, विविध विश्वासों, अन्धविश्वासों, अनुष्ठानों, व्रतों और त्योहारों में व्याप्त रहता है । यदि आंचलिक उपन्यासकार इस पक्ष की उपेक्षा करता है तो आंचलिक जीवन के यथार्थ को बहुत सीमित रूप को ही ला पाता है । त्योहारों पर विशेष रूप से सामूहिक धर्मानुष्ठान का वातावरण दिखाई पड़ता है । सभी आंचलिक उपन्यासों में इस तत्व को एक प्रतिबद्धता के रूप में प्रस्तुत किया गया है । आंचलिक रूप से वर्गीकृत शब्दावली नीचे प्रस्तुत है ।

(क) लोक धर्म :

बिहार के अंचलों में धर्म व पूजा सम्बन्धी शब्द यह मिलते हैं --
[भकते][558], "कीर्तन" [सुन्नत][559], "रीति-दस्तूर",
[नचारियां][560], "लाचारियां, लोकगीत, जो शिव को सम्बोधित

---

549. बल. 10 550. वही 10 551. बाबा बटे.52 552. नई पौ.104
553. रीति की चा.135 554. वही 135. 555 बल 39 556. हो.361
557. वही 14 558. मै.आं.195 559. बल.115 560. नई पौ.67

करके अपनी बेबसी के बारे में होते है" / तुक्ताक /562 "टोटका" / मुआलिया /562 "बिना सिर वाला प्रेत", / धोखा की माटी /563 "वश में करने का एक टोना" / बही और सिरनी /564 / पीठी /565, / सिस्यनी /566 "क्रिश्चियन", / बादमनी /567 / मुवा /568

कुमाऊं अंचल के उपन्यास "होलदार" में यह नाम मिलते हैं -- / बैसी /569 धूनी, जहां गांव वालों के संयुक्त प्रयास से लोक-देवताओं का अवतार कराया जाता है। "बैसी" रात को ही लगती है और इसके देवता भी विशेष होते हैं" / मुन /570 "मुण्ड" / जगरिया /571 "जो लोक देवताओं को अवतार कराने की गुरु-विद्या जानता हो" / देपताथान /572 "देवता का मन्दिर", / पिठाँ /573 "टीका", / डंगरिया /574 "जिस व्यक्ति विशेष के शरीर में कोई देवता अवतार लेता है। / बौसाण /575 "देवताओं को अवतरित करने के लिए गाया जानेवाला छन्द विशेष" / दाणियां /576 "मुट्ठीभर अक्षत"।

बस्तर अंचल के उपन्यास "जंगल के फूल" में यह शब्द मिलते हैं / पेरमा /577 गांव के धार्मिक कृत्य करानेवाला" / पुजारिया /578 / छली /579 "कपड़े का टुकड़ा" / चिम्टी /580 / धमीटा /581.

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

561. मै. आंचल 52 562. 562. वही 237 563. वही 244
564. वही 228 565. आधा गांव 27 566. वही 79 567. रा.त. चौपायी
568. दूध 96 569. हो. 246 570. वही 350 571. वही 51
572. हो. 101 573. वही 213 574. वही 52 575. हो. 89 576. वही 247
577. ज.के फूल 43 578. वही 189 579. वही 153 580. वही 223
581. वही 33

(ख) त्योहार : अनुष्ठान :

बस्तर अंचल में त्योहारों के आंचलिक नाम इस प्रकार हैं -- / नुकानोरदाना पाण्डुम /582 "दीवाली के समय मनाया जानेवाला त्योहार, जिसे "नवान्न" भी कहते हैं, / कोरता पाण्डुम /583 "सितम्बर-अक्टूबर में मनाया जानेवाला पर्व, बरसात के बाद इस दिन पहली बार खुले मैदान में नाच होता है। / काड़ा मरेंगा /584 "फसल काटने के समय मनाया जानेवाला त्योहार" / इरपु पाण्डुम /585 "मार्च में महुआ के फूल बीनने का पहला उत्सव", / लाडुकाज /586 "गोंडों का त्योहार, जिसमें नारायण देव की पूजा की जाती है" / दीवारी /587 मुड़िया गोंडों का विशेष उत्सव, जो अक्टूबर.मास के लगभग होता है।

रेणु के "मैला आँचल" में यह नाम मिलते हैं -- / बधना /588 "ग्वालों का पर्व-विशेष" / जितिया /589 जीताष्टमी।

कुमाऊँ अंचल के उपन्यास "होलदार" में / नौर्तों /590 नवरात्रि" शब्द मिलता है।

2·146 आर्थिक जीवन :

आर्थिक जीवन की शब्दावली को उत्पादन की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है, कृषि-सम्बन्धितशब्दावली और अन्य व्यवसायों की शब्दावली। इनमें से प्रमुखता कृषि सम्बन्धी

- - - - - 55 - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

582· अं·के फूल 234 583· वही 215· 584· वही 164 585· वही 121
586· वही 17 587· वही 51 588· मै·आँ·148 589· वही 88
590· हो· 348

शब्दावली की होती है । अंचल के आर्थिक जीवन पर आंचलिक उपन्यासकारों का विशेष ध्यान केन्द्रित रहता है इसलिए इस प्रकार की शब्दावली भी अधिकतिपक है ।

(क) कृषि सम्बन्धी शब्दावली :

कृषि सम्बन्धी शब्दावली में कृषि कार्य, कृषि सम्बन्धी उपकरण और कृषि सम्बन्धी पशुधन सब विष्ट होते हैं । इसी शब्दावली पर नीचे विचार किया गया है --

(अ) कृषि-उपकरण आदि :

बिहार अंचल में कृषि संबंधी ये आंचलिक शब्द मिलते हैं -- / चास /[591] "जोत", / बीहन /[592] "बीज", / बिहा /[593] / धोंगी /[594], / कोड़कमान /[595], / रमना /[596], "चरागाह", / कादी-गोरा /[597] / पतनी /[598] "जमींदारी", / बीचड़ /[599] "बीज" /खढ़ोर /[600] "घर छवाने की बड़ी-बड़ी घासों का मैदान", / कट्ठा /[601] "जमीन नापने का एक नाप" / पुरवा /[602], "पुआल" / कोली /[603] "छोटा खेत अथवा बड़ी क्यारी", [2]/ बास भूमि /[604] "भूस्वामी", / बीआ /[605] "अंकुर", / केलियो /[606] "पोधे की हिफाजत के लिए बनी केलियों की बाड़" / दबनी /[607] / थाले /[608] "संस्कृत में इसके लिए आलवाल शब्द पाया जाता है । उत्तर बिहार में यह "थाला" कहलाता

591. बल.98 592. मै.आं.166 593. वही 269 594.वही 269
595. वही 269 596. वही 272 597. वही 269 598.वही 146
599. वही 166 600. बन.7 601.वही21 602.दुख127 603.नई पौ.134
604. वही 10 605.बाबा बटे.79 606.वही 155 607.बाबा बटे.141
608. रति. की चाची 152

है । खाद-पानी के टिकाव के वास्ते पहले बड़े थाल की शक्ल में जगह तैयार करते हैं फिर उसके बीच कलमी पौधा रोपा जाता है ।" / शरह /[609] "लगान की दर", / खेती-स्थान /[610] "खेती-सम्बन्धी औजार" ।

कुमाऊँ अंचल के उपन्यास "होलदार" में इन नामों का उल्लेख मिलता है -- / अघोल /[611] "पहली खुदाई की खेती", / भुत्ते /[612] "काँटे" / जाते /[613] "अन्न के पौधों के बीच से निकाली गई घास", / पराल /[614] "पुआल" / दनेला /[615] "अन्न के साथ उपजे अनुपयोगी झाड़-पात को निकालने का दनेला, इसकी बनावट हल जैसी ही होती है, पर फल की जगह कंघी जैसे दाँतों वाला "दनेला" रहता है ।

राजस्थान अंचल में "उपलों की राशि" अथवा "ढेर" के लिए / भिटोरे /[616] शब्द मिलता है ।

बस्तर अंचल के उपन्यास "जंगल के फूल" में / बेढ़ा /[617] "खेत", / गैंती /[618] "दराँती", तथा / दीपा /[619] "शिफ्ट कल्टीवेशन का एक ढंग" शब्दों का प्रयोग मिलता है ।

उत्तर प्रदेश के अवध-क्षेत्र अंचल पर आधारित उपन्यास "सती मैया का चौरा" में / ढेकुल /[620] शब्द मिलता है ।

(आ) अनाजों के नाम :

बिहार के अंचलों में अनाजों के ये नाम मिलते हैं --

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

609. ब.के बेटे 23 610. बाबा बटे.104 611. हो. 231 612. वही 251
613. वही 50 614. वही 229 615. वही 50. 616.अब तक पृ.151
617. जं.के फूल 57 618. वही 145 619.वही 620.सती मै.302

/कोयन/[621], /सावाँ/[622], /मडुआ/[623], /कुर्थी/[624], /खेसाड़ी/[625], /जुन्हरी/[626], /अल्हुआ/[627], /गद्दड़/[628], /चीना/[629], /तीसी/[630], /कोदो/[631], /सुथनी/[632], /जाउस/[633], /गम्हड़ी/[634], /अखा चावल/[635], /साठी/[636].

राजेन्द्र अवस्थी के उपन्यास "जंगल के फूल" में बस्तर अंचल में पैदा होनेवाले अनाजों के आंचलिक नाम कुछ ये हैं --/अकरी/[637], /कोहला/[638], /कुटई/[639], /कुटकी/[640], /नुका ~ नुकांग/[641], /जोंदरा/[642] (ज्वार)

कुमाऊँ अंचल में अनाजों के नाम ये मिले हैं --
/सिमार/[643], /घोका/[644], (मक्का) /कुखुक/[645], (एक दाल)

राजस्थान अंचल के "कब तक पुकारूँ" नामक उपन्यास में /"बूकरा/"[646] शब्द मिलता है ।

सब्जियों के नाम :

कुछ सब्जियों के आंचलिक नामों का प्रयोग भी आलोच्य आंचलिक उपन्यासों में हुआ है यद्यपि ऐसे शब्दों की संख्या अधिक नहीं है । उदाहरण के तौर पर कुछ नाम इस प्रकार हैं --

| अंचल | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|
| बिहार | / झिंगनी ~ झिङ्गनी /[647] | "तोरई" |

621. बल.6 622. वही 6 623. वही 6 624. वही 163. 625. वही 23
626. बाबा बटे.57 627. वही 57 628. वही 79 629. वही 33
630. नई पौ.128, बाबा बटे.118 631. बल.6 632. वही 15 633. दुख.18
634. वही 18 635. वही 23 636. नई पौ.134 637. जं.के फूल 234
638. वही 234 639. वही 96 640. वही 96 641. वही 27 642. वही 15
643. हो.147 644. वही 165 645. वही 212 646. कब तक पु.79
647. नई पौ.88, बल. 99,147

| अंचल | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|
| बिहार | / मूर /648 | "मूली" |
| " | / बोल /649 | "सूरन" |
| " | / भाटा /650 | "बैंगन" |
| " | / रमझिंगनी /651 | "भिंडी" |
| " | / मेनुआ /652 | "एक सब्जी" |
| " | / अरबं /653 | "गुइयाँ" |
| कुमाऊं | / गद्दुवा /654 | "कद्दू" |
| " | / फुन्फुड़ /655 | "नरम और छोटा कद्दू" |

(ख) अन्य व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली :

आंचलिक ग्रामों में कुछ कुटीर उद्योग और अन्य छोटे-छोटे व्यवसाय कृषि या कृषक जीवन से सम्बद्ध रहते हैं। इनसे संबंधित शब्दावली भी आंचलिक उपन्यासों में प्रस्तुत हुई है। इस शब्दावली में अंचल का आर्थिक जीवन प्रतिबिम्बित रहता है।

बिहार के अंचलों में अन्य व्यवसायों से सम्बन्धित शब्दावली इस प्रकार है -- / छदाम /656 पुराने पैसे का चौथा भाग", / भउका-भउकी /657 "मछली रखने की छोटी-छोटी टोकरियां",

---

648. नई पौ. 88, अब. 649. वही 88 650. नई पौ. 11 651. वही 11
652. नई पौ. 84 653. वही 84 654. हौ. 133
655. वही 273 656. व.के बेटे 41 657. वही 65

/ ठेकी /658 "मछली रखने की टोकरी" / खोगे /659 "मछली रखने के खाधे" / दोनही-पोठिया मरघलो - हथियार छनी - मतोल - दुवाली - ठेंठी /660 "विभिन्न मछलियां पकड़ने के विभिन्न प्रकार के छोटे छोटे जाल". / टमकी /661 "जाल". / रुखान- रंदा - बर्मा - छेंव - रेती - टांगी /662 "बढ़ई के काम आनेवाले विभिन्न औजार". / पैठ /663 "बाजार". / सरेला /664 "मछली पकड़ने के काम आता है". / दश सामा /665 "कच्ची तौल से दो पसेरी" / खमाड़ /666 कुएं में गिरी वस्तु को बाहर निकालने का कांटा". / सिकड़ /667 "जंजीर, सिकड़ी, / मोड़ो बाती - धांसन - लडम /668 "घर बनाने के काम आनेवाला सामान" / खटखरा /669 "खाट" / चटकल /670 "जूट मिल". / बनसी /671 "मछली फंसाने की कंटिया" / भैंसा, 672 [illegible] लग्गी 673, गाज 674 / मछली पकड़ने के काम आनेवाला सामान, / टकुरी /675 / सहस /676 "मछली पकड़ने के काम आनेवाली वस्तु"

"होलदार" उपन्यास में कुमाऊं अंचल के यह नाम मिलते हैं-- / कछुवे /677 "तकली", / बल्ली /678 "मछली पकड़ने का डंडा", / घट /679 "पनचक्की"

बस्तर अंचल के उपन्यास "जंगल के फूल" में / घोसना /680 "राख बिखेरने का औजार" तथा / ढाँगिया /681 "एक हथियार अथवा औजार" शब्द मिलता है ।

---

658. व.के बेटे 65 659. वही 65 660. वही 33 661. वही 40
662. वही 26 663. बाबा बटे. 19 664. व.के.बेटे 12
665. नई पौ. 134 666. दुख. 70 667. बल. 42 668. दुख 138
669. बल. 20 670. वही 8 671. वही 29 672. व.के बेटे 61
673. वही 8, बल. 30, 674. व.के बेटे 12 675. रति.की चाची 65
676. व.के बेटे 12 677. हो. 215 678. वही 43 679. वही 142
680. जं.के फूल 71 681. वही 18

## 2·147 फुटकर :

ऊपर आंचलिक जीवन और वातावरण के प्रमुख अंगों से संबंधित शब्दावली पर विचार किया गया है । इस शब्दावली के अतिरिक्त कुछ स्फुट शब्दावली भी मिलती है । जिसकी संख्या तो कम है किन्तु आंचलिक वातावरण के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहता है । इसीलिए आंचलिक उपन्यासकारों ने विभिन्न अवसरों पर फुटकर आंचलिक शब्दावली का प्रयोग करके आंचलिक क्षेत्रीय रंग (लोकल कलर) को गाढ़ा किया है । नीचे इस प्रकार की कुछ शब्दावली उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है : -

### (क) गालियाँ :

बस्तर अंचल के उपन्यास "जंगल के फूल" में यह गालियाँ मिलती हैं -- / छटेवा /682 / माइलुटिया /683 / पठिया /684 / पोटमा /685 / कुन्हाल /685 / बन्टा /687 / चिपरी /688 / सिट्टी /689 / सनदरी /690

बिहार अंचलों में ये गालियां मिलती है -- / छोट्टा /691 / दगधी /692 / छुच्छी /693 सपचों डाही /694 / मुंहझौंसी /695 / मैगड़ी /696 / करमपिचासी /697 / मुगरखौका /698 / डोमड़ा /699

---

682· जं·के फूल 61 683·वही 117 684·वही 147 685·वही 146
686· वही 55 687. वही 61 688·वही 117 689·वही 117
690·वही 117 691· जुलु·18 692· ब·के बेटे 75 693·वही 75
694· वही 75 695· नई पौ·22 696· मै·आं·54 697·कल·66
698· वही 22 699· बाबा बटे· 72

शैलेश मटियानी के उपन्यास "होलदार" में कुमाऊं अंचल की यह गालियाँ मिलती है -- / घेटे /[700] / मुस्यार /[701] / कुंडेड़िया /[702] "नीच, झगड़े पर शिल्पकार वर्ग के लोगों को उच्चवर्गीय जन कुंडेड़िया कह देते हैं" / कढ़ुवा-लिना /[703] "कुढ़ने-क्रोधित होने पर इतरवर्गीय ब्राह्मण को "लिना" भी कह देते हैं।

(ख) शिक्षा संबंधी शब्दावली :

बिहार अंचल में ये शब्द मिलते है -- / टोल /[704] "बिहार जब बंगाल सरकार की मातहत था तब संस्कृत पाठ-शालाएं "टोल" कहलाती थीं, / पंजी /[705] "पंजिका या पत्री", / कचराही मोहलाही /[706] "कचहरी में बोले जानेवाली उर्दू" / पवाड़े /[707] "जी ऊबा देनेवाला आख्यान"।

(ग) दण्ड-कानून सम्बन्धी शब्दावली :

रेणु तथा नागार्जुन के उपन्यासों में दण्ड कानून संबंधी यह शब्द मिलते हैं -- / दामुल होज /[708] "आजीवन कारावास" / सुरतहाल /[709] "महजरी की दस्तावेज", / हलमाल /[710] "आन्दोलन" / जामिन /[711]

---

700. हो. 283 701. वही 104 702. वही 293 703. वही 291
704. रति. की चाची 33 705. कुं. 131 706. मै.आं. 211
707. ब. के बेटे 91 708. मै. आं. 197 709. वही 56
710. वही 52 711. बाबा बटे. 136

(घ) रोग तथा चिकित्सा सम्बन्धी शब्द :

नागार्जुन तथा रेणु के उपन्यासों में ये नाम आए हैं -- / धुकधोनी /[712] "धुकनी" / नर /[713] "स्टेथोस्कोप", / धुच्छी /[714] "स्टेथोस्कोप", / घट्ठे /[715] "गांठ", / अम्लमर्जी /[716]

कुमाऊं में यह नाम मिलते हैं -- / घुन /[717] "दांतों का कीड़ा" / मोनी /[718] "बकरियों के मुंह में होने वाला एक रोग"

(च) दिन तथा वारों के नाम :

शैलेश मटियानी के उपन्यास "होलदार" में कुमाऊं अंचल के वारों के यह नाम मिलते हैं -- / बीफे /[719] "बृहस्पति", / शुक /[720] "शुक्रवार"

2·148 अवर्गीकृत शब्दावली :

ऊपर आंचलिक शब्दों की वर्गीकृत सूची प्रस्तुत की गई है। बहुत से ऐसे शब्द भी हैं जो उपर्युक्त वर्गों में सम्मिलित नहीं हो पाते। किन्तु इन शब्दों का अस्तित्व आंचलिकता की बिम्ब-रचना में अपना योगदान देता है। इन फुटकर शब्दों को देख लेना समीचीन होगा।

---

712· जुलु·146 713· मै·आं·49 714· नई पौ·86 715·दुख·104
716· मै· आं· 37 717· हो· 54 718· वही 166
719· हो· 163 720· वही 70

| अंचल | शब्द |
|---|---|
| कुमाऊँ | / पिस्सा /[721] "पताई", / भिड़व्याप /[722] "भीड़" / धोल /[723] "नीड", / मटमट /[724] "गाढ़ी", / सैंतुवा /[725] "पालनेवाला", / पचेक /[726] "थप्पड़", / सुर /[727] "श्याम", / मटचट /[728] "अनैतिक यौन-सम्बन्ध", / डाडी /[729] "अर्थी", / स्यूड़ /[730] "सुई", / कंटर /[731] "कनिस्तर", / जाठी /[732] / "बैसाखी" / बोगला /[733] "बोझा अथवा गट्ठर" / पन्तुरी /[734] "गठड़ी", / पल्ट /[735] "पलटनिया बोला" |
| आजमगढ़ | / पंचरु /[736] "पंचायत", / बुड़वा /[737] "जल-प्रेत" |
| बिहार | / फराठी /[738] "फट्टी से तैयार की हुई छड़ी" / ठेपी /[739] "डाट या ढक्कन", / पचारिया /[740] "लकड़ी की खपच्चियाँ", / गेंडुरी /[741] "गठरी", / धनुआ / "नपुंसक", / भेर /[743] "दल" / सिधवी /[744] "राशन" / सरकाबाम /[745] |

---

721· ह·72 722· वही 110 723· वही 213 724· वही 126
725· वही 2 726· वही 319 727· वही 237 728· वही 243
729· वही 280 730· वही 309 731· वही 223 732· वही 55
733· वही 36 734· वही 123 735· वही 31 736· सती मै·601
737· वही 23 738· रा·ल· की भा·148 739· दू·ज·105 740· बाबा बटे·
741· वही 150 742· कुसु·42 743· मै·डॉ·195 744· वही 22
745· वही 88

बिहार "अग्निबाण". / हिहुक्क /[746] "प्रतियोगिता". / मुरछल /[747] "चंवर". / जहरचोवा /[748] "विषदन्त". / घोरपेड़ा /[749] "घेर-रास्ता". "हलिरी /[750] "कलवा करनेवाला दल" / बिकटै /[751] "विदूषक". / धुधुका /[752] "लाउड स्पीकर का भोंपू". / मोहड़ा /[753] "मोर्चा". / कीरांच /[754] "वस्त्र अथवा एक हथियार". / मोट /[755] "गठरी". / बकुच्ची /[756] "गांठ". / जोड़ /[757] "डोरी". / सीठी /[758] "सार रहित वस्तु" रस चूसने या निकाल लिए जाने पर बचा हुआ फोक या फुजला". / पटिया /[759] "छोटा हेंगा". / सहनी, खगोट, सोरहिया, बांतर, तीयर, कलुआ /[760] "खानदानी उपाधियां". "बेहरी /[761] "चन्दा". / बाजर /[762] दारू, कपड़ा पछाटने का काठ". / भाज /[763] "सम्भाग". / चुकीमाली /[764], "मुद्रा - विशेष, मुड़े घुटनों को पीठ के सहारे अंगोछी से तानक ढीला-ढाला सा बांध लेते हैं।

राजस्थान / गदेलो /[765] "गद्दो". / ढोला /[766] "दूल्हा"

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

746. वही 110 747. वही 199 748. वही 212
749. वही 265 750. वही 19 751. मै.वी. 69 752. वही 36
753. वही 73 754. वही 35 755. बल. 42 756. वही 40
757. वही 166 758. वही 138 759. वही 128 760. ब.के बेटे 36
761. मई पो. 127 762. वही 138 763. वही 89 764. वही 43
765. कब तक पृ. 50 766. वही 62

बस्तर / नार /767 "गांव", /टिगरसे /768 "टेकरी", / गीकी /769 "घटाई", /भूमकाल /770 "विद्रोह" / गैलो /771 "रास्तो", / दाम्नी /772 "रस्सी", / घंपूर /773 "पसीना", / सरी /774 "रास्ता" / पेढ़ /775 "खेल" / देपुड़ /776 "स्वर्ग", / रिआया /777 "प्रजा", / साखगुती/778 "साथी", / मुरदार /779 "नपुंसक", / दवार /780 "दावानल, जंगल की आग", / चुंगी /781 "हुक्के की भांति एक चीज़ जिसमें तम्बाकू भरकर पिया जाता है" / कमखियो /782 "कमखियो" / पेकी /783 "जवान लड़की", / पंचतोर /784 "पंचायत का मुखिया", / पेदा /785 "गांव का मुखिया", / गायता /786 "गांव का मुखिया"

## 2.15 भाववाचक संज्ञा :

भाववाचक संज्ञाओं के स्तर पर आंचलिकता कुछ अधिक गहरा जाती है। चाहे इस प्रकार के शब्दों की संख्या कम हो। कुछ तो मूल संज्ञा शब्द ही प्रयुक्त हुए हैं जो अपनी रचना में आंचलिक हैं। उदाहरण के लिए इन शब्दों को लिया जा सकता है --

---

767. जं. के फूल 85 768. वही 23 769. वही 31 770. वही 253
771. वही 14 772. वही 144 773. वही 69 774. वही 59
775. वही 89 776. वही 171 777. वही 229 778. वही 18
779. वही 184 780. वही 68 781. वही 83 782. वही 19
783. वही 23 784. वही 52 785. वही 55 786. वही 14

/ उछ /[787] "संध्या" / गुवैन /[788] "दुर्गन्ध"

/ चढ़ाम्भ /[789] "फूर्ति", / ठाल /[790] "अवकाश"

/ डेवर /[791] "डाह" / भकूठी /[792] "चिढ़न",

/ लूर /[793] "शऊर", / सवील /[794] "व्यवस्था",

/ परव /[795] "दोष" / कुरहाट /[796] "कलाबाजी",

/ नटोरे /[797] "नखरे" / पलंजर /[798] "पंजर"

कुछ शब्द प्रत्यय युक्त भी हैं जैसे / सिलापन /[799] इसमें - प - प्रत्यय है जो "सील शब्द के साथ लगा हुआ है। इसका अर्थ हो जाएगा -- सीलपन ।

क्रिया में प्रत्यय का योग करके भी कुछ भाववाचक संज्ञाओं की रचना की गई है जो परिनिष्ठित हिन्दी से अलग है जैसे √दब से / दब्बारी /[800] "दबने का भाव" । इसी प्रकार √बुझ से / बुझारत /[801] संज्ञा बनती है।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

787· नई पौ· 54
भारतीय काव्यशास्त्र में "उत्था" शब्द प्रचलित है। हो सकता है यह शब्द उसी स्रोत का हो, 788· हो· 27
789· वही 339 790· कब तक पु· 247 791· हो· 105
792· नई पौ·42 793· व· के बेटे 29 794· सती·303
795· कब तक पु·251 796· जं·के फूल 26 797·हो· 280
798· सती· 513 799· हो· 60 800· कब तक पु· 47
801· बल· 92

विशेषण के साथ भी आँचलिक प्रत्यय जोड़कर बनी हुई संज्ञा का प्रयोग देखा जाता है जैसे "अपना" से / अपन्नयास /802 "अपनत्व" । इसी प्रकार का शब्द सम से / समथाई /803 "सामर्थ्य", "संयोग" ।

कुछ संज्ञाओं के साथ भी प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाएँ व्युत्पन्न की गई है । जैसे -- / लाटबन्दी /804 लाट + बन्दी "होलिका", / बमनौली /805 ब्राह्मण + औली ( अवली ) "ब्राह्मण - समूह" का भाव" ।

कुछ ध्वन्यात्मक भाववाचक संज्ञाएँ भी प्रयुक्त मिलती हैं जिनसे आँचलिकता की महक विशिष्ट हो जाती है। जैसे -- / अलल टप्पू /806 "बेठिकानापन" / अड़ार /807 "बाधा" / कचकची /808 "खरास", ( बाँस /809 "तीखापन", / ठपूक /810 "थपकी", / भनभनाट /811 "भंवरों जैसी गुनगुनाहट" । / खुत्थ /812 "क्या आकर खुत्थ की तरह खड़ा हो गया ।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

802. हो. 77 803. बल नाक पृ. 324 804. मै.आँ. 254
805. दुख. 91 806. बल. 80 806. बल. 80
807. जं. के फूल 23 808. बाबा बटे. 87 809. व. के बेटे 28
810. हो. 159 811. वही 308 812. सती मै. 155

## 2·2 सर्वनाम

अन्य शब्द-स्तरों की भांति सर्वनाम शब्द भी कुछ आंचलिकता लिए हुए मिलते हैं। अनुपात की दृष्टि से इनकी गणना बहुत सीमित है। कुछ विशिष्ट प्रयोग आगे प्रस्तुत हैं।

### 2·21 उत्तम पुरुष

इस श्रेणी में "मैं" और "हम" सर्वनाम आते हैं। इन दोनों का प्रयोग अंचल में भी मिलता है। किंतु इनके कुछ विशिष्ट आंचलिक प्रयोग द्रष्टव्य हैं जैसे -- / मन /= मैंने ‍ § हो· 245 § / हमरे / = "हमारे" § हो· 245 §। कभी-कभी अन्य भाषा-भाषी पात्र कुछ विशिष्ट सर्वनाम रूप प्रयुक्त करता है जैसे बंगाली पात्र "हम" के लिए / आमी / § कु· 70 § शब्दप्रयुक्त करता है। स्वात्मवाची / अपन / § ब· के बेटे 81 § का प्रयोग एकाधिक अंचलों में प्रयुक्त मिलता है। इसका एक रूप / आपुन / § सा· स· न· 43 § भी मिलता है।

### 2·22 मध्यम पुरुष

मध्यम पुरुष सर्वनामों का "तू" कहीं-कहीं सानुनासिक रूपों में प्रयुक्त हुआ है। जैसे - / तूँ / § मै· आँ· 22 § इसका सम्बन्धवाचक रूप / तोरा / "तुम्हारा" § मै· आँ· 225 § आंचलिक रूप ही है। इसी प्रकार "तू" के स्थान पर / तैं / § मै· आँ· 82 § का प्रयोग भी आंचलिक है।

2·23 अन्य पुरुष

---

अन्य पुरुष के आंचलिक रूप इन रूप तालिका से स्पष्ट हो जाते हैं --- / ई / = "ये" "यह" { कुल, 15, सती मैं· 150 } / ऊ / = "वह" { बल· 104 } / पःी / "इसी" { मै· अं· 244 }

2·24 प्रश्नवाचक

---

कुछ प्रश्नवाचक सर्वनाम भी विशिष्ट हैं । जैसे / कोछ / "कौन" { हो· 160 } / कैने) / "किस {ने}" { कुल· 2 } / के / "कितनी, कितने" { सती मै, 684, बल· 39, नई पौ·114 } / का / "क्या" { सती मै· 102, नई पौ· 72 } / की / "क्या" { कुं· 1 } / कितीक / "कितना" { मा·न·म· 83 }

2·3 विशेषण

---

2·31 बोधगम्य आंचलिक विशेषण

---

कुछ विशेषण ऐसे है जिनकी संरचना तो परिनिष्ठित हिंदी से बहुत भिन्न नहीं है, कुछ भिन्नता अवश्य है । इसलिए वे प्राय: बोधगम्य होते हैं । नीचे इस प्रकार के विशेषणों की तुलनात्मक सूची प्रस्तुत है ।

| आंचलिक विशेषण | परिनिष्ठित पर्याय | संदर्भ |
|---|---|---|
| / हिरानी / | "हैरान" या "क्लान्त" | (अब तक पृ· 176) |
| / जबड़ू / | "जबर" (दस्त) | (मै·आँ· 65) |
| / नगीच / | "नज़दीक" | (बल· 38) |
| / दुब्बर / | "दुर्बल" | (दुख· 106) |
| / भोथी / | "भोथरी" | (बल· 9) |
| / जास्ती / | "ज्यादा" | (नई पौ· 95) |
| / मातबर / | "मुअत्तबर" | (नई पौ· 31), (मै· आँ· 59) |
| / एक्को / | "एक" | (नई पौ· 127) |
| / एगारह / | "ग्यारह" | (नई पौ·127), (रति· की चाची 120) (बल· 34) |
| / अठार / | "अठारह" | (हो· 73) |
| / एक्कस / | "इक्कीस" | (नई पौ· 14) |
| / इक्काईस / | "इक्कीस" | (हो· 246) |

कुछ विशेषण ऐसे भी है जो स्वडु परिनिष्ठित हिंदी के समान हैं किन्तु जिनका अर्थ बिल्कुल भिन्न हो गया है जैसे --

/ मीठा / § खेत § = "ऊँचा और भुलभुला खेत" §नई पौ·88 §

/ कुमर / = "जिसका बाप मर गया हो" § मै· आँ· 32 §

## 2·32 अबोधगम्य आंचलिक विशेषण

अन्य शब्दों की अपेक्षा विशेषण शब्द आंचलिक वैशिष्ट्य को अपनी अबोधगम्यता के कारण अधिक प्रमाणित करते हैं। ये विशेषण कई अर्थ-स्तरों पर प्रयुक्त मिलते हैं। उदाहरण के लिए जमीन से संबंधित ये विशेषण हैं :- / भीठ / "बंजर" § मै· आँ· 91 §, / दहनाल / "बाढ़ग्रस्त" § व· के बेटे 23 §, / खुनियाँ / "खुनियाँ जगह" § मै· आँ· 240 § / भिट्टा / "भिट्टा खेत" § बल· 15 §, / बरियार / "अच्छी उपज वाली" § नई पौ·66§, इनके अतिरिक्त कुछ मानवीय संबंधों को प्रकट करनेवाले अबोधगम्य आंचलिक विशेषण मिलते हैं जैसे बहू के पहले / ठुनी / विशेषण का प्रयोग मिलता है जिसका अर्थ है "बड़ी बहू" = / ठुनी क्वारी / § हो· 77 § इसी प्रकार छोटी भाभी के लिए / नानि / § = नन्हीं§ भौजी § हो· 127 § का प्रयोग मिलता है और छोटी बच्ची के लिए / नानि भो / §हो· 70 § शब्द प्रयुक्त हुआ है।

मनुष्य की मूर्खता को प्रकट करनेवाले कई आंचलिक शब्द प्रयुक्त हुए हैं जैसे -- / भुच्च /[813] § बल· 103, कु· 21 §

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

813· हम तो भुच्च गंवार ठहरे

/ मग्घू / "मूर्ख" ‖ नई पौ० 93 ‖, / भकोल /[814] ‖ व० के बेटे 28 ‖ / भोंधड़ / "बुद्धू" ‖ रति० की चाची 171 ‖ इसी प्रकार "बदमाश" के लिए / लिरछोल / ‖ सती मै० 52 ‖ शब्द का प्रयोग हुआ है और "निकृष्ट" के लिए / हनिया / ‖ हो० 289 / शब्द मिलता है । स्त्री-पुरुषों की विशेष स्थितियों के द्योतक विशेषण ये हैं — / छोरनुव्वा / "मातृपितृहीन" ‖ हो० 33 ‖, / बेलल्ला /[815] "लावारिस" ‖ व० के बेटे 48 ‖ / चिकाउर / "सद्य-प्रसूता" ‖ व० के० बेटे 91 ‖, / टुवर / "अनाथ" ‖ मै० आं० 32 ‖, / ढांट / "तरुण" ‖ हो० 143 ‖ / अलाल /[816] ‖ अं० के फूल 220 ‖, / उताणी / "औंधी" ‖ हो० 260 ‖, / चकोरी / "तिरछी" ‖ हो० 219 ‖०

| विशेषण | विशेष्य / अर्थ | संदर्भ |
|---|---|---|
| / बारहा / ‖ दिन ‖ | "बारह दिन" | ‖मा०ल०न०52‖ |
| / निम्मन / | "अच्छा या मजबूत" | ‖ अल० 102 ‖ |
| / सिरी / | "कनिष्ठा" | ‖ हो० 84 ‖ |

---

814० ससुराल में कैसे इस भकोल का निबाह होगा । पग-पग पर भुगतना पड़ता है ।

815० लेकिन तुम मुंह फेर लोगी तो मंगल बेलल्ला होकर लुढ़ जाएगा ।

816० तुम मरदों की जात कितनी अलाल है ।

| विशेषण | विशेष्य / अर्थ | संदर्भ |
|---|---|---|
| / खुदरा / | "बिना किसी तरतीब के" | {ब·के बेटे 40} |
| / चिकनी / | "चिकनी" | {हो· 213} |
| / सरहंग / | "छोकरा बहुत सरहंग हो गया है" | {सती मै· 60} |
| / भकुल { | "महन्थ साहेब का भंडारा भकुल होगा" | { मै· आँ· 26} |
| / छिनरा / | "आवारा" | { मै· आँ· 57 } |
| / हाकड़ / | "तगड़ा" | { नई पौ· 65 } |
| / टटका / | "तात्कालिक,ताजा" | { नई पौ· 108 } |
| / तुनुक / | "लीची की तुनुक टहनियाँ" | { दुख· 156 } |
| / दब / | "घटिया" | { नई पौ· 78 } |
| / लुकश / | "अब तो मेरे बखारों को लुकश कर देगा" | { बल· 6 } |
| / डुन / | "कँगड़ा" | { हो· 1 } |
| / कोलि / | "कोमल" | { हो· 272 } |
| / दोरस / | "दोरस बयार" | {बाबा बटे·21} |
| / पर्जर / | "मोटा के यों पर्जर हो गया है" | { सती मै· 513 } |

इनके अतिरिक्त कुछ देशज अथवा ध्वन्यात्मक विशेषण ध्यानाकर्षित करते हैं । इनमें आंचलिक मानस अधिक मुखर होता है । उदाहरण के लिए कुछ विशेषण ये हैं --

| विशेषण | अर्थ | संदर्भ |
|---|---|---|
| / खरजल-खरजल /[817] | "ऊल जुलूल" | ( जुग० 19 ) |
| / ठंठमंठ / | "व्यर्थ, खाली" | ( कल० 19 ) |
| / दनर-फनर / | "बहुतायत" | ( हो० 134 ) |
| / टप्पाटोइया /[818] | "थोड़ी बहुत" | ( व० के बेटे 76 ) |

2·4 क्रिया

2·41 अर्द्धआंचलिक क्रियाएँ

अर्द्धआंचलिक क्रियाएँ वह कही जाएँगी जो परिनिष्ठित हिंदी में पूर्णतः तो प्रचलित नहीं हैं किंतु अंचल से चलकर ये क्रियाएँ

---

817· ये भी कोई बंगाली है । घर-बंगाली है सब । देखने में न किसी का मुँह, न किसी की नाक । खरजल-खरजल सब है ।

818· इधर ऐलोपैथी की भी टप्पाटोइया चिकित्सा उन्होंने आरंभ कर दी थी ।

परिनिष्ठित हिंदी तक पहुंचने लगी है और परिनिष्ठित हिंदी के आसपास की बोलियों में प्रचलित हैं। आलोच्य उपन्यासों में इन क्रियाओं का प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :--

| धातु | अर्थ | अंचल | संदर्भ |
|---|---|---|---|
| √किचवा - | "चीखना" | राजस्थान | (कब तक पु.117) |
| √कूत -[819] | "अनुमान लगाना" | बिहार | (ब.के बेटे 61) |
| √चींथ - | "चिथड़े करना" | बिहार | (बल. 128) |
| √तड़ा (ना) - | "बात कराना" | बरसाना | (ना.ल.म. 160) |
| √जीम - | "खाना खाना" | बिहार | (बल. 65) |
| √फींच - | "पछीटना" | बिहार | (बल. 89) |
| √बर्रा (ना) - | "बड़बड़ाना" | राजस्थान | (कब तक पु.93) |
| √लील (ना) - | "निगलना" | बस्तर | (जं. के फूल 179) |
| √सिहा (ना)-[820] | "प्रसन्न होना" | राजस्थान | (कब तक पु.430) |
| √सींझ (ना) -[821] | "पकने की क्रिया" | बिहार | (बल. 28) |
| √सपर (ना) - | "निपटना या पूरा होना" | बिहार | (बल. 16) |
| √हलरा (ना)-[822] | "हिलाना-झुलाना" | बिहार व बस्तर | (बाबा बटे.35 जं. के फूल 78) |

819. कूदती मछलियों की चिकनी-रुपहली सूरत चांदनी की कीमत कूत रही।
820. दोदे सिहा लो
821. दो रुपया का घी है सो कड़ाही में सींझ रहा है।
822. सूर ने इसका प्रयोग किया है, "जसोदा हरि पालने झुलावे। हलरावे दुलराए मल्हावे, जोई सोई कछु गावे

इन क्रियाओं के द्वारा एक अन्तर आँचलिक वातावरण तैयार होता है। साथ ही इनके द्वारा परिनिष्ठित हिंदी और अंचल के संबंध का भी आभास मिलता है। इनके प्रयोग से आँचलिकता तो आ जाती है और बोधगम्यता के अभाव में सौंदर्यबोध बाधित नहीं होता।

2·42 कुछ आँचलिक क्रियाएँ :

2·421 ध्वन्यात्मक धातुएँ

आलोच्य उपन्यासों में कुछ धातुएँ ऐसी भी आई हैं जो प्रमुखतः ध्वन्यात्मक हैं। स्रोत की दृष्टि से इनको देशज भी कहा जा सकता है। परिनिष्ठित हिंदी की अपेक्षा इस प्रकार की ध्वन्यात्मक धातुएँ आँचलिक बोलियों में अधिक प्रचलित हैं। इनकी विशेषता यह है कि ध्वनि-संयोजन के द्वारा ही इनका अर्थ न्यूनाधिक रूप प्रकट हो जाता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :—

| धातु | अर्थ | अंचल | संदर्भ |
|---|---|---|---|
| √कड़कड़ा[823] | "कसमसा" | बिहार | (बल० 83) |
| √कचका (ना)- | "गाना" | बस्तर | (जं०के फूल 170) |
| √गनगना (ना)-[824] | "उत्तेजित होना" | बिहार | (बाबा बटे०15) |

823· संभवतः इसमें स > छ की प्रवृत्ति कार्य कर रही है।

824· आसपास के पाँच गाँव गनगना उठे।

| धातु | अर्थ | अंचल | संदर्भ |
| --- | --- | --- | --- |
| √गम्हड़ (ना)-[825] | "भर उठना" | बिहार | (मै॰आँ॰258) |
| √गुजगुजा (ना)- | "कुलबाना" | कुमाऊँ | (बो॰57) |
| √चियार[826] | "मुँह बनाने की क्रिया" | बिहार | (नई पौ॰54) |
| √टनमना (ना)- | "फुर्तीले होना" | बिहार | (नई पौ॰73) |
| √बमक (ना)- | उत्तेजित होना" | बिहार | (बल॰ 123) |
| √मुकुआ (ना)- | "सिसकना" | बिहार | (व॰के॰बेटे 79) |
| √सुरफुरा (ना)-[827] | "सकपकाना" | बिहार | (रति॰की चाची 95) |
| √हुहुआ (ना)- | "क्रोधव्यंजक ध्वनियाँ करना" | बिहार | (बल॰ 9) |
| √रेधा (ना) | "लय में आना" | बिहार | (नई पौ॰139) |

ऊपर के उदाहरणों में कुछ धातुओं की रचना आकारान्त है, शब्द + (आ)। इस प्रकार से यह नाम-धातु की प्रकृति की भी है। शब्द के साथ (आ) प्रत्यय का प्रयोग करके रचना की गई है। शेष धातुएँ शुद्ध प्रकृति की हैं।

---

825. सबके दिल गम्हड़ उठे और आँखें अबडबा आईं।

826. दाँत-मुँह चियारकर क्या जाएगा।

827. अब ये लोग भी सुरफुराए।

2·422 अन्य धातुएं :

इनकी संख्या अधिक है। आलोच्य उपन्यासों के आधार पर कुछ आंचलिक और प्रायः अप्रचलित धातुओं की सूची आगे दी जा रही है :—

√अगोर (ना)[828], "रखवाली करना" (बल· 16), √उरला (ना) "खोदना" (ज· के फूल 135), √उदर(ना)[829] (रति की चाची 28) √उसना[830] (सती मै· 287) √कैंच (ना)–[831] – (बल· 74) √खखोर (ना)– "खोंपना" (हो· 266), √खिरेल(ना) "मिलाना-खिलाना" (हो· 33), √खोठिया (ना) "ठीक होना" (सती मै· 276), √खोट (ना), "तोड़ना" (बल· 16), √खोन (ना)[832] (सती मै· 306), √गोंज (ना), "[illegible], "खोंपना" (नई पौ·38) √गोंत[833] (बल· 33), √चकुआ (ना)– "चुचुवाना" (नई पौ· 129), √चुकट (ना)–[834] (बल· 116), √छांकड़(ना) ("पकड़ना" या फंसा लेना" (व· के बेटे 24), √छेक (ना) "घेरना" (व· के बेटे 5) √टान (ना)[835]

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

828· निगाह के सामने रहने से अगोरने का इन्तजाम अलग से नहीं करना पड़ा

829· नकल पाठ की पताई उदरकर पंजाब चली गई है।

830· गली में घर में उसना जाते थे।

831· टुकड़ा तोड़कर तरकारी वाले कटोरे में डुबाकर चुन्नी ने मेरे मुंह में कोंच दिया।

832· लोगों ने हमारा घर खोन खाया है।

833· उस ओर तकिया में मुंह को गोंत लेते।

834· लोगों के गाल चुकट जाएंगे।

835· बीड़ी टानता हुआ आंगन से निकल जाता।

(बल० 133), √दा बलाई "दुर्दशा होना" (कब तक पु० 65)
√दोरना (ना) – "दफनाना" (जं० के फूल 22), √दकाम (ना)
"हथियाना", (बल० 86) √धिरा (ना)[836] (सती मै० 35),
√निमोर (ना) "मरोड़ना", (हो० 228), √पाथ (ना)–[837]
(नई पौ० 4) √पिछर (ना)–[838] (जं० के फूल 203),
~~बर-ऊ~~ √बरा (ना) "बरसाना अथवा गिराऊ" (कब तक पु० 366)
ई √बकोट (ना)[839] (नई पौ० 25), √बो (ना) "कहना"
(जं० के फूल 40), √बन्हा[840] (मै० आं० 252) √बिछुरा (ना)
धोखा देना" (हो० 258), √भतका (ना) "गिराना",
(हो० 102), √भाजि (ना), "हिलाना अथवा नचाना" (मै० आं० 203)
√भर (होना) "देवी-देवता का सवार होना" (मै० आं० 188),
√सरिया (ना) "बटोरना" (बल० 100), √सुतर (ना) "फलना-फूलना"
(बल० 116), √सट (ना) "अड़ना" (मै० आं० 198)
√सोटि (ना) "सटकना अथवा पीना" (दुख० 118), √हुलका (ना)
"छाया करना" (मै० आं० 92)

---

836. सिर छिपाकर छिरा रहे थे।

837. भागवत की उनकी कथा लोग कान-पाथकर व मन लगाकर सुनते

838. बरसात के कारण यहां की सारी टपरियां पिछरेगी।

839. बकोटकर आखिर उसने बाएं हाथ से ठुड्डी और गालों को दबा लिया।

840. आज सारा गांव बन्हा रहा है।

## 2·5 क्रिया विशेषण और अव्यय :

इस प्रकार के शब्द आलोच्य उपन्यासों में बहुत कम आए हैं। जो आए हैं वे शुद्ध आंचलिक हैं। उदाहरण के लिए कुछ कालवाचक क्रिया विशेषण ये हैं -- / कोवेसाल / "दो साल पहले" § जं० के फूल 23§, / बपोरे /[841] "सवेरे" § सा० ल० म० 223 §, स्थानवाचक क्रिया-विशेषण में एक शब्द है -- / हुआँ / "वहाँ" § कुनु० 126 § जो बिहार के अंचल का है। रीतिवाचक क्रिया-विशेषण / तुरोहि /[842] "जल्दी" § हो० 231 § मिलता है जिसका संबंध कुमाऊं अंचल से है। इसी प्रकार / अनेरे / "यों ही" § व० के बेटे 80 § शब्द बिहार अंचल में प्रचलित है। / उतान / "औंधा" § व० के बेटे 54 § शब्द बिहार अंचल का है। स्वीकारात्मक अव्यय ये हैं -- / अन्येहाँ / "हाँ" बिहार अंचल में § कुनु० 61 §, तथा / हगि / "हाँ" बस्तर अंचल में § जं० के फूल 15 § प्रचलित शब्द है। संयोजक अव्यय इस प्रकार हैं -- / वा / "या" § नई पौ० 91 §, / पन / "परन्तु" § सा० ल० म० 65 §, / मुदा / "लेकिन" § नई पौ० 55 §।

प्रश्नवाचक अव्यय "क्यों" के वाचक / काहे / शब्द बिहार § बल० 49, मै० आँ० 73, कुनु० 10 § बस्तर § जं० के फूल 34 § तथा अवधगढ़ अंचल § सती मै० 98 § में प्रचलित है

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

841· बपोरे आने कू बोलता था।

842· सम्भवतः इसका सम्बन्ध संस्कृत "त्वरा" से है।

कुछ ध्वन्यात्मक क्रिया विशेषण भी मिल जाते हैं। जैसे-- / टिपिर - टिपिर / "टप-टप" §दुख॰ 6§ / फरक-फरक / "तेज अथवा स्फुरण" §कल॰ 76§ तथा / लुड्ह / §कल॰ 76§ शब्दों को इन वाक्यों से समझा जा सकता है --
§1§ मल्लिकाम की पट्टियों से फरक-फरक गोसाईं जी के नीचे खेतों की मेंड़ पर से वह मुझे अपने यहाँ ले आया।" §2§ "मैं लुड्ह से उनके दोनों पैर पकड़ धरती पर पड़ गया"।

2·6 आगत शब्दावली :

2·61 उर्दू शब्द :

जिन अंचलों से सम्बन्धित उपन्यासों को प्रस्तुत प्रबन्ध में आधार बनाया गया है उन अंचलों में उर्दू कई स्तरों पर दिखलाई पड़ती है। एक स्तर तो सर्वमान्य आंचलिक भाषा का है जिसमें उर्दू की शुद्ध या विकसित शब्दावली घुली-मिली है और यह घोल मेल एक स्वाभाविक अनुपात में हुआ है। दूसरा स्तर उन लोगों की भाषा का है जिनका संबंध शिक्षित मध्यवर्ग से है और जिनकी मातृभाषा उर्दू नहीं है फिर भी उनकी भाषा में उर्दू की सजीव शब्दावली मिलती है। तीसरा वर्ग शिक्षित मुस्लिम जनता का है जो कुछ विशिष्ट उर्दू शब्दावली का प्रयोग करता है। इन तीनों स्तरों की शब्दावली को आगे देखा गया है।

2·611 पहला स्तर :

इस स्तर में अशिक्षित या अर्धशिक्षित हिन्दू-मुस्लिम जनता आती है। जिसमें भाषा-प्रयोग संबंधी कोई विशेष चेतना नहीं है। इसके उदाहरण इस प्रकार हैं --

न्याय व माल सम्बन्धी शब्द :

| अंचल | शब्द |
|---|---|
| बिहार | नोटिसका,[843] तजवीज[844], मिसिल[845], मोसली[846], दस्तावेज[847], फरमान[848] |
| राजस्थान | फेहरिस्त[849] |
| अवधगढ़ (उ० प्र०) | तजवीज[850], मिसिलखाना[851], इस्तगासा[852], रुक्का[853] |

अन्य शब्द

| अंचल | शब्द |
|---|---|
| अवधगढ़(उ०प्र०) | हरफ[854], खैरख्वाह[855], फिरकावाराना[856], तवज्जोह[857], मुदर्रिस[858], रयूयत[859], तासीर[860], मिक्दार[861], तसलीम[862], |

843· मै·आं· 23 844· वही 11 845· वही 66 846· अल· 17
847· नई पो·16 848· कुत्·8 849· अब तक पृ·136 850· सती मै·546
851· वही 265 852· वही 266 853· वही 273 854· सती मै·268
855· वही 145 856· वही 57 857· वही 48 858·वही 26
859· वही 292 860· वही 515 861· वही 439 862· वही 521

| अंचल | शब्द |
|---|---|
| आजमगढ़ [उ0प्र0] | इसरार[863], वाकिफ[864], तफहार[865], बीन ब[866], फिक्र[867], कीमियत[868], खैरात[869], जइफी[870], उम्र[871], गरत[872], मुस्तकिल[873], |
| बिहार | तहरीर[874], तासीर[875], जेहन[876], उज्बुक[877], तातील[878], दरकार[879], |
| राजस्थान | तुरा[880], तबायफे[881] |

उपर्युक्त शब्द वर्गों के अतिरिक्त कुछ उर्दू के शब्द अत्यन्त विकृत स्थिति में भी प्रयुक्त मिलते हैं जैसे —

| अंचल | शब्द |
|---|---|
| बिहार | नाज[882], समस्या[883], मुलुक[884], गुदस्त[885], गुनहता-वराकिल[886], फकड़ा[887], फिकिरस[888], रोजनारी[889] |
| राजस्थान | खिजमत[890] |

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

863· सती मै· 265 864· वही 609 865· वही 197
866· वही 225· 867· वही 369· 868· वही 369
869· वही 603 870· वही 225 871· वही 231 872· वही563
873· वही 517 874· मै·आँ·122 875· वही 199 876·वही 30
877· कब· 56 878·बाबा बटे·115 879·वही 115 880·कब तक पृ·40
881· वही 472 882· कब·147 883·वही150 884·वही 160
885· वही 59 886·वही 58 887·नई पौ·13 888·मै·आँ· 55
889· वही 243 890· कब तक पृ· 245·

"वरुण के बेटे" उपन्यास में "मशकूक" (11) शब्द का प्रयोग है।

"कब तक पुकारूँ" में यह शब्द इस प्रकार है -- "इलहाम" (201), "फितरत" (487)

इन शब्दों के अतिरिक्त कुछ ऐसे शब्द हैं जिनकी रचना फारसी व्याकरण की दृष्टि से हुई है। जैसे कुछ भाववाचक संज्ञाओं की रचना की जा सकती है। नफासत[891] (< नफीस), गिलाजत[892] (< गलीज) जलालत[893] (< जलील), नजाकत[894] (< नाजुक) शराफत[895] (< शरीफ), तारीकी[896] (< तारीक)

इसके अतिरिक्त फारसी व्याकरण की दृष्टि से बहुवचन बनाए गए शब्द भी मिलते हैं --

मकानात[897], (< मकान), मालूमात[898] (< मालूम) ताल्लुकात[899] (< ताल्लुक), कवायद[900] (< कायदा), तवारीख[901] (< तारीख), अवाम[902] (< आम) हुक्काम[903] (< हुक्म), अफकार[904] (< फिक्र)

कुछ अन्य अरबी फारसी व्याकरण की रचना भी कुछ शब्दों में मिलती है जैसे -- वाकिद[905] आरिफ[906], मशहूर[907], वाकिद[908], अदीब[909], महकूम[910], मौकूफ[911], मतालिब[912], तौफीक[913], मरहूम[914] आलिम[915], शातिर[916], शादम[917], एतराफ[918], मशकूर[919].

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

891. मु.62, गर्म पो.112 892. सती मै.60 893. वही 295
894. कब तक पु.132 895. मै.आं. 159 896. सती मै. 272
897. कब तक पु.244 898. सती मै.606 899. वही 145 900. वही 649
901. वही 14 902. मै.आं.93 903. सती मै.271 904. कब तक पु.247
905. सती मै.314. 906. वही 30 907. वही 371 908. वही 269
909. वही 27 910. वही 271 911. व. के बेटे 29 912. सती मै.652
913. वही 538 914. वही 51 915. वही 26 916. वही 161
917. वही 26 918. बूँद 28 919. मै. आं. 93

## 2·612 द्वितीय स्तर :

इस स्तर में वह शब्द आते हैं जो मध्यवर्ग के पढ़े लिखे लोग बोलते हैं। जिनकी मातृभाषा उर्दू नहीं है फिर भी वे लोग सरल उर्दू का प्रयोग कर लेते हैं, बोल समझ लेते हैं। उदाहरण के लिए जैसे -- सती मै० में -- तफ़्सील (62) हिज्जे (24), मुख़्तार (22), फ़न (15), ज़िन्दा (15), इक़रार (311), गुरेज़ (313), नक़्क़ार (272), इनायत (265), गिर्दा (453), शोहरत (515), बेग़ैरत (515), रफ़्क़ (512), आका (541), ख़ैरियत (549), ख़ानख़्वाजा (556), कस्द (274), तरनाया (103), शरई (496), दानिशमन्द (231), तजस्सुस (227), लज़ीज़ (228), अहमियत (587), ज़ेहन (368), आमद (603) मुतमइन (192) ज़र्फ़ (648), कुल०--- मुफ़स्सल (107), अल०- निमस्तीन (167)

## 2·613 तीसरा स्तर :

उर्दू शब्दों के प्रयोग की दृष्टि से यह स्तर एक विशेष स्थान रखता है। इस स्तर के भाषा-भाषी उर्दू की जटिल शब्दावली का प्रयोग करते हैं जैसे "सती मैया का चौरा" उपन्यास में यह शब्द मिलते हैं -- "वज़ू" (94), "ज़लज़ला" (541), "लुक़मा" (533), "नोश" (532), "नवाज़" (227), "मंज़र" (234), "नतब" (482), "मुख़्तार" (461), "एतक़ाद" (567), "मयस्सर" (93), "दुख़्तरी" (454), "अक़ात" (277) "अहमत" (60)

ऊपर के उदाहरणों के अतिरिक्त कुछ संयुक्त शब्दावली की रचना भी मिलती है जैसे :--

| उपन्यास | शब्द |
|---|---|
| सती मै० | ख्वाबोख्याल {27} तालिबइल्म {14} |
| | पेदाकर्द {265} फरामोशदिली {266} |
| | सफेदपोश {267} दीदादानिश्ता {450} |
| जुलूस | नवेजान {101} जेरबार {112} |
| कब तक पु० | बरायनाम {468} |

2·62 अंग्रेजी शब्द :

2·621 अंग्रेजी शब्दावली { मध्यवर्ग }

आंचलिक उपन्यासों में अंग्रेजी के शब्द भी आंचलिक वर्गभेद को प्रामाणित करते हैं किसी अंचल विशेष में रहनेवाला मध्यवर्ग सामान्य रूप से अन्तर आंचलिक स्थिति रखता है । अर्थात् सारे देश का मध्यवर्ग अपने भाषा-व्यवहार में एक सुनिश्चित प्रवृत्ति के अनुसार अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग करता है । इस शब्दावली को शुद्ध आंचलिक रूप से कई आधारों पर अलग किया जा सकता है कुछ आधार इस प्रकार है : --

1· कुछ ऐसी शब्दावली मध्यवर्ग के द्वारा प्रयुक्त होती है जिसको केवल अंग्रेजी के मोह या अपनी विशिष्ट भावना से प्रेरित कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए ये शब्द लिए जा सकते हैं :-

/ टैंथ / § नई पौ· 13 §, / गुड / § कब तक पु· 481 §
/ पेन / § कब तक पु· 486 §, / डर्टी / § जं· के फूल 20 §,
/ स्नेक / § जं· के फूल 25 §, / सेकन / § हो· 28 §,
/ फोर्स / § मै· आं· 46 § / वाइफ / § मै· आं· 274 §
/ सर्वेण्ट्स / § कब तक पु· 544 §

2· कुछ ऐसे दुरूह अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग मध्यवर्ग के लोग करते हैं जो सामान्य आंचलिक जन की पहुंच से परे होते हैं उदाहरण के लिए नीचे की तालिका के शब्द देखे जा सकते हैं : --

/ पोर्टिकल / § मै· आं· 51 §, / फोरवर्ड / § कुल· 80 §,
/ बैकवार्ड / § कुल· 80 §, / एस्टिमेट / § कुल· 31 §,
/ नेवर / § जं· के फूल, 29 § / वाइट / § सा· स·म· 87 §
/ हावी / § प· के बेटे, 70 §, / साइट / § कुल· 53 §
/ इन्सल्ट / § हो· 335 § / फास्ट / § हो· 327 §,
/ केस / § हो· 28 §, / डायलेक्टिक / § मै· आं· 81 §
/ केरिक्टर / § कुल· 95 § / अरेंजमेंट / के फूल, 23 §
/ डिक्टेटर § सती मै· 514 §, / डिप्लोमेट / § सती मै· 161 §
/ पालिटिशियन / § सती· 161 §, / प्रपोजल /
§ कब तक पु· 484 §, / ट्राफिक / § कब तक पु· 485 §
/ परोपगण्डा / § कुल 118 §, / रिकमिनेशन / § सती 608 §,
/ सप्लाई / § मै· आं· 106 §, / लेक्चर / § कुल 107 §,
/ रिलीफ / § कुल 148 § आदि ।

3. सामान्य जन प्राय: अंग्रेजी की क्रियाओं का प्रयोग नहीं करता किन्तु मध्यवर्गीय व्यक्ति अपनी मातृभाषा में भी अंग्रेजी के क्रियापदों का व्यवहार करता है नीचे कुछ क्रियाओं के उदाहरण प्रस्तुत है :--

/ रिलाइ / (मे० बी० 274), / सार्ट / (मे० आ० 276)
/ ऐरेस्ट * (मे० औ० 238), / एक्सप्लायट / (सा०न०म० 251)
* क. / (कब तक पृ० 493), / सरेन्डर / (सा०न०म० 182)
/ सिंक / (कब तक पृ० 493), / सप्लाई / (कुरु० 91),
/ बायकाट / (कुरु० 99), आदि ।

4. उच्चारण की दृष्टि से मध्यवर्गीय व्यक्ति कुछ ऐसे सामान्य शब्दों का शुद्ध उच्चारण करता है जिनको सामान्य ग्रामीण व्यक्ति समझ तो लेता है किन्तु उनका शुद्ध उच्चारण नहीं करता उदाहरण के लिए :--

/ डिउटी / (सती 160), / मिटिंग / (कुरु० 126),
/ प्रैक्टीस / (बल० 79), / पेटेण्ट / (कब तक पृ० 474),
/ ऐंजन / (बल० 37), / को आपरेटिव / (सती० 669),
आदि ।

5. अंचल में रहनेवाले मध्यवर्ग के भाषा व्यवहार में अंग्रेजी के शब्द ही नहीं, अंग्रेजी के संयुक्त शब्द या Phrase भी प्रयुक्त मिलते है । जैसे :--

/ हैन्ड शाक / (सा०न०म० 294), / टाउन परिचय /
(सती मे० 669), / सुपरफेन्डी / (सती मे० 414).

/ बाई गोड / § हो॰ 327 §, / डेमी पेपर / § हो॰ 201 §, / फैशन शोपकीपर / § हो॰ 202 §, / अनडेथाफ्ट टेस्ट / § मै॰ अं॰ 89 §, / पब्लिक वर्कर / § कुल॰ 148 §, / नेशनल आर्गेनाइजर / § कुल 80 §, / डेमफूल / § हो॰ 27 §, / पिक फोर / § हो॰ 47 §, / फ्लोरिया / § हो॰ 84 §, / फिल्डोरिया / § हो॰ 84 § / टयूबवेल फिटर / § कुं॰ 3 §, / रिपब्लिक डे बीड / § कुं॰ 107 § / फिक्स आर्डर / § मै॰ अं॰ 235 §, / वरी कम्पोर्टिंग परसन / § कुं॰ 107 §, आदि ।

ऊपर लिखे ऐसे Phrases हैं जो सामान्य आंचलिक जन के लिए बोधगम्य नहीं है कुछ Phrases ऐसे भी हैं जिनको आंचलिक जन समझ लेता है किन्तु उनका प्रयोग नहीं करता या ठीक से उनका उच्चारण नहीं कर पाता जैसे : --

/ मनिआर्डर / § कुं॰ 66 §, / डिस्ट्रिक्ट बोर्ड / § नती मै॰ 608 §, / टोमीगनो / § हो॰ 87 §, / बैंक / § हो॰ 201 § आदि ।

2·622 अंग्रेजी शब्दावली § आंचलिक जन §

शुद्ध आंचलिक जन प्राय: अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित होता है अंग्रेजी की शिक्षा तो उनको मिली ही नहीं होती फिर भी वातावरण से, बाह्य हुई आधुनिकता की छाया से, व्यवहार में आए हुए उपकरणों के आधार पर या अंग्रेजी के सम्पर्क से कुछ अंग्रेजी शब्दावली उनके भाषा व्यवहार में प्रविष्ट हो जाती है। इस शब्दावली की व्यातरकी विशेषता होती है -- अंग्रेजी शब्दों का भ्रान्त और त्रुटिपूर्ण उच्चारण। यही

दस्य अंचल में नियोजित मध्यवर्ग की अंग्रेजी शब्दावली से सामान्य जन की अंग्रेजी शब्दावली को अलग करता है । अंग्रेजी शब्दावली के आंचलिक विकास में स्वरागम आदि आंचलिक प्रवृत्तियाँ भी कार्य करती है।[920]

(क) अत्यन्त सामान्य शब्द :

ये शब्द वे हैं जो सामान्य जनजीवन में घुलमिल गए है । इनके विषय में यह चेतना भी नहीं रही कि ये शब्द अंग्रेजी के हैं । आंचलिकता केवल ध्वनि-विकास की प्रवृत्तियों से प्रमाणित होती है । ध्वनि, विकास की प्रवृत्तियाँ इन शब्दावली को आंचलिक लहजा या रंगत प्रदान करती है । इन शब्दों का विकास आंचलिक वैशिष्ट्य को भी लिए रह सकता है और सामान्य भी हो सकता है । उदाहरण के लिए कुछ शब्द इस प्रकार हैं : --

| अंचल | शब्द |
| --- | --- |
| बिहार | / पब्लिक[921] /, "पब्लिक", / प्लेटफारम[922]/ "प्लेटफार्म", / कम्पोटर[923]/ "कम्पाउंडर" / रेलवी लैन[924]/ "रेलवे लाइन" , / परफेसर /[925], "प्रोफेसर", / प्लाटफारम /[926] "प्लेटफार्म", / पबलिक /[927] "पब्लिक" / डलेवर /[928] "ड्राइवर", / पैंट /[929] |

---

920. इन प्रवृत्तियों पर ध्वनि-प्रकरण में विचार किया जा चुका है ।
921. मल. 93, 922. वही 12, 923. वही 103 924. वही 37
925. वही 91, 926. वही 104 तथा मै. आं. 182 927. मै. आं. 11
928. वही 68 929. वही 239.

| अंचल | शब्द |
| --- | --- |
| बिहार | "च्या.फ्ट", / बेसकोप /[930] "बायस्कोप", / बोल /[931] "आल", / रेडी /[932] "रेडियो" / ठेटर /[933]. "थियेटर", / अकोम /[934] "इजीक्षाम" / रेट /[935] "राष्ट", / मिटिन /[936] "मीटिंग", / इस्कूल /[937] "स्कूल", / टिकस /[938] "टिकट", / इस्टार्ट /[939] "स्टार्ट", / पॉलिसिर /[940]. "पॉलिसिर", / टेम /[941] "टाइम", / सिघनेल /[942] "सिगनल", / टेन /[943] "ट्रेन" |
| कुमाऊँ | / पराईवेट /[944] "प्राइवेट", / ओल्ड रेट /[945] "अलराइट", / परैकटिस /[946] "प्रैक्टिस", / कुल /[947] "स्कूल", / टैम /[948] "टाइम", / इस्कूल /[949] "स्कूल", / रपोट /[950] "रिपोर्ट" |
| बजपगढ | / रपोट /[951] "रिपोर्ट", / ब.नस /[952] "बोनस", / मिटिन /[953] "मीटिंग" |
| बस्तर | / पब्लिक /[954] "पब्लिक", / टिक्कस /[955] "टिकट" |

930. मै.डॉ. 64 931. वही 188 932. वही 37 933. वही 69.
934. वही 127 935. वही 134 936. वही 69 937. वही 20
938. वही 78 939. वही 260 940. व.के बेटे 16 941. नई पा.72
942. कुलु.145 943. रीति की च थी 62, 944. हो.94 945. वही 28
946. वही 3 947. वही 61 948. वही 214 949. वही 328
950. वही 26 951. सती मै.53 952. वही 178 953. 668,
954. ज. के फूल 87 955. वही 101

## (ख) अपेक्षाकृत विशिष्ट शब्दावली :

इस शब्दावली का प्रवेश सामान्य स्थितियों में न होकर आंचलिक जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों में हुआ है । आंचलिक जन का वह तबका इस शब्दावली का प्रयोग करता है जो या तो मध्यवर्ग के विशेष सम्पर्क में रहता है अथवा जो आवश्यकतावश नगर तथा वहां की संस्थाओं के सम्पर्क में भी आता है । इस शब्दावली की सूची इस बात का प्रमाण है :-

| अंचल | आंचलिक रूप |
|---|---|
| बिहार | /रिजरव/[956] "रिजर्व" / मेले /[957] "एम.एल.ए." / हायकोट /[958] "हाइकोर्ट", / सिटलमेंट /[959] "सेटलमेंट", / इनकुआएरी /[960], "इन्क्वायरी", / बेलफेल /[961] "बी.एल.फेल", / डिस्टीबोट /[962] "डिस्ट्रिक्ट बोर्ड" / लेबर /[963] "लेबर", / फिनिस /[964] "फिनिश", / इसपारिमिन /[965] "एक्सपेरिमेंट", / लौडपीसर /[966] "लाउडस्पीकर", / एजकुटी /[967] "एक्जीक्यूटिव", / औचर /[968] "वाउचर" / कनकसन /[969] "कनक्शन", / इसटिन्ट /[970] "एसिस्टेन्ट" / मलेटरी /[971] "मिलिट्री" |

---

956. मै.आं. 77 957. वही 260 958. वही 278 959. वही 75
960. वही 170 961. वही 220 962. वही 11 963. वही 213
964. वही 208 965. वही 170 ~~966. वही 170~~ 966. वही 150
967. वही 148 968. वही 237 969. वही 198 970. वही 195
971. बल. 164

| अंचल | आंचलिक रूप |
| --- | --- |
| बिहार | / डिस्ट्रिक बोड /[972] "डिस्ट्रिक्ट बोर्ड" / नाइनबोट /[973] "नाइन बोर्ड", / डुटी /[974] "ड्यूटी" / अजेन्ट /[975] "एजेंट" / इन्ट्रिमेसन /[976] "इन्टीमेशन", / हैंडनोट /[977] "हैंडनोट" । |
| कुमाऊँ | / फेनल /[978] "फाइनल", / कमेटी /[979] "कमेटी", / टरेनिंग /[980] "ट्रेनिंग", / डिभीजन /[981] "डिवीज़न" / अबाउटन /[982] "अबाउट टर्न" / फुकनाश /[983] "फिक्स मार्च", / नरभिस /[984] "नर्विस", / आइसैट /[985] "आइस कट", / इनफरमेशन /[986] "इनफारमेशन", / डिप्थेरी /[987] "डिप्थेरी", / बिरेनगनो /[988] "ब्रेनगन", / [illegible] /[989] / डिसमिस /[990] "डिसमिस" |
| बस्तर | / सिलट /[991] "सैल्यूट", / बेकट /[992] "बास्कट" |
| अजयगढ़ | / टूनामेन्ट /[993] "टूर्नामेंट" |

---

972. कल. 125 973. वही 157 974. वही 101 975. वही 101
976. वही 72 977. नई पौ. 16 978. घो. 285
979. वही 214 980. वही 4 981. वही 274 982. वही 3
983. वही 3 984. वही 62. 985. वही 43 986. वही 62 987. वही 218
988. वही 87 989. वही 31 990. वही 2 991. जं.के फूल 23
992. वही 100 993. नदी मे. 167

﴾ग﴿ शासन व्यवस्था से सम्बन्धित शब्दावली :

यह शब्दावली अंचल के उस सामान्य जन से संबंधित है जो स्थान, मान या शासनतंत्र से कुछ जुड़ा रहता है। इसमें पदाधिकारियों या उनके कार्यालयों से संबंधित शब्दावली आती है। यह शब्दावली भी आंचलिक पद्धति से विकृत होती है इसलिए आंचलिक भाषा से संबंधित कही जा सकती है। नीचे इस प्रकार की शब्दावली की तालिका प्रस्तुत है :--

| अंचल | आंचलिक रूप | मूल शब्द | उपन्यास का नाम |
|---|---|---|---|
| बिहार | / सिक्रेटरियट / | "सेक्रेटरियट" | बल॰ 53 |
| | / बालिस्टर / | "बारिस्टर" | बल॰ 91 |
| | / कलट्टर / | "कलक्टर" | बल॰ 91 |
| | / चेरमैन / | "चेयरमैन" | बल॰ 125 |
| | / मीनिस्टर / | "मिनिस्टर" | बल॰ 160 |
| | / मिनिस्टर / | "मिनिस्टर" | मै॰आं॰ 78 |
| | / सिपीकर / | "स्पीकर" | मै॰आं॰ 79 |
| | / सिकरेटरी / | "सेक्रेटरी" | मै॰आं॰ 78 |
| | / आफिसयर / | "आफीसर" | मै॰ आं॰ 11 |
| | / निसपिट्टर / | "इन्सपेक्टर" | मै॰आं॰ 264 |

| अंचल | आंचलिक रूप | मूल शब्द | उपन्यास का नाम |
|---|---|---|---|
| बिहार | / मैलवरमैन / | "वाइस चेयरमैन" | मै॰ आं॰ 23 |
| | / कानिस्टबिल / | "कान्सटेबल" | नई पौ॰ 11 |
| | / एकाउंठ / | "एकाउंटेंट" | नई पौ॰ 66 |
| | / पैटमैन / | "प्वाइंटमैन" | व॰ के॰ बेटे 91<br>रतिनाथ की चाची 63 |
| | / परीजुण्ट / | "प्रेसीडेंट" | कुम 15 |
| | / भोलण्टियर / | "वालण्टियर" | दुख 41 |
| बघेलखंड | / भलण्टियर / | "वालण्टियर" | सती मै॰ 649 |
| | / इसपेक्टर / | "इन्सपेक्टर" | सती मै॰ 293 |
| | / इन्सपेक्टर / | "इन्सपेक्टर" | सती मै॰ 694 |
| कुमाऊँ | / लिफटीनेंट / | "लेफ्टिनेंट" | हो॰ 3 |
| | / हिडमास्टर / | "हेड मास्टर" | हो॰ 328 |
| बस्तर | / अडमिन / | "एडमिनिस्ट्रेटर" | जं॰ के फूल 100 |
| | / गवमेंट / | "गवर्नमेंट" | जं॰ के फूल 100 |
| राजस्थान | / गवरमण्ट / | "गवर्नमेंट" | कब तक पु॰ 78 |

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि आंचलिक उपन्यासों के निजी वातावरण को प्रमाणित करने में शब्द-स्तरीय प्रयोगों का विशेष योगदान है। शब्दों में भी सबसे प्रमुख स्थान संज्ञाओं का है। शब्द-स्तर पर कुछ प्रवृत्तियाँ अन्तर आंचलिक भी मिल जाती हैं। बोध की दृष्टि से भी शब्दों के कई उपस्तर हो सकते हैं। अबोधगम्यता का आरोप तो इन उपन्यासों के शब्द स्तर पर लगाया जा सकता है किन्तु प्रयोग या अर्थ-निर्देश के द्वारा इसका बहुत कुछ निराकरण भी हो जाता है। आंचलिक यथार्थ के परिवेश और आंचलिक जीवन की अभिव्यक्ति की दृष्टि से आंचलिक शब्दों का प्रयोग सौन्दर्यमूलक ही कहा जाएगा।

कषाय - [illegible]

[illegible]

## 1· संज्ञा की रूप रचना :

रूप-रचना से तात्पर्य है मूल पद या अर्थ-तत्त्व के साथ संबंध-तत्त्व का संयोग। आंचलिक दृष्टि से अर्थ-तत्त्व भी विशिष्ट हो सकता है और प्रत्यय भी। अर्थ-तत्त्व के वैशिष्ट्य पर तृतीय अध्याय में विचार किया जा चुका है। प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत संज्ञा के साथ प्रयुक्त होने वाले आंचलिक प्रत्ययों पर विचार किया गया है। रचना के स्तर पर जो आंचलिकता प्रकट होती है वह आंचलिकता को विशेष सिद्ध करती है।

### 1·1 विस्तारक प्रत्यय :

कुछ अंचलों में व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञाओं के साथ कुछ विस्तारक प्रत्ययों का संयोग मिलता है। इन प्रत्यय द्वारा अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं आता। किन्तु यह संयोग परिनिष्ठित हिंदी में नहीं मिलता। उदाहरण के लिए पूर्वी अंचलों में संज्ञा के साथ विस्तारक प्रत्यय ( -वा ) का प्रयोग पुंलिंग संज्ञाओं के साथ मिलता है जैसे -- रामनंदन + ( -वा ) = / रामनदनवा / ( मै· आं· 83 ), घार + ( -वा ) = / घरवा / ( बल· 127 ) इस प्रत्यय के संयुक्त होने के कारण मूल शब्द का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है घार > घर + ( -वा ) = घरवा। इस प्रत्यय का एक और रूप ( -आ ) भी है। जैसे प्रभु + ( -आ ) = / परभुआ / ( सती मै· 25 ) "प्रभु" तथा

पाद + ( - वा ) = / पटवा / ( मे० औ० 72 ) "कूट" या पटलन । इन प्रत्यय द्वारा मूल अर्थ में कोई अन्तर नहीं आता । इस प्रत्यय का प्रयोग पूर्वी अंचलों में भी होता है । ऊपर इस प्रत्यय का प्रयोग अवधगढ़ तथा बिहार अंचल पर आधारित उपन्यासों का है । इनके अतिरिक्त ( - ऊ ) ( - हा ) ( - ) ( - आल ) प्रत्ययों के उदाहरण भी मिलते हैं । जैसे -- पंच + ( - ऊ ) = / पंचऊ / ( मती मे० 60 ) "पंच", मूड + ( - हा ) = / मुड़हा / ( बल० 158 ) "मूड अथवा मूर्ख", गाठ + ( - ओल ) = / गठोल / ( हो० 23 ) "गाठ अथवा गट्ठर", कुछ शब्दों में ( - इया ) अथवा ( - या ) प्रत्ययों का संयोग भी दिखलाई पड़ता है जैसे -- औरत + ( - इया ) = / औरतिया / ( बल० 13 ) "औरत", चकली + ( - या ) = / चकलिया / ( नई पौ० 36 ) "एक आभूषण", भीम + ( - या ) = / भुईया / ( ब वा बटे० 52 ) "भीम" । ये तीनों शब्द स्त्रीलिंग के ही है ।

## 1·2 लाघवार्थक प्रत्यय :

इस प्रत्यय का संयोग कुछ पुंलिंग शब्दों के साथ मिलता है ( - इया ) अथवा ( - या ) प्रत्ययों के उदाहरण इस प्रकार हैं --- अंगरेज + ( - इया ) = / अंगरेजिया / ( मे० औ० 29 ) "अंग्रेजी" कोचा + ( - इया ) = / कोंचिया / ( नई पौ० 79 ) "हलवाई का एक औजार" कुबेड़ी + ( - या ) = / कुबेड़िया / ( हो० 293 ) "एक गाली" । इन शब्दों में यह प्रत्यय लघुतावाचक या तिरस्कारवाचक है । बिहार अंचल में ( - अइया ) तथा

(– री) प्रत्ययों के उदाहरण भी मिलते हैं जैसे --
मठ > मढ़ > मड़ + (– अइया) = / मड़ैया / (मल॰ 111) "छोटा कमरा या घर", पूँछ + (– री) = / पूँछरी / (मै॰ आँ॰ 265) "छोटी पूँछ"।

1·3 वचन प्रत्यय : बहुवचन :

आजमगढ़ अंचल के उपन्यास "सती मैया का चौरा" (58) में यह रूप मिलता है -- लोग + (– न) = / लोगन / "लोग", यह तिर्यक बहुवचन है। परिनिष्ठित हिन्दी में (– ओं) प्रत्यय मिलता है और इसका बहुवचन रूप "लोगों" बनता है। (–अन) वाला रूप आंचलिक है जो ब्रजभाषा बोलियों में दिखाई पड़ता है।

1·4 लिंग प्रत्यय : स्त्रीलिंग :

1·41 संज्ञा + (– यणी) = स्त्रीलिंग रूप :

इस रचना का प्रयोग कुमाऊँ अंचल के उपन्यास "होलदार" में इस प्रकार हुआ है -- जोगी + (– याणी) = / जोग्याणी / (हो॰ 147), विष्ट > बिस्ट + (– याणी) = / बिस्टयाणी / (हो॰ 307) इस प्रक्रिया में पुल्लिंग संज्ञा रूप स्त्रीलिंग हो जाते हैं। परिनिष्ठित हिन्दी में (– आनी) प्रत्यय प्रचलित है परन्तु जोगी का स्त्रीलिंग रूप "जोगन" ही बनता है।

1·5 स्थानवाचक रचना :

1·51 संज्ञा + (-औली) = स्थानवाचक :

इस प्रत्यय से आंचलिक न नस स्थान या क्षेत्र का बोध कराता है जैसे ब्राह्मण > बाम्हन + (-औली) = / बम्हौली / (पृष्ठ 91) "ब्राह्मणों की बस्ती", यह बिहार के अंचल की भाषिक विशेषता की एक इकाई है। परिनिष्ठित हिंदी में इस प्रकार का प्रयोग नहीं मिलता यह है अन्य आंचलिक बोलियों में इस प्रकार की रचना मिल जाए। ऐसी रचना में कुम्हारों की बस्ती "कुम्हरौली" चमारों की बस्ती "चमरौली" आदि रूप बनते हैं।

1·52 संज्ञा + (-औड़) = स्थानवाचक :

कुमाऊँ अंचल में यह रचना मिलती है जैसे --
डोम + (-औड़) = / डुमौड़ / (दो· 52)
"डोमों की बस्ती"

1·53 संज्ञा + (-आड़ी) = तत्सम्बन्धी भूमि :

उदाहरण के लिए बिहार अंचल के उपन्यास "नई पौध" (11) का यह शब्द लिया जा सकता है -- घर + (-आड़ी) = / घराड़ी / "गृहभूमि"

1·6 संख्यावाचक या परिमाण सूचक प्रत्यय :

1·61 संज्ञा + ( – औली ) = संख्यावाचक :

शैलेश मटियानी ने अपने उपन्यास "होलदार" में इस रचना का प्रयोग किया है जैसे -- भेंट + ( – औली ( < अवली ) = / भिटौली / ( हो· 146 ) "भेंट" इस प्रकार के प्रयोग अन्यत्र भी मिल जाते हैं। सम्प्रति इससे कुमाऊँ अंचल का वैशिष्ट्य द्योतित हो रहा है।

1·7 संज्ञा > संज्ञा ( सामान्य ) :

1·71 संज्ञा + ( – उली ) = संज्ञा

कुमाऊँ अंचल का एक उदाहरण मिलता है जैसे -- ब्याह + ( – उली ) > / ब्यौली / ( हो· 136 ) "विवाह वाली"

1·72 संज्ञा + ( – औट ) = संज्ञा :

बिहार अंचल की यह रचना इस प्रकार है -- शिला > सिल + ( – औट ) = / सिलौट / ( बल· 97 ) "सिल"

## 1.8 भाववाचक संज्ञा :

### 1.81 संज्ञा > भाववाचक संज्ञा :

#### 1.811 संज्ञा + (-आट) = भाववाचक संज्ञा :

परिनिष्ठित हिंदी में (-आहट) प्रत्यय जोड़कर कुछ भाववाचक संज्ञाओं की रचना की जाती है जैसे - गड़गड़ाहट, गुनगुनाहट, कड़कड़ाहट आदि। अंचल में इस प्रत्यय का विकास वैशिष्ट्य सूचक है - (-आहट > -आट), कुमाऊँ अंचल से संबंधित उपन्यास "होलदार" में शैलेश मटियानी ने विकसित प्रत्यय युक्त रचना का प्रयोग किया है जैसे -- झणझण + (-आट) = /झणझणाट/ (हो. 308) "झणझण ध्वनि होने का भाव" टिटि + (-आट) = /टिटियाट/ (हो. 29) "टिट ध्वनि होने का भाव"

कभी-कभी इस रचना का अनुनादार्थक शब्द-युग्म भी प्रयुक्त किया जाता है जिसके द्वारा लेखक एक विशिष्ट ध्वन्यात्मक वातावरण प्रस्तुत करता है जैसे --
घौड़ + (-आट) = /घौड़ाट/ (हो. 87) भौड़ + (-आट) = /भौड़ाट/ (हो. 27) "शोर की ध्वनि होने का भाव"

1.812 संज्ञा + ( - ई ) = भाववाचक संज्ञा :

यह रचना बिहार अंचल के उपन्यासों में मिलती है जैसे -- अंगना + ( - ई ) = / अंगनई / ( बाबा बटे. 28 तथा व. के बेटे 104 ) भादों + ( - ई ) = / भदई / ( बाबा बटे. 76 ) इन दोनों उदाहरणों में मूल शब्द का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो गया है ।

1.813 संज्ञा + ( - औना ~ औनी ) = भाववाचक संज्ञा :

इस रचना में आकारान्त प्रत्यय पुंलिंग और ईकारान्त स्त्रीलिंग है । बिहार अंचल के उपन्यासों में भाववाचक संज्ञा की यह रचना मिलती है -- बात + ( - औना ) = / बतौना / पु० ( मै. अं. 146 ) "बात का भाव", चुवक + ( - औनी ) = / चुवकौनी / स्त्री० ( मै. अं. 146 ) "चुवकी का भाव"

1.814 संज्ञा + ( - आई ) = भाववाचक संज्ञा :

बिहार के अंचल में इस रचना का प्रयोग हुआ है जैसे -- मित्र + ( - आई ) = / मिताई / ( व. के बेटे 75 ) "मित्र का भाव" परिनिष्ठित हिंदी में ( - ता ) प्रत्यय लगाकर "मित्रता" भाववाचक संज्ञा रूप देखने को मिलता है ।

1.815 संज्ञा + ( - ऐती ) = भाववाचक संज्ञा :

बिहार अंचल का एक उदाहरण द्रष्टव्य है -- कुटुम्ब + ( - ऐती ) = / कुटुम्बैती / ( नई पौ. 91 ) "कुटुम्ब का भाव" परिनिष्ठित हिंदी में "कुटुम्बिता" रूप देखने को मिलता है ।

1·816 संज्ञा + ( -आप ) = भाववाचक संज्ञा :

कुमाऊँ अंचल के उपन्यास "होलदार" में यह रचना मिलती है जैसे सील + ( -आप ) = / सिलाप / ( हो· 60 ) "सील का भाव" / परिनिष्ठित हिंदी में इस शब्द के साथ ( -न ) प्रत्यय जोड़कर "सीलन" भाववाचक संज्ञा रूप बनता है।

1·9 व्युत्पन्न संज्ञा :

1·91 विशेषण > भाववाचक संज्ञा :

1·911 विशेषण + ( -औंस ) = भाववाचक संज्ञा :

इस रचना का विशेषण प्रायः रंगवाची होता है। उस रंग के होने का भाव इस रचना से व्यक्त होता है जैसे — पियर ( पीला ) + ( -औंस ) = / पिरौंस / ( बाबा बटे· 127 ) "पीले होने का भाव"

1·912 विशेषण + ( -आस ) = भाववाचक संज्ञा :

कुमाऊँ अंचल में यह रचना इस प्रकार मिलती है जैसे -- अपना + ( -आस ) = / अपन्यास / ( हो· 77 ) "अपने का भाव" परिनिष्ठित हिंदी में "अपनत्व" अथवा "आत्मीय" भाववाचक संज्ञा रूप बनते हैं।

**1.913 विशेषण + ( -औती ) = भाववाचक संज्ञा :**

यह रचना नागार्जुन के उपन्यास "बलचनमा" में इस प्रकार मिलती है -- बूढ़ ( < बूढ़ा ) + ( -औती ) = / बुढ़ौती / ( बल. 123 ) परिनिष्ठित हिंदी में ( -पा ) प्रत्यय लगाकर "बुढ़ापा" भाववाचक संज्ञा रूप मिलता है ।

**1.914 विशेषण + ( -अस ) = भाववाचक संज्ञा :**

बिहार अंचल के ही एक अन्य उपन्यास दुखमोचन में इसका यह रूप भी मिलता है जैसे -- बूढ़ ( < बूढ़ा ) + ( -अस ) / बुढ़अस / ( दुख. 149 )

**1.92 क्रिया > भाववाचक संज्ञा :**

**1.921 क्रिया + ( -औनी ) = भाववाचक संज्ञा :**

इसके उदाहरण बिहार के अंचलों में प्राप्त होते हैं जैसे -- √पिट + ( -औनी ) = / पिटौनी / (बल. 100) "पिटाई" √पढ़ + ( -औनी ) = / पढ़ौनी / (नई पौ. 115) "पढ़ाई" यह रूप बिहार अंचल के वैशिष्ट्य का सूचक है । परिनिष्ठित हिंदी में इसके स्थान पर "पिटाई" तथा "पढ़ाई" भाववाचक संज्ञा रूप बनते हैं ।

1·922 क्रिया + § - वन § = भाववाचक संज्ञा :

---

इस रचना के कुछ उदाहरण ये हैं --
√लग + § - वन § = / लिगावन / § बल॰ 141 §
√जल + § - वन § = / जलावन / § सत॰ 13 §
उपर्युक्त दोनों उदाहरण बिहार अंचल के हैं।

1·923 क्रिया + § - री § = भाववाचक संज्ञा :

---

इसका एक उदाहरण यह मिलता है -- √दब् + § - री § = / दबरी / § बल॰ 27 § "दबाने का भाव"

1·924 क्रिया + § - आरत § = भाववाचक संज्ञा :

---

इस रचना का एक उदाहरण यह है - √कूज -> कुजा + § - आरत § = / कुजारत / § बल॰ 97 § "सन्नाटा?" । इसमें क्रिया धातु का दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वर में बदल जाता है।

1·925 क्रिया § - आ ~ आई § = भाववाचक संज्ञा :

---

जलपाइगुड़ि अंचल में इस रचना का प्रयोग हुआ है जैसे --
√कूक > कुक + § - वा § = / कुकुवा / नर्ती ने॰ 23 "कुकनेवाला = अनप्रेत" । बिहार अंचल में § - आई § प्रत्यय का एक उदाहरण मिलता है जैसे -- √जा + § - आई § = / जवाई / "बल॰ 140"

1·926 क्रिया + (-आरी) = भाववाचक संज्ञा :

नागार्जुन के उपन्यास "बलचनमा" में यह रचना मिलती है जैसे -- √पूछ + (-आरी) = / पुछारी / (बल॰ 50) "पूछने का भाव" इस रचना का प्रयोग उन्होंने इसी वर्ग के शब्द "खोज" के साथ किया है।

1·(10) क्रिया > कर्तृत्ववाचक :

क्रिया से व्युत्पन्न संज्ञा :

कुछ अंचल में यह रचना मिलती है जैसे -- जाग > जगार (उप) + (-इया) = / जगरिया / (बो॰ 51) "जागनेवाला"

उपर्युक्त विश्लेषण से यह सिद्ध हो जाता है कि संज्ञा की रूप-रचना में कुछ आंचलिक विशेषताएँ अवश्य मिल जाती हैं। यह विशेषताएँ लिंग, वचन और संज्ञा की व्युत्पत्ति वाली रचनाओं में दृष्टिगोचर होती हैं। विशेष रूप से इस स्तर पर पूर्वी अंचल की विशेषताएँ हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। इस स्तर पर जो थोड़ी-बहुत आंचलिकता मिलती है वह उपन्यास के वातावरण के निर्माण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि संज्ञा की रूप रचना में अन्तर बहुत कम ही मिलता है।

2· विशेषण की रूप - रचना :

संज्ञा की अपेक्षा विशेषण की रचना में आंचलिक स्पर्श कुछ अधिक मिलता है । इसका प्रमाण यह है कि विशेषण की आंचलिक रूप-रचना के उदाहरण संज्ञा की अपेक्षा अधिक मिलते हैं । साथ ही जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है वे परिनिष्ठित हिंदी से कभी-कभी पूर्णतः भिन्न होते हैं । विशेषण की रूप-रचना पर आगे इसी दृष्टि से विचार किया गया है ।

2·1 विस्तारक प्रत्यय :

विशेषणों के साथ विस्तारक प्रत्ययों का संयोग अल्पतम दिखाई देता है । विचार अंचल में विस्तारक प्रत्यय ( - इया ) का एक उदाहरण इस प्रकार है -- मोटा + ( - इया ) = / मोटिया / "रात की बाती 93 ( " मोटे " । इस प्रत्यय का एक अन्य रूप ( - वा ) भी है । जैसे -- तोतला + ( - वा ) = / तोतरवा / ( मे· आं· 21 ( "तोतला", ढपलेल + ( - वा ) = / ढपलेलवा / ( नई पा· 54 ( "महाबुद्धू" ।

2·2 व्युत्पन्न विशेषण :

व्युत्पन्न विशेषण विशेषण या उससे अतिरिक्त व्याकरणिक धाराओं से विकसित होते हैं । व्युत्पत्ति की प्रक्रिया में प्रत्ययों का संयोग रहता है । यह प्रत्यय किसी भी व्याकरणिक धारा के साथ सम्बद्ध होकर विशेषणों की सृष्टि कर सकते हैं ।

2·21 विशे० > विशे०

इन रचना में मूल विशेषण के साथ प्रत्यय का संयोग करके व्युत्पन्न विशेषणों की रचना की जाती है ।

2·211 विशे० + § - ई § = विशे०

कुमाऊँ अंचल की यह रचनाएं इस प्रकार हैं --
अठहत्तर + § - ई § = / अठेतरी / § छो· 110 § चौहत्तर + ई § / चौहत्तरी / § छो· 110 § बिहार अंचल में भी कुछ रचनाएं मिलती हैं जैसे --
/ बड़की / § कल· 104 § "बड़ी", / मोकनी /
§ मे· डी· 200 § "जवान" ।

2·212 विशे० + § - इया § = विशे ०

कुमाऊँ तथा बिहार अंचल में यह रचना मिलती है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -- / फसकिया / § छो· 168 § "बातप्रिय" / फूचोरिया / § छो· 168 § "सिर-फूटा", / चौथइया / § कल· 6 § "चौथा", / अढ़ैया / § मे· डी· 13 § "ढाई"

2·213 विशे० + § - हा ∽ आह § = विशे०

यह रचना बिहार अंचल में मिलती है जैसे - मूड़ + § - हा § = / मुड़हा / § नई पो· 115 § "मुंडे", नौ + § - आह § = / नवाह / § नई पो· 85 § "नौ दिन तक चलनेवाला"

2·214 विशे० + (- ऐल) = विशे०

नागार्जुन के उपन्यास "बलचनमा" में यह रचना मिलती है जैसे — बिड़ (बड़ा) + (- ऐल) = / बिड़ैल / बल० 107 "बड़ा"

2·215 विशे० + सं० + (- इ ~ इया) = विशे०

कुमाऊँ तथा बिहार के अंचलों में यह रचना मिलती है जैसे —

| विशे० | | सं० | | प्रत्यय | | व्यु० विशे० |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पाँच | + | हाथ | + | (- इ) | = | / पँचहत्थी / (बल० 75) "पाँच हाथ की" |
| तीन | + | खण्ड | + | (-इया) | = | / तिखण्डिया / (हो० 53) "तीन मंजिलवाला घर" |
| दो | + | कली | + | (-इया) | = | / दोकलिय / (हो० 254) "दो कलीवाली टोपी" |
| दो | + | पल्ला | + | (-इया) | = | / दुपल्लिया / (व० के बेटे 46) "दो पल्लेवाला मकान" |
| पाँच | + | टका | + | (-इया) | = | / पँचटकिया / (मै० आँ० 76) "पाँच रुपए का नोट" |
| दो | + | टाँग | + | (-इया) | = | / दोटँगिया / (हो० 22) "दो टाँग का" |

इस संयुक्त रचना में प्रथम विशेषण संख्यावाची होता है ।

2·22 संज्ञा > विशेषण :

यह रचना कुछ विशेष लोकप्रिय दिखाई पड़ती है । संज्ञा के साथ इन प्रत्ययों का योग होता है -- आणी, -- आर, -- इयार, -- ई, -- उर, -- उली, -- ऊआ, -- ऐन, -- औधा, -- ला ~ली, -- हा ~ ही, -- कोटर, -- औआ ।

2·221 सं0 + ( -- आणी ) = वि0

कुम ऊ अंचल में यह रचना मिलती है जैसे -- मिर्च + ( -- आणी ) = / मर्चाणी / ( बो· 76 ) "मिर्चवाली दाल"

2·222 सं0 + ( - आर ) = वि0

दांत + ( - आर ) = / दंतार / ( बन· 107 ) "बड़े दांतोंवाला" बुद्धि + ( - आर ) = / बुधियार / ( नई पो· 80 ) "बुद्धिवाला = होशियार" उपर्युक्त दोनों रचनाएं बिहार अंचल के वैशिष्ट्य की सूचक हैं ।

2·223 सं0 + ( - इया ) = वि0

बिहार के अंचल में यह रचना काफी लोकप्रिय दिखाई देती है । बिहार अंचल के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं, जैसे :--

जमुना + ( - इया ) = / जमुनिया / ( व॰ के बेटे 80) "जमुना की तरह", मुड़कन + ( - इया ) = / मुड़कनिया / ( मै॰ आँ॰ 237 ) "बिना सिर वाला प्रेत", जीत ( अष्टमी ) + ( - इया ) = / जितिया / ( मै॰ आँ॰ 88 ) "जीत अष्टमी पर्व", मुट्ठी + ( - इया ) = / मुठिया / ( दुख॰ 73 ) "मुट्ठी जैसे", पूर्व + ( - इया ) = / पुरबिया / ( मै॰ आँ॰ 166 ) "पूरबवाला", सौत + ( - इया ) = / सौतिया / ( नई पौ॰ 102 ) "सौतेली", मोरंग + ( - इया ) = / मोरंगिया / ( मै॰ आँ॰ 53 ) "नेपाली" भार + ( - इया ) = / भरिया / ( बाबा बटे॰ 66 ) "भार उठानेवाला" पाट > पाट् + ( - इया ) = / पटिया / ( बल॰ 108 ) "पाटवाली" कदलगाँव + ( - इया ) = / कदलगइंया / ( बल॰ 77 ) "कदलगाँव वाला" एक उदाहरण अन्यगढ़ अंचल का यह मिलता है --

भरटोली + ( - इया ) = / भरटोरिया / ( सती मै॰ 147 ) "भर टोला से संबंधित"

इसके अतिरिक्त कुछ उदाहरण संज्ञा + वाला के साथ उपर्युक्त प्रत्यय के संयोग से बनते हैं जैसे -- उत्तर + वाला + ( - इया ) = / उतरबरिया / ( बल॰ 21 ) "उत्तरदिशावाला" दक्षिण + वाला + ( - इया ) = / दक्षिणबरिया / ( बल॰ 66 ) "दक्षिण दिशावाला"

2·224 सं० + ( - ई ) = वि०

कुमाऊँ अंचल में यह रचना देखने को मिलती है जैसे --
नोन + ( - ई ) = / नोनी / ( बाबा बटे· 99 )
"नोनी मिट्टी" गोखुर + ( - ई ) = / गोखुरी / (हो· 249)
"गोखुर कांटे के समान चोटी" अक्खान + ( - ई ) =
/ अक्खानी / ( बाबा बटे· 64 ) "महान"

2·225 सं० + ( - उर ) = वि०

बिहार अंचल में यह रचना मिलती है जैसे -- दांत +
( - उर ) = / दंतुर / ( ब· के बेटे 7 ) "दांतोंवाला"

2·226 सं० + ( - उनी ) = वि०

यह रचना बिहार अंचल में मिलती है जैसे -- स्वर्ग +
( - उनी ) = / सरगउनी / ( ब· के बेटे 45 ) "स्वर्ग की",
नोक + ( - उनी ) = / नकुनी / "बाबा बटे· 43 )नुकीली

2·227 सं० + ( - औंधा ) = वि०

नागार्जुन के उपन्यास "बाबा बटेसरनाथ" का एक उदाहरण
दृष्टव्य है -- चमड़ा + ( - औंधा ) = / चमरौंधा /
( बाबा बटे· 43 ) " चमड़े का जूता "

2·228 सं0 + ( - ला ∽ ली ) = विशे0

कोना + ( - ला ) = / कोनेला /
( व· के बेटे· 33 ) "कोनेवाला" टपरा + ( - ली )
/ टपरेली / ( कब· 146 ) "टपरेवाली"· उपर्युक्त दोनों
रचनाएँ बिहार के अंचल की हैं। इसी प्रकार की रचना है -- / कपसीला /
"कपास जैसे" ( जं· के फूल (10)

2·229 सं0 + ( - वाल ) = विशे0

पर्द + ( - वाल ) = / पर्दवाल /[1]
( मुलु· 119 ) "तेज चाल"

2·22(10) संज्ञा + ( - खोर ) = विशे0

सातु + ( - खोर ) = / सातखोर /
"सत्तू खानेवाले" ( सती मै· 396 ), यह प्रत्यय फारसी से आगत
है। परिनिष्ठित हिंदी में भी यह मिलता है पर "सातु" के साथ
मिलकर इसकी रचना कुछ आंचलिक हो जाती है।

2·22(11) सं0 + ( - हा ∽ ही ) = विशे0

इन रचनाओं में ( - हा ) प्रत्यय पुलिंग तथा
( - ही ) स्त्रीलिंग प्रत्यय है जैसे --
भीत + ( - हा ) = / भितहा / ( व· के बेटे 30 ) "भीतोंवाला"

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

1· पर्दवाल चाल

फूल + ‌§ - ही § = / फुलही / § नई पौ॰ 35 § "फूलवाली"
रोग + § - ही § = / रोगही / § व॰के बेटे 79§ "रोगवाली"

उपर्युक्त रचनाएं बिहार अंचल की हैं।

2·23 भाववाचक संज्ञा > विशेषण :

2·231 भा॰वा॰ सं॰ + § - ओवा ∽ उआ § = विशे॰

इस रचना के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं --
मडक + § - ओवा § = / मडकोवा / § मै॰ आँ॰ 152 § "मडकवाला", गमक + § - ओवा § = / गमकोवा / § मै॰ आँ॰ 36 § "गमकनेवाला", दुलार + § - उआ § = / दुलरुआ / § बल॰ 29 § "दुलारा"

2·232 भा॰वा॰ सं॰ + § - ऐन § = विशे॰

कुमाऊँ अंचल में यह रचना मिलती है जैसे -- घृणा + § - ऐन § = / घिनैन / § को॰ 234 § "घिनौने"

2·233 भा॰वा॰ सं॰ + § - कोटर § = विशे॰

बिहार अंचल में यह रचना मिलती है जैसे -- लाज + § - कोटर § = / लजकोटर / § दुख॰ 83 § "लाजवाला"। इसमें संज्ञा शब्द का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है।

2·24 क्रिया > विशेषण :

क्रिया के साथ इन प्रत्ययों का संयोग दिखाई पड़ता है --

2.241 फ़ि॰ + ( - आर ∽ आर ) = विशे॰

अल्मोड़ा तथा बिहार अंचल में यह रचना मिलती है जैसे --
√लग + ( - आर ) = / लागर / ( लती मे॰ 225 )
"दुबला-पतला"
√लग + ( - आर ) = / लगार / ( बल॰ 154) "बाग"
√उजा (ना) + ( - आर ) = / उजनार / (बाबा बटे॰ 54 ) "उजाला"

2.242 फ़ि॰ + ( - उवा ) = विशे॰

√पढ़ + ( - उवा ) = / पढुवा / ( बाबा बटे॰ 148) "पढ़नेवाला"
√बढ़ + ( - उवा) = / बढुवा / ( बल॰ 54) "बढ़ने अथवा बढ़ानेवाला"

2.243 फ़ि॰ + ( - औवा ) = विशे॰

√बिक + ( - औवा ) = / बिकौवा / ( रति की बाती ) "
"बिकनेवाला"

2.244 फ़ि॰ + ( - उवा ) = विशे॰

कुमाऊं अंचल के उपन्यास "होलदार" में यह रचना मिलती है जैसे √भर + ( - उवा ) = / भरुवा ( ) ( हो॰ 330 ) "बिना कारतूस की बन्दूक, जिसमें बारूद ऊपर से ठोंक-ठोंक कर भरी जाती है ।
√चल + ( - उवा ) = / चलुवा / ( हो॰ 271 ) " चालू "
√सैत + ( - उवा ) = / सैंतुवा / ( हो॰ 2 ) "सैंतनेवाला या पालनेवाला"

2·245 क्रि0 + (एक् + औत) = विशे0

पक > पकेठ + ( - औत ) = / पकठौत / ( नई पौ· 26 ) यह रचना बिहार अंचल में मिलती है ।

क्रिया से पहले सर्वनाम संयुक्त होकर विशेषण की रचना करता है । जैसे / सबजांता / "सब कुछ जाननेवाला" ( जुलू· 60 )

2·25 क्रिया विशेषण > विशेषण :

2·251 क्रि0 विशे0 + ( - इया ) = विशे0

रेणु तथा नागार्जुन के उपन्यासों में यह रचना मिलती है -- पीछे + ( - इया ) = / पछतिया / (मै·आं· 217) "देर से फलने फूलनेवाली"। "मैला आंचल" में इस शब्द का प्रयोग "हंसी" के साथ हुआ है । भीतर + ( - इया ) = / भितरिया / ( बल· 107 ) "भीतरवाला" अगत + ( - इया ) = / अगतिया / ( जुलू· 44 ) "पहले ही तैयार होनेवाला"

2·252 क्रि0 विशे0 + ( - आड़ी ) = विशे0

रेणुकृत "जुलूस" उपन्यास में यह रचना मिलती है जैसे -- पीछे + ( - आड़ी ) = / पछाड़ि / ( जुलू· 126 ) "पिछाड़ी, पिछवाड़े" यह प्रत्यय परिनिष्ठित हिंदी में भी देखने को मिलता है । जैसे अगाड़ी, अनाड़ी आदि । लेकिन "पीछे" शब्द के साथ यह प्रत्यय लगने पर इसका रूप "पिछाड़ी" बनता है ।

2·253 वि० विशे० + ( - ता ) = विशे०

अग ( आगे ) + ( - ता ) = / अगता / ( नई पो· 134 ) "आगे का अथवा पहले का रोपा हुआ धान ।

2·254 वि० विशे० + ( - ल ) = विशे०

बिहार अंचल में यह रचना मिलती है जैसे -- अग ( आगे ) + ( - ल ) = / अगल / ( प· के बेटे 71 ) "आगे का"

2·26 अन्य व्युत्पन्न विशेषण :

कुछ विशेषण और भी हैं जिनकी रचना का विश्लेषण स्पष्ट रूप से नहीं हो पाता । वैसे ये इस प्रकार के विशेषण अन्य शब्दों से ही बने हैं । जैसे -- / कडमस्त / "मस्त डील डोल" ( बाबा बटे· 41 ), / कमासुत / "कमाऊ बेटा", ( बल· 14 ), / भुतांगी / "भुतागी लोई" ( हो· 251 ), / बहोछ / "मतिशून्य" ( मे· आं· 223 ), / मारसु / "बदमाश" ( मै· आं· 220 ), / सुतबल /[2] ( सती मै· 173 ) / भारालस / "भरा हुआ (हृदय)" ( अब तक पृ· 545 )

किसी-किसी संज्ञा का प्रयोग भी विशेषणवत् हो सकता है जो परिनिष्ठित हिंदी में अप्राप्य है, जैसे -- / सरसुती /[3] ( सरस्वती ) "विद्वान या ज्ञानी" ( बल· 124 )

---

2· कहीं बैठने के लिए सुतबल जगह नहीं मिलती

3· यहाँ के सरसुती लोग और नेहरा के कउधरी लोग मुलुक भर में नामी हैं

3. कारक - रचना :

कारक के चिह्नों में भी आंचलिक विशेषता प्रकट होती है। कहीं कारक के ध्वन्यात्मक रूप में ही परिवर्तन मिलता है और कहीं कारक चिह्नों के व्यवहार में।

कर्त्ता कारक का चिह्न {ने} है। इसके लिए एक ही उपन्यास में दो रूप प्रयुक्त मिलते हैं -- { - ने } तथा { - न } जैसे -- / उनने / "उन्होंने" { हो. 57 }। इसमें कारक चिह्न तो समान है किन्तु उससे पूर्व प्रयुक्त तिर्यक सर्वनाम रूप भिन्न हो जाता है अर्थात् "उन्होंने" के स्थान पर केवल "उन" का प्रयोग है। दूसरे रूप का उदाहरण / मैन / "मैंने" { हो. 245 } है। "मैन को" अर्थात् "मैंने कहा"। यह ठेठ आंचलिक कारक रूप है।

ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जो परिनिष्ठित हिंदी में {ने} कारक के साथ रहते हैं किन्तु अंचल में वह रचना {ने} से रहित की जाती है जैसे -- "तू पहचान लियो" { मै. आं. 22 } अर्थात् "तूने पहचान लिया"।

कर्म कारक {को} के स्थान पर अंचल में / कू / { सा.ल.म. 82 } रूप भी मिलता है।

सम्प्रदान कारक परिनिष्ठित हिंदी में { के लिए } है। अंचल में इसके स्थान पर / तई / { रतिo की बाकी 144 } भी मिलता है। जैसे "अपने तई" अर्थात् "अपने लिए"

अधिकरण कारक का चिह्न ( में, पर ) है । इसके स्थान पर अंचल में / पै / ( कब तक पृ० 157 ) मिलता है । जैसे "हमारे पै" अर्थात् "हमारे पर / इनपै / ( कब तक पृ० 47 ) अर्थात् "इन पर ।

सम्बोधन के भी कुछ विशिष्ट रूप मिलते हैं जो भावबोधन की स्थितियों में प्रयुक्त होते हैं जैसे --

| | | |
|---|---|---|
| / गे मइयो / | "मइया री मइया" | ( नई पौ० 22 ) |
| / आँह रे बा / | "हाय रे बाप" | ( नई पौ० 72 ) |
| / बजुलि-बाबुलि / | "माँ री, बापरे" | ( हो० 272 ) |
| / नहीं गो / | " नहीं री " | ( नई पौ० 69 ) |

4· सोपसर्ग रचना :

संज्ञा या अन्य प्रकार के शब्दों के साथ उपसर्गों का संयोग करके कुछ विशेषणों की रचना की जाती है । उपसर्ग तो प्राय: परिनिष्ठित हिंदी के समान ही मिलते हैं किन्तु संज्ञा के साथ संयुक्त होकर जो रचना ये करते हैं वह आंचलिक हो जाती है । नीचे के कुछ उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जायगी ।

| उपसर्ग | शब्द | संरचित रूप | अर्थ | अंचल | संदर्भ |
|---|---|---|---|---|---|
| 1·(अ-) | /-सक/ | /असक/ | "अशक्त" | बिहार | (कब· 157) |
| | /-नीत/ | /अनीत/ | "गन्दी" | कुमाऊँ | (हो·234) |
| | /पेटे / | /अपेटे/ | "अशुभ" | कुमाऊँ | (हो·295) |
| | /-छूट/ | /अछूट/ | "असीम" | बिहार | (व·के बेटे।9) |
| | /-बुने/ | /अबुने/ | "ज्ञानी" | कुमाऊँ | (हो· 25) |

| उपसर्ग | शब्द | मेरीचित रूप | अर्थ | अंचल | संदर्भ |
|---|---|---|---|---|---|
| 2· {आ-}[4] | /-बाध/ | /आबाध/ | "आबाध" | बिहार | {रति·की चा·77 |
| 3· {उप-} | /न्याठई/ | /उपन्याठी/ | "उपद्रवी" | कुमाऊँ | {हो· 15} |
| 4· {खुश-}[5] | /फैल/ | /खुशफैल/ | "अच्छी तरह फैला हुआ" | बिहार | {बल·104} |
| 5· {गर-}[6] | /मजरआ/ | /गरमजरआ/[7] | "गैरआबाद" | बिहार | {बाबा बटे·116 |
| 6· {पर-} | /होश/ | /परहोश/ | "मूर्छित" | कुमाऊँ | {हो·254} |
| | /फाम/ | /परफाम/ | "बुद्धिहीन" | कुमाऊँ | {हो·254} |
| 7· {बम-} | /कुरी/ | /बमकुरी/ | "ओछी और उद्दण्ड" | कुमाऊँ | {हो·128} |
| 8· {सु-} | /भर/ | /सुभर/ | "अभ्यस्त" | बिहार | {बल·6} |

ऊपर की सूची में से केवल दूसरा और पाँचवा उपसर्ग ध्वन्यात्मक रूप से आंचलिक विकास को प्रामाणित करते हैं। शेष हिंदी के समान ही हैं, केवल समास रचना कुछ भिन्न हो जाती है।

---

4· वास्तव में यह हिंदी का {अ-} उपसर्ग ही है, किन्तु बिहार अंचल में यह {आ-} हो गया है।

5· यह फारसी से आगत उपसर्ग है।

6· यह उपसर्ग {गैर-} ही है। यह भी फारसी से आगत है।

7· "मजरा" का अर्थ है आबादी या गाँव।

## 5· क्रिया की रूप-रचना :

क्रिया की आंचलिक संरचना पर कुछ विचार वाक्यवाले अध्याय में किया गया है। यहाँ पर कुछ विशेष रूपों पर विचार कर लिया गया है।

### 5·1 नाम धातु :

संज्ञा से व्युत्पन्न क्रियाओं के प्रयोग परिनिष्ठित हिंदी में भी मिलता है किन्तु आलोच्य उपन्यासों के आंचलिक क्रिया रूपों में इसका विशिष्ट प्रयोग देखा जाता है। इनमें उन संज्ञाओं के आधार पर भी नाम-धातु बनती है जिनके आधार पर परिनिष्ठित हिंदी में नहीं बनती। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं —

| संज्ञा | नामधातु के रूप | अंचल | संदर्भ |
|---|---|---|---|
| काठ "काष्ठ" | /कठुआ गई/ "काठ हो गई" | बिहार | (बल· 127) |
| गिरह "गाँठ" | /गिरहा गई/ "ग्रन्थित हो गई" | बिहार | (मै·आँ· 145) |
| चूना (क) | /चुना रहे थे/ "चूना लगा रहे थे" | बिहार | (बल· 14) |
| (ख) | /चुनहा गया/ "चूना लगाया गया" | बिहार | (बल·168) |
| चिकर "चीत्कार" | /चिकरे/ "चीत्कार किया" | बिहार | (नई पौ·48) |

| संज्ञा | नामधातु का रूप | अंचल | संदर्भ |
| --- | --- | --- | --- |
| वन्द "वन्दना" | / बन्दैगी / "वंदना करेंगे" | बिहार | ( मे० आं० 71 ) |
| सपना | / सपनाते / "सपना देखते" | बिहार | (बल० 91) |

यह नामधातुएं परिनिष्ठित हिंदी में अप्राप्य है। ध्वनि अनुकरण के आधार पर भी कुछ धातुओं की रचना होती है जैसे टीना "पिटाई" से √टीनना[8] "टीन" ( बस्तर, ज० के फूल 81 )

5·2 आज्ञावाचक :

आज्ञावाचक की रचना प्राय: मध्यम पुरुष के एकवचन और बहुवचन रूपों के साथ होती है। परिनिष्ठित हिंदी में मध्यम पुरुष एकवचन वर्तमान आज्ञावाचक रूप अप्रत्यय ही रहता है। केवल अप्रत्यय धातु प्रयुक्त होकर आज्ञा का अर्थ प्रकट करती है जैसे √जा-कर, √देख इत्यादि। किन्तु आंचलिक उपन्यासों में यह रूप नहीं मिलता। आंचलिक उपन्यासों में भी प्राय: यह रूप मिलते हैं। बहुवचन आज्ञावाचक रूप के साथ ( - ओ ) प्रत्यय का प्रयोग होता है अथवा ( - इए ) प्रत्यय का प्रयोग होता है जैसे - ( करो / तथा / दीजिए / ( आदर सूचक ) "मैला आंचल" में "दीजिए" के स्थान पर / दीजे / (43) रूप-रचना मिलती है। ओकारान्त आज्ञावाचक रूप प्राय: हिंदी के समान ही है जैसे / लड़ाओ / (सा०न०म० 160)

---

8· मेवाड़ में पटर टीनने की आवाज या टक चलने का शोर सुनाई पड़ता है।

भविष्य आज्ञावाचक के रूपों में अवश्य अन्तर मिलता है। भविष्य आज्ञावाची रचना क्रियार्थक संज्ञा के समान धातु + ना वाली होती है जैसे -- आना, जाना, देना इत्यादि। आंचलिक रचना इससे भिन्न है, तुलनात्मक तालिका द्रष्टव्य है --

| परिनिष्ठित हिंदी | आंचलिक रचना | अंचल | संदर्भ |
|---|---|---|---|
| "आना" | / आवो / | राजस्थान | {कब तक पृ. 423} |
| "जाना" | / जावो / | " | {कब तक पृ. 422} |
| "देना" | / दीजो / | " | {कब तक पृ. 91} |

यह रचना राजस्थानी अंचल की भूमिका की पुष्टि करते हैं।

इसके अतिरिक्त पूर्वी अंचल में एक और भविष्य आज्ञावाचक रचना मिलती है जैसे / कहबो / "कहना" {नई पौ. 106} / आइबु / "आना" {जुलू. 51} बंगाली से प्रभावित बिहार के अंचल में आज्ञावाचक रूप / बोलून / "बोलो" {जुलू. 4} भी मिलता है।

## 5.3 वर्तमानकालिक कृदन्त :

परिनिष्ठित हिंदी में इसकी रचना {- त} प्रत्यय पर आधारित होती है जैसे बोलता, खाता आदि। इसका आंचलिक रूपान्तरण {- वत} मिलता है। जैसे / आवत / "आता" {कुमाऊं, हो. 80} अपभ्रंश में {- अन्त} प्रत्यय भी इस रचना में प्रयुक्त होता था। पुरानी हिंदी में भी यह प्रत्यय चलता रहा। गोरखनाथ जी के एक दोहे में इसका प्रयोग देखा जा सकता है --

"गगने न गोपंत तेजे न सोषंत पवनेनपेलंत बाई ।
मही भारे न भाजंत उदके न कूबंत कहो तो को पतियाई ।।[9]

कबीर आदि निर्गुणिया सन्तों की वाणी में भी यह प्रत्यय मिलता है । आँचलिक बोलियों में आज भी एक सीमा तक यह प्रत्यय बना हुआ है । कुमाऊं अंचल से सम्बन्धित उपन्यास "होलदार" में इसका प्रयोग द्रष्टव्य है -- / ‖ मुख ‖ बोलन्ती / "बोलवाल" ‖हो· 8। ‖

5·4 भूतकालिक रचना :
---

परिनिष्ठित हिंदी की भूतकालिक रचना में क्रिया धातु के साथ लिंग, वचन, प्रत्यय ‖ - आ ‖ ‖ - ए ‖, ‖ - ई ‖ मिलते हैं जैसे -- देखा, देखे, देखी । हिंदी के अंचलों में इनसे भिन्न प्रत्ययों का प्रयोग होता है जैसे ‖ - इस ‖ को जोड़कर भूतकालिक रचना की जाती है । जैसे / किहिस - दीहिस / "किया -दिया" ‖ कल· 105, कुम· 35 ‖ दूसरा प्रत्यय ‖ - इन ‖ है जैसे / कहिन / "कहा" ‖ मै· आँ· 11 ‖ / दीहिन / "दिया" ‖ मै· आँ· 22 ‖ ‖ - ल ‖ प्रत्यय पर आधारित रचना भी मिलती है जैसे - / गिरल / "गिरा" ‖ मै· आँ· 173‖ / बनल / "बना" ‖ मै· आँ· 97 ‖

6· शब्द-युग्म
---

6·1 सम सार्थक शब्द-युग्म :
---

आँचलिक बोलियों में शब्द-युग्म की रचना प्रचलित है ।

---

9· गोरखबानी, सम्पा० डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ‖दोहा संख्या-24‖

परिनिष्ठित हिंदी में भी यह रचना मिल तो जाती है किन्तु कम, जैसे घास-फूस । यह रचना बल या अर्थ की विशदता को प्रकट करती है । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं -- / अदगोई - बदगोई / "आलोचना" "नई पौ॰ 23 }, / अमना - पैना / "सरकारी कर्मचारी" { बल॰ 106, मे॰ आं॰ 11 }, / कथरी - गुदड़ी / "फटे कपड़ों की गद्दी" { व॰ के बेटे 11 }, / कैंचा - कौड़ी / "कौड़ी" { बल॰ 36 }, / खाना-खवा / "खाना" { व॰ के बेटे 41 }, / खेचा-खर्चा / "जेब खर्च" { बाबा ब॰ 52, बल॰ 45 } / गंजन-फजीहत / "फजीहत" { रति॰ की बाची 9 }, / गाठी - खिरठी / "कृश" { बल॰ 95 }, / गुदड़ी -कथरी / "गुदड़ी" { बल॰ 13 }, / चस्सा-चूक / "चट्टी" { बो॰ 24(6) } / चीज-बस्त / "वस्तु" { व॰ के बेटे 14 }, / छम-विछम / "चमत्कार" { बो॰ 251 }, / छिल्ली-कथरी / "अमियार" {बल॰ 39} / जथा-जान / "सम्पदा" { नई पौ॰ 4 }, / जमीन-जथा / "जमीन" { बल॰ 47 }, / जिवा-जवार / "जिला" { बल॰ 98 }, / डाढ़ - पन्थोजो / "कलछी-चम्मच" { बो॰ 125 }, / नेटा-पोटा / "कीचड़ अथवा गन्दगी" { व॰ के बेटे 22 }, / ताल-पता / "पता" { मे॰ आं॰ 63 }, / थाली-बाटी / "थाली" { बाबा बटे॰ 44 }, / दबनी-मड़नी / "दबाना" { मे॰ आं॰ 68 }, / दवा-बीरो / "दवाई" { बाबा बटे॰ 24 }, / पकी-पोठी / "पकी हुई" { बाबा बटे॰ 18 }, / फर-फरहरी / "फल-फलाहार" { बाबा बटे॰ 67 }, / बेठ -बेगार / "बेगार" { बाबा बटे॰ 45 }, / बेर-बखत / "समय" { बल॰ 14 }, / लहना-लगादा / "कर्जा" {बल॰ 20 }, / लाग-भाग / "सम्बन्ध" {बल॰ 90}, / लावा-फुटहा / "खाद्य पदार्थ" { बल॰ 39 } / सन-सावे / "घास" {बल॰ 133}, / सरपत-सावे / "घास" { बल॰ 19 }, / सोदा-सुलुफ / "सौदा" { बल॰ 131 } ।

6·2 पुनरावृत्ति :

पुनरावृत्ति में एक ही शब्द की आवृत्ति होती है । इसको हम शब्द-युग्म कह सकते हैं । कुछ उदाहरण यह है -- / उदे-उदे / "उदे-उदे भारी-भारी बादल" { दुख० 5 }, / भकर-भकर / "अर्थभावहीन दृष्टि से देखना" { मै० आं० 215 } / खोंचा, - खोंचाड़कर / { बाबा बटे० 77 }, / मखा-मखाकर / "जगा-जगाकर" { व० के बेटे 81 } / फुहरी-फुहरी / "फुही" { मै० आं० 199 } । समान शब्दों में से पहले में परिवर्तन भी हो जाता है जैसे -- / घमाघम / "गरम" { मै० आं० 211 } । एक ही शब्द की आवृत्ति में उस शब्द के व्याकरणिक रूप में भी परिवर्तन हो सकता है । परिवर्तित रूप निरर्थक भी हो सकता है । कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -- / चबा-चुबुकर / "चबाना" { व० के बेटे 41 } / दाप-धूप / "मालिश करना" { बाबा बटे० 28 }

ध्वन्यात्मक शब्द-युग्मों की रचना से एक अर्थवाले शब्द की रचना भी की जाती है जैसे -- / चलबिल / "चीं-चपड़" {मै० आं० 28 }, / कम-सम /[10] "शान्त" { व० के बेटे० 19 }

7· सामासिक रचना :

आंचलिक बोलियों में सामासिक रचना के उदाहरण भी मिलते हैं । उदाहरण के लिए तत्पुरुष समास के कुछ उदाहरण इस प्रकार

---

10· रात को तो कम-सम, मगर दिन की मीठी धूप में ओपीड़कूबों का यह संसार मुखर हो उठता है ।

हैं :-- / अंगाल-भिड़ी / "आलिंगन" § हो० 323 §,
/ अना-बवन / "अना का बवन" § मै० अ० 163 §
/ घट-नई / " घर की नौका अर्थात् घड़ों की नौका "
§ व० के बेटे 59 §, / चउड-चन / "चौथ का चांद"
§ नई पौ० 108 §, / जनम-देवी / "जन्म से बांझ" §हो० 244 §
/ पिसल-कुवे / "तिनके का झाड़" § व० 217 § / भनसा घर /
"रसोईघर" § मै० आं० 16 § / मै-फिनम / "मिट्टी के
अन्दर छोटी सी सुरंग बनाकर तम्बाकू पीने का साधन" § हो० 12 §
/ सार-नरबेटा / "साले का बेटा" § बल० 58 §,
/ पथ-पानी / "मार्ग में खाने की वस्तु" § बल० 74, रति० की
चा० 164 § ।

इनके समास के कुछ उदाहरण भी मिलते हैं जैसे --
/ कंधी-त्योल / "गन्दगी" § हो० 230 § / ताल-मखाने /
"ताल" § व० के बेटे 66 §, / ऐना-ककही / "आइना-कंघी"
§ मै० आं० 214 §, / मोगल-पठान / "एक खेल", § बल० 10 §,
/ हाथ-गोड़ / "हाथ-पांव", §नई पौ० 34§, / तिवान-भुखान /
"भूखे-प्यासे" § व० 216§, / बाघ-गोटी / "एक खेल" §बल०10§
/ गंगनाथ-भावना / "लोक देवता" § व० 253§, / तानी-भरनी /
"ताना-बाना" §बल० 121 §

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि रचना के धरातल पर जो वैशिष्ट्य मिलता है वह प्रत्यय, उपसर्ग के आधारपर ही मिलता है । जिन शब्दों की सोपसर्ग या सप्रत्यय रचना होती है व शब्द भी यदि ठेठ आंचलिक होते हैं तो रचना अबोधगम्य हो जाती है। यदि ये शब्द हिंदी के सम न भी होते हैं तो बोधगम्यता बनी रहती है । प्रत्यय या उपसर्ग के अर्थ प्रसंग या संदर्भ से स्पष्ट हो जाते हैं ।

# अध्याय | पंचम

## वाक्य स्तर

### 0. प्रास्ताविक :

पिछले अध्याय में रूप-रचना पर संक्षेप में विचार करके तत्सम्बन्धी प्रवृत्तियों को उजागर किया गया है। रूप-रचना का वाक्य-सन्दर्भीय रूप प्रस्तुत अध्याय में व्याख्येय है। मोटे रूप से आंचलिक वाक्य-रचना हिंदी वाक्य-विन्यास से बहुत अधिक दूर नहीं, अपितु मूल रचना प्रायः समान है। केवल कुछ वाक्यांश रचना आंचलिक वैशिष्ट्य को लिए हुए मिलती है। यह वैशिष्ट्य शब्द, रूप-रचना, कारकीय रचना, लिंग-वचन रचना, क्रिया-रचना तथा क्रिया-विशेषण अव्यय की रचना के रूप में मिलता है। वाक्यों के प्रकार हिंदी के समान ही हैं। पदक्रम का विपर्यय भी कभी-कभी वैशिष्ट्य का वाहक बनता है। वाक्यों के प्रकार के संबंध में यह कहा जा सकता है कि इस मुख्य प्रवृत्ति सामान्य वाक्यों के प्रयोग की है। मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य बहुत कम व्यवहृत हुए हैं। प्रश्नवाचक वाक्यों का रूप भी हिंदी से अलग नहीं है। इन सभी वाक्य-

रचना सूत्रों पर प्रस्तुत अध्याय में विचार किया गया है ।

1· संज्ञा की रचना

1·1 तिर्यक और मूल रचना :

मूल रचना एक प्रकार से अकारकीय रचना है और तिर्यक कारकीय रचना । परिनिष्ठित हिंदी में तिर्यक और मूल रचना पुंलिंग में इस प्रकार मिलती है --

| | मूल | तिर्यक |
|---|---|---|
| ए0 व0 | लड़का | लड़के |
| ब0व0 | लड़के | लड़कों |

आंचलिक रचना में इस दृष्टि से कुछ विपर्यय मिलता है । उदाहरण के लिए मूल एकवचन का प्रयोग तिर्यक एकवचन के लिए भी मिल जाता है जैसे --

§1§ पहले झगड़ा § झगड़े § का निरगौस दो ही औरतों से होता है । § मै· आँ· 55 §

§2§ मुजफ्फरपुर ज़िला § ज़िले § का एक मुसती आया है । § मै· आँ· 56 §

यह विशेषता बिहार के अंचल को मुख्य रूप से परिभाषित करती है "जुलूस" उपन्यास का एक और उद्धरण दृष्टव्य है -- राम हंगर बस्टराबक करेगा तुम्हारा घर पर § तुम्हारे घर पर § § जुलू॰ 18 §

यदि कुछ शब्द मूल और तिर्यक ए॰ व॰ में समान रहते हैं तो आकारान्त विशेषण की रूप-रचना तिर्यक प्रकृति की हो जाती है । किन्तु अंचल में इसका विपर्यय भी मिलता है जैसे
आंचलिक रूप - अपना नाना का छोकरा
परिनिष्ठित रूप - अपने ...... .............

1·2 संज्ञा बहुवचन रचना :
------------------

हिंदी की लिंग-वचन रचना से भिन्न रचना आंचलिक बोलियों में मिलती है जैसे "लोग" शब्द मूल ए0 व0 और ब0 व0 दोनों में मिलती है । तिर्यक में इसका ब0 व0 रूप "लोगों" हो जाता है । "सती मैया का चौरा" में / लोगन / मूल ब0 व0 के रूप में प्रयुक्त मिलता है / आप लोगन / "आप लोग" § सती मै0 599 §

2· कारकीय रचना :
-----------------

जहां लिंग-वचनपरक रचना संश्लिष्ट भाषा-रूप को प्रमाणित करती है वहां कारकीय रचना भाषा की विश्लेषणात्मक स्थिति का परिचय देती है । संस्कृत के पश्चात प्राय: सभी भारतीय

आर्यभाषाएं विश्लेषणात्मक होने लगी थीं -- कुछ कम, कुछ अधिक । विश्लेषणात्मक स्थिति हिन्दी के सभी अंचलों में भी समान नहीं मिलती । कारक चिह्नों के लोप या अभाव से विश्लेषणात्मक स्थिति घटित न होने की भी सूचना मिलती है । साथ ही कारक चिह्नों का प्रयोग-वैशिष्ट्य भी आंचलिक उपन्यासों में ध्यानाकर्षित करता है । प्रस्तुत शीर्षक के अंतर्गत इस प्रक्रिया को देखने का प्रयास किया गया है ।

## 2·1 कर्त्ताकारक "ने"

कर्त्ताकारक का चिह्न "ने" है । इसके लोप के उदाहरण नीचे दिए गए हैं --

1· मार्टिन साहब {ने} डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को यह जमीन बहुत पहले दे दिया । {मै· आँ· 10}

2· गुसांई जी {ने} रमैन में कहिन है {मै· आँ· 11}

3· हम {ने} जल्दी से उठके साहेब बन्दगी किया । {मै· आँ· 22}

4· तुम {ने} हमारा जान बचाया । {सा·ज·म· 43}

5· जब से हम {ने} सुना {सा· ज· म· 14}

2·2 "ने" का रूपान्तरण :

"ने" के लोप के अतिरिक्त उसके रूप-परिवर्तन या उसके स्थानापन्न कारक-चिह्न के प्रयोग से भी आंचलिक वैशिष्ट्य प्रकट होता है जैसे "ने" = "से" : "राणी का छोरा से हति गल्या बोजो फाति दियो पीठ्यां गोड़ दम्या पस्यारुन । (हो० 12)

प्राय: "ने" का प्रयोग सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कर्मवाच्य के रूप में होता है किन्तु अंचल में कर्तृवाच्य में भी इसका उपयोग देखा जाता है । जैसे -- " / मालिक के खेत से ..... उखाड़ लाया है लड़के ने / "मालिक के खेत से लड़का उखाड़ लाया है । (मै० आं० 55)

2·3 कर्मकारक "को"

अंचलों में "को" के लोप के उदाहरण कम मिलते हैं जैसे -- हम जल्दी से उठके साहेब (को) बन्दगी किया (मैला आं० 22)

2·4 "को" का स्थानापन्न :

कर्मकारक का द्योतक आंचलिक रूप कई प्रकार से परिवर्तित मिलता है । कभी-कभी सार्वनामिक संबंधवाचक विशेषण का प्रयोग भी इस रूप में होता है जैसे -- हमरा = हमको

(1) हमरा कुछ ने मालूम" हमको कुछ नहीं मालूम । (मै०आं० 253)
(2) हमरा कोई सेवा नहीं चाहिए" हमको कोई सेवा नहीं चाहिए । (मै० आं० 11)

संबंधवाचक "के" का प्रयोग भी कर्मकारक का स्थानापन्न हो जाता है : के = को : "सबके मिलके मदत करे के चाही, "सबको मिलकर मदद करनी चाहिए ( मै. आं. 17 ), बेटा मउ के एक मुरली के कुमार भगतेन्द्र है ( मै. आं. 22 )

कुमाऊ अंचल में भी कर्मकारक के सार्वनामिक रूप में रूप-परिवर्तन मिल जाता है जैसे -- तुके = तुझे ∽ तुझको = तुझेक देरी देन ( हो. 192 )

"सती मैया का चौरा" में स्थानापन्न होने की प्रक्रिया और भी विशिष्ट मिलती है : देखे = देखने को : / देखे कैव नहीं गए ? / "देखने को क्यों नहीं गए ( सती मै. 658 )

बरसोवा अंचल में "को" के स्थान पर "कू" का प्रयोग भी वैशिष्ट्य है जैसे -- तेरे कू = तुझको या तेरे को, (1) "तेरे कू देखा भाग कदर होने का जो तू किसी का रानी बन सकेगा"
( सा. ल. म. 7 ),
(2) "तुम देखेगा भाग कू कैसे नहीं जाना होयेगा ।"
( सा. ल. म. 7 ) (4) "कावन्त तेरे कू कहता फिरूंगा"
( सा.ल.म. 11 ) (4) "हमकू तेरे कूं देखने काय" ।( सा.ल.म. 15)

## 2.5 सम्प्रदान कारक "के लिए" :

सम्प्रदान के प्रयोग में भी आंचलिक वैशिष्ट्य देखने को मिलता है । मैला आंचल में करे खातिर = "करने के लिए" । "तीरथ करे खातिर कुछ रखी है" ( मै. आं. 208 )

2·6 अपादान कारक "से"

अपादान चिह्न "से" हिन्दी में मिलता है। कुछ अंचलों में इसके स्थान पर "सूं" भी देखने को मिलता है -- जैसे - रैमें सूं = रहने से। "बरतोवार रैने सूं काय नाम ?" (सा॰ अ॰ भ॰ 9)

2·7 सम्बन्धकारक - का, के, की :

हिंदी में केवल उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष सार्वनामिक रूप (- र) प्रत्यय से युक्त होते हैं। अन्य स्थानों पर का - के - की का प्रयोग मिलता है किन्तु अंचल में रा - रे - री वाले प्रयोग अन्य रूपों में मिलते हैं जैसे -- सबरि = सबके : "सबरि उमर मालूम सत्य" (मे॰ ग्रं॰ 279)

सामान्य रूप से सम्बन्धकारक (- र) प्रत्यय के साथ लिंग-वचन प्रत्यय आ - ए - ई का प्रयोग होता है किन्तु अंचल में आकारान्त रूप के स्थान पर ओकारान्त रूप भी मिल जाता है जैसे हमरो = हमारा (मे॰ ग्रं॰ 254)

2·8 सम्बन्धकारक - विशिष्ट प्रयोग :

संबंधकारक की एक विशिष्ट रचना भी अंचल में मिलती है जैसे -- होने का = है, "तेरे यु एका भाग हिदर होने का जो यु किसी का रानी बन सकेगा" (सा॰ अ॰ म॰ 7)

हिंदी में जहाँ तेरा, तेरे, तेरी जैसे संबंधवाचक रूप मिलते हैं वहाँ अंचल में तेरे का" = तेरा जैसे रूप भी मिल जाते हैं । बरसोवा अंचल का एक उदाहरण द्रष्टव्य है -- "तेरे का अपमान किया" (मा॰ लो॰ म॰ 24)

हिन्दी में अपना - अपने - अपनी सम्बन्ध कारकीय विशेषण के रूप हैं किन्तु अंचल में "अपन" का प्रयोग भी इस अर्थ में मिलता है जैसे -- "अपन बाप के" -- अपने बाप के (मे॰ बा॰ 219)

## 2·9 अधिकरण कारक में, पर :

अधिकरणकारक चिह्न 'में' का लोप कुछ स्थलों पर मिलता है जैसे -- डेरा हाथ छाता ल्यारा, बाँ॰ हाथ में देन (हो॰ 192) मेरे दाहिने हाथ में छाता है और बाएं हाथ में आईना" । इसी वाक्य के दूसरे भाग में इस कारक चिह्न का लोप नहीं है -- "बाँ हाथ में देन"

## 2·(10) अधिकरण कारक : विशिष्ट प्रयोग :

अधिकरण कारक चिह्न "में" के स्थान पर "माँ" का प्रयोग आंचलिक चरित्र का है । जैसे पीठमाँ = "पीठ में" : "राणी का छोरा ने हाँत मक्या ओजा फाँस दियो पीठमाँ गोड़ दटम्या पस्यारुन । (हो॰ 12)

हिन्दी में क्रियाविशेषण 'इधर-उधर' के साथ किसी कारक चिह्न का प्रयोग नहीं होता किन्तु बिहार के अंचल में कभी-कभी इनके साथ भी कारक चिह्न का प्रयोग आंचलिक वैशिष्ट्य को प्रमाणित करता है । जैसे -- "इधर में काहे आये" (पृ० 20) इधर में = इधर । इसी प्रकार एक और उदाहरण द्रष्टव्य है - "आप अगाड़ी में होवा (पृ० 26) अगाड़ी में - आगे बढ़कर चले ।

कारक चिह्नों के व्यतिक्रम या लोप की प्रवृत्ति सभी अंचलों में मिलती है । इसका कारण यह प्रतीत होता है कि अपभ्रंश की स्थिति में जब विभक्तियों का स्थान कारक लेने लगा था तब विभिन्न क्षेत्रों में यह प्रक्रिया भिन्न-भिन्न प्रकार से घटित हुई थी । कहीं पर विभक्ति के स्वरों का तो लोप हो गया था किन्तु उसके स्थान पर कारक-प्रयोग नहीं हुआ । किसी-किसी क्षेत्र में रचना भिन्न प्रकार की रही ।

जहाँ तक आंचलिक कारकीय रचना के बोध का प्रश्न है, इसके द्वारा बोधगम्यता अधिक बाधित नहीं होती । यह स्तर सौन्दर्य-शास्त्रीय दृष्टि से स्थानीय भाषा-चरित्र को ही उभारता है और अपनी सभी विशेषताओं के होते हुए भी बोधगम्य बना रहता है ।

### 3. सार्वनामिक रचना :

सर्वनाम - रचना के स्तर पर भी उपन्यासगत अंचल अपने वैशिष्ट्य को सुरक्षित रखता हुआ मिलता है । किन्तु इस स्तर पर वैशिष्ट्य या वैचित्र्य अन्य स्तरों की अपेक्षा कुछ कम ही है । कुछ विशिष्ट रूपों पर नीचे विचार किया गया है ।

3·1 अन्य पुरुष रचना :

हिन्दी में अन्य पुरुष ए० व० "वह" तथा उसका तिर्यक रूप "उस" का प्रयोग मिलता है । अवध में तिर्यक रूप में "ओ" भी प्रयुक्त मिलता है जैसे -- / ओ का / "उस की" (मा·न·म·11)

3·2 सार्वनामिक विशेषण :

सार्वनामिक विशेषण सम्बन्धवाचक प्रवृत्ति के होते हैं । ये पुरुषवाचक संरचना में इनका हिन्दी में लिंग और वचन अनेक प्रत्ययों के आधार पर निश्चित होते हैं । अवधी संरचना हिंदी संरचना से कहीं-कहीं भिन्न पड़ जाती है । जैसे उत्तम पु० सार्वनामिक विशेषण की रचना में "अपना" या "अपने" का प्रयोग मिलता है किन्तु "मैना सत" में इस अर्थ में "अपन" का प्रयोग : / अपन बाप / "अपने बाप" (मै० सं० 291) मिला है ।

3·3 प्रश्नवाचक सर्वनाम :

हिन्दी में "कौन" सर्वनाम का प्रयोग व्यक्ति के लिए होता है और उसका तिर्यक रूप "किस" है । किन्तु अवध में कहीं-कहीं तिर्यक रूप में भी "कौन" का प्रयोग मिलता है जैसे -- / ई कौन देस के आदमी ....." / "ये किस देश के आदमी ...." (मै० सं० 254)

"कौन के स्थान पर "के" का प्रयोग भैरवप्रसाद गुप्त ने "सती मैया का चौरा" में किया है जैसे / के हऽ / "कौन हो" (सती मै० 574)

"क्या" के स्थान पर कभी-कभी /कैंच/ काय / "क्या" का प्रयोग भी करता है जैसे — / बरसावा रैने कु काय काम ? "बरसोवा रहने से क्या काम" [ मा.ल.म. 9 ]

## 3.4 अनिश्चयवाचक सर्वनाम :

हिन्दी में अनिश्चयवाचक सर्वनाम "कोई" है । इसके स्थान पर अंचल में / कोनो /[1] "कोई" रूप भी मिलता है ।

## 3.5 परिमाणवाचक :

परिमाणवाचक हिन्दी सर्वनाम "इतना" है । इसका ब.व.रूप "इतने" मिलता है । किन्तु "ओरदार" में "इतने" के स्थान पर / इते / का प्रयोग मिलता है जैसे — / राजा का ओरत्र के इति गहवा ...... / [ बो. 67 ]

## 4. विशेषण की रचना :

विशेषण की रचना में लिंग-वचन प्रत्ययों के प्रयोग वैशिष्ट्य की बात स्पष्ट देखी गई है । कुछ और विशेषताएँ भी इस रचना में मिलती हैं । उदाहरण के लिए संख्यावाचक विशेषण के साथ पूर्वी अंचल का जन / ठो / पा / गो / का प्रयोग विशेष रूप से करता है जैसे — / तीन गो / "तीन" का प्रयोग मैना कां. [22] में मिलता है । यह प्रकार यह पूर्वी अंचल की ही विशेषता है ।

---

1. कोनो आशा थोड़ो बा । [ मे. कां. 253 ]

## 4.1 आलंकारिक विशेषण रचना :

उपमान, उपमेय और सादृश्यमूलक पद के आधार पर उपमामूलक विशेषण की रचना होती है । हिन्दी में सादृश्यमूलक शब्द मुख्य रूप से जैसा, जैसे आदि हैं किन्तु आंचलिक परिवेश में / जैसन /[2] (मै. आं. 219) रूप भी मिल जाता है । जैसे -- / नौकमाय जैसन औरत / "नौकमाय जैसी औरत"

## 5. क्रिया - रचना :

इस शीर्षक के अंतर्गत क्रिया की उन वाक्यगत रचनाओं को विचार गया है जो आंचलिक प्रवृत्ति की है । प्राय: धातु के स्तर पर आंचलिक क्रियाएं हिन्दी क्रियाओं से अधिक अलग नहीं होती । केवल कुछ धातुएं अलग है जैसे -- खड़े होने के लिए "ठाड़" धातु का प्रयोग करता है इसी प्रकार "पन्धारुन" रचना की धातु सामान्य हिंदी से भिन्न है । किन्तु आंचलिक वैशिष्ट्य क्रिया की वाक्यगत रचना में प्रकट होता है । इस विवेचन को अबोधगम्यता, संयुक्त रचना, कृदन्त रचना और संयुक्त क्रिया की रचना के स्तरों पर रखा गया है ।

## 5.1 अबोधगम्यता :

अबोधगम्यता क्रिया-रचना के स्तर पर अधिक मिलती है । विशेष रूप से पूर्वी अंचल से सम्बन्धित उपन्यासों में इसका रूप

---

2. और भी द्रष्टव्य है -- (मै. आं. 254)

देखने को मिलता है। "मैला आंचल" के कुछ क्रिया-रूप अबोधगम्यता की दृष्टि से द्रष्टव्य हैं --

1. रानीगंज के तीन गो मुरती तो बारह साल दिन से धरना देले छथुन। (मै. आं. 22) "रानीगंज के तीन गो मुरती तो बारह साल दिन से धरना दिए हुए हैं"

2. जाये ला कहै छियैन्ह त कहै छथिन बलु सरकार से बारंट ले ली है। (मै. आं. 22) "जाने को कहते हैं तो कहते हैं कि सरकार से वारंट ले ली है।

3. मेला मठ के एक मुरती के बुखार लगलैन्ह है। (मै. आं. 22) "मेला मठ के एक मुरती को बुखार लगा है है (है)

4. ई तो दस आदमी के काम छै, जे - जे - से एकरा में सबके मिल के मदत करे के चाहीं। (मै. आं. 17) "ये तो दस आदमी का काम है इसमें सबको मिलकर मदद करनी चाहिए"

कुछ सहायक क्रियाएँ अबोधगम्य होती हैं। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -- √+ (- ल) = / रहल / "रहना" (मै. आं. 219) / जाये ला / "जाने के लिए" (मै. आं. 22) / लगलैन्ह / "लगा हुआ है" (मै. आं. 22) / पिये ले / "पीने के लिए" (मै. आं. 241)

### 5·2 बोधगम्य, किन्तु विशिष्ट :

कुछ उदाहरण विशिष्ट रचना के तो हैं किन्तु उनकी बोधगम्यता बनी रहती है जैसे -- / मदत कर के चाही / -- "मदद करनी चाहिए { मै॰ डॉ॰ 17 } / गबन / "गया" { सती मै॰ 570 } / निहारश / "निहारा" { कुबु॰ 9 }

### 5·3 पूर्वकालिक कृदन्त की रचना :

हिन्दी में पूर्वकालिक कृदन्त की रचना प्राय: धातु के साथ "कर" का संयोग करके की जाती है । जैसे -- जाकर, खाकर इत्यादि । अवध में "कर" के स्थान पर "के" का संयोग भी होता है जैसे -- / अन्दर जाके / "अन्दर जाकर" { मै॰ डॉ॰ 254 }

कभी-कभी इस अर्थ में "अ" प्रत्यय वाली रचना भी प्रयुक्त होती है जैसे -- / दौड़ल /[3] "दौड़कर" { कुबु॰ 17 }

### 5·4 वर्तमानकालिक कृदन्त :

हिन्दी में वर्तमानकालिक कृदन्त की रचना इस प्रकार होती है -- √ + { - त } + { आ ~ ए ~ ई } । किन्तु अवध में कभी-कभी { - त - } प्रत्यय का योग नहीं किया जाता है । केवल धातु के साथ - य - प्रत्यय का संयोग करके रूप-रचना की जाती है । जैसे -- √हेर + य = / हेरे / "देखता है" { मै॰ डॉ॰ 273 }

---

3· मखी दौड़लजाय

कभी-कभी अकारान्त रूप भी इस अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं जैसे -- / जाय /[4] जाती है (जुल० 17)

## 5.5 क्रियार्थक संज्ञा :

क्रियार्थक संज्ञा की रचना के लिए धातु के साथ (- ना) प्रत्यय का योग किया जाता है। जैसे -- जाना, करना आदि। बंधन में इसके साथ (- व) प्रत्यय का योग भी मिल जाता है।

क्रियार्थक संज्ञा के आधार पर कुछ रचनाएं विशेष रूप से अंकित भी की जाती है : क्रियार्थक संज्ञा + सम्बन्धवाचक कारक चिह्न। जैसे -- होने का = है, होगा।[5] (सा०ल०म० 7)

कभी-कभी इस रचना का अर्थ केवल क्रियार्थक संज्ञा मात्र ही होता है। इसके साथ सहायक क्रिया-रूप "य" का संयोग रहता है जैसे -- / करने काय[6] / = "करना है" (सा०ल०म० 9)

## 5.6 सहायक क्रियाएं :

/ थ्युन / (मे० अं० 22), / छन्थन / (मे० अं० 22), / था / "है" (मे० अं० 17), / हो / "है" (मे० अं० 17, 248), / आनी / (मे० अं० 254), / छे / (मे० अं० 273), / हS / "है" (सती मे० 574).

---

4. गुड़ पर मक्खी दौड़ जाय।
5. तेरे कू देखा भाग फिरत होने का।
6. अपन कू गुजारा तो कोई में करने काय।

/ बाटे / "है" ( बा॰ ब॰ म॰ 11 ) / छ / "है" ( बा॰ब॰म॰ 9, 15 ) / है / "है" ( बा॰ ब॰ म॰ 16 )

5.7 "है" का लोप :

हिन्दी की जिन क्रिया-बनावटों में सहायक क्रिया का प्रयोग मिलता है उनमें से कुछ का अंगिका क्षेत्रों में बिना सहायक क्रिया के भी मिल जाते हैं ।

1. हमरो सिर बेकार ( "है" का लोप ) ( मे॰ आं॰ 254 )
2. हम कारेर का मिनिस्टरी नहीं ( "है" का लोप ) ( मे॰ आं॰ 254 )
3. रन दु पढेना-लिखेना नई ( "है" का लोप ) ( बा॰ब॰म॰ 15 )

5.8 समुच्चय क्रिया :

5.81 √न ( – ब )

संभवत: यह भविष्यवाचक रूप है । जैसे — नरक में भी जगहा ना मिलनी "नरक में भी जगह नहीं मिलेगी ( मे॰ आं॰ 219 )

अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं — ई कुदार तो जान लेके छोड़ी "ये कुदार तो जान लेकर छोड़ेगा" ( मे॰ आं॰ 254 )

एक और अर्थ में इस रचना का प्रयोग दिखाई पड़ता है — "आपको का बतावों ?" "आपको क्या बताऊँ ?" ( सती मे॰ 147 ).

5·82 √+ (-ब) ~ (-व)

/ गिनाव[7] / ( मे० वा० 219 ), / बजवे[8] /
( मे० वा० 241 ) / मनक[9] / ( मे० वा० 248 ) / केव[10] /
( मे० वा० 254 )

5·83 √+ (-न)

बखिन[11] ( मे० वा० 241 )

## 5·9 ओकारान्त रचना :

हिन्दी की रचना प्राय: अकारान्त होती है। ओकारान्त रचना वैकल्पिक प्रकृति की है जैसे -- / बतो / "बतो" ( सती मे० 53 )

## 5·10 एकारान्त रचना :

जिस प्रकार ओकारान्त रचना अवध में कभी-कभी ओकारान्त हो जाती है उसी प्रकार एकारान्त रचना ऐकारान्त भी हो जाती है जैसे -- मे = "मै" ( सती मे० 53 )

---

7· नाम गिनावऽऽ अपन बाप के जे नाव रहल न ।

8· बाद पीछे ने बजवे हथिन दाय

9· बिना डण्डर के बात ना मनकऽ ।

10· का केवो ?

11· बखिन द्वाय ।

कभी-कभी इसका उल्टा भी मिलता है अर्थात् जहाँ हिन्दी में ऐकारान्त का मिलता है वहाँ अंचल में एकारान्त का भी मिलता है जैसे -- बदमाशा है -- बदमाश है (सा० अ० म० 16) आदमी है = आदमी है (सा० अ० म० 16)

5.(11) संयुक्त क्रिया :

संयुक्त क्रिया हिन्दी की क्रिया रचना की विशेष पद्धति है। इसमें एक से अधिक क्रियाओं का संयोग रहता है। नीचे संयुक्त रचना के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -- बाब + ता + नी (मे० औ० 254), उठ + रहौ (मे० औ० 265), देखे + छे "देखती है" (मे० औ० 273), काटि + दियो "काट दिया" (हो० 67), टूटन्या + पड्यारा "टूटने लगे हैं" (हो० 67), ले + चलो = ले चलो (सती मे० 53)

क्रिया + सहायक क्रिया की रचना में वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ (-य) का योग भी दिखाई पड़ता है। यह संभवतः वर्तमानकालिक सहायक क्रिया का ही रूपान्तरण है। जैसे / मांगताय / "मांगता है" (सा० अ० म० 7) / मिलताय / "मिलता है" (सा०अ०म० 7) / करताय / "करता है" (सा०अ०म० 9), / जानताय / "जानता है" (सा०अ०म० 9) / रखताय / रखता है (सा०अ०म० 18)

वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ-साथ इसका प्रयोग भूतकालिक कृदन्त के साथ भी होता है। जैसे / गयाय [12] / =

---

12. कपड़ा के तो औरत बन गयाय ।

"गया है" [ना॰ अ॰ म॰ 9] कभी-कभी अव्यय [- व] प्रत्यय निरर्थक भी प्रयुक्त होता है अर्थात् इसके द्वारा सार्थक क्रिया का द्योतन नहीं होता जैसे -- आय देखाव = "आया देखा" [ना॰ अ॰ म॰ 19]

भविष्य रचना का एक रूप विशिष्ट मिलता है :

√+ ब + √+ = भविष्यार्थक प्रत्यय / जैसे -- रहबे करेंगे = "रहेंगे ही" [अ॰ के बेटे 94]

उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्ध हो जाता है कि क्रिया रचना कभी-कभी परिनिष्ठित हिन्दी से बहुत दूर जा पड़ती है । केवल अर्थ सन्दर्भ के आधार पर विशिष्ट रचना के अर्थ को समझा जा सकता है । रचना का सबसे अधिक वैशिष्ट्य पूर्वी अंचल में दिखाई पड़ता है । किन्तु अयोगात्मकता सबसे अधिक कुमाऊँ में है । बिहार अंचल में अयोगात्मकता वहीं प्रविष्ट होती है जहाँ बोलियों का सघन प्रभाव पड़ जाता है । यह अयोगात्मकता अंचल में दूसरी भाषा के प्रवेश के कारण उत्पन्न होती है । अयोगात्मकता की दृष्टि से बस्तर का अंचल भी उल्लेखनीय है । विशेष रूप से आदिवासियों की भाषा का प्रवेश होता है । अंचल के रूप में गोंड जाति की भाषा आंचलिक भाषा-स्तर को दुरूह बना देती है । जैसे -- "पैट मार" "बन्द करो" आदि । किन्तु यह दुरूहता आदिवासियों की जीवन-झाँकियों को जानने के लिए आवश्यक हो जाती है ।

## 5·{12} सानुनासिकता :

बरसोवा अंचल से सम्बन्धित उपन्यास है -- सागर, लहरें और मनुष्य । इस अंचल की पद-रचना में सानुनासिकता की विशेषता मिलती है अर्थात् जहाँ हिन्दी में निरनुनासिक रूप मिलते हैं वहाँ इस उपन्यास में सानुनासिक रूप भी मिल जाते हैं ।

| बरसोवा अंचल | हिन्दी | संदर्भ |
|---|---|---|
| / होवेंगा / | "होवेगा ~ होगा" | {सा·ल·म·6, 9, 11} |
| / देखेंगा / | "देखेगा" | { 7 } |
| / सकेंगा / | "सकेगा" | {15, 20, 24} |
| / करेंगा / | "करेगा" | 11, 16 |
| / चलेंगा / | "चलेगा" | 15, |
| / दिखाएंगा / | "दिखाएगा" | 15, 20 |

यह ध्वनि के सानुनासिक विकास या उसके उच्चारण से भिन्न प्रवृत्ति है । इन उदाहरणों में क्रिया की भविष्यवाचक रचना सानुनासिक हुई है ।

### 6. क्रिया-विशेषण : अव्यय :

#### 6.1 प्रश्नवाचक क्रि० विशे० :

प्रश्नवाचक "क्यों" का प्रयोग हिन्दी में मिलता है । आंचलिक उपन्यासों में इसके स्थान पर अन्य शब्द भी मिलते हैं जैसे -- / कैंह / "क्यों" ( सती मै. 658 ), / काए / "क्यों" ( बा.ब.म. 11 )

#### 6.2 अव्यय :

हिन्दी में "तो" का प्रयोग अव्यय के रूप में होता है । अंचल में इसके स्थान पर / त / भी प्रयुक्त मिल जाता है ।[13] जैसे -- / गाड़ी त न छोटी / "गाड़ी तो नहीं छोटी" ( मै. आं. 263 )

इसी प्रकार "ही" के स्थान पर / ई / का प्रयोग भी मिलता है जैसे -- / दोनी / "दोनों ही" ( सती मै. 147 )

### 7. लिंग - वचन अन्वय :

#### 7.1 कारकीय स्तर :

आठ कारकों में से केवल संबंध कारक में लिंग- वचन - प्रत्यय का संयोग होता है जैसे -- कारक = क- + आ, ए, ई =

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

13. और भी द्रष्टव्य है -- मै. आं. 253

लिंग वचन - प्रत्यय = का, के, की । इस कारक के अन्वयी पहले संबंध रखनेवाला संज्ञा-शब्द प्रयुक्त होता है और उसके पश्चात् संबंधित संज्ञा शब्द । जैसे -- "घर का आदमी" । परिनिष्ठित हिंदी में संबंध कारक के लिंग-वचन का अनुवर्तित संज्ञा-शब्द के होना चाहिए । पुंलिंग एकवचन या बहुवचन के साथ कारक भी एकवचन, बहुवचन होगा । किन्तु कुछ आंचलिक प्रयोग इसके विपर्यय को सिद्ध करते हैं जैसे --

आंचलिक रूप    बच्चा → के → तरफ (मै॰आं॰ 219)

परिनिष्ठित रूप    ------ की ------

आंचलिक रूप    डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का → आदमी (मै॰आं॰ 10)

परिनिष्ठित रूप    ------ के ------

आंचलिक रूप    भगवान → का → जमीन (मै॰आं॰ 10)

परिनिष्ठित रूप    ------ की ------

आंचलिक रूप    आप → का → गोद (मै॰आं॰ 10)

परिनिष्ठित रूप    ------ के ------

आंचलिक रूप    कुकुर → का → सेवा (मै॰आं॰ 11)

परिनिष्ठित रूप    ------ की ------

आंचलिक रूप    पेट → का → वास्ते (ब्रू॰ 4)

परिनिष्ठित रूप    ------ के ------

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आंचलिक रूप | किसी → | का → | रानी {भा॰ब॰म॰7} |
| पारिनिष्ठित रूप | ---- | की ---- | |
| आंचलिक रूप | कहीं → | का → | कोनी लोग{भा॰ब॰म॰9} |
| पारिनिष्ठित रूप | ---- | के ---- | |
| आंचलिक रूप | छोकरी → | का → | पिन्हा {भा॰ब॰म॰11} |
| पारिनिष्ठित रूप | ---- | की ---- | |

7.2. विशेषण स्तर :

संबंधवाचक विशेषण में लिंग-वचन का अन्वय विशेष्य शब्द के साथ होना चाहिए। इस नियम का विपर्यय भी आंचलिक उपन्यासों में मिल जाता है। संबंधवाचक विशेषण की रचना कारक चिह्न के साथ भी होती है जैसे -- "आपका" और {-र} प्रत्यय के साथ लिंग - वचन - प्रत्यय आ - ए - ई जोड़कर भी होती है जैसे -- हमारा, हमारे, हमारी। इस अन्वय विपर्यय के उदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं --

| | विशेषण | | विशेष्य | संदर्भ |
|---|---|---|---|---|
| आंचलिक रूप | महाभारत | का | कथा | {भा॰ब॰म॰14} |
| पारिनिष्ठित रूप | ---- | की | -- | |
| आंचलिक रूप | बलवन्त | का | साथ | {भा॰ब॰म॰15} |
| पारिनिष्ठित रूप | ---- | के | -- | |
| आंचलिक रूप | बरसोवर | का | हवा | {भा॰ब॰म॰16} |
| पारिनिष्ठित रूप | ---- | की | -- | |

§ - र § प्रत्यय :

| | | | |
|---|---|---|---|
| वैकल्पिक रूप | हमारा | आम | §बा०न०म० 43 § |
| पारिनिष्ठित रूप | हमारी | -- | |
| वैकल्पिक रूप | हमारा | उमर | § कब तक पृ० 472§ |
| पारिनिष्ठित रूप | हमारी | -- | |

सामान्य व्याकरणिक विशेषण भी विशेष्य के लिंगानुसार बदलता है किन्तु कुछ स्थलों में इन दोनों के बीच विपर्यय मिलता है ।

| विशेषण | लिंग | विशेष्य | लिंग | संदर्भ |
|---|---|---|---|---|
| बड़ा-बड़ा | पु० | मछली | पु० ← स्त्री० | §बा०न०म० 9§ |
| नंगा §नंगा§ | पु० | लाड़ी | पु० ← स्त्री० | §बा०न०म० 9§ |
| पतला | पु० | दूर | पु० ← स्त्री० | §मे०बा० 11§ |

7·3 क्रिया-स्तर :

सामान्य रूप से कर्तृवाच्य रचना में क्रिया का अन्वय कर्ता के साथ होता है और कर्मवाच्य रचना में कर्म के साथ । किन्तु इनका विपर्यय भी कभी-कभी देखने में आता है जैसे --

7·31 कर्तृवाच्य रचना :

हम लोग ····· खाती है § थे §, § मे० बा० 10 §

हम ····· आया है । (आए हैं), (मे० बॉ० 11)

हम ····· करेगा । (करेंगे) (पृ० 18)

आप ····· आयेगा (आयेंगे), (पृ० 26)

हम ····· करेगा (करेंगे), (मा०ज०म० 7)

(मैं) एक गिलास का ····· पियेगा (पियूँगा), (मा०ज०म० 8)

(तुम) गाड़ियाँ को लेयेगा ·····(लोगे), (मा०ज०म० 8)

कोसी लोग ····· करता है (करते हैं), (मा०ज०म० 9)

7·32 <u>कर्मवाच्य रचना</u> :

<u>लिंग रचना</u> :

मार्टिन साहब ने ···· यह जमीन ····· दे दिया (दे दी) (मे० बॉ० 10)

8· <u>क्रम-विपर्यय</u> :

वाक्य का पदक्रम वाक्य रचना का प्रमुख अंग है । हिंदी में प्राय: यह क्रम मिलता है : कर्ता, कर्म और क्रिया । इस क्रम का विपर्यय भी पौराणिक उपन्यासों में देखा जा सकता है । साथ ही क्रिया विशेषण भी अपने स्थान से च्युत हो जाता है । आगे और क्रम-विपर्यय के उदाहरण भी मिलते हैं । प्राप्त सामग्री पर आगे विचार किया गया है ।

8·1 कर्म, क्रिया, कर्ता :

इसका एक उदाहरण यह है -- / कल शाम को मानिक के खेत से अंधेरे में उखाड़ लाया है लड़के ने / (मै० आं० 55)

कुछ उदाहरणों में यह विपर्यय द्रष्टव्य है -- (1) / कितना बांगलाय व सब / "यह सब कितना अच्छा है" (मा०अ०म० 14) (2) / ठीक होने का उम्मु न / "वह ठीक होने का नहीं है" (मा० अ० म० 19)

8·2 कर्ता, क्रिया, कर्म :

कभी-कभी कर्म क्रिया के बाद में भी प्रयुक्त होता है कर्ता -- क्रिया - कर्म = / तू कौन सिखावन दे आवतो ? / "तू आपको कौन सिखाता है" (अनु० 9)

एक अन्य उदाहरण यह है -- / हम कोल दिया काठना हूं / "हमने काठना से कह दिया (मा०अ०म० 24)

8·3 कर्म का लोप :

सकर्मक क्रियाओं के साथ क्रिया का योग रहना चाहिए । किन्तु कुछ स्थितियों में "कर्म" का लोप भी मिलता है । इनमें से एक स्थिति - पुनरावृत्ति की है । पहली बार सकर्मक वाक्य का प्रयोग करके उसकी आवृत्ति को अकर्मक कर दिया जाता है जैसे -- / हम की मतलफिया बेगिया मानना ? हम भी बेगिया / (मा०अ०म० 7)

8·4 कर्म कारक का क्रम-विपर्यय :

आंचलिक भूमि द्विभाषी (Bilingual) होती है। इसमें शब्द क्रमों का क्रम-विपर्यय भी पनपता है। उदाहरण के लिए यदि एक स्तर पर "तुझको" मिलता है तो दूसरे भाषा स्तर पर / तेरे कू /[14] का प्रयोग मिल जाता है।

8·5 सम्बोधन विपर्यय :

सामान्य रूप से सम्बोधन वाक्य के आरम्भ में ही रहता है किन्तु इसका विपर्यय भी आंचलिक उपन्यासों में मिल जाता है जैसे —
/ हम भी मत्स्यगंधा बनेगा नाना ? हम भी बनेगा /
(सा० ल० म० 7) इस क्रम-विपर्यय से बल की अभिव्यक्ति हो जाती है।

8·6 क्रिया-विशेषण क्रम विपर्यय :

क्रिया विशेषण वाक्य के आरम्भ में भी रह सकता है और बीच में भी। किन्तु सामान्य रूप से क्रम में इसकी स्थिति क्रिया से पहले होती है। कुछ उदाहरण क्रिया के बाद में इसके प्रयोग के भी मिलते हैं जैसे – / एक ही तो लड़का है उसके / "उसके एक ही तो लड़का है" (सती मै० 147)

कभी-कभी एक से अधिक क्रिया-विशेषण इस प्रकार विभाजित हो जाते हैं कि कुछ क्रिया के पूर्व और कुछ क्रिया के बाद स्थित हो जाते हैं : क्रि० विशे० → क्रि० → क्रि० विशे० जैसे —

---

14. सा० ल० म० 7

/ आगे बढ़के ई भार उठाओ सब लोगन मिलके / "सब लोग मिलकर आगे बढ़कर ये भार उठाओ" (धर्ती मे. 599)
अन्य कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

1. / हम जेनर स्ट्राइक करेगा तुम्हारा घर पर / "हम तुम्हारे घर पर जनरल स्ट्राइक करेंगे" (जुलु. 18)

2. / हम बोलता है रत्ना का नमन करने का / "हम रत्ना देवी का नमन करने के लिए बोलता है । (ना.ब.म. 11)

3. / रत्ना को होने का जहर / (रत्ना को जहर होना चाहिए । (ना.ब.म. 16)

4. / सौ रुपया तो होने का बराबर / "ठीक होने के लिए 100 रु. चाहिए ।

5. / मन की खोलता था एक बागला छोकरी का वास्ते / परन्तु यह एक अच्छा लड़की के लिए कहता था । (ना.ब.म. 31)

6. / रांडी का छोरा ने कलम गलका ओलो काढ़ि दियो पाछमा, गोड़ि टूटन्या पस्याछुन / "रंडी के बेटे ने कलाम अड़ा ओल बना दिया पाछ में कि पांव टूटने लगे हैं" (धो. 67)

ऊपर जिन उदाहरणों पर विचार किया गया है उन्हें देखने से प्रतीत होता है कि इस निपात के लिए इस प्रकार के प्रयोग हिन्दी में भी मिल जाते हैं । यह विशेषता केवल दक्खिनी की ही नहीं है ।

9. <u>मिश्र वाक्य</u> :

मिश्र और संयुक्त वाक्यों की रचना प्रणाली में दक्खिनी और हिन्दी दोनों प्रायः समान ही है । किन्तु एक प्रवृत्ति यह दिखाई

पड़ता है कि आंचलिक जन सामान्य वाक्यों का ही विशेष प्रयोग करता है । वाक्यों की दुरूहतर रचना में वह बहुत कम प्रवृत्त होता है ।

9.1. संज्ञा वाक्य :

संज्ञा वाक्य का संयोजक शब्द "कि" होता है । इसके लोप की प्रवृत्ति भी अंचल में दिखाई पड़ती है । जैसे -- / हमि मजूर बोजो फाल दियो पाठमा (कि) गोड दबन्या पस्याइन / (कौ० 67) और भी द्रष्टव्य है[15] इस प्रकार की रचना में प्राय: हिन्दी में इस संयोजक का लोप नहीं होता ।

"कि" का एक रूपान्तर / के / भी मिल जाता है । जैसे -- / ओला ओला नई के ढेर का ढेर मछली पावा / (मा० म० म० 9)

9.2 विशेषण वाक्य :

विशेषण वाक्य की रचना "जो" और "सो" के आधार पर होती है । कभी-कभी इनमें से किसी का लोप भी हो सकता है । साथ ही इन शब्दों के ध्वन्यात्मक रूप में अन्तर दिखाई पड़ता है । "जो" के स्थान पर / जे / का प्रयोग विहार के अंचल में दिखाई पड़ता है जैसे -- / नाम मिनास्सवपन चार के जे नाच रहा न / (मै० आ० 219)

---

15. वही पृ० 599, मा० म० म० 19

प्राय: रचना इस प्रकार की होती है —
जो ........ सो ........ । इस रचना में से "जो" के लोप के उदाहरण भी मिलते हैं । / (जो) तुम करेगा सो होयेगा / (सा०अं०म० ११)

यह लोप भी हिन्दी में मिल जाता है ।

९·३ वि० विशे० वाक्य :

९·३१ कालवाचक वि० विशे० वाक्य :

इसकी रचना "जब .......... तब ..........।" की होती है । अंचल में भी यही रचना मिलती है किन्तु कभी-कभी "जब" का लोप हो जाता है जैसे — / (जबु) दर रोजु मील का चक्कर भारतान तब निदर जाकर जो पाटो नाम मिलतान / (सा०अं०म० ९)

९·३२ रीतिवाचक वि० विशे० वाक्य :

इसमें "..........मानो ..........।" की रचना होती है । यह हिन्दी में भी मिलता है और अंचल में भी । जैसे — / अपना नाना का छोकरा मानो अपना दोस्त का छोकरा / (सा०अं०म० ११)

९·३३ संकेतवाचक वि० विशे० वाक्य :

इसकी रचना "यदि ...... तो ...... ।"

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

होती है । यही रचना अंवध में भी मिलती है । लोप आदि की विशेषताएं अवश्य मिलती है जैसे --

1. / (यदि) हम को कुछ बोलेगा तो हम अगर हल्ल राबक करेगा / (कु. 18)

2. / (यदि) हम होता तो काफिर का नाक सोता में बांध देताय / (ता.ज.म. 19)

3. / (यदि) अपने हराम तो दूसरे का का दोस / (सती मे. 559)

4. / (यदि) बाप न देखे तो गांव तो देखा है / (सती मे. 658)

10. संयुक्त वाक्य :

संयुक्त वाक्य प्रायः दो रचनाओं के मिलते हैं ........ पर ........ । अथवा ........ और ........ । दूसरी रचना और पहली रचना अंवध में भी मिलती है । केवल कुछ स्थानान्तरण अवश्य प्रकट हो जाता है । जैसे .... "पर" के स्थान पर / मन /[16] का प्रयोग ।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मिश्र और संयुक्त वाक्यों की रचना पद्धति में वास्तविक वैशिष्ट्य प्रायः नहीं मिलता । रचना पद्धति प्रायः हिन्दी के समान ही है केवल लोप, विपर्यय, स्थानान्तरण, क्रम आदि के भेद मिलते हैं और इस प्रकार से भेद बोलचाल की परिनिष्ठित हिन्दी में भी मिल जाते हैं ।

---

16. और भी द्रष्टव्य है -- सा.ज.म. 15,31,11,14

## 11. अंचल में अंचलेतर तत्व :

ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दी के अंचलों का सीमा-निर्धारण सुनिश्चित नहीं हो सकता। इसीलिए एक ही अंचल में एकाधिक भाषा-स्तर मिल सकते हैं। दूसरी बात यह द्रष्टव्य है कि अन्य भाषियों का प्रयोक्ता वर्ग आलोच्य अंचल में प्रविष्ट होता है और उसकी भाषा अंचल की निजी भाषा के साथ सह-अस्तित्व रखती है। यह बात विशेष रूप से हिन्दी के पूर्वांचल में दृष्टिगत होती है। बिहार प्रदेश में बंगला का प्रवेश सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों का प्रतीक है। बिहारी जनता बंगला के साथ सम्प्रेषण संबंध भी रखती है। इस तत्व के प्रवेश के दो परिणाम होते हैं। एक तो यह कि कुछ बंगाली का अस्तित्व बिहार में अलग झलकने लगता है। दूसरा यह है कि बंगाली बसने वाला जन बिहार के अंचल में प्रविष्ट होकर वहाँ की भाषा को बोलने का प्रयत्न करता है। इन दोनों तत्वों का रचनाएँ उपन्यासों में मिल जाती है।

### 11.1 संस्कृत भाषा :

प्रत्येक अंचल में संस्कृत भाषा के सीमित तत्त्व सुरक्षित मिलते हैं। ये तत्त्व अंचल में निवासित उन पुरोहितों या पंडितों के द्वारा प्रचलित होते हैं जो व्यावसायिक रूप से पूजा या अनुष्ठान से संबंधित हैं। यह वर्ग पूजा-पाठ के समय संस्कृत श्लोकों और मंत्रों का प्रयोग करता है। किंतु व्यावहारिक पंडित संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग प्रायः नहीं करता और न व्यावहारिक भाषा ही संस्कृतनिष्ठ बनती है। केवल पूजा के मन्त्रों और स्तोत्रों का गायन-वाचन होता है। विशेष रूप से "नयी पौध"[17] और "रतिनाथ की चाची"[18] उपन्यासों में यह उद्धरण पर्याप्त मात्रा में दिए गए हैं।

---

17. नयी पौ. 15,16,20,105,108,110,111
18. रति. की चाची - 27,31,32,35,59,144

इस संस्कृत प्रकार का सौन्दर्यतात्विक महत्व इतना ही है कि इनके द्वारा अंचल की समग्र भाषा-स्थिति का बिम्ब बन जाता है। वर्गीय स्थिति का भी परिचय इससे मिलता है। एक प्रकार से आंचलिक भाषा के समुद्र में यह एक छोटा सा भाषा द्वीप है जिससे आंचलिक जीवन का संकेत तो है पर आंचलिक भाषा से नहीं।

11.2 बंगला भाषा :

वास्तव में अंचलेतर भाषा-रचना का प्रवेश अंचल के आकार को वैशिष्ट्यपूर्ण बना देता है। मुख्य रूप से इसके द्वारा आंचलिक सम्पर्क सिद्ध होता है। वास्तव में एक ऐतिहासिक तथ्य भी इस प्रवृत्ति से जुड़ा हुआ है। बंगाल की ओर से अनेक शरणार्थी या भगोड़े बिहार में आकर बस्तियाँ बना लेते हैं। उन बस्तियों में शुद्ध बंगला भाषा सुनाई पड़ती है साथ ही उन बस्तियों के लिए यह भी अनिवार्य हो जाता है कि टूटी-फूटी हिन्दी बोलना आरम्भ करें। फणीश्वरनाथ रेणु के "जुलूस" उपन्यास में शुद्ध बंगला का प्रयोग देखने को मिलता है। कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं --

1. / नोमोस्कार दे कथा । स्वामी मोहन ओले थाका । अ दिके आईंयाछो तो किष्टो नाम सुनीया मन ओस्थिराछो तार ते एखान दाड़ियाछो तो कोई देखार करियाछा / (जुलू. 21)

2. / भालो की भागार खेला । हानो अनीताम बहुवा । कोई बोलिता नाकिछ / (पृ. 21)

3. / आदाब एक भालो छे / (पृ. 33)

4. / तुमी एको भालो चोरो ।.... हमार आड़ भी भालो कोर्तिन गाने / (पृ. 49)

5· / पोखर काम जिन्दू हुते पारि, तुई की बोल / § पृ· 60 §

6· / हाम कोमिलार गान करेयाछी । ज बोल बजेया सुर भालो पारे । वही गान सुनेयार जन्या हामी कानने मे आसछी / कमलाकोथ के गान सुनेया .... । .... जेही तो आछेन मास्टर मुशाई । सोहिर दिन बोरस्ते पर बैठे हुछयाछी न । माने मेजी / § पृ· 70 §

7· / अर की बोरेछो खाबुर-खुबुर - की बोलेछो बाटी - मानार मांतर बेगे बोलेछो - भूत बोडेछो माटी - मुराके मारि रखोरे मुराडू / § पृ· 82 §

8· / ..... जो नोकटा के देखे आमार भीषण भय करे / नोकटार चोख देखोछने सन्दया ? / § पृ· 83 §

9· / सो ही दिन आमा पानमेत के की आनानी होला मे गान गाछले मेलाम तो हामादेर पे तो खुब भालदया दिलोपछोन स्कूल पे वास्ते पढ़ेलाने केन आछदे ? / § पृ· 38 §

10· / ...... आमार रोकतो माथाय उठे जाय .... छबेर कागजेर रोज । .... उना उनके चोथाय गेल ? नाना-खेला खेलते । .... .. ए रकम सुकाण्डारी भाजा केन करो ? .... जनमनात इनधनाथो .... ओने जारे की ? .... ए पागलेर मत बोलो केन ? / § पृ· 106 §

11· / दिनके पाडो ना ? .. हा दिनके परेछी आपनार रई बेंज देखे / § पृ· 122 §

12· / ए सब की होच्छे ? .. छिः छिः नाना नाना उठेछे निरबोध .. बा बाना जा नाल जेने आमि ना बोझना... ? / § पृ· 145 §

13· / सिवधा दाउ गो रोतीछ सिता कोरते जाच । छन-जन पुराण आदेर-गेछे .... । / § पृ· 153 §

14. / आमि बिहार का किछु ते बार, जानतारे । आमि दाड़ाले भाई सनार ताले सबार हाटे एक हाटे ..../ (पृ. 155)

11.21 बंगला हिंदी :

इसके उदाहरण कम ही मिलते हैं । बंगालियों द्वारा बोली गई हिन्दी के कुछ भी वाक्य द्रष्टव्य है :-

1. / देश का माने आर क्या होगा । / (पृ. 2)
2. / आप देश का जो माने बुझता है वास्तव में हम लोगों का देश का माने वो नहीं है । / (पृ. 3)
3. / ई साला पेट का वास्ते तो कुछ बोलना पड़े - करना पड़े / (पृ. 4)
4. / यह कौन सिद्धान्त है आपका ? / (पृ. 9)
5. / इधर से जाइये जल्दी / (पृ. 20)
6. / जोन झगड़ा में जोला / (पृ. 26)
7. / अर्जुन, (बोस) का क्या नाम / (पृ. 125)

11.3 पंजाबी भाषा :

दूर के अंचल का कुछ प्रभाव भी आंचलिक भाषा की इकाई में दिखाई पड़ जाता है । नागार्जुन के "दुखमोचन" उपन्यास में एक पंजाबी ड्राइवर का चित्रण करता है जो अपने पंजाबी लहजे में कुछ बातें करके अपने लिए एक वातावरण तैयार करता है । खासतौर से वह अपनी बातचीत में पंजाबी लहजे में बोलता हुआ मिलता है जैसे -- / ऐसा माल पहले भी भी नहीं मिलणा भैणजी । न जी । जो नहीं तुसी दे देणा .... आ इलाका देखो, यानि का बाजार विलय मंगवाई थी हमारे मालिक ने । .. जी पेटी-तो तो छूकर देखणा, केसा सोणा है । जरा उसकी नेत तो देखो भैण जी ...।/ (दुख. 67)

किन्तु यह प्रवृत्ति आंचलिक उपन्यासों में बहुत व्यापक नहीं है

## 11·4 अंग्रेजी भाषा :

अंग्रेजी भाषा का प्रवेश तो अंचल में कई प्रकार से होता है । नवीन विचार-क्रम, उत्पादन पद्धति, कृषि-यन्त्र आदि के वाचक शब्द आंचलिक भाषा में प्रविष्ट हुए हैं । इन पर अन्यत्र विचार किया जा चुका है । दूसरे मध्यवर्गीय या अंचल के पढ़े लिखे लोग अंग्रेजी भाषा के तत्वों को अंचल में लाने के लिए उत्तरदायी होते हैं । तीसरे वे अंग्रेजी लोग जो आदिवासियों के अध्ययन में या उनके विकास में रुचि रखते हैं या प्रशासन से संबंधित हैं वे भी अंग्रेजी भाषा को अंचल में प्रविष्ट कराते हैं । इनकी शुद्ध अंग्रेजी आंचलिक भाषा के साथ सह-अस्तित्व में आती है । जब अंग्रेज लोग आंचलिक भाषा को बोलने का प्रयत्न करते हैं तो आंचलिक भाषा की रचना अंग्रेजी से प्रभावित हो जाती है । इसके विपरीत आंचलिक जन टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलने के प्रयत्न में अंग्रेजी की रचना को आंचलिक रंग (लोकल कलर) प्रदान करते हैं । इन तीनों प्रक्रियाओं को नीचे उद्धरण देकर प्रमाणित किया गया है ।

### 11·41 शुद्ध अंग्रेजी :

लगभग सभी अंचलों में इसका प्रयोग हुआ है । कुछ उद्धरण इस प्रकार हैं --

1· / दि इंग्लिश किंग अण्डरटेक मोनार्की एण्ड कालोनाइजार इम्पीरियलिज्म इ॰ [illegible] रेवोल्यूशन -- प्रोटेस्टेन्ट, क्यूरेटिव एण्ड [illegible] / (मै॰ आं॰ 47)

2· / आई कान्ट रिमेम्बर दि नेम बाय देट बुक ··· लेकिन बाय दि दि गोल्डन रिवर । / (मै॰ आं॰ 119)

3· / आरद्ध एम योर ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट कामरेड / (कु॰ 70)

4· / मेट हर एडमिटेड इन दि हास्पिटल इमीडियेटली । मेक इन देयर [illegible] / (माल॰ म॰ 53)

5· / डी मास्टर सरवाइव, गो आन / ‖ सा·न·म· 54 ‖

6· / रस्ता, यू देन वा य वेरी गुड नहीं / ‖ साल·म·55 ‖

7· / यू मस्ट चोपे माई ओर्डर / ‖ सा·न·म· 184 ‖

8· / वक आई एम नाट कमिटिंग मिस्टेक·· एक्सक्यूज मी मेडम····
वेरी ग्रेटफुल टू यू मेडम / ‖ साल·म· 268 ‖

9· / वुड बज एक्सचेंज आफ गिव एण्ड टेक मेडम ·· आई वान्ट
य कम्पेनियन [19] / ‖ सा·न·म· 269 ‖

10· / यू डोवल । स्ट डेवर यू आर । आई न गे पोर बोन्स
प्रांड आई हिम । यू वांट आई वाज हेल्पलेस । आइ'न ट्रिपर
टू डाई देन टू सरवाइव इन बगनोबल एण्ड सरवाइल पोजिस्टेन्स /
‖ वब तक पृ· 508 ‖

11· / नानसेंस, गेट आउट / ‖ जं· के फूल 252 ‖

12· / ···· मिनिस्टरी सेन टोच बीयर आफीस इन द मोर्निंग /
‖ च·के बेटे 94 ‖

11·42 अंग्रेजों द्वारा बोली गई अव्यवस्थित भाषा ‖ अंग्रेजी हिन्दी ‖

1· / हमारा स्टेट में एक भी बदमाश को हम नहीं रहने मांगटा ।
टुम हमारा टेलीनडार को झूठा बोला । हमारा हमला झूठ ?
टुम सारा का बच्चा सच्चा ? ··· टुम मुकदमा में गुवाई क्यों नेई
दिया ? ·· टुम वेटरी आप ? राइपट आप ? टुम हमारा
टेलीनडार से नई जीट सकेगा । हम टुमको वेज्यट करेगा ।
बदमाश ···· / ‖ मे·आं· 123 ‖

---

19· और भी द्रष्टव्य है ‖ सा·न·म· पृ· 270, 273, 274, 280
281 ‖

2. / ए मैन। इधर आता हाए। ओहो क्या होता हाए।.... एसा बीमारी तो कभी नहीं देखा। तुम्हारा नब्ज देखे। ओह तुम नहीं बचेगा। तुमारा बेमारी को कीड़ा हो गया.... अकेले मरेगा।.... यहाँ ता सबों का दिल धक धक करता हाए। हमारा भी दिल धकधक करने लगा / ( मे. आं. 164 )

3. / ओ डू यू। गुड। औरत आदमी का मालूम रोड पर सकता सकता है रिस्की।... देखिए रत्ना आई, हम प्रोपोजल लेकर आया हूँ / ( ताज.म. 269 )

4. / तुम अपना फोटो हमको देगा ? / ( कब तक पु. 479 )

5. / तुम किसलिए आया है ? तुम एक-एक करके बोल सकता है ? जमीन किसका है.... हम देखेगा .... और कुछ कहना मांगता है ?.... हम नहीं जानता .... हम इस तरह भीड़ देखना नहीं मांगता / ( कब तक पु. 488 )

6. / टुम दोनों बहोत खूबसूरत हो।.... हम बहोट दुखी है। टुमारे डोस्टों को मारा। अरे, टुम नहीं जानटा, हम वहाँ रे चुका है। एक बार गढ़ बंगला गिया ठा। वहाँ के "राजमेल" में ठहरा ठा, वहाँ का आदमी बहुत अच्छा है.... हम टुमको पेछान गया। ( अं. के फूल 245 )

7. / हाँ, मैं टुम लोग में से है, हम -- आया है टुमारा शिकायत सुनने।.... हम मट्टी खाकर कसम खाटा है... हाँ अब टुम भी कसम खाओ .... टुमे टीन डिन यहाँ ठहरना होगा।... टीन डिन टुम्हें सरकार का मेहमान बनना होगा / ( अं. के फूल 246 )

8. / खबरदार, एक ने भी टीर छोड़ा। सबका कटलेआम करा दूंगा / ( अं. के फूल 247 )

9. / डी.टी.एस. को कौन करता है .... किसान ( सुबह ( मिलिटरी आदमी जब माल को सेलन देगा / ( व. के बेटे 94 )

10. / डेमफूल, हम सब जानटा है। यह क्या है ? हमको धोखा नहीं दो / .. कुछ कुछ करें है। शट-अप / ( आवा. ए. 105 )

## 11.43 आंचलिक जन द्वारा बोली जानेवाली अंग्रेज़ी :

इसके उदाहरण कम ही मिलते हैं। शैलेश मटियानी के "होलदार" उपन्यास में कुमाऊँ अंचल में आंचलिक जन द्वारा बोली जानेवाली अंग्रेज़ी के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं --

1. / आई मीन्ट सी, ये माई कोट रेड 9 / (हो. 177)
2. / नो, यू रांग - वेरी रांग, माई डियर ब्रादर। ... नांसेंस आई मीन्ट सी। ऑर्डर 9 .... करेक्ट 9 मीन्ट से। ... डिसमिस। .. सो देट, यू हेव नोट एनी कोट। विदाउट, केट मीनिंग ऑर्डर 9.. इन अदर वोमनी लैंगि. पढाऊं -- विराग्य। एन्ड देट सा, टैट, मीनिंग -- देयर योर फुल, यान व्हट.. सो मेरी डिफरेन्स। .. पीप कोटेशन लेन / (हो. 178)
   (पहाड़ के जो लोग फ़ौज में भर्ती होते थे, या जो अफ़सरों के यहाँ "बेयरा" होते थे - उन्हें गलत या सही अंग्रेज़ी बोलने में गर्व का अनुभव होता था)
3. / सो देट आर ऐम मैरी सोरी। मैरी सोरी फार डिस देट / (हो. 339)

वाक्य या दीर्घतर भाषायी इकाइयों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि --

(1) आंचलिक भाषा आंचलिक यथार्थ और जीवनक्रम को अपने समस्त वातावरण और तेवर के साथ सम्प्रेष्य बनाती है।

(2) वाक्य-रचना के स्तर पर आंचलिकता प्राय प्रभावित नहीं होती। विशेष रूप से उतनी प्रभावित नहीं होती जितनी कि शब्द और पद के स्तर पर होती है।

(3) आंचलिक रचना का जो समग्र बिम्ब बनता है उसमें अंचलेतर तत्वों का समावेश आंचलिक सम्पर्क का साक्ष्य प्रस्तुत करता है ।

(4) हिन्दी और आंचलिक भाषा की रचना में प्रमुख अन्तर लिंग और वचन से संबंधित है । इनका विकल्प रचना में बहुत मुखर रहता है ।

उपाय | विषय

## नौकरियाँ, सलाहें और [illegible]

## लोकोक्तियाँ, कहावतें और लोकगीत :

प्राय: यह कहा जाता है और माना भी जाता है कि आंचलिक उपन्यास का नायक स्वयं अंचल ही होता है। अन्य सामाजिक उपन्यासों से यही तत्व आंचलिक उपन्यासों को अलग करता है। यदि अंचल एक नायक है तो उसका रूप अत्यन्त विराट् होता है। इस नायक की साज-सज्जा, उसके क्रिया-कलाप, संगतियाँ-विसंगतियाँ, उसकी प्रकृति और विकृति, उसकी परम्परा और प्रगति, स्थिति और परिस्थितियाँ, सभी मिलकर इस विराट् नायक को चरितार्थ करती है, उसके चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करती है। इस विराट् रूप की सबसे बड़ी विशेषता होती है — उसकी गतिशीलता, परिवर्तनशीलता और संक्रमणशीलता। आंचलिक उपन्यासकार की साधना होती है कि अंचल के विराट् पुरुष को विविध प्रविधियों से सवाक् और सक्रिय बनाए। अंचल का एक व्यक्ति भी अगर बोलता है तो जैसे समस्त अंचल में ध्वनियाँ हो उठती है। उपन्यासकार को अंचल की सामग्री के साथ रागात्मक रूप से और बौद्धिक रूप से भी सम्पृक्त होना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप अंचल की सामग्री के चुनाव में उपन्यासकार प्रवृत्त होता है। ठेठ अंचल की चुनी हुई सामग्री की संरचना को वह एक और अधिरचना के बीच में स्थापित करता है और दोनों के बीच संबंध-सूत्र स्थापित करता है। भाषा भी इसी आंचलिक सामग्री के रूप में गृहीत होती है जो अन्तर्क्षेत्रीय परिनिष्ठित भाषा की अधिरचना के बीच में अनुस्यूत हो जाती है। यह भाषा-सामग्री विविध रूपों में प्राप्त होती है इस सामग्री के

के व्याकरणिक और संरचनात्मक पक्ष पर पहले के अध्यायों में विचार किया जा चुका है । इस भाषा के कुछ साहित्यिक रूप भी आंचलिक जीवन में विकसित होते हैं । आंचलिक उपन्यासकार भाषा के साहित्यिक खंडों या अंशों का उपयोग करके भी अंचल के विराट् नायक के चरित्र को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करता है । आधारभूत उपन्यासों में ये खण्ड लोकोक्तियों, कहावतों और गीत-पंक्तियों के रूप में जीवित मिलते हैं । आंचलिक जीवन पर ये साहित्य रूप आरोपित नहीं होते । बल्कि अंचल की अंग-व्यवस्था के ये आवश्यक भाग ही होते हैं । अंचल का विराट् नायक जब बोलता है तो इस प्रकार बोलता है जैसे अंचल का प्रत्येक जन बोल रहा हो । इस क्रम में भाषा के जो साहित्य-खण्ड आते हैं वे लोकांचल के बोलने की शैली को सजीव बनाते हैं अर्थात् भाषा के साहित्यांश एक ओर तो अंचल के वातावरण को एक विशेष आंचलिक शैली में सचारू बनाते हैं तो दूसरी ओर वातावरण की सृष्टि में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं । इसी अभिव्यंजना-शैली के तत्वों का आकलन और विश्लेषण प्रस्तुत अध्याय का अभिप्रेत है ।

उपर्युक्त साहित्यांशों में जिस भाषा का प्रयोग होता है उसका विश्लेषण तो किसी न किसी रूप में पहले हो चुका है । आंचलिक साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत प्रबंध की सीमाओं से बाहर है । सम्प्रति कथ्य यह है कि लोकबोली के निर्माण में जिन साहित्यांशों का उपयोग होता है, उसका सर्वेक्षण हो ।

लोकजीवन में इनका महत्त्व तो असंदिग्ध है ही, इनके द्वारा मानव-स्वभाव की अभिव्यक्ति भी होती है। डा० कन्हैयालाल सहल का मत इस संबंध में द्रष्टव्य है :-- "कहावतें मानव स्वभाव और व्यवहार कौशल के सिक्के के रूप में प्रचलित होती हैं और वर्तमान पीढ़ी को उत्तराधिकार के रूप में पूर्वजों से प्राप्त होती है।" जिस देश के लोक जीवन में प्रफुल्लता, उत्साह और व्यवहार-पटुता की धारा निरन्तर गतिशील रहती है, उस देश में कहावतों का प्राचुर्य सामान्यत: देखने में आता है .......... साहित्य की दृष्टि से भी कहावतों का कम महत्त्व नहीं। कहावतें भाषा का शृंगार है, उनके प्रयोग से भाषा में सजीवता, स्फूर्ति का संचार हो जाता है .......... विशेषत: उपन्यास और कहानियों में तो कहावतों का प्रयोग एक प्रकार से अनिवार्य हो जाता है।"[3] इस कथन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लोकोक्ति और कहावतें मनुष्य के भाषिक व्यवहार को जहाँ सजीव और सुन्दर बनाती है वहाँ उसके साहित्यिक ज्ञान को प्रभावोत्पादक और आकर्षक भी बनाती है। कथात्मक साहित्य-रूपों की प्रेषणीयता में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। जब आंचलिक उपन्यास की बात आती है तब तो इनका महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

श्री कृष्णानंद गुप्त ने लोकोक्ति और कहावतों के वर्ण-विन्यास को सार्वभौम बताया है : "प्रत्येक राष्ट्र के लोगों की विचार प्रकट करने की अपनी एक शैली होती है। एक ही भाव को प्रकट करने के लिए भिन्न भिन्न देशों के निवासी अपने संस्कारों के अनुसार विभिन्न अलंकारों का प्रयोग करते हैं अतएव अपनी भाषा-

---

3. "राजस्थानी कहावतें" "हंस" पृ० 501-502

विषयक विशेषता के कारण ये कहावतें आपको परस्पर भिन्न भले ही जान पड़ें पर ध्यान से देखने पर उन सबको आप आत्मीयता के धागे में बंधा पायेंगे। कहावतों का यह भाव-साम्य, एक ही प्रकार की कहावतों का संसार के विभिन्न लोगों में पाया जाना कहावतों के अध्ययन को बहुत रोचक और शिक्षाप्रद बना देता है।"[4] इस प्रेरणा से अनेक लेख तुलनात्मक दृष्टि से लिए गए हैं।[5] लोकोक्ति और कहावतों की सार्वभौमिकता को स्पष्ट करते हुए डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा है -- "लोकोक्ति साहित्य प्रकृति के ज्ञान की भाँति सार्वभौमिक है, न उसका कोई वर्ग है और न उसका देशकाल से उतना घनिष्ठ संबंध है जितना अन्य साधारण साहित्य का होता है।"[6] तात्पर्य यह है कि लोकोक्ति और कहावतों की सामग्री का बहुत महत्त्व है।

जब उपन्यासकार लोकजीवन को उसकी बोली के साथ प्रेष्य बनाना चाहता है तो इनका प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। इनका संबंध परिनिष्ठित भाषा की अपेक्षा बोलियों से अधिक रहता है। आलोच्य उपन्यासों में इस सम्पदा का समुचित प्रयोग हुआ है। साहित्य के अन्य रूपों में भी लोकोक्ति का प्रवेश शुभ और सुन्दर का वाहक बनता है। साहित्य का जन भाषा से संबंध होना आवश्यक होता है और उसका माध्यम लोकोक्तियाँ और कहावतें बनती हैं। गोपाल

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

4. "लोकवार्ता" पत्रक सं० 3, पृ० 5

5. रायल एशियाटिक सोसायटी जनरल (VOL. VIII NO. 2) में तिब्बती भाषा की कहावतों का संग्रह छपा है। इसी प्रकार REW. W. MORTON ने 1832 में बंगला कहावत का संग्रह प्रकाशित किया था।

6. वासुदेवशरण अग्रवाल - "लोकोक्ति साहित्य का महत्त्व" "मधुकर पत्रिका में प्रकाशित" पृ० 363

प्रसाद व्यास ने इस संबंध में लिखा है — "अपने डायलेक्ट्स से बल मिलने के कारण भाषाओं के स्रोत खुल जाते हैं और साहित्य की भी नूतनता आती रहती है। इतिहास ने उसी लेखक को सफल सिद्ध किया है जिसका संबंध अपने जनपद की भाषा और भावनाओं से अधिकाधिक निकट रहा है।"[7] जनसंस्कृति को प्रकट करने के लिए इनके प्रयोग की आवश्यकता होती है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा को सजीवता देता है और साहित्य को शक्ति। इसी सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि में आंचलिक उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियों का दिग्दर्शन आगे किया गया है।

### 1.1 ठेठ आंचलिक लोकोक्तियाँ :

लोकोक्तियों और कहावतों की प्रकृति अपनी निजी सीमाओं के अतिक्रमण की होती है। इस प्रकृति के कारण परिनिष्ठित भाषा की लोकोक्तियाँ भी अंचल के भाषिक व्यवहार में प्रविष्ट हो जाती हैं और अंचल की लोकोक्तियाँ भी परिनिष्ठित साहित्य में घुल जाती हैं। प्रस्तुत सन्दर्भ में वे लोकोक्तियाँ हमारा विशेष ध्यान आकर्षित करती हैं जिनकी भाषिक रचना शुद्ध आंचलिक है। उदाहरण के लिए नागार्जुन के उपन्यासों की ये लोकोक्तियाँ या कहावतें ली जा सकती हैं —

1. / आन गामक पोखार अपना गामक गाछी / (बल. 88)

---

7. "कहावतों द्वारा मानव जीवन की अभिव्यक्ति" "ब्रजभारती" वर्ष 3, अंक 4, पृ. 2

2. / बमोला को अखबार / (बाबा अटे. 20)

इसी प्रकार रेणु के "मैला आंचल" की निम्नलिखित कहावतें द्रष्टव्य हैं --

1. / बेटा बेटी देखो छोड़ारी करे मेंगरो
   बाजनी कहे सुई से कि तेरी पेंदी में छेद / (पृ. 54)
2. / लहठ किरिया खाए कुलमन्ती, मोर मन नहिं पतिआय / (पृ. 74)
3. / मूसिन पूछे मूस से कहाँ के रखाड़ धान / (पृ. 163)
4. / सोड़ मरे बरदा, बैठल खाये तुरंग / (पृ. 214)
5. /

"जुलूस" उपन्यास की ये कहावतें द्रष्टव्य हैं --

1. / मांगुर माछ था बेटा, हरि-हरि बोल / (पृ. 32)
2. / जो न किया पुरखा सो करे मुरखा / (पृ. 88)

शैलेश मटियानी रचित "होलदार" में ठेठ आंचलिक भाषा की लोकोक्तियों और कहावतों का अधिक प्रयोग मिलता है। यह उपन्यास कुमाऊं अंचल से संबंधित है इसमें ठेठ कहावतों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :-

1. / बैना के बछड़े, गुलपियार के ड्योढ़े / (पृ. 130)
2. / चोर के अगोश, सौकार के लड़ा / (पृ. 145)
3. / ले मेरे बानि, मार स्यार ज्वान / (पृ. 145)
4. / घोघड़ीनार को ठंड्या पाणी, दांतों में कनकनी
   तेरो घर तो गोदी, मेरो घर भर्णी / (पृ. 175)

5. / मौत भले ही दूर उड़ गया, मगर मुंह के स्वाद के लिए भी, कानों के सुख के लिए भनभनाहट जैसी छोड़ गया /
(पृ. 220)

6. / वार के कोढ़ी की पार के कोढ़ी को नमस्कार /
(पृ. 255)

7. / जब चरके तो गाई घर आ गई थी गोठ पड़ी पगुराते में जो हाथ के साथ पड़ी / (पृ. 260)

8. / निहामेर बेटा स्वारी हरमेश्वरा - ब - होतिक देखोगी /
पृ. 283)

9. / आप तो हुआ बामुण मैं हुआ जजमान / (पृ. 299)

भैरवप्रसाद गुप्त के "सती मैया का चौरा" में ठेठ आंचलिक प्रकृति की कहावतें छिटपुट ही देखने को मिलती हैं। जैसे --

/ रात कहे पिया नदिया गहरा देखब,
होत भिनसार चितहरि गवन करिया / (पृ. 561)

उपर्युक्त उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आलोच्य आंचलिक उपन्यासों में ठेठ आंचलिक भाषा का प्रयोग जितनी सहजता से मिलता है उतनी सहजता ठेठ कहावतों के प्रयोग में नहीं मिलती। वास्तव में लेखक की दृष्टि कहावतों की उस सम्पदा पर पहुंच जाती है जो अंचलों की स्वाभाविक सीमाओं में न बंधकर आंचलिक सेतु के रूप में प्रकट होती है किन्तु कुछ कहावतें ठेठ आंचलिक जीवन पर भी आधारित मिल जाती हैं।

## 1·2 अन्तक्षेत्रीय कहावतें :

इस स्तर पर वे कहावतें मिलती हैं जो भाषिक रचना की दृष्टि से तो अंचल-विशेष से संबंधित मालूम नहीं पड़ती किन्तु उनका प्रचलन अन्तक्षेत्रीय होता है । यह अन्तक्षेत्रीय प्रचलन परिनिष्ठित हिंदी की व्यापकता से अलग चीज है अर्थात् एक अंचल दूसरे अंचल की सम्पदा को ग्रहण करता है फिर भी उच्चवर्गीय मानसिकता से मुक्त रहता है । इस प्रकार की लोकोक्तियाँ और कहावतें आंचलिक उपन्यासों में अधिक आई हैं । कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं --

1· / तेल जरे तेली का और जान निकले मशालची की /
(बल॰ 138)
2· / जले गाँव पर सूरज भी जलता है / (दुख॰ 150)
3· / आग लगाकर जमालो दूर खड़ी / (दुख॰ 154)
4· / दस भाई सौ लगा भाई / (जं॰ के फूल 39)
5· / जब छूत न पौना कौरी से कठौती / (कब तक पु॰ 180)
6· / गाड़ी देख के लाड़ी के पाँव फूलने लगते हैं /
(कब तक पु॰ 264)
7· / जब गुड़ गंजन सहे तो मिसरी नाम धराये /
(मै॰ आँ॰ 28)
8· / जोरू जमीन जोर का, नहीं तो किसी और का /
(मै॰ आँ॰ 153)
9· / धान न बोले, बोले भूसा टन / (मै॰ आँ॰ 211)
10· / हाथ-पैरों में चूहे-बिल्ला दौड़ना / (पो॰ 6)

11· / मति बिगरी, तकदीर पतरी / (हो· 26)

12· / न दूध के काम की, न गोश्त के काम की
जनम भेल गाई खेत उजाड़ने में आप / (हो· 59)

13· / नामी रोवे नाम को, और गांडू रोवे पेट को /
(हो· 62)

14· / हाथ में आरसी है और अपनी ही सूरत है / (हो· 75)

15· / पीछे लगे तो कुत्ता, आगे दौड़े तो हिरन / (हो· 210)

16· / गंगासिंह गया तो नहीं, मगर हरसिंह के हिस्से का हकुआर
छोड़ के / (हो· 210)

17· / खरगोश अपने हाथ नहीं आया, नहीं तो, गीदड़ों ने
तो उसे खूब नोच-नोचकर खाया / (हो· 221)

18· / जब फल-फूल खत्म हो गए उस समय बाबर बोट में चढ़ा /
(हो· 245)

19· / न आगे पालसींग, न पीछे पालसींग
टीकमसिंग की नजर अपनी ही टांगों तक / (हो· 256)

20· / गुनहगार गंगासिंग, मगर बराबर शेरसिंग / (हो· 263)

21· / जिसका मुंह बने, उसी नो हल के बैल चले / (हो· 283)

22· / भल आवे एक कोस, अपजस आवे हजार कोस /
(हो· 322)

23. / हार से हरियाली को लोटन लगे कपास / (सती मै· 58)

24· / अन्धा कुत्ता बतासे भूँके / (सती मै· 582)

25· / जिस तोड़ा पड़ पत्थर / (बुद्· 102)

इन कहावतों-लोकोक्तियों में व्याप्त अर्थ आलोच्य उपन्यासों के तमाम अंचलों में लोकप्रिय है । भाषा का अन्तर रहते हुए भी अर्थ-ग्रहण में बाधक नहीं बनता । कुछ ऐसी कहावतें भी हैं जिनकी आकृति और अर्थ दोनों ही समान हैं और इसी रूप में विभिन्न अंचलों में वे प्रचलित मिलती हैं । उदाहरण के लिए एक कहावत को लिया जा सकता है : -

/ आग लगन्ते झोंपड़ा, जो मिले सो लाभ / (मै० आं० 179)

/ आग लगते झोंपड़ी, जो निकले सो लाभ /

(ब० के बेटे 29)

/ आग लगन्ते झोंपड़ी, जो आवे सो हाथ /

(रति० की चाची 95)

उक्त कहावत का अर्थ अन्य रूपों में भी अंचलों में मिलता है जैसे -- "जो धनु दीखे जातु, तो आधो लीजे बाँट" तथा "भागते भूत की लंगोटी ही काफी है ।

इसके विपरीत कुछ ऐसी कहावतें भी हैं जिनकी भाषा तो आंचलिक नहीं है किन्तु जिनका अर्थ ठेठ आंचलिक जीवन से जुड़ा है । उदाहरणार्थ यह कहावत ली जा सकती है -- / घन पत्थर पर पड़ता है, चोट मछली को लगती है / इसका संबंध एक बिल्कुल स्थानीय जीवन पद्धति से है । पहाड़ी नदियों में गोल चपटे पत्थर बहुत होते हैं और उनके अन्दर मछलियाँ आश्रय लेती हैं । मछलियाँ मारने के लिए लोग घन से पत्थरों के ऊपरी भाग पर जोर से आघात करते हैं । (हो० 18) किन्तु इस प्रकार की कहावतें कम ही हैं । एक और कहावत इस प्रकार की है - / जनेऊ पत्थर पर रह जाना / इसका अर्थ इस प्रकार है - जब आदमी

मर जाता है तो, यदि वह यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ — उसकी पुरानी ~~पुरानी~~ जनेऊ उतारकर उसे नयी जनेऊ पहनाते हैं। पुराना पत्थर पर रख दी जाती है। (मै॰ आं॰ 258)

## 1·3 भाषा से अंचल की ओर :

यह पहले देखा जा चुका है कि अंचल के जनमानस में लोकोक्ति को अन्य क्षेत्रों से ग्रहण करने की क्षमता और प्रवृत्ति मिलती है। इस प्रवृत्ति से प्रेरित होकर लोकमानस परिनिष्ठित भाषा की लोकोक्तियों को भी ग्रहण कर लेता है। ऐसी बहुत सी लोकोक्ति और कहावतें आंचलिक उपन्यासों में मिलती हैं। उदाहरण के लिए कुछ लोकोक्तियाँ नीचे प्रस्तुत हैं।

1· / माले मुफ्त बेरहम / (दुख॰ 67)
2· / तिल का ताड़ / (जं॰ के फूल 64)
3· / जहाँ मेल तहाँ सरग है / (मै॰ आं॰ 27)
4· / सोहबते सिर उसी में तासीर / (रो॰ 34)
5· / मुँह लगाया कुत्ता मुँह को चाटे / (हो॰ 258)
6· / मजा मारे गाजी मियाँ, मार खाए डफाली /
(सती मै॰ 289)
7· / ऊपर से चाका-चाकी, अन्दर से दगाबाजी /
(सती मै॰ 560)
8· / बड़े बजार पाठ तारिव और बीजे / (सती मै॰ 648)

9. / जो चार मीठे से मर जाय, उसे जहर पिलाना ना चाहिए /
§ सती मे॰ 696 §

10. / नाई कहे छिपा-छिपा, छिपा कहे भूल लगवा ले /
§ सती मे॰ 712 §

इन कहावतों और लोकोक्तियों का स्रोत आंचलिक नहीं है। ये उच्चतर स्रोत से गृहीत लोकोक्तियां हैं जो लोकप्रिय हो गई हैं।

## 1.4 साहित्य से आगत :

प्रसिद्ध या लोकप्रिय कवियों की कुछ उक्तियां लोक-प्रचलित हो जाती हैं। कभी पूरे का पूरा छन्द ले लिया जाता है और कभी उस छन्द के कुछ अंश ही लोकोक्ति रूप में ले लिए जाते हैं। ग्रहण की यह प्रक्रिया आंचलिक मानस की ही है, किन्तु कुछ उच्चस्तरीय स्थिति की सूचना देती है। इनके प्रयोग से भी आंचलिक चरित्र उभरता है। कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं :-

1. / धरम छोड़ जो अधरम करहि, तो तउ सुगंधी होकर मरहिं /
§ कुडू॰ 137 §

2. / रहिमन चाक कुम्हार के मांगे दिया न देय
छिल में डंडा डारके जो चाहे गहि लेय / § जन॰ 150 §

3. / मन मैला तन सुथरो, उल्टी जग की रीत / § मे॰ अं॰ 187 §

4. / धरती फाटे मेघ जल, कपड़ा फाटे डोर
तन फाटे की औषधी, मन फाटे नहिं ठौर / § मे॰ अं॰ 262 §

5. / बातन हाथी पावत है मना, बातन हाथी पाँव /
( दो० 167 )

6. / चोटें लागी चित्त में, आँसू निकले आँख
ओरे मूरख मन दुख बिसरा ले, उड़े कबूतर पाँख /
( दो० 312 )

7. / माँगत-माँगत मान घटे, अरु प्रीत घटे नित के जाए से
ओछे की संगत बुद्धि घटे, अरु क्रोध घटे मन के समझाए से /
( सतो मै० 86 )

8. / बन में फूली केतकी, बन में ही मुरझाय
भँवरा उड़ा अकाश को, उड़के लौट न आय /
( दो० 309 )

जब लोकमानस साहित्य से उक्तियों को ग्रहण करता है तब उसे इस बात की चिन्ता नहीं होती कि इसका रचयिता कौन है अथवा जिस उक्ति को वह ग्रहण कर रहा है वह पूरा छन्द है अथवा अधूरा। उसकी दृष्टि में लोकोक्ति बनने की योग्यता ही रहती है। इस प्रकार से गृहीत अंश भी सामाजिक जीवन में तैरते हुए मिल जाते हैं। लोक की दृष्टि यह भी रहती है कि साहित्य के जिस अंश को वह ग्रहण कर रहा है वह संक्षिप्त है या नहीं। इस दृष्टि से या तो दोहा जैसा छोटा छन्द ठीक गृहीत होता है अथवा बड़े छन्द का छोटा अंश।

इस विवेचन से जनता के भाषिक व्यवहार का चरित्र स्पष्ट होता है। जहाँ जनता द्वारा प्रयुक्त भाषा की व्याकरणिक संरचना अचेतन रूप से परिनिष्ठित भाषा से अलग पड़ती जाती है वहाँ लोकोक्तियों और कहावतों के प्रयोग में उसका चेतन भाषा-व्यवहार प्रकट होता है।

ये मनस्तत्व व्यापार वे हैं जिनमें जीवन अपनी आदिम या मौलिक स्थिति में रहता है अर्थात् इन स्थितियों में उसका मानस समकालीन दबावों और अध्यारोपणों से मुक्त हो जाता है । जब विषय और व्यापार आदिम प्रकृति के होते हैं तो उनसे जुड़े हुए गीतों की व्यंजना भी ठेठ शैली में होती है ।

## 2·21 जादू-टोना से संबंधित गीत :

सभ्यता के आविर्भाव से ही परप्राकृतिक या परामानवीय शक्तियों के प्रति मानव की प्रतिक्रिया दो प्रकार की रही है : जादुई और धार्मिक । जादुई प्रतिक्रिया परप्राकृतिक शक्तियों को अभिभूत करके उनके द्वारा कार्यसिद्धि के आयोजन से संबंधित है । जबकि धार्मिक प्रतिक्रिया उन शक्तियों को संतुष्ट करके अपना कार्यसिद्धि करने का अनुष्ठान है । निश्चित रूप से पहले प्रतिक्रिया में ठेठ और शक्तिशाली भाषा रूपों का प्रयोग होता है । इसके द्वारा जो भावात्मक भूमिका बनती है वह धार्मिक गीतों की भावात्मक भूमिका से अलग हो जाती है । दिव्य शक्तियों को वश में करने के लिए प्रायः ओझाइयों का प्रयोग होता है । रेणु ने "मैला आँचल" में इस प्रकार का एक मंत्र दिया है --

"अरे बाप रे रानी मैया, बड़ा अनकाल बाजे
दाहिने डाकिन, बायें पिशाच बोले
दोहाय गौरा पारबती ईसर महादेव
मैना जोगिन, जो सत से बिसत जाय
............. फों फों फूट बहराय ।"[8]

---

8· मै· आँ· 229

इसमें दिव्य शक्तियों को "दोहाई" या "आन" की प्रक्रिया से बाँधने की चेष्टा की गई है। इसी प्रकार का एक मंत्र शैलेश मटियानी ने "होलदार" में दिया है -- "किनार-किनार किन क्यारकुटी (?), छिनार् छिनार् छिन ध्यानकुटी (?), हेर सेमराजा, महाराजन के राजा। ......... चमत्कारी कल्याणकारी शक्कारी (?) देवता। गुरु का ज्ञान, ध्यान का ध्यान समष्टा व्यापमान विमष्टा, त्रिमुखिया त्रिशूल, अष्टमुखी डाल गेंडावाम (?) की .......... जोहो रे, मेरे महापराक्रमी गुरु के गुण्डे, देखबन्ध (?) निर्बंध कर दिया तो आपकी गेर का मसान किस खेड़ी-चमार की गिनती में आता है? .......... साथ दे चरणों का चबूया (?), शीश का भवरवा (?) बारह बना दे आफनगोरिया (?) मसान, तुकतुकिया भूत को ......... पिछवासी जोगन की सतफेरिया अकाल-अकाल लटियों को उसके मुंड-मुंड से प्याज के छिलकों जैसा अलग उतार दे, महाबली पद्मासनी सेमराजा। ...........[1] इस मंत्र में भाषा-विन्यास और भी ठेठ है। मंत्र की भाषा गीतों की भाषा की अपेक्षा कम विकसित होती है क्योंकि जिस भाषा में मंत्र सिद्ध होता है उस भाषा में परिवर्तन कर देने से मंत्र की शक्ति क्षीण हो जाती है -- ऐसा विश्वास रहता है। उपर्युक्त मंत्र में "आह्वान" और "आदेश" की मंत्र-विधियाँ समन्वित हैं। इन विधियों की भाषा और भी शक्तिशाली बनाने की चेष्टा की जाती है। शक्तिशाली बनाने के लिए कुछ निरर्थक ध्वनियाँ भी प्रयुक्त की जाती हैं, जिनके द्वारा नाद-शक्ति का आविर्भाव होता है। वास्तविक मानस मंत्रों के अर्थ को ग्रहण करने की चेष्टा नहीं करता। वह शक्तिशाली ध्वनि-संयोजनाओं से अभिभूत हो जाता है। भाषा की इस भूमिका के द्वारा अंचल के उसी अर्द्धचेतन या अवचेतन मन को उजागर करने की चेष्टा उपन्यासकारों ने की है।

---

1. हो. 250

मंत्रों की भांति ही शक्तिशाली भाषा-विन्यास कुछ गीतों में रहता है। इन गीतों का सम्बन्ध देवी, भैरव, नागुरा, प्रेत आदि से होता है। इन गीतों की भाषा उच्चस्तरीय वैष्णव या शैव गीतों की भाषा से भिन्न होती है अर्थात् इनमें भाषा का अप्रभावित रूप ही प्रयुक्त होता है। राजेन्द्र अवस्थी ने "जंगल के फूल" में एक गीत जोड़ा है। इस गीत का गायन गोदना गोदने के अवसर पर किया जाता है : --

"अरजी बिनती माँ हमारा
उस दिन को बचन तुमारा
सूजी की मार उतारा।"[10]

[ हे माँ, हमारी प्रार्थना सुन लो। इस दिन तुमने वचन दिया था, सूजी की जलन उतार दो। ] यह मान्यता है कि गोदना सुन्दरता में चार चाँद लगा देते हैं। अच्छे से अच्छा प्रीतम मिलता है। मरने के बाद गोदनेनरक की यातना से बचाएगी। देवता हाथों में भाला नहीं चुभाएगा।

यह आदिवासी मानस की अवचेतन प्रक्रिया से संबंधित गीत है। आज भी आदिवासियों में बलि की प्रथा प्रचलित है। "जंगल के फूल" में लोकदेवता [ करदेंगल ] के लिए जब बलि चढ़ाई जाती है तब गीत गाए जाते हैं। एक गीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं : -

"दादा रे दादा रे,
छोटी छोटी शिकार
बानी बानी पुकार।"[11]

---

10. जं. के फूल 166  11. वही 122-23

इस प्रकार जादू-टोनों से संबंधित गीत और मंत्रों द्वारा जो भावनायें भूमिका उपन्यासों में उपस्थित की गई है उनमें आंचलिक चरित्र की गहराईयां उजागर होती हैं। इन गीतों के अतिरिक्त अंचल के मानस की इन स्थितियों की अभिव्यक्ति संभव नहीं हो पाती।

2.22 ऋतूत्सव : पर्व गीत :

आंचलिक जीवन में ऋतुओं का विशेष महत्व होता है। इनका सम्बन्ध उसके आर्थिक जीवन से भी रहता है। आर्थिक जीवन की सिद्धि उल्लास में बदल जाती है और यह उल्लास गीतों में प्रस्फुटित हो जाता है। भाव की दृष्टि से एक उद्दाम वातावरण इन गीतों में समा जाता है। भाषा की दृष्टि से अंचल की सरल-तरल भाषा स्थितियां गीतान्तरित होती है। इस दृष्टि से दो ऋतुएं विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती हैं -- बसन्त और शरद्। बसन्त जैसे शिशिर की यातनाओं का दमन करके एक देवता के रूप में अवतरित होता है और उसी समय लहलहे खेत पककर आर्थिक समृद्धि की सूचना देते हैं। अंचल का मानस झूम उठता है, या गा उठता है। आंचलिक उपन्यासों में इस ऋतु से संबंधित कुछ गीत अनुस्यूत मिलते हैं। "जंगल के फूल" में चैत मास की अनुभूति गीत के माध्यम से व्यक्त की गई है। आदिवासियों का चैत गीत इस प्रकार चलता है --

"तेना नामुर ना मुर रे ना रे ना ना
तुमी नाका जोडा डोंगा, हामी नाकुन्दे हडक सरकारवो
रेवल के दण्ड पकी दरमा ठाना सो सड़क
हो ते ना ना मुर ऽऽ

परन्तु गोबर की भावना तत्काल दूना के बोल्दे छेना
सरकार हो
दुल्हर कुती हो दुकान मठाना दुल्हा कुती ले छेना
हो ते ना ना मुर
गाय हो नाव हीये हीये
बेटी हो नाव हीये हीये
पान टोकुक जो हीये
तुलसी डोंगी हो हीये
हो ते ना ना मुरऽ ऽऽ ऽऽऽ ।"[12]

"सागर, लहरें और मनुष्य" में मछुए एक गीत के माध्यम से अपने मानस को गेय बनाते हैं। अवसर है होली का, और होली पर जो मानसिक रूप घटित होता है उसके लिए भाषा भी ठेठ अंचल का प्रतिनिधित्व करने लगती है। गीत इस प्रकार चलता है --

"हाय हाय होली खेला तू जायगो
हाय हाय होली उतारु जायगो
चाबाचा काल केट बेडनी जाये
बारा मालन्धोरवा मारी होलू वाई
खेलत जाइ और उतत जाई ।।"[13]

इस प्रकार आंचलिक उपन्यासकार होली गीतों के माध्यम से उत्सवगत आंचलिक मानस को उभारता है। इसी प्रकार शरद ऋतु वर्षा की विभीषिका पर विजय प्राप्त करती हुई घटित होती है। इस ऋतु की मानसिकता दीवाली पर उसी प्रकार केन्द्रित हो जाती है जिस प्रकार बसन्त की मानसिकता होली पर केन्द्रित होती है।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

12. जं० के फूल 112 13. सा० ल० म० 222

वनवासियाँ भी इस प्रकाश पर्व पर भाषायी और सांस्कृतिक एवं व्यवहार को वैशिष्ट्य के साथ प्रकट करती हैं । "जंगल के फूल" का, आदिवासी अंचल का एक गीत प्रस्तुत है --

"तिना नामुर ना ना रे ना ना नामुर
गायता ना लोन केकेरा लयोरे
तानार लोने वासा ले लयोरे
कोना लोने मुंजरा लकोरे ।"[14]

वास्तव में प्रथा यह है धार्मिक दृष्टि से ग्राम प्रमुख "गायता" के घर आदिवासी स्त्रियाँ दीवाली पर नाचने जाती हैं । गायता के संबंध में उपर्युक्त हास-परिहासपूर्ण गीत गाया जाता है । ऊपर के गीत का भाव कुछ इस प्रकार है --

"गायता का घर किधर है ?
गायता का घर नजदीक है ।
उसके घर में क्या है ?
उसके घर में बन्दर है ।"

इस प्रकार हास्य-गीत भी मचल उठता है । इस प्रकार के गीतों की भूमिका में अंचल की ठेठ भाषा का विलास ही रहता है जैसे आंचलिक मानस अपने आप में स्थित होकर अपने निजी भाषा-व्यवहार में प्रवृत्त हो रहा हो ।

---

14. जं. के फूल 235

## 2·23 संस्कार गीत :

संस्कार मानव जीवन की विशिष्ट स्थितियों से संबंधित अनुष्ठान हैं। विशेष रूप से ये दो स्थितियों का संधिकाल ही होता है। केवल इन संस्कारों के उच्चस्तरीय आनुष्ठानिक विधान में पंडित या पुरोहित की सहायता भी लेता है और इन स्थितियों को लोकगीत समर्पित करके केवल अनुष्ठान की निजी भूमिका भी तैयार करता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के सोलह संस्कार शास्त्र विहित भी हैं। आंचलिक उपन्यासकारों ने सभी संस्कारों की औपचारिकता को नहीं समेटा है। केवल दो संस्कारों से संबंधित गीत कुछ उपन्यासों में मिलते हैं -- विवाह संस्कार और मृत्यु।

विवाह जनजीवन की एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना है। अवचेतन रूप से नारि यह अनुभव करती है कि उसके अपने विस्तार की भूमिका बन रही है साथ ही राग और प्रेम की प्रसुप्त अंकुरताएँ एक साथ फूट पड़ती हैं। यद्यपि संस्कार गीतमय ही होता है तथापि उपन्यासकारों ने केवल कुछ गीत-पंक्तियाँ ही दी हैं। विवाह के समय जहाँ पुरोहित वेदोच्चार के द्वारा विवाह को आनुष्ठानिक भूमिका प्रदान करता है वहाँ लोकमानस शिव-पार्वती, सीताराम से संबंधित मंगलगीतों का उच्चारण करता है। रेणु ने "मैला आँचल" में "शिवपार्वती" के मंगलगीत की कुछ पंक्तियाँ वातावरण की सजीवता के लिए दी है --

"एक बेर गेली" गौरा तोहरो नहरवा से,
बड़ठे ने देनक पुकार,
कोदो के खिचड़ी खेसारी के साग .... ।"[15]

---

15· मै· आं· 192

बारात का आगमन, उसका स्वागत और उसके रूप से संबंधित गीत भी अंचल में रचे गए हैं। रेणु ने "जुलूस" में बारात संबंधी गीत भी जोड़े हैं। एक गीत इस प्रकार है --

"बाँदो बनियार साजिलो बारात जो रे बाँदो
बनियार रे ए ए ए
अरे, एक साथ हाथी साजिलो
दुइ साथ घोड़ा
हाथीर उपर चौधा साजे
बाँदो अधिकारी .....
आ रे बाँदो बनियार रे .. ए .. ए .. ।"[16]

यदि अंचल वैवाहिक रीतियों को जीता है तो मृत्यु की भयावह स्थिति में भी गाता है। यदि गीत में उसका मानसोल्लास उमड़ता है तो उसके स्वर मृत्यु के सन्दर्भ में अश्रु-विगलित भी हो जाते हैं। इस संस्कार के गीतों का समावेश भी आंचलिक उपन्यासों में हुआ है। रेणु के "मैला आँचल" में मृत्यु संस्कार के समय की सामग्री का उल्लेख एक गीत द्वारा इस प्रकार हुआ है --

"आ रे काँचहि बाँस के खाट रे खटोलना
आकेर मूँज के रसे डोर।
हाँ रे मोहो रे ए ए ए हाँ आ आ रामा रामा।
चार समाजी मिली डोलिया उठाओल
लइ चलल जमुना के ओर।"[17]

---

16. जु. 93    17. मै. आँ. 258

परम्परा से जीवन का प्रतीक "सुआ" ( शुक ) माना गया है । जिस प्रकार सुए को पालपोसकर बड़ा किया जाता है और एक दिन पिंजड़े से मुक्त होकर वह उड़ जाता है उसी प्रकार जीव भी इस शरीर के पिंजड़े से उड़ जाता है। इस आशय की प्रतीक रचना इस गीत में है --

"हाँ रे, बड़ा रे जतन से सुगा एक हे पोसल,
माखन दुधवा पियाए ।
हाँ रे, सेहो रे सुगना बिरिछी चढि बैठल
पिंजडा रे धरती लोटाये ...... ।"[18]

"जंगल के फूल" में आंचलिक मृत्युगीत की दो पंक्तियां इस प्रकार चलती है --

"रोले दादरो रोले अह अह अह
ओह ओह राजाल रे ए ए र ।"[19]

एक दूसरे गीत में इस सत्य का उद्घाटन किया गया है कि सोलह पहल की दुनिया और नौ खण्डों की धरती पर सभी मनुष्य मरते हैं ।

"सोरा धाड़ धरती रोप देवता
नव खण्डु पिरथीर पले
सिगार मानोर दिवू रोप देवा
दगाल हाप वानोर र पले ।"[20]

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

18. मै. आँ. 41 19. जं. के फूल 135-36

20. वही - 135-36

इस प्रकार के संस्कार गीत आंचलिक मानस से अनिवार्य रूप से चिपके हुए हैं । इन का उपयोग करके उपन्यासकार ने अंचल के वातावरण को जीवन्त किया है ।

2.24 श्रम-गीत :

यदि अंचल का कलात्मक भाषा-व्यवहार उल्लास और शोक के रागात्मक क्षणों में ढलता है तो श्रम के क्षण भी गीत के द्वारा गूंज उठते हैं । आंचलिक जीवन का सबसे बड़ा सत्य श्रम ही है । खेत में खलिहान में, वन में विजन में, ताल में पोखर में -- सब जगह उत्पादक श्रम की प्रक्रिया होती है और श्रमजल छलक आता है, मांसपेशियों में तनाव आ जाता है और इन सबके ऊपर गीतों का स्वर अवतरित होता है मानों श्रम देवता की पूजा का ही अनुष्ठान हो रहा हो ।

"वरुण के बेटे" का मछुआ मांझी नाव पर बैठकर चल रहा है । पतवार पानी की लहरों से संघर्ष करती हुई नाव को कहीं दूर मछलियों के देश में ले जा रही है । दोनों हाथों से पतवारों का संचालन करते हुए मछुआ मांझी श्रम की ताल पर गीत गाता जा रहा है --

"ऊपर टान
हइ यो !
बाएं दबके
हइ यो !
ठीक रखना
हइ यों !

रेहु बचारी
हुइ यौं ।
मोदनी भुन्नार
हुइ यौं !
नैनी भाकुर
हुइ यौं !
उजला सोना,
हुइ यौं ।
लाल वादी,
हुइ यौं !
गंगा महयार,
हुइ यौं !
कमला मैयार,
हुइ यौं !
कोसी मैयार,
हुइ यौं !
भारतमाता,
हुइ यौं !
गान्धी बाबा
हुइ यौं !
बाल गंगाधर
हुइ यौं !
लाल बहादुर
हुइ यौं !* [21]

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

21. व० के बेटे 63–64

जिस मछली की तलाश में मांझी बना जा रहा है उस मछली को लेकर भी गीत की रचना होती है। यहाँ भाषा ठेठ नहीं रहती अन्तर्क्षेत्रीय अर्द्धपरिनिष्ठित भाषा में गीत की रचना होती है। जहाँ पहला गीत श्रम की ताल और उसकी गति पर चलता था वहाँ मछली-गीत लय के साथ गेय बनता है। गीत इस प्रकार है :--

"कबहूँ पकड़ में न आवे मछरिया
झुलमी मछरिया चंचल मछरिया
कबहूँ पकड़ में न आवे मछरिया
ताल में खेले, तलइया में खेले
कुइयाँ में डुबकी लगावे मछरिया।
कबहूँ पकड़ में न आवे मछरिया।
रात की बेरिया बिल्कुल अकेला
दिन में नजर भटकावे मछरिया।
कबहूँ पकड़ में न आवे मछरिया।"[22]

केवट वरुण का बेटा है और वरुण के बेटे का संबंध लहरों से और मछलियों से घनिष्ट होता है। इन्हीं में उनके आर्थिक जीवन की पद्धति व्याप्त रहती है और इन्हीं में मनोरंजन के क्षण भी हँसते हैं। बल्कि अर्थ और मनोरंजन एक हो जाते हैं। श्रम के क्षणों में गीत की पंक्ति छोटी हो जाती है और मनोरंजन के क्षणों में गीत की लय कुछ अधिक खिंच जाती है। श्रम के क्षणों में श्रम-ध्वनियों की आवृत्ति प्रमुख हो जाती है -- "हुई यो।" तथा मनोरंजन के गीतों में आलाप दीर्घतर हो जाता है -- "मछरिया।।"

---

22. व. के बेटे 25

यह है सघन वन और बल खाती हुई पगडंडियों का अंचल, जैसे जंगल के फूल ही खिल उठे हों । जीवनयापन के लिए रात-दिन संघर्ष करता हुआ आदिवासी कभी लकड़ी काटता हुआ और कभी पत्तों से बात करता हुआ मिलता है -- अंचल है बस्तर का । यदि बस्तर का बेटा मछलियों की तलाश में निकलता है तो जंगल का फूल आदिवासी आखेट के लिए चलता है । आखेट उसका अर्थ-क्रिया है और गीत उस क्रिया का भावात्मक और लोक साहित्यिक भूमिका प्रस्तुत करता है । शिकारियों का आह्वान गीत इस प्रकार चलता है :--

"बीजल माटी कोरया मामा
करीगिर करीगिर शिकारी शिकारी
केना का गुलेल दाऊ
केना का डोरी वो
दाऊ सुना सुना केना का गुलेल
बांस के तो गुलेल बाबू
सन सुतरी डोरया बाबू ..... ।"[23]

(बिजली मिट्टी मामा के काले रंग की तरह है । शिकारियों, अपनी बन्दूकें संभालो, गुलेल काहे का बनी है मां, रस्सी काहे की बनी है, बांस की गुलेल है और सन की सुतरी की रस्सी है)

आखेटक आदिवासी की दृष्टि में श्रम के साथ एक उल्लासमय उत्सव भी है -- हुरें हुरें हुरें ! और जंगली जानवर भी उसके दृष्टिपथ में है । गीत इस मधुर वातावरण को समेटकर चल रहा है ।

---

23. जं. के फूल 123-24

"ना मुर ना हो, तीना ना मुर
नाना हो ना मुर ना
हुरें हुरें हुरें ।
तीना ना मुर नाना तीमुर ना हो ओ ओ
हो भाबू केतो डेरा रे हो
कहाँ होकर डेरा
हो भाबू केतो डेरा रे हो ओ ओ ।"[24]

केवल वन्य पशु ही आदिवासी के आर्थिक जीवन में नहीं है, वनों की वृक्ष-सम्पदा भी उसके श्रम का संस्पर्श पाकर धन का रूप ग्रहण कर लेती है । बस्तर अंचल की गोंड जाति का युवक लकड़ी काटने के लिए चलता है । कुल्हाड़ी चलती है, उसकी मांसपेशियाँ चलती हैं और वृक्षों की सम्पदा उसके आर्थिक जीवन को समृद्ध करती है । गीत यह है ----

"विरवोंडी पण्डो रोगों रोमो
कोरप पवधीते वायकमू सांगो
मियार वाय वाय पवलोरम सांगो
कोरप हाय वायकम सांगो
मियार वाय वाय हायलोरर सांगो
हुर्री तासी वायकम सांगो
हुर्री तासी वायकम सांगो
मियार वाय वाय हुर्री तसलोरम सांगो ।"[25]

---

24.. जं. के फूल पृ. 126

25. जं. के फूल पृ. 71

§ चिरपोंडी के जंगल में रामों की पहाड़ी है । हम वहाँ झाड़ की डगालें काटने जाएंगी । तुम्हारे आने के पहले हम डगालें काट डालेंगी । हम डगालों को मैदान में फैलाने के लिए जाएंगी । तुम्हारे आने के पहले हम डगालें मैदान में फैला देंगी । हम डगालों में आग लगाने जाएंगी, तुम्हारे आने के पहले हम उनमें आग लगा देंगी । §

गोंड जाति का पुरुष ही श्रमिक नहीं, गोंड नारी भी श्रम करके आर्थिक जीवन व्यवस्था में पुरुष का हाथ बंटाती है । गोंड नारियों का प्रतिनिधित्व "ओजमा" कर रही है । वह जनपल तोड़कर बाजार में ले जाती है । इस नारी क्रिया के साथ मौज-मस्ती भरे कुछ कलात्मक प्रश्नोत्तर भी जुड़े हुए हैं । श्रमशील नारी का रूप निम्नलिखित आंचलिक गीत में चित्रित है --

"किटे किटे बाग परेला
काबर काबर कोन टोरेला
काबर काबर ओजमा टोरेला
छई छई बोरी कोन बेचेला
छई छई बोरी मनई बेचेला
नकटी पैसा कोन ओकेला
नकटी पैसा को जनाय ओकेला ।"[26]

§ भरे तैयार है, उन्हें चुके-चुके कौन तोड़ रहा है ? चुके-चुके ओजमा तोड़ रही है । उन्हें बाजार ले जाकर कौन बेचेगा ? बाजार में मनई ले जाकर बेचेगा । वह खोटा पैसा किसने लिया ? जनाय ने वह खोटा पैसा लिया है । §

---

26. जं. के कल 106

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अंचल का सत्य श्रम है और उसका "सुन्दर" गीत में उद्घाटित होता है और इन दोनों के सम्मिलन में शिव का निवास है। श्रम-गीतों में भाषा "सत्य" के स्तर पर भी सार्थक भूमिका बनाती है और "सुन्दर" के स्तर पर भी। मौज-मस्ती भरे प्रश्नोत्तर सुन्दर की अभिव्यक्ति में नियोजित होते हैं तो "हुड़ यो" सत्य के वाहक हैं। भाषा इन दोनों के साथ अपनी समग्र आंचलिक विशेषताओं के साथ लगी हुई है। यह भाषा चाहे बोधगम्य न हो किन्तु इसके आधार पर अंचल का बिम्ब ग्रहण अवश्य होता है।

## 2·25 भावगीत :

धर्म, जादू, अनुष्ठान, श्रम आदि के गीतों के साथ-साथ अंचल कभी-कभी शुद्ध भावों में भी झूम उठता है। भावगीतों की भाषा भी अधिक सरल हो जाती है। ठेठ आंचलिक प्रयुक्तियों के साथ-साथ लोकप्रिय अभिव्यक्तियाँ भी इनके साथ सम्मिलित हो जाती हैं। लोकप्रिय प्रयुक्तियाँ अपेक्षाकृत अधिक बोधगम्य होती हैं। इन भावगीतों में प्रमुख स्थान प्रेम और विरह का है। अंचल प्रेम की भिन्न-भिन्न स्थितियों और अभिव्यक्तियों में विश्वास नहीं करता। उनमें अगम्य प्रवाह दिखाई पड़ता है। इन गीतों की शैली प्रायः कथोपकथन की शैली होती है। कुमाऊँ अंचल का एक युवक "छम-छम" "झम-झम" करती हुई एक युवती को सम्बोधित करता हुआ कहता है कि तेरे इस प्रकार करने से मेरा मन चंचल हो उठता है —

"मेरा सुवा गोविन्दा वे, डाल छू ले मैछिट
छणकनी डांवरा, वे, डाल छूटे ले ने छिट
तेरि माया आणीछ, वे, डाल छू ले मैछिट
मेर हिया रणीछ, वे, डाल छू ...... ।"27

दूसरी ओर कुमाऊँ अंचल की युवती भी अपने मन की प्रेमानुभूतियों की कलात्मक स्वीकृति करती है --

"बानर नों भोई
कनेली में मारी गोठे, नाम कसी गोई
मुखड़ी मे मे-मैं हुं हुं
मन मां डो होई ।"28

कथोपकथन की शैली और भी कलात्मक होकर "मेला अंचल" में अवतरित हुई । एक सखी दूसरे से पूछती है --

" ..... नहीं तोरा आडे प्यारी सेग तरबरिया ले
कोनहि बीज्या ले मारलू कटोरिया पे
छरती लोटा बेला बेपीर जी ई ई ई .... ।"29

इस गीत में भी युवती स्वीकार करती है कि उसका मन प्रेम की डोर में बंध गया है --

"मरे हमार सब कुछ पनिबहा ले
फसी गइली परेम के डोर जी ! 30

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

27· हो· 136 28· वही 7

29· मे· अं· 52 30· वही 52

वास्तव में ये गीत अन्तर्क्षेत्रीय लोकगीतों का स्वाद ही देते हैं। इनका कोई विशिष्ट अवसर नहीं होता। किसी भी स्वीत क्षण में ये गीत उग आते हैं और चेतन से अचेतन तक इनकी आभा फैल जाती है।

भावगीतों में विरहगीत भी सम्मिलित होते हैं। पूर्वांचलों में "विरह" गीतों की परम्परा बहुत ही दीर्घ और व्यापक है। विरह के अनेक अवसर जीवन में घटित होते हैं। अंचल विरह के क्षण में भी उतना ही रमता है जितना कि मिलन के क्षण में। "जंगल के फूल" में विरह का एक विशिष्ट अवसर उपस्थित है। "घोटुल" वह स्थान है जहां पर अविवाहित युवक और युवतियां रहते हैं। विदाई के समय का एक गीत इस प्रकार है --

"नियारा और तोर लयोर रोय हेलो
जो दिरे जोनदोय किति रोय हेलो
सगी रे और तोर लयोर रोय हेलो
अदेरे राजो पुरो रोय हेलो
हडेके बर पुदकी रोय हेलो।"[31]

(यहां तुम्हारा एक प्रेमी था। अब तुम उसे छोड़कर जा रही हो। तुम उसे अकेला छोड़कर जा रही हो। तुम इस घोटुल में कभी न आ सकोगी। परन्तु तुम्हे यह शीघ्र पता चल जायगा कि विवाह की जिन्दगी में भी कितना मजा है।) इस प्रकार कि ~~विदाई के~~ से और भी कई गीत "जंगल के फूल" उपन्यास में आए हैं।[32] घोटुल से संबंधित विदाई गीतों के अतिरिक्त और

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

31, जं० के फूल 173 32. वही पृ० 184, 185, 181

कुछ विरह गीत भी लेखक भी ने संजोए हैं । इन गीतों में परकीया नायिका का विरह भी आया है । जब नायिका युवक से पूछती है कि तू क्यों नहीं आता तो नायक उत्तर देता है कि तेरे पुरुष का भय है ।[33] नायक भी नायिका से न आने के विषय में पूछता है और विरह-विह्वल मन का चित्र प्रस्तुत करता है ।[34]

विरह के गीतों में कुछ रहस्यवादी संस्पर्श भी कभी-कभी दिखाई पड़ जाता है । एक बहन अपनी बहन से कहती हुई सुनाई पड़ती है --

"ओ दीदी, पिया गे परदेस
न कोउ आवे, न कोउ जावे
न भेजे संदेस
ओर दीदी मोर पिया गे परदेस ।"[35]

नागार्जुन ने "बलचनमा" में मैथिल कोकिल की शैली में एक आंचलिक गीत पिरो दिया है । इसमें अंचल की भाषा का विकास अपने पूर्ण यौवन के साथ उपस्थित है --

"साओन है मनहर आनक बाग ।
कुहू कुहू विकरए कोइलिया
झींगुर गावए फाग ।
कंत हमर परदेस बसई छथि

---

33. जं० के फूल 177 34. हो० 138

35. जं० के फूल 209

बितरि राग-अनुराग ।
पिथि भेल बाग, सौन भेल बेरी
फूटि गेलइ भाग ।
नहि हे मजरल आमक बाग ।"36

"बलम के बेटे" में नागार्जुन ने उद्दीपन सामग्री को विरह की स्थिति में रख दिया है --

"सावन है नहि अति भयावन
निठुर पिय नहि पास, यो ।
चपल दामिनी, विकल भामिनी
कूकर करती आस, यो ।
मास भादो, कीच कांदो ...... ।"37

भाव-गीतों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये गीत अंचल की ठेठ भाषा में भी मिलते हैं और कलात्मक आग्रहों के कारण इनका भाषा रूप कुछ संस्कृत होकर उच्च स्तरीय साहित्य की भाषा और शैली में भी ढलता है । अंचल की भाषिक भूमिका में भाषा के कलात्मक संस्कार की स्थिति इन गीतों के द्वारा प्रमाणित होती है ।

इन गीतों के अतिरिक्त कुछ और गीत भी हैं जिनमें संगीत और शृंगार का तालमेल रहता है । उदाहरणार्थ इन्द्र देवता को मनाने के लिए "जाट-जट्टिन" का नृत्यपूर्ण खेल एक गीत के साथ चलता है । इसका उपयोग रेणु ने "मैला आंचल" में किया है ।[38]

36. बल. 125   37. ब. के बेटे 93   38. मै. आं. 163

अनेक नृत्यगीत भी कलात्मक गीतों की कोटि में आते हैं ।[39] "कब तक पुकारूँ" में ब्रज के प्रेमगीत की एक झलक मिलती है -- "चलत चलत मोरी बाजे रे बिछिया ।"[40] बच्चों के खेलगीत भी ठेठ आंचलिक भाषा में मिलते हैं । "जंगल के फूल" का एक खेलगीत इस प्रकार है --

"पेरा लाटा मंगनाय रे
खेलू खेलू काय मेवा मन
विमनाय रे ।"[41]

2·3 बृहत्तर भाषा गीत :

इनमें वे गीत आते हैं जिनकी भाषा ठेठ अंचल की भाषा नहीं है । एक ऐसी भाषा का प्रयोग इनमें हुआ है जो ठेठ अंचल के लोगों के लिए भी बोधगम्य है और अंचलों को मिलाकर जो एक सामान्य जनसमूह बनता है वह भी उनको समझ लेता है । भाषा की दृष्टि से अंचल का यह दुरंगा रूप भक्तिगीतों और कलात्मक गीतों में भी झलकने लगता है । किन्तु अधिकतर भक्तिगीतों में और कुछ समसामयिक संदर्भों में व्यापक आंचलिक भाषा का प्रयोग अधिक हुआ है ।

भक्तिगीतों में निर्गुणिया सन्तों की मिश्रित सधुक्कड़ी का प्रयोग हुआ है या आंचलिक भाषा ही सधुक्कड़ी रूप में ढल गई है । "मैला आंचल" में यह पंक्ति सुनाई पड़ती है -- "जागहु सतगुरु साहेब,

---

39· मै· आं· 71, 75, 76, 132, तथा कु· 122 तथा जं·के फूल 68
40· कब तक पु· 364     41· जं· के फूल 68

सेवक तुम्हरे दरस को आया जी ।"[42] बीजक की भी एक पंक्ति आ गई है -- "बीजक बतावे बित्त को ..... ।"[43] सत्संग काव्य-रूप की यह पंक्ति द्रष्टव्य है -- "सन्तो हो, कहं बहियां बन जानी ।"[44] रेणु ने इन गीतखण्डों द्वारा एक मठ का वातावरण खड़ा किया है । इस वातावरण की भाषिक भूमिका सधुक्कड़ी भाषा की है जिसे पचमेल खिचड़ी कहा जाता है । यह भी एक प्रकार से अन्तर्क्षेत्रीय भाषा-भूमिका है । जिस प्रकार अंचल में ब्राह्मण[45] की स्थिति कुछ संस्कृत श्लोकों को जीवित रखती है उसी प्रकार निर्गुणिया सन्तों का एक वर्ग सधुक्कड़ी को आंचलिक भूमिका में जोड़ता है ।

इसी प्रकार सगुणवादी गीतों की भाषा ब्रजभाषा से युक्त होकर आंचलिक भाषा की भूमिका को बहुरंगी बनाती है । यदि अवधी की रंगत लिए हुए रामभक्ति का गीत कहता है -- "धीरे बहऽऽ हम हाऽ री ए रघुबर"[46] तो दूसरी ओर कृष्णभक्त संबंधी ब्रज की प्रकृति का गीत "जुलूस" में गूंजता हुआ मिलता है --

"कौने बने गइया चरावे मोहन
हे रे । हे रे । हे रे ।
गोपाल केरा बांसुरी बाजावे
नाग खोर नाग सुन्दर बांसुरी बोलाये ....।"[47]

इसी प्रकार पूरी जगन्नाथ से संबंधित एक गीत भी "जुलूस" में आया है ।

"जगरनाथवा रो भाय
बाबा रो बिराजे उड़िया देस में ।"[48]

---

42. मै.आं. 21, 44 43. वही 31, 165 44. वही 103

45. प्रस्तुत प्रबन्ध का भोगोलिक प्रकरण 46. सती मै. 284

47. जुलूस 109 48. वही 134

इसी प्रकार एकाध हैय गीत भी आलोच्य उपन्यासों में आया है । "सागर, लहरें और मनुष्य" में एक गीत सुनाई पड़ता है --
"ए रे भोला सब का बाना, बाला रे ।"49

बंधन समसामयिक यथार्थ के प्रति भी व्यंग्यात्मक रूप से सजग दिखाई पड़ता है । इस प्रतिक्रिया को वह व्यंग्य में भी व्यक्त करता है और सामान्य रूप से इन गीतों की भाषा व्यापक भाषा स्तर की ही होती है । अंग्रेजों पर भी व्यंग्य करते हुए "आँगन के फूल" का बंधन गा उठता है --

"धन रे अंगरेज बाऽऽऽ
तोरी अकल भारी रे
रे रे देखो रे देखो रे
अरे, बनाय दिवारी हो
दिवारी, रेऽऽऽ ।"50

स्वराज्य मिलने पर बंधन खुशी मना लेता है --

"भारत में आयल सुराज
चलु सखी देखन को ......
कहि के गांधी आयेल
भारतमाता
कहि के चलल सुराज
चलु सखी देखन को ।"51

---

49. सा॰ ल॰ म॰ 46    50. आं॰ के फूल 25
51. मै॰ आं॰ 201

और भी --

"कहीं पे छापो गान्धी महात्मा
वहाँ महल बनाते हैं,
कहीं पे छापो वीर जवाहिर
जेल के भीतर जाते हैं ।"[52]

जमींदार के जुल्म भी उनकी दृष्टि से नहीं बच पाते ।

"दुर्दिनमा केनक हरान
रे, किंकियार मारलक जान
करजा करिके खेती केलूं, मारि गेलइ सब धान --
केल केवि रजवा पे केलूं, छोड़र नाहिं बइमान
जमींदार के जुलुम रोकऽ देत, देतऽ भाइ किसान ।"[53]

उनकी दृष्टि में वह बेईमान कांग्रेस सरकार भी है जो मुखौटों की राजनीति में खेल रही है ।

"बरसा में गड्ढे बन जाते हैं भर
ढेंग चकारा उनमें करते हैं टर्र
वैसे ही राज काज कांग्रेस का है
जीकर बने हैं लभी बन के गीदड़ ....जोगी भी सर र ।"[54]

"बाबा बटेसरनाथ" में पाठक दुनाई और पुलिस की सांठगांठ पर व्यंग्य है --

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

52· मे· ऑ· 205 53· अल· 151
54· मे· ऑ· 114

"पाठक दुनिया
पुलिस तोहर नानी
कराया तोर सईया ।"55

हिन्दू और मुसलमानों के सह-अस्तित्व को भी "मैला आंचल" का अंचल देखता है --

"अरे, हमरे मन्दिरवा में चांद
मसजिदवा में मोती कहे ।"56

जाति-पाँति के भेदभावों को जीवित रखनेवाले ब्राह्मण पर रेणु ने एक गीत उद्धृत किया है जिसमें एक करारा व्यंग्य है --

"अरे हो बुड़बक बभना, अरे हो बुड़बक बभना,
चुम्मा लेबे में जात नहीं रे जाये ।
सुपति-मउनिया बाबे डोमिनिया, मोरे पियास से पनिया
कुआं के पानी न पावे लेवारी, हौउक बभना के पिरतिया
सोही डोमिनिया के जनी नहिंनिया, डरवा के मारे पिपनिया
लेकरे बाहिर दोउने बोड़वा, ओड़के हार में बभनिया ।"57

नागार्जुन और रेणु मुख्य रूप से तथा अन्य आंचलिक उपन्यासकार सामान्य रूप से ग्रामीणतापूर्ण साहित्य की रचना में लगे है । ग्रामीण के लिए एक बहुप्रचलित गीत पैराडी के रूप में "मैला आंचल" में संजोया गया है --

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

55. बाबा बटे॰ 145    56. मै॰ आं॰ 208

57. मै॰ आं॰ 208

"ज़िन्दगी से किताबों से, किताबों में मिलाइए आ
दुनिया के दुनियादार को, दुनिया से मिलाइए आ।"[58]

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि डोगरी आंचलिक उपन्यासों में लोकोक्तियों तथा अन्य साहित्यकारों के प्रयोग से भाषिक भूमिका प्रमुख और बहुरंगी बनी है। अंचल की अभिव्यक्ति जब अपनी सीमाओं में नहीं समाती तो उसकी भाषा अंचल से बाहर के तत्वों को ग्रहण करके अपने भाषिक व्यवहार को सुन्दर बनाती है। विभिन्न भाषा-रूप अंचल के सीमा-विस्तार के भी प्रमाण हैं। जहाँ शुद्ध आंचलिक भाषा अंचल की परम्परागत सीमाओं की प्रतीक है वहाँ अन्तर्क्षेत्रीय भाषा-रूपों की आंचलिक स्थिति उसके समकालीन सीमा-विस्तार की ओर संकेत करती है। जिस प्रकार आज का राजनैतिक और सामाजिक जीवन एक अंचल की सीमाओं में बंधकर नहीं रह सकता, उसी प्रकार अंचल का भाषिक व्यवहार भी अपनी सीमाओं से बाहर जाने के लिए व्याकुल है।

---

58. मै. आ. 146

## उपसंहार

## उपसंहार

हिंदी साहित्य के स्वातन्त्र्योत्तर युग का एक प्रमुख आन्दोलन आंचलिक उपन्यासों का है। यद्यपि कुछ विद्वान इस आन्दोलन को इस युग से बहुत पहले खींच ले जाना चाहते हैं किंतु वास्तविकता यह है कि पारिभाषिक रूप से यह आन्दोलन स्वतन्त्रता के पश्चात् ही आरम्भ होता है। इस साहित्यिक प्रवृत्ति को आन्दोलन कहने का औचित्य यह है कि इसने मध्य-वर्गीय मानस से अभिभूत और व्यक्तिवादी दर्शनों से पुष्ट साहित्य का विरोध किया। साहित्य की धारा को सामान्य जन और समूह की ओर मोड़ा। इसने अंचलों से यथार्थ के नए खण्डों का अन्वेषण किया और उनकी नयी भंगिमाओं को आंचलिक शिल्प के द्वारा प्रकट किया। इसीलिए अधिकांश विद्वान आंचलिक उपन्यास की धारा को एक आन्दोलन ही मानते हैं।

आंचलिक उपन्यासों के स्वरूप निर्धारण के प्रयत्न हुए और इसके आधारभूत तत्वों का निरूपण भी किया गया। विशेष रूप से चार आधारभूत तत्वों की ओर संकेत किया गया: (1) अंचल का प्राकृतिक और भौगोलिक परिवेश, (2) अंचल की निजी लोकसंस्कृति, मान्यताएँ और परम्पराएँ, (3) आंचलिक क्षेत्र में घटित होनेवाले द्वन्द्व, जो मोटे रूप से आधुनिकता और परम्परा के संघर्ष से उत्पन्न हुए तथा जिनसे परिवर्तन की नयी ललक और प्रगति की नयी बेचैनी

अंचल को दी तथा (4) आंचलिक भाषा का प्रयोग जिसके द्वारा अंचल अपनी अस्मिता और वैशिष्ट्य को प्रकट करता है । इस वैशिष्ट्य के कारण एक दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ जिसने व्यक्ति के स्थान पर अंचल को नायक बना दिया ।

जहाँ तक अंचल की भाषायी भूमिका और भाषा प्रयोग की विधियों का प्रश्न है, कुछ विवाद उत्पन्न हुआ । आंचलिक उपन्यासों का सर्जक यह अनुभव करता था कि बिना आंचलिक भाषा के प्रयोग के उसका सृजन व्यापार खंडित और पंगु रहता है । यथार्थ के चित्रण, कथ्य की प्रामाणिकता और शिल्प की आवश्यकताओं की दृष्टि से कुछ ऐसी स्थितियाँ उपस्थित हो जाती हैं जब कि आंचलिक भाषा का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है । यदि इन स्थलों पर आंचलिक भाषा का प्रयोग न किया जाए तो शायद आंचलिक उपन्यास ही नहीं बनेगा । अनेक समीक्षकों ने भी भाषा-प्रयोग संबंधी इस विवशता और अनिवार्यता का समर्थन किया । दूसरी ओर ऐसे विचारक दिखाई पड़ते हैं जिन्होंने आंचलिक उपन्यास के तथ्य-बोध और सौन्दर्यबोध के संबंध में चिन्ता व्यक्त की । उनके अनुसार आंचलिक भाषा के प्रयोग के कारण यथार्थ का बोध बाधित होता है । इसीलिए उसकी रसानुभूति में व्याघात उपस्थित हो जाता है । साथ ही जिन आशयों को आंचलिक उपन्यासकार देता है वे सार्वजनीन और सार्वभौम नहीं हो पाते । इसीलिए आंचलिक उपन्यास एक महान कृति नहीं बन सकते । यह चिन्ता बहुत स्वाभाविक प्रतीत होती है । किन्तु रसानुभूति के ऐसे स्तर भी आंचलिक उपन्यास में होते हैं जहाँ भाषा-बोध बाधक नहीं बनता । अवसर के अनुकूल

दुर्बोध भाषा शब्दों का बोध भी हो सकता है । फिर भी यह सत्परामर्श देकर कहा कि केवल चमत्कार और कौतूहल उत्पन्न करने के लिए आंचलिक भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए । उपन्यासकार को कम से कम आंचलिक भाषा से अपना काम चलाना चाहिए । तात्पर्य यह कि उपन्यासकार को सन्तुलन से काम लेना चाहिए । किन्तु यह निश्चित है कि आंचलिक भाषा के नितान्त अभाव की बात असंभव है । यह एक सर्वसम्मत विचार है कि आंचलिक भाषा के बिना आंचलिक उपन्यास की स्थिति असंभव है ।

आंचलिक भाषा के प्रयोग की कई उपयोगिताएँ हैं । इसके द्वारा आंचलिक वातावरण सजीव और साकार बनता है । साथ ही अंचल का चरित्र और व्यक्तित्व बिना इसके स्वाभाविक नहीं बन सकता । जिस यथार्थ का अन्वेषण लेखक अंचल में करता है उस यथार्थ की एक भाषा भी होती है और उसी भाषा में लिपटा हुआ वह यथार्थ मूर्तरूप बनता है । अंचल के जनसमूह के संवाद और कथोपकथन स्थानीय भाषा के अभाव में प्रभावहीन हो जाते हैं । आंचलिक भाषा-प्रयोग के साथ लोकगीतों के अंशों, लोकोक्तियों और कहावतों का समावेश भी होता है । इनके द्वारा भी एक भाषा-स्तर बनता है । एक अंचल के दूसरे अंचल के सम्पर्क में आने की स्थितियाँ भी एक मिश्रित आंचलिक भाषा उत्पन्न करती है । बाहर से आगत भाषा आंचलिक उच्चारण में आकर अंचल के भाषा सम्पर्क की प्रक्रिया को सिद्ध करती है । तात्पर्य यह है कि आंचलिक भाषा का बहुविध और बहुउद्देश्यी उपयोग होता है । यही आंचलिक उपन्यासों की भाषायी भूमिका है ।

इस भाषायी भूमिका का विश्लेषण करने पर प्रायः पाँच स्तर दिखाई पड़ते हैं। ध्वनि-प्रयोग, शब्द-प्रयोग, रूप-रचना, वाक्यरचना और लोकोक्तियाँ और कहावतें, जिनमें लोकगीतों की पंक्तियाँ भी सम्मिलित की जा सकती है।

जहाँ तक ध्वनि-प्रयोग का प्रश्न है, मूल ध्वनियाँ प्रायः परिनिष्ठित भाषा की ध्वनियों के समान ही होती है। किन्तु ध्वनियों के विकास का क्रम, उनके संयोग की स्थितियाँ और उच्चारण-विधियाँ भिन्न हो जाती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आंचलिक ध्वनि-विधान परिनिष्ठित भाषा की अपेक्षा अपभ्रंश की परवर्ती प्रवृत्तियों के अधिक समीप पड़ता है। उदाहरण के लिए जहाँ परिनिष्ठित भाषा में समीकरण की प्रवृत्ति सरलीकरण में विकसित हो गई है वहाँ आंचलिक भाषा में समीकरण प्रवृत्ति के अवशेष अधिक मिल जाते हैं। कुछ ऐसी प्रवृत्तियाँ भी ध्वनि-विकास की मिलती है, जो प्रायः आलोच्य उपन्यासों के सभी अंचलों में समान है जैसे — ड़ > र, ण > न, श > स, य > ज आदि। संधियों की भी कुछ विचित्रताएँ मिलती हैं। सबसे अधिक रोचक तत्त्व ध्वनियों के उच्चारण का है। उच्चारण से अंचल की पहचान होती है।

जहाँ तक शब्दावली का प्रश्न है, अर्थबोध की दृष्टि से इसके तीन स्तर मिलते हैं -- सुबोध, दुर्बोध और अबोध। दुर्बोध शब्द वे हैं जिनकी रचना-प्रकृति परिनिष्ठित हिंदी के शब्दों से मिलती-जुलती है केवल आंचलिक विकृतियों के द्वारा उनकी बोधगम्यता कठिन हो

गई है । अबोधगम्य शब्द वे हैं जिनका बोध अंचल से बाहर के व्यक्ति को हो ही नहीं सकता क्योंकि वे अंचल की मिट्टी से जन्मे हैं। इस शब्दावली में देशज शब्दावली का विशेष स्थान रखता है । यही वह शब्द-स्तर है जहाँ पर अर्थबोध के सम्बन्ध में चिन्ता उत्पन्न होती है । आंचलिक उपन्यासकार ने इन शब्दों के कहीं-कहीं अर्थ भी दिए हैं और कहीं-कहीं प्रयोग के द्वारा अर्थ की व्यंजना की है । दूसरी ओर आगत शब्दावली भी अंचल के शब्दकोश में जुड़ जाती है उस शब्दावली का आंचलिक संस्कार भाषिक भूमिका को प्रगाढ़ बनाता है ।

शब्द ही नहीं पदों की व्याकरणिक रचना में भी आंचलिक वैशिष्ट्य दृष्टिगत होता है । संज्ञा और विशेषण की लिंग-वचन और कारकीय रचना, क्रिया की वाच्य और काल रचना विशेष रूप से भिन्न होती है । "जाइस" "गए रहिन," "गइल" जैसे काल रचना के उदाहरण पूर्वी अंचल के उपन्यासों में मिल जाते हैं । कारकीय रूप-रचना में मूल और तिर्यक की रचना आ जाती है । यही नहीं रचनात्मक प्रत्ययों और उपसर्गों का भी वैशिष्ट्य आंचलिक भाषा में देखने को मिलता है । शब्दों की व्युत्पत्ति की प्रक्रिया भी व्याकरणिक करती है, संज्ञा से क्रिया, क्रिया से विशेषण जैसी रचनाएँ इस शीर्षक के अन्तर्गत आती हैं ।

वाक्य-रचना में पद-क्रम और अन्वय-सम्बन्धी विशेषताएँ अंचलीय भाषा को परिनिष्ठित भाषा से अलग करती हैं किन्तु इस स्तर पर आंचलिक वैशिष्ट्य कम ही दिखाई पड़ता है । जो अन्तर दिखाई पड़ता है वह या तो प्राकृतिक होता है या भाषा-प्रेरित ।

लोकोक्तियाँ तो आँचलिक व्यापार में रचे और प्रचलित मिलते हैं। इनके बिना तो अंचल का भाषा-व्यवहार चलता ही नहीं। आँचलिक मानस इनका प्रयोग अपने कथन को प्रामाणिक और प्रभावशाली बनाने के लिए करता है। लोकोक्तियाँ और कहावतें पद्यांश के रूप में, अंतरा के रूप में, टेक के रूप में, मिलती हैं इनके द्वारा भी आँचलिक भाषा-भूमिका सहज और विशिष्ट बनती है।

अन्त में आँचलिक उपन्यासों में प्रयुक्त गीतों या गीत के अंशों को लिया जा सकता है। इनके प्रयोग द्वारा अंचल की भाषिक भूमिका नवरसमय बनती है गीत अंचल के सुख-दुख की भाषा है। प्रचलित भाषा से इस भाषा का रूप भिन्न भी होता है। गीतों की परिस्थितियाँ अंचल के जीवन में गुंथी रहती है और इन परिस्थितियों में अंचल गीतात्मक भाषा-व्यवहार में प्रवृत्त हुए बिना नहीं रह सकता।

तात्पर्य यह है कि अंचल की भाषिक भूमिका उसके चरित्र और उसकी अस्मिता के प्रतिफलन के लिए उपन्यासों में बनाई गई है। चाहे एक सीमा तक इनके द्वारा दुर्बोधता आए पर यह आँचलिक शैली और शिल्प का अपरिहार्य अंग है। प्रस्तुत प्रबन्ध में इन्हीं सब स्थितियों का वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया गया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि आँचलिक उपन्यास का अधिकांश यद्यपि परिनिष्ठित प्रचलित भाषा से ही बना होता है किन्तु आँचलिक भाषा उस भाषा-परिवेश को वैचित्र्य, प्रभाव, सहजता और प्रामाणिकता प्रदान करती है। चाहे बोधगम्यता इस भाषा-प्रयोग से कुछ बाधित होती हो, तथापि आँचलिक यथार्थ का सौन्दर्यबोध इससे बाधित नहीं होता।

# परिशिष्ट

## आधार ग्रन्थ सूची


| | लेखक | उपन्यास, प्रकाशन तथा संस्करण |
|---|---|---|
| 1. | उदयशंकर भट्ट | "सागर, लहरें और मनुष्य" |
| 2. | नागार्जुन | "रतिनाथ की चाची" किताब महल, इलाहाबाद, तृ० सं० 1967 |
| 3. | " | "बलचनमा", किताब महल, इलाहाबाद । छठा सं० 1978 |
| 4. | " | "दुखमोचन", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली नवाँ सं० 1976 |
| 5. | " | "नई पौध", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली सं० 1980 |
| 6. | " | "वरुण के बेटे" राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली |
| 7. | " | "बाबा बटेसरनाथ", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली तृ० सं० 1975 |

| | | |
|---|---|---|
| 8. | फणीश्वरनाथ "रेणु" | "मैला आँचल", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली<br>दसवाँ सं0 1979 |
| 9. | " | "जुलूस", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,<br>पंचम संस्करण 1980 |
| 10. | भैरवप्रसाद गुप्त | "सती मैया का चौरा" |
| 11. | रांगेय राघव | "कब तक पुकारूँ" राजपाल एण्ड संज़,<br>दिल्ली, पंचम सं0 1976 |
| 12. | राजेन्द्र अवस्थी | "जंगल के फूल", राजपाल एण्ड संज़,<br>दिल्ली। |
| 13. | शैलेश मटियानी | "होलदार". |

## संदर्भ-ग्रन्थ सूची


1. अंजलि तिवारी — "फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य", सुलभचरण जैन एवं सन्तति, नई दिल्ली, प्र० सं० 1983.

2. अमृतलाल नागर — "बूँद और समुद्र" किताब महल, इलाहाबाद, पाँचवा सं० 1978

3. आदर्श सक्सेना — "हिंदी के आंचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि" सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर, प्र० सं० 1971

4. इन्द्रनाथ मदान — "आज का हिन्दी उपन्यास" राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र० सं० 1966

5. " — "हिन्दी उपन्यास : एक नयी दृष्टि", राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र०सं० 1975

6. इन्द्रप्रकाश पांडेय — "हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में जीवन-सत्य" नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, प्र० सं० 1979

7. इन्द्रपाल सिंह — "अध्ययन और विचार", विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, सं० 1969

8. उदयनारायण तिवारी — "हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास" भारती भंडार, इलाहाबाद, चतुर्थ सं० 1975

9. कान्ति वर्मा — "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास", रामचन्द्र एण्ड कम्पनी, दिल्ली, प्र.सं. 1966

10. कुसुम बोफट — "फणीश्वरनाथ रेणु की उपन्यासकला", वसुमती, इलाहाबाद, प्र. सं. 1968

11. गणपतिचन्द्र गुप्त — "हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास" भारतेन्दु भवन, चंडीगढ़, सं0 1965

12. गणेशन — "हिंदी उपन्यास-साहित्य का अध्ययन" राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, प्र. सं0 1962

13. चन्द्रकान्त बांदिवडेकर — "उपन्यास : स्थिति और गति", पूर्वोदय प्रकाशन, नयी देहली, प्र. सं0 1977

14. चन्द्रप्रकाश त्यागी — "देशी शब्दों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन" शिव प्रकाशन, दिल्ली, द्वि. सं.0 1975

15. चन्द्रभानु सोनवणे — "हिंदी उपन्यास : विविध आयाम" पुस्तक संस्थान, कानपुर, सं0 1977

16. चन्द्रेश्वर कर्ण — "आंचलिक हिंदी कहानी", चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं0 1977

17. देवेन्द्रनाथ शर्मा — "भाषा-विज्ञान की भूमिका", राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं0 1966

18. धीरेन्द्र वर्मा — "उपन्यास : सिद्धान्त और अध्ययन" साहित्य प्रकाशन, वाराणसी, प्र. सं0 1969

19. नगीना जैन — "आंचलिकता और हिंदी उपन्यास" अक्षर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं0 1976

20· नरेन्द्र मोहन — "आधुनिक हिंदी उपन्यास" दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, देहली, प्र० सं० 1975

21· " — "आधुनिकता और समकालीन रचना-सन्दर्भ" आदर्श साहित्य प्रकाशन, देहली, प्र० सं० 1973

22· नवल किशोर — "कृति और सन्दर्भ" स्टूडेन्ट प्रदर्श एण्ड को० भरतपुर, सं० 1976

23· नेमिचन्द जैन — "अधूरे साक्षात्कार", संवेदनात्मक और संगीतात्मक : मेरा परिचय", अक्षर प्रकाशन, दिल्ली

24· पूर्णदेव — "रेणु का आंचलिक कथा-साहित्य" कला प्रकाशन गृह, नयी दिल्ली, प्र० सं० 1973

25· प्रकाश वाजपेयी — "हिन्दी के आंचलिक उपन्यास" नन्दकिशोर एंड संस, वाराणसी, सं० 1964

26· प्रकाशचन्द्र भट्ट — "नागार्जुन : जीवन और साहित्य" सेवासदन प्रकाशन, रायपुर, सं० 1974

27· प्रकाशचन्द्र मिश्र — "अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य" साहित्य प्रकाश, दिल्ली

28· प्रतापनारायण टण्डन — "हिंदी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास" हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ, द्वि० सं० 1964

29· प्रेम भटनागर — "हिन्दी उपन्यास शिल्प : बदलते परिप्रेक्ष्य" अर्चना प्रकाशन, जयपुर, प्र० सं० 1968

30. बदरीदास — "हिन्दी उपन्यास : पृष्ठभूमि और परम्परा" ग्रन्थम, रामबाग कानपुर, सं० 1966

31. बंसीधर — "हिन्दी के आंचलिक उपन्यास" भारत प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र० सं० 1983

32. ब्रजभूषण सिंह आदर्श — "हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन" रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र० सं० 1970

33. बांके बिहारी भटनागर (सम्पा०) — "उदयशंकर भट्ट - व्यक्ति और साहित्यकार" हिंदी भवन ग्रन्थागार, बारहखम्भा रोड नई दिल्ली

34. बाबूराम सक्सेना — "सामान्य भाषा-विज्ञान", हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, चतुर्थ सं० 1971

35. बालकृष्ण गुप्त — "हिन्दी उपन्यास : सामाजिक सन्दर्भ" अभिधार्थ प्रकाशन, कानपुर, प्र० सं० 1978

36. केवल — "आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास" सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, सं० 1971

37. " — "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य" राष्ट्र-भाषा प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं० 1967

38. भगवतीप्रसाद शुक्ल — "औपन्यासिकता के आधुनिकता बोध" ग्रन्थम कानपुर प्र० सं० 1972

39. भवानीदत्त उप्रेती — "कुमाऊँनी भाषा का अध्ययन, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र० सं० 1976

40. भीष्म साहनी (सम्पा०) — "आधुनिक हिन्दी उपन्यास" [illegible], प्रकाशन, दिल्ली, प्र०सं० 1976

41. भोलानाथ तिवारी — "भाषा-विज्ञान" किताब महल, इलाहाबाद, तेरहवाँ सं० 1978

42. मन्मथनाथ गुप्त — "समाजवादी हिन्दी साहित्य : उपलब्धियाँ" नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, सं० 1967

43. मनमोहन सहगल — "हिन्दी उपन्यास के पदचिह्न" सूर्य प्रकाशन दिल्ली, सं० 1973

44. महावीरमल लोढ़ा — "हिन्दी उपन्यासों का शास्त्रीय विवेचन" रोशनलाल जैन एण्ड सन्स, जयपुर, प्र०सं० 1972

45. महेन्द्र चतुर्वेदी — "हिन्दी उपन्यास : एक सर्वेक्षण", लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र० सं० 1970

46. महेन्द्र (सम्पा०) — "हिन्दी उपन्यास : सिद्धान्त और विवेचन" साहित्य रत्न भंडार, आगरा, प्र०सं० 1973

47. मुकुन्द द्विवेदी — "हिन्दी उपन्यास युग चेतना और राष्ट्रीय संवेदना" लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र० सं० 1970

48. रमेशकुन्तल मेघ — "क्योंकि समय एक शब्द है", लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्र० सं० 1975

| | | |
|---|---|---|
| 49. | राजनागपाल | "हिन्दी गुजराती के आंचलिक उपन्यास - एक तुलनात्मक अध्ययन, अजन्ता प्रकाशन, दिल्ली |
| 50. | राजनाथ शर्मा | "साहित्यिक निबन्ध" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, बारहवाँ सं० 1970 |
| 51. | राजेन्द्र अवस्थी | "श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ", पराग प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, प्र० सं० 1974. |
| 52. | रामगोपाल शर्मा दिनेश (सम्पा०) | "नव उपन्यास : स्वरूप और तत्व" समीक्षालोक भारतीय, आगरा, |
| 53. | रामचन्द्र शुक्ल | "चिन्तामणि" (संशोधित पहला भाग) इंडियन प्रेस पब्लिकेशन, इलाहाबाद सं० 1981 |
| 54. | रामदरश मिश्र | "हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा" राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं० 1968 |
| 55. | रामदेव यादव | "उपन्यास का आंचलिक धरातल", विमल प्रकाशन, वाराणसी, प्र० सं० 1980 |
| 56. | " | "आंचलिकता और आत्माभिव्यंजना : शारदा प्रकाशन, दिल्ली। |
| 57. | रामबुझावन सिंह (सम्पा०) रामवचन राय | "रेणु : संस्मरण और श्रद्धांजलि", नवनीता प्रकाशन, पटना, प्र० सं० 1978 |
| 58. | रामलखन शुक्ल | "हिंदी उपन्यास कला", सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली प्र० सं० 1972. |

59. रामशोभित प्रसाद सिंह — "उपन्यास समालोचना सन्दर्भ" भारती प्रकाशन, पटना, प्र० सं० 1979

60. राजेश्वर कौशिक — "हिन्दी के आंचलिक उपन्यास", मंगल प्रकाशन, जयपुर, प्र० सं० 1962

61. " — "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास का शिल्पविकास" मंगल प्रकाशन – जयपुर, प्र०सं० 1976

62. लक्ष्मीकान्त सिन्हा — "हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास" ग्रंथभारती, कानपुर, प्र० सं० 1966

63. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय — "द्वितीय महायुद्धोत्तर हिंदी साहित्य का विकास" राजपाल एण्ड संस, नयी दिल्ली प्र० सं० 1973.

64. " — "हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ", राधाकृष्ण प्रकाशन सं० 1970

65. [illegible] सिंह — "रांगेय राघव और उनके उपन्यास", अनुपमा प्रकाशन, बम्बई सं० 1972.

66. वासुदेव शरण अग्रवाल — "पृथिवी पुत्र"

67. विवेकीराय — "स्वातन्त्र्योत्तर कथा-साहित्य और ग्राम-जीवन" लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र० सं० 1974.

68. शिवनाथ प्रसाद तिवारी — "स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी गद्य साहित्य" विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, सं० 1968

69. श्यामचन्द्र कपूर "व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण", प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं0 1980

70. शशिभूषण सिंहल "उपन्यास का स्वरूप" कैलाश पुस्तक सदन ग्वालियर, प्र० सं0 1975

71. " "हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, प्र० सं0 1970

72. शान्तिस्वरूप गुप्त "हिन्दी उपन्यास : महाकाव्य के स्वर", अशोक प्रकाशन, दिल्ली, सं0 1979

73. शिवपूजन सहाय "शिवपूजन रचनावली" (प्रथम खण्ड), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, नवीन सं0 1956

74. शिवनारायण श्रीवास्तव "हिन्दी उपन्यास (ऐतिहासिक अध्ययन)" सरस्वती मन्दिर, वाराणसी, सं0 1968

75. श्रीनारायण अग्निहोत्री "हिंदी उपन्यास साहित्य का शास्त्रीय विवेचन", सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, प्र० सं0 1961

76. स्वर्णलता "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, सं0 1975

77. सत्यपाल चुघ "प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि" लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद प्र० सं० 1968

सत्येन्द्र — "लोक साहित्य विज्ञान" शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं० आगरा, द्वि० सं, 1971

सरोजिनी त्रिपाठी — "आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में वस्तु-विन्यास", ग्रन्थम, कानपुर, सं० 1973

सुंदरलाल कथूरिया — "साहित्य : आधुनिक : अत्याधुनिक" साहित्यकार प्रकाशन, देहली, प्र० सं० 1977

" — "आधुनिक साहित्य : विविध परिदृश्य", वाणी प्रकाशन, दिल्ली प्र० सं० 1973

सुभाषिणी शर्मा — "स्वातन्त्र्योत्तर आंचलिक उपन्यास", संजीव प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र० सं० 1976

सुमित्रा त्यागी — "हिन्दी उपन्यास : आधुनिक विचारधाराएं" साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं० 1978

सुरेश सिन्हा — "हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास", अशोक प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं० 1965

सुषमा शर्मा — "उपन्यास और राजनीति", स्मृति प्रकाशन इलाहाबाद, प्र० सं० 1976

ह० के० कड़वे — "हिन्दी उपन्यासों में आंचलिकता की प्रवृत्ति" अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र० सं० 1978

हरिवंशराय बच्चन (सम्पा०) — "समकालीन हिन्दी साहित्य" साहित्य अकादमी नयी देहली।

त्रिभुवनसिंह — "हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद" हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी ।

त्रिलोचन पाण्डेय — "लोक साहित्य का अध्ययन", लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्र० सं० 1978

ज्ञानचन्द गुप्त — "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम-चेतना" अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं० 1974

"आंचलिक उपन्यास, संवेदना और शिल्प" अभिनव प्रकाशन, दिल्ली प्र० सं० 1975

## अंग्रेजी- ग्रन्थ


1. Indu Prakash Pandey — "Regionalism in Hindi Novels" Frama Steiner Verlag Wiesbaden - W.Germany 1974.

2. James. D. Har — The Oxford Companion to American Literature" New York Oxford University Press Fourth edition 1965.

3. R. Stanley (ed.) — "Social Development" Basic Books Inc., New York

4. Smith, David & Alex Inkles — "The OM Scale : A comparative Socio-psychological measure of individual modernity' Sociometry, 1966.

5. Thrall, Hibbard, Holman — 'A Handbook to literature' Odyssey Press, New York 1960

6. Walter Allen — 'The English Novel' Phoenix House Ltd., LONDON 1955.


....

# कोश

1. द प्रैक्टिकल संस्कृत-हिन्दी डिक्शनरी
2. नालन्दा विशाल शब्द सागर
3. भाषा शब्द कोश
4. राष्ट्रभाषा कोश
5. हिन्दी साहित्य कोश "भाग एक"
6. हिन्दी देशज शब्दकोश
7. समान्तर कोश

## पत्र-पत्रिकाएं


1. आलोचना अप्रैल 1955, जनवरी 1956, जनवरी 66, 1957
2. कल्पना, मार्च 1965
3. दस्तावेज जनवरी, 1983
4. नागरी पत्रिका, जून 1979
5. नयी धारा अंक 1972-73
6. नया प्रतीक, जून 1977
7. पूर्णिमा, अप्रैल 1960
8. रसवन्ती, जनवरी 1967
9. सारिका, अक्तूबर 1960
10. साहित्य-सन्देश : प्रगतिशील विशेषांक, जनवरी-फरवरी 1958।


## अंग्रेजी


1. Philosophy and Social action Vol. VI
( No. I) Jan-March, 1980.